स्वर्ण जयन्ती अंक

नीराजन

''अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए''

2021-23

पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

साध्य

''प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल आत्म विश्वास युक्त बौद्धिक क्षमता एवं निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः शक्ति का अर्जन कर अपने जीवन को निःस्पृह भाव से भारत माँ के चरणों में अर्पित करना ही हमारा परम साध्य है।''

PT. DEEN DAYAL UPADHYAYA SANATAN DHARMA VIDYALAYA

GOVERNED BY SHRI BRAHMAVARTA SANATAN DHARMA MAHAMANDAL
Co-ed English Medium School (Affiliated to C.B.S.E.)

नीराजन

GOLDEN JUBILEE MAGAZINE

Session : 2021 - 2023

PATRON

Shri YOGENDRA BHARGAVA Ji
PRESIDENT

Smt. NEETU SINGH JI (C.A.)
MANAGER

GUIDANCE

Shri RAKESH TRIPATHI
PRINCIPAL

Shri DEEPAK RAJE
FORMER TEACHER

EDITORS

Smt. REKHA NIGAM
CHIEF EDITOR (ENGLISH)

Dr. DURGESH VAJPEYI
EXECUTIVE EDITOR

राष्ट्र की आत्मा : चिति

राष्ट्र की भी एक आत्मा होती है। उसका एक शास्त्रीय नाम है, 'सिद्धान्त और नीति' में इसे चिति कहा गया है। मग्डूगल के अनुसार समूह की कोई मूल प्रकृति होती है। वैसे ही 'चिति' किसी समाज की वह प्रकृति है जो जन्मजात है तथा जो ऐतिहासिक कारणों से नही बनी। चिति तो मूलभूत होती है। चिति को लेकर तो प्रत्येक समाज पैदा होता है और उस समाज की संस्कृति की दिशा चिति निर्धारित करती है, अर्थात् जो चिति के अनुकूल होती है वह संस्कृति में सम्मिलित कर ली जाती है। 'चिति' वह मापदंड है, जिससे हर वस्तु को मान्य अथवा अमान्य किया जाता है। यही राष्ट्र की आत्मा है। इसी आत्मा के आधार पर राष्ट्र खड़ा होता है, और यही आत्मा राष्ट्र के प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण द्वारा प्रकट होती है।

.... पं० दीनदयाल उपाध्याय

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय/शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
1.	शुभकामना संदेश	युवराज मलिक	5
2.	मंगलाशीष	वीरेन्द्रजीत सिंह	6
3.	स्वस्ति कामना	योगेन्द्र भार्गव	7
4.	शुभकामना संदेश	नीतू सिंह	8
5.	माननीय वीरेन्द्रजीत सिंह से वार्ता	डॉ. दुर्गेश वाजपेयी	9
6.	विद्यालय में आत्मीयता का वातावरण होना चाहिए	डॉ. दुर्गेश वाजपेयी	13
7.	वयं राष्ट्रे जागृयां पुरोहिताः	राकेश त्रिपाठी	16
8.	परम्परा का प्रवाह	डॉ. दुर्गेश वाजपेयी	17
9.	From Editor's Desk	Mrs. Rekha Nigam	19
10.	शुभकामना संदेश	सुरेश कुमार गुप्त	20
11.	शुभकामना संदेश	रंजन खन्ना	21
12.	शुभकामना संदेश	अश्विनी कुमार	22
13.	शुभकामना संदेश	संतोष कुमार मल्ल	23
14.	शुभकामना संदेश	सिद्धार्थ सिंह, तरुण सक्सेना	24
15.	शुभकामना संदेश	राहुल मिठास	25
16.	शुभकामना संदेश	डॉ. अमित गुप्ता, विनय अजमानी	26
17.	शुभकामना संदेश	अनुराग त्रिपाठी, डॉ. मलय चतुर्वेदी, डॉ. उमेश्वर पाण्डेय	27
18.	जीवन निर्माता आचार्य	शैलेन्द्र दीक्षित	28
19.	शुभकामना संदेश	डॉ. मोहन कृष्ण मिश्र	30
20.	शुभकामना संदेश	आनंद अवस्थी	31
21.	शुभकामना संदेश	प्रो. मनोज अवस्थी	32
22.	देशदर्शन के संस्मरण	अभिषेक	33
23.	संस्मरण	अनुराग मिश्र	37
24.	भावों का बंधन और हिन्दी की रवानी	सौरभ शुक्ल	38
25.	शुभकामना संदेश	प्रणव त्रिपाठी	40
26.	स्वास्थ्य परीक्षण की आवश्यकता	अजय खन्ना/मीरा रानी	40
27.	सभी बन्धु आत्मीयता से जुड़े रहें	मनीष कृष्णा	41
28.	शुभकामना संदेश	विवेक कुमार सचान	42
29.	(संस्मरण) दीनदयाल विद्यालय की अमिट छाप	डॉ. पंकज श्रीवास्तव	43
30.	(संस्मरण) विद्यालय का अक्षय आशीषः	पंकज रुसिया	45
31.	Selfless Benevolent ACHARYA JI	Kshemendra Bajpai	47
32.	शुभकामना संदेश	आशीष द्विवेदी	49
33.	(संस्मरण)	डॉ. पवन मिश्र	50
34.	(संस्मरण) कर्मण्येवाधिकारस्ते	शुभम श्रीवास्तव	51

35.	(संस्मरण) देशभक्ति के संस्कार	अनुराग त्रिवेदी	53
36.	(संस्मरण) मेरा विद्यालय स्मृतियों में सनातन	गुलशन गुप्त	55
37.	My Innovative Experience	Shakti Mayank Singh	56
38.	सदाचार वेला का महत्व	राहुल तिवारी	57
39.	अविस्मरणीय सदाचार वेला	अपूर्वा मिश्रा	58
40.	शुभकामना संदेश	प्रत्यूष त्रिवेदी, अनुराग त्रिवेदी, Gauri Tripathi	59
41.	शुभकामना संदेश	सौरभ कुमार अवस्थी	60
42.	शुभकामना संदेश	राघवेन्द्र सिंह, आलोक यादव	61
43.	दीनदयाल विद्यालय का महत्व	प्रशांत मिश्र	62
44.	(संस्मरण) विद्यालय की स्मृतियाँ	सीमा मिश्रा	63
45.	Immortal Creation of a great School	Nalini Sanwal	64
46.	(संस्मरण) बालक के स्वरूप	निखिल श्रीवास्तव	65
47.	सशक्त परिवार एक राष्ट्र का निर्माता	माननीय दत्तात्रेय होसबोले	70
48.	चित्रावली		71
49.	शिक्षा क्या है ?	ओमशंकर	88
50.	शुभकामना संदेश	प्रकाश नारायण वाजपेयी	92
51.	ये दुनिया है उसकी तुम्हारी नहीं	सुभाष चन्द्र शर्मा	92
52.	मेरे विद्यालय के संस्मरण	राजेश शुक्ल	93
53.	(संस्मरण) जब गोलवरकर जी ने मुझे प्रवेश दिया	हरिकांत मिश्र	94

रजत जयंती अंक से ....

54.	अपना जीवन भारतीय संस्कृति के अनुरूप बनाएँ		95
55.	पढ़ाई में सफलता कैसे प्राप्त करें		96
56.	पं. दीनदयाल जी के सानिन्ध्य में	अटल बिहारी बाजपेयी	97
57.	शिक्षकों का स्वधर्म	महादेवी वर्मा	99
58.	मेरे संस्मरणों में बैरिस्टर साहब	चंद्रपाल सिंह	100
59.	ईशावास्यमिदं सर्वं	ओमशंकर त्रिपाठी	101
60.	भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतीक	मोरार जी देसाई	106
61.	सादगी की प्रतिमूर्ति थे 'दीनदयाल जी'	प्रो. राजेन्द्र सिंह	107
62.	आशीर्वचन ''नीराजन पत्रिका हेतु भेजे गए संदेश		108
63.	बैरिस्टर साहब	डॉ. विश्वेश्वर	111
64.	एकात्म मानववाद की अवधारणा	दत्तोपन्त ठेंगडी	118
65.	दीनदयाल जी एक समर्पित कार्यकर्ता थे	भाउराव देवरस	124
66.	स्थितप्रज्ञ दीनदयाल जी	बैरिस्टर नरेन्द्रजीत	125
67.	हमारे दीनदयाल जी	गोलवरकर (गुरु जी)	126

नया दौर ....

68.	विद्यालय की इतिवृत्त	राकेश राम त्रिपाठी	130
69.	वर्षावलोकन – 2021, 2022		131

70.	अभिव्यंजना एक डोर की ओर		133
71.	जागरण	डॉ. यतीन्द्र कुमार	134
72.	कॉमिक्स पढ़ने से, पढ़ने की आदत विकसित हो गई	अनुग्रह द्विवेदी	135
73.	उत्कृष्ट शिक्षण के सूत्र	डॉ. दुर्गेश वाजपेयी	136
74.	दीनदयाल विद्यालय और बैरिस्टर साहब	डॉ. दुर्गेश वाजपेयी	137
75.	हमारे जीवन में पुस्तकों का योगदान	पं. हरि नारायण शर्मा	138
76.	चौरासी लाख आसन ऋषियों ने दिए	योगाचार्य रवीन्द्र पोरवाल	139
77.	तपोवृद्ध महामानव थे बैरिस्टर साहब		140
78.	मेधावी छात्रों का सम्मान समारोह		141
79.	हमारी धरोहर	डॉ. दुर्गेश वाजपेयी	142
80.	चित्रावली		143
81.	जल संरक्षण	प्रशान्त कुमार	151
82.	सहिष्णुता	उत्कर्ष तिवारी	152
83.	वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताएँ		153
84.	जल संरक्षण	क्षितिज कुमार	154
85.	स्वच्छ भारत, हरा भारत	कनिष्क तिवारी	155
86.	मुझे कुछ कर दिखाना है	आमिर हमज़ा	157
87.	ममता का आँचल	श्रेया चतुर्वेदी	157
88.	बेलौस	योगेश्वर सिंह चौहान	158
89.	बेटी	श्रेया चतुर्वेदी	158
90.	जिन्दगी	अंकिता अग्निहोत्री	158
91.	मेरी प्रिय पुस्तक	क्षितिज कुमार	159
92.	आँच तन में	कौस्तुभ श्री त्रिवेदी	159

ENGLISH SECTION

93.	The Editorial Board		160
94.	Tribute to Booji	Mrs. Rekha Nigam	161
95.	Background: Should attendance be made	Mamta Srivastava	162
96.	Colonial laws that are still prevalent in India	Komal Jain	163
97.	Hard work Vs Smart Work	Mamta Srivastava	168
98.	Winners before Creation	Yashraj Dubey	169
99.	Positive Thinking	Aditi Pandey	169
100.	Mistakes blessing in Disguise	Vaishali Tiwari	170
101.	The Importance of Education	Aishwarya Srivastava	170
102.	Overcoming fears- An Essential Skill	Vrisha Pandey	171
103.	Mission, Vision		172
104.	Educational Degradation Due to Covid- 19	Stuti Verma	173
105.	Role of commerce in economics development	Shilpi Pal	175

106.	Article - 370	Shilpi Pal	176
107.	The world around us	Stuti Verma	177
108.	School Days are best Days of Life	Devanshi Arora	178
109.	Depression : Not a Joke	Stuti Verma	179
110.	About Mahamrityunjay Mantra	Shrishti Sharma	180
111.	Why God made Teachers	Sanskriti Srivastava	180
112.	Space Theories	Vaani Negi	181
113.	Veganism	Shilpi Pal	182
114.	Depth	Mridul Trivedi	182
115.	Unplesant External Circumstances	Mansi Bhatt	183
116.	What is happiness	Ayush Mishra	183
117.	Classism : A New Social Dilemma	Rishi Singh Sengar	184
118.	Why Women are Paid Less than Men ?	Kumkum Baghel	184
119.	Why God made teachers	Aarushi gupta	185
120.	A Song From Suns	Diksha Bhatt	185
121.	Indian Society : A Different Perspective	Darshita Kashyap	186
122.	A Triumphant Tree of Wisdom	Smriti Asthana	186
123.	The Lesson I Learned from my Life	Yashi Mishra	187
124.	Rome was not built in a day	Yashi Mishra	187
125.	My Gratitude to my Teacher	Shraddha Singh	188
126.	Being a Girl	Nabila Suhail	188
127.	The Philosophy of Life Moratality and Magic	Nimisha Srivastava	189
128.	The story of young man	Mansi Bhatt	190
129.	Let there be Light	Mridul trivedi	191
130.	IT Inventions by Indians	Krishna Alok Gupta	191
131.	Curbing Corruption	Jahnavi Patel	192
132.	The Ultimate Call	Kushi Dixit	192
133.	The Day Dreamer	Priyanshi	193
134.	River Ganga	Harsh Kashyap	194
135.	Till the End	Nimisha Srivatava	195
136.	The Fall of Life	Jahnavi Singh	195
137.	How to speak Fluent English	Ghanisth Umrao	196
138.	Covid - 19	Devanshi Arora	197
139.	The Sky	Prachi Singh	198
140.	Life	Ichcha Yadav	198
141.	"The Mystery of the Ancient Perky Woods"	Priyanshi	199
142.	Generation of Insecurities	Dhriti Singh	200

हमारे आराध्य

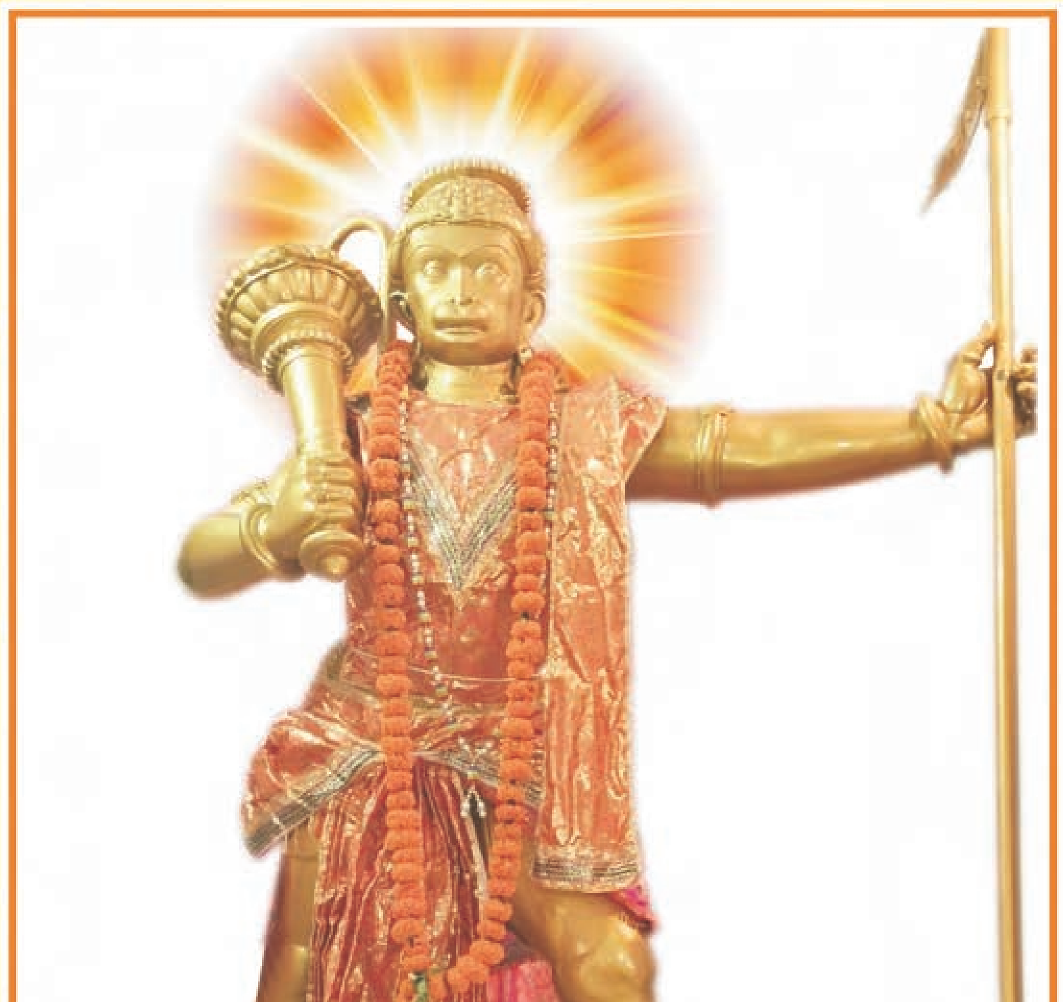

वज्र देह स्वर्णाभ हैं, पवनपुत्र हनुमान।
माँ सीता के लाडले, रामचन्द्र की आन।।

विद्यालय के प्रेरणा- स्त्रोत

पं० दीनदयाल उपाध्याय

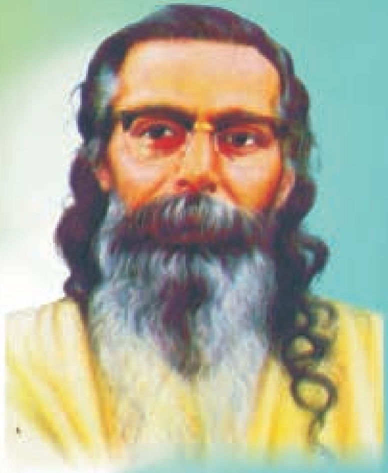

माधवराव सदाशिवराव गोलवरकर 'गुरु जी'

बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी

माँ सुशीला उपाख्य 'बूजी'

शुभकामना–संदेश

Yuvraj Malik
Director
युवराज मलिक
निदेशक
Phone : +91 11 26121830
Fax : +91 11 26133685
E mail : director@nbtindia.gov.in
Website : www.nbtindia.gov.in

50वाँ अंक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

Knowledge PARTNER OF THE NATION

G20 भारत 2023 INDIA

WORLD BOOK FAIR 2024
10-18 FEBRUARY 2024

PM,s Mentoring YUVA SCHEME

INDIA @75 SERIES

NEP 2020

तिथि : 30.08.2023

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
Ministry of Education, Government of India

॥ संदेश ॥

यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व की बात है कि पूज्य सदाशिव राव गोलवलकर जी के कर-कमलों से शिलान्यासित पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय अपनी स्थापना का स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है|

इस ऐतिहासिक अवसर पर विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'नीराजन' के स्वर्ण जयंती अंक का प्रकाशन होने जा रहा है, यह भी अत्यंत हर्ष का विषय है|

इसके साथ ही, यह बहुत गौरव का विषय है कि पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के आदर्श एवं जीवन-मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए संस्थान ने शिक्षा के माध्यम से महती भूमिका निभाई है। आपके विद्यार्थी आज विभिन्न पदों पर देशसेवा में लीन हैं और राष्ट्र–निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आपके अभूतपूर्व योगदान, समर्पण एवं शैक्षणिक उत्थान के लिए हार्दिक अभिनंदन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।
उत्तिष्ठ भारत!

श्री राकेश राम त्रिपाठी
प्रधानाचार्य
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
नबावगंज, कानपुर
(उत्तर प्रदेश)

युवराज
(युवराज मलिक)
निदेशक
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

मंगलाशीष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष पर मैं विद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

मेरे पूज्य पिताजी (बैरिस्टर साहब) और श्रद्धेया माता जी (बूजी) ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में बड़ी भावना के साथ इस विद्यालय की स्थापना की थी। सन् 1970 में प्रारंभ हुए इस विद्यालय का शिलान्यास परम पूज्य गुरू जी के कर कमलों से हुआ था। विद्यालय ने इन पचास वर्षों में जो यश प्राप्त किया है, उसमें शिक्षकों की तपस्या, प्रबंध तंत्र का समर्पण, समाज का विश्वास और भगवान की कृपा है। आगे भी यह संस्थान निरंतर प्रगति करता रहे और समाज को श्रेष्ठ नागरिक देता रहे, ऐसी मैं कामना व्यक्त करता हूँ।

वीरेन्द्र जीत सिंह
(संस्थापक तथा संरक्षक)
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

योगेन्द्र भार्गव
एम.टेक., (आई.आई.टी. दिल्ली)
अध्यक्ष
विद्यालय – प्रबन्ध – समिति

स्वस्ति – कामना

दीनदयाल विद्यालय अपनी जीवन- यात्रा के पचास स्वर्णिम वर्ष पूरे कर आगे की यात्रा पर चल पड़ा है। इस अवसर पर विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''नीराजन'' का स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित हो रहा है। इसके लिए मैं अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ। युग – दधीचि पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में श्रद्धेया बूजी और धर्मात्मा बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह के द्वारा स्थापित यह विद्यालय सनातन धर्म के मूलभूत तत्वों को देश की भावी पीढ़ी में संचरित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता आया है और आगे भी करता रहेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

विद्यार्थियों को अपने माता-पिता तथा शिक्षकों का सम्मान करना चाहिए और अपने राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि वे अपना विषय पढ़ने के साथ-साथ विद्यार्थियों को संस्कारवान भी बनाएँ।

पत्रिका के संपादक से यह जानकर भी मुझे अत्यंत हर्ष हुआ है कि इस स्वर्ण जयंती अंक में दीनदयाल विद्यालय से पढ़े हुए अनेक यशस्वी और प्रतिष्ठित पूर्व छात्रों के संस्मरण और संदेश प्रकाशित हो रहे हैं। विद्यालय के सभी पूर्व छात्र आत्मीयता के साथ संस्था से जुड़े रहें और उन्होंने जो कुछ भी विद्यालय से अच्छा सीखा है वह अपने छोटे भाइयों में भी संप्रेषित करें। विद्यालय का प्रबंधतंत्र शिक्षकों के योगक्षेम की यथावत् चिंता करता रहेगा।

नीतू सिंह (C.A.)

प्रबन्धक

पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

शुभकामना-संदेश

विद्यालय की स्वर्ण जयंती के अवसर पर वार्षिक पत्रिका नीराजन का स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित हो रहा है, यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ। मैं इसके लिए अपनी अनंत शुभकामनाएँ आप सभी लोगों को संप्रेषित करती हूँ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में श्रद्धेय बैरिस्टर साहब तथा ममतामयी बूजी के द्वारा संस्थापित इस विद्यालय के विद्यार्थियों ने देश-विदेश में बहुत प्रतिष्ठा और यश अर्जित किया है। वास्तव में दीनदयाल विद्यालय की पहचान आप सभी पूर्व छात्रों के कारण ही है। आप अपने व्यक्तित्व, अपने कर्म और आचरण से यह प्रमाणित करते हैं कि आपने एक उत्कृष्ट शिक्षण संस्थान से संस्कार युक्त शिक्षा प्राप्त की। विगत पचास वर्षों में विद्यालय निरंतर प्रगति करता रहा तथा समय के साथ तालमेल मिलाकर तकनीक और कला सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष करता रहा।

आप सभी समाज के सम्भ्रान्त जन विद्यालय के साथ आत्मीयता पूर्ण ढंग से जुड़े रहें और हम लोग दीनदयाल जी के ''चरैवेति'' के सिद्धांत के आधार पर सदैव ही आगे बढ़ते रहें।

50वाँ अंक

माननीय वीरेन्द्रजीत सिंह जी से वार्ता

नवयुवक समुत्कर्ष और निःश्रेयस दोनों को अपने जीवन का लक्ष्य बनाएँ

(दिनांक–7 दिसंबर 2023)

ब्रह्मलीन भागवत् पुरुष बैरिस्टर नरेंद्रजीत सिंह के यशस्वी सुपुत्र, ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामंडल के सभापति, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र संघ चालक तथा दीनदयाल विद्यालय के संरक्षक आदरणीय वीरेन्द्रजीत सिंह जी से बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस महत्त्वपूर्ण वार्ता के कुछ अंश साक्षात्कार के रूप में यहाँ पर प्रस्तुत करते हुए मैं अत्यंत आह्लादित हूँ।

डॉ. दुर्गेश वाजपेयी

आपके परिवार का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव कब और कैसे हुआ?

माननीय गोखले जी पिता जी को संघ की शाखा पर ले गए थे और उसके बाद से ही हमारे परिवार का निरंतर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव हो गया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय से आपके परिवार का आत्मीय संपर्क कब और कैसे हुआ ?

संभवतः सन् 1946 में पिता जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत संघ चालक घोषित हुए। उस समय भाउराव देवरस जी प्रांत प्रचारक थे और सह प्रांत प्रचारक दीनदयाल जी थे। सह प्रांत प्रचारक होने के नाते दीनदयाल जी का प्रवास होता था, उनका हमारे घर आना जाना होता था।

दीनदयाल विद्यालय की स्थापना का विचार कैसे आया? इसका क्या इतिहास है ?

दीनदयाल जी के निधन के पश्चात् माननीय भाउराव देवरस जी तथा हमारी माता जी (बूजी) ने परस्पर विचार विमर्श किया कि दीनदयाल जी की स्मृति में कुछ काम होना चाहिए। भाउराव जी का यह विचार था कि अगर दीनदयाल जी संघ के प्रचारक न बने होते तो वे एक बहुत अच्छे शिक्षक होते। इसलिए उनकी स्मृति में कोई शैक्षणिक प्रकल्प चलाया जाना चाहिए। उनके इस विचार को माता जी ने साकार किया।

जिस उद्देश्य को लेकर दीनदयाल विद्यालय की स्थापना हुई थी क्या हम उसमें सफल हो पाए हैं?– आपको क्या लगता है?

देखिए कहा तो यह जाता है कि दीनदयाल जी जैसे विद्यार्थियों का निर्माण करने के लिए दीनदयाल विद्यालय की स्थापना हुई थी, लेकिन विचार करके देखिए कि भगिनी निवेदिता ने भी विवेकानंद जी की स्मृति में अनेक विद्यालयों की स्थापना की, लेकिन क्या वे दूसरे विवेकानंद का निर्माण कर पाई? इसलिए एक अच्छे और महान उद्देश्य की दिशा में सभी लोगों को काम करना चाहिए। बहुत ऊँचे मानदंड बना लेने से वे प्रायः पूरे नहीं होते हैं। मान लीजिए दीनदयाल विद्यालय से दीनदयाल जी के जैसे लोग नहीं निकले या निकले, तो इस कसौटी पर खरा नहीं उतरने की दशा में हमको निराश नहीं होना चाहिए बल्कि यह देखना चाहिए यह कि हमारे यहाँ

के पढ़े हुए विद्यार्थी संस्कारयुक्त हैं या नहीं हैं। हमारे पूर्व छात्रों का जीवन कैसा है? वे अपने क्षेत्र में सफल, सम्मानित और चरित्रवान हैं या नहीं हैं? और अगर वे ऐसे हैं तो फिर यह मानना चाहिए कि हम अपने उद्देश्य में सफल हैं। अब दीनदयाल विद्यालय से दीनदयाल जी जैसे लोग नहीं निकले यह बात तो सभी लोग जानते हैं, तो भगिनी निवेदिता को भी विवेकानंद कहाँ मिले?

दीनदयाल विद्यालय अन्य विद्यालयों से किस प्रकार भिन्न है ?

ये विद्यालय शिशु मंदिर योजना की अगली कड़ी के रूप में स्थापित हुआ था। संस्कार देने की व्यवस्था इस विद्यालय में प्रारंभ से ही रही है और आज भी है। जब तक यहाँ पर संस्कार युक्त शिक्षा मिलती रहेगी तब तक इसकी विशेषता बनी रहेगी। लेकिन हम लोगों को इस बात पर भी अभिमान नहीं करना चाहिए कि संस्कार युक्त शिक्षा हमारा विद्यालय ही दे सकता है दूसरे विद्यालय नहीं दे सकते हैं।

आने वाले सैकड़ो वर्षों तक विद्यालय की गरिमा बनाए रखने के लिए किस डोमेन पर ज्यादा ध्यान देना होगा ?

(गंभीर चिंतन करते हुए कहते हैं) कोई भी सामाजिक कार्य चिरस्थाई नहीं हो सकता है, क्योंकि मनुष्य का जीवन भी चिरस्थाई नहीं है। इसका संचालन करने वाले व्यक्ति जब तक समर्पित रहेंगे, अच्छे काम करते रहेंगे, ''देश प्रथम है'' की भावना से भरे हुए रहेंगे, तब तक वह संस्था अच्छी रहेगी। बड़ी से बड़ी संस्थाओं में हम लोग देखते हैं कि उनकी स्थापनाओं के समय जिस प्रकार के अत्यंत सुयोग्य, समर्पित, उदार और चरित्रवान लोग रहे थे वैसे बाद में नहीं आए। इसलिए किसी भी संस्था के लिए यह कहना कि वह सैकड़ो वर्षों तक यथावत् चलती रहेगी, यह न तो संभव है न ही व्यावहारिक है। देखिए ये सभी कार्य मनुष्य निर्मित हैं, तो अगर मनुष्य में गिरावट आती है तो फिर संस्थानों में भी गिरावट आती है।

परम पूज्य माधवराव सदाशिवराव गोलवरकर जी से लेकर अभी तक के सर संघचालकों का आपके घर पर प्रवास होता आया है, और गुरु जी का तो प्राय: प्रवास होता रहता था। इस पर कुछ बताइए, कोई संस्मरण सुना सकते हैं?

दीनदयाल विद्यालय की स्थापना के समय हनुमान जी महाराज की मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा के लिए काशी से विद्वान आए थे। उस समय पूजनीय गुरु जी ने स्वयं कहा कि यजमान के तौर पर तो कोई गृहस्थ ही बैठ सकता है, तो मैं कैसे प्राण प्रतिष्ठा करूँ? अब यह समस्या पैदा हुई कि गुरु जी के इस प्रश्न का क्या उत्तर दिया जाए। हमारी माता जी से माननीय भाउराव जी ने कहा कि आप गुरु जी से बात कीजिए, वे आपसे बहुत स्नेह करते हैं, आपकी बात टालेंगे नहीं। तो बूजी ने पूजनीय गुरू जी से कहा कि आपको प्राण प्रतिष्ठा करनी है। गुरु जी बोले- ''अरे भाई मैं कैसे प्राण प्रतिष्ठा कर सकता हूँ?- मैं कोई गृहस्थ थोड़े ही हूँ।'' बूजी ने गुरू जी से कहा ''आप तो बहुत बड़े गृहस्थ हैं।'' गुरु जी बोले ''क्या मतलब?'' बूजी ने कहा-'' लाखों स्वयंसेवक आपके परिवार के हैं, तो आपसे बड़ा गृहस्थ कौन है?'' तो पूजनीय गुरूजी बहुत जोर से हँसे और बोले- ''अच्छा ठीक है, ठीक है।'' यह पूजनीय गुरू जी की कृपा थी कि उन्होंने उस निवेदन को स्वीकार किया। हम लोग इसको बहुत बड़ी अनुकंपा समझते हैं।

ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामंडल की स्थापना के विषय में कुछ बताइए। इस प्रकार की संस्था की आवश्यकता ही क्यों पड़ी?

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में आर्य समाज, राम कृष्ण मिशन, सनातन धर्म इत्यादि बहुत तरह की सांस्कृतिक संस्थाओं का उद्भव हुआ। उस समय सभी स्वदेशानुरागी व्यक्ति यह अनुभव करते थे कि हमारी संस्कृति पर अंग्रेजी सभ्यता का गहरा प्रभाव पड़ रहा है और हमको अपनी संस्कृति की रक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। धीरे-धीरे शिक्षा के माध्यम से हमारी संस्कृति में आमूल चूल परिवर्तन कर देने की तैयारी दिखाई दे रही थी। इसलिए इन सभी संस्थाओं में जो देश का विचार करने वाले लोग थे, वे सभी यह

सोचते थे कि हम इसके लिए क्या कर सकते हैं? लोकमान्य तिलक ने इस दिशा में काम किया। आर्य समाज ने अपने विद्यालय स्थापित किए। रामकृष्ण मिशन जैसी संस्था ने अनेक शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की। सनातन धर्म सभाओं ने विद्यालय स्थापित किये। इन सभी लोगों ने यह सोचा कि शिक्षा के माध्यम से ही मैकाले की शिक्षा पद्धति का मुकाबला किया जा सकता है। तो उस समय यह एक जन आंदोलन जैसा बन गया था राष्ट्रीय शिक्षा देने वाली संस्थाओं की स्थापना का। और जितनी भी धार्मिक संस्थाएँ थीं उन्होंने भी यह विचार किया कि अगर हमने शिक्षा पद्धति में सुधार नहीं किया, इस क्षेत्र में काम नहीं किया तो हमारा धर्म भी नहीं बचेगा। इसीलिए ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामंडल को भी अपने उद्देश्यों में धर्म प्रचार के साथ स्वास्थ्य, सेवा और शिक्षा को शामिल करना पड़ा। क्योंकि जब तक शिक्षा के माध्यम से समाज में प्रबोधन नहीं होगा तब तक वह अपने धर्म के महत्त्व को कैसे समझेंगे?

आगामी पच्चीस वर्षों में भारत महाशक्ति बने, इसमें छात्रों की क्या भूमिका होनी चाहिए?

मैं छात्रों से इतना ही कहना चाहता हूँ कि विकास के क्या पैमाने होने चाहिए, इस बात को वे समझें। हम समुत्कर्ष और नि:श्रेयस दोनों को अपने जीवन के लक्ष्य बनाएँ। केवल आर्थिक उन्नति ही नहीं हमारी अध्यात्मिक उन्नति भी होनी चाहिए। सच्चे अर्थों में मनुष्य कैसा होना चाहिए इस दिशा में उन्नति होनी चाहिए। नर से नारायण की यात्रा होनी चाहिए। यदि हम अपने देश को परम वैभव पर ले जाना चाहते हैं तो हमको यह ध्यान रखना होगा कि हमारी सरकार हमको केवल समुत्कर्ष दिला सकती है। समाज में संस्कार देने की स्थाई व्यवस्था चाहिए। प्रत्येक परिवार में अच्छे संस्कार देने की व्यवस्था होनी चाहिए और आगे आने वाली जो पीढ़ी है उसको भी सुसंस्कृत करना होगा। केवल आर्थिक उन्नति से देश का विकास नहीं होता है। 1947 में भी नहीं हुआ। हमको समुत्कर्ष और नि:श्रेयस दोनों प्राप्त करने हैं। आर्थिक विकास तो हम सरकार के साथ सहयोग करेंगे तो हो ही जाएगा। परंतु जैसा हम चाहते हैं कि समाज परिवर्तित हो जाए तो उसके लिए हमको विशेष प्रयास करने होंगे।

दीनदयाल विद्यालय के शिक्षक में क्या विशेषता होनी चाहिए?

(आँखें बंद करके कुछ गंभीर चिंतन करते हुए मुस्कुरा कर कहते हैं) मैं स्वयं शिक्षक नहीं रहा हूँ इसलिए अधिकार पूर्वक कुछ नहीं कह सकता। परंतु आपको एक घटना सुनाता हूँ। एक बार स्वामी विवेकानंद से पूछा गया कि आप अपने शिक्षक (गुरु) के विषय में हमको कुछ बताइए। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस के विषय में कहा कि उनकी कोई सांसारिक शिक्षा नहीं हुई है लेकिन उन्होंने मेरे जैसे कितने ही विवेकानंदों का निर्माण कर दिया है। अब इससे अधिक उनकी महानता के विषय में और मैं क्या कहूँ? तो देखना चाहिए कि शिक्षक की निर्मिति क्या है? उसके पढ़ाए हुए विद्यार्थियों ने समाज में क्या उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं? इसलिए अच्छा शिक्षक वही है जिसके पढ़ाए हुए विद्यार्थी समाज में कुछ विशेष उपलब्धि प्राप्त करें, उनका आचरण अच्छा हो और समाज में वह कुछ अच्छा प्रभाव डालते हों।

अच्छा शिक्षक वही है जिनके विचार आध्यात्मिक हों और जिसकी चिंतन प्रक्रिया भारतीय संस्कृति से संजीवनी शक्ति प्राप्त करती हो। शिक्षक के भीतर धैर्य होना चाहिए और उसका चित्त बिल्कुल प्रशांत होना चाहिए। शिक्षक चाणक्य की तरह हों जो चंद्रगुप्त का निर्माण कर सकें। वैसे आज भी समाज में दीनदयाल विद्यालय के शिक्षकों के प्रति विश्वास बना हुआ है।

अपने जन्म- स्थान, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा शिक्षा आदि के विषय में कुछ जानकारियाँ दीजिए ?

मेरा जन्म कश्मीर के श्रीनगर में हुआ था। प्राथमिक अनौपचारिक शिक्षा वहीं हुई, उसके बाद कानपुर में निवास के कारण गुरु नानक खत्री इंटर कॉलेज में कक्षा 6 से 12वीं तक हिंदी माध्यम से शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् विज्ञान स्नातक की शिक्षा अपने ही वी.एस.एस.डी. महाविद्यालय से प्राप्त की।

अपने प्रिय कुछ शिक्षकों के विषय में कुछ जानकारियाँ दीजिए, जिन्होंने आपको प्रभावित किया?

वी.एस.एस.डी. कॉलेज में अध्ययन के दौरान हिन्दी साहित्य और इतिहास के प्राध्यापक रहे डॉक्टर बी.डी. शुक्ल, भौतिक विज्ञान के प्राध्यापक डॉक्टर आर. एन. कपूर तथा गणित के प्राध्यापक श्री डी.डी. शुक्ल से मैं विशेष प्रभावित रहा। अन्य प्राध्यापक भी अपने-अपने विषय के विशेष विद्वान थे, खास बात यह है कि ये सभी प्राध्यापक विद्यार्थियों को उनके करियर के लिए सदैव मार्गदर्शन भी करते थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से आपका जुड़ाव कैसे हुआ? किन दायित्वों का निर्वहन किया, समाज सेवा की प्रेरणा किन लोगों से मिली?

बाल्यकाल से ही नियमित संघ की शाखाओं में जाने लगा था। परिवार के वरिष्ठ जनों के द्वारा प्राप्त संस्कारों ने इस ओर प्रवृत्त किया। बाल्य काल में गटनायक से लेकर आज क्षेत्र संघचालक के दायित्व तक सत्तर वर्षों के संघ जीवन में जो भी दायित्व मिले, उनका सफलतापूर्वक निर्वाह करने का प्रयास रहा। इस दिशा में मुख्य रूप से कानपुर में तथा तीन वर्ष लखनऊ में पूर्णकालिक प्रचारक रहकर भी कार्य किया।

श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामंडल के अनेक प्रकल्पों में आपका महत्वपूर्ण योगदान है। संस्था से जुड़े शिक्षण संस्थानों के विकास और संचालन में भी आपका बहुमूल्य योगदान रहता है। इस पर कुछ प्रकाश डालिए?

सभी प्रकल्पों का संचालन इनकी कार्य समितियों द्वारा होता है। इन समितियों को क्रियाशील बनाने का कार्य महामंडल की 51 सदस्यों की कार्यकारिणी तथा 11 पदाधिकारियों की समिति के द्वारा होता है। हमारे सभी पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित होते हैं। महामंडल द्वारा संचालित सभी विद्यालयों में विशिष्ट परंपराएँ विकसित की गई हैं। उन परंपराओं का संवर्धन भी अपेक्षित है। मेरा दायित्व उनके संरक्षण का है।

श्रीमान् जी! आप अपनी पसंद के भोजन, वस्त्रों तथा मनोरंजन के साधनों के बारे में भी कुछ बताइए ?

शुद्ध शाकाहारी और सात्विक आहार ही मुझे पसंद है। कर्णप्रिय, सुमधुर और भावों के अनुकूल संगीत प्रिय है। जबकि खेलकूद में भारतीय खेलों और क्रिकेट तथा बैडमिंटन में मेरी रुचि रही है।

आपकी हिन्दी साहित्य में भी अभिरुचि है। किन लेखकों और साहित्यकारों ने आपको विशेष प्रभावित किया?

युवाकाल में भगवती चरण वर्मा, शरदचंद्र चट्टोपाध्याय, रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा मुंशी प्रेमचंद के साहित्य ने विशेष प्रभावित किया। रामधारी सिंह दिनकर मेरे प्रिय कवि हैं।

कुछ तीर्थ स्थान और मंदिर जो आपको बहुत अच्छे लगते हों, उनके बारे में बताएँ, तथा आपके इष्ट देव कौन हैं?

वैष्णो देवी माता के दर्शन, अमरनाथ स्वामी के दर्शन, द्वारिकानाथ के दर्शन तथा अनेक ज्योतिर्लिंगों के दर्शन अविस्मरणीय हैं। माँ जगदंबा हैं, पिता शिव, भाई राम तथा सखा के रूप में श्रीकृष्ण को इष्ट देव मानता हूँ।

आपको कभी क्रोध करते नहीं देखा। सदैव प्रसन्नचित्त और सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहते हैं। इस आदर्श और सात्विक जीवन का रहस्य क्या है?

मैंने अपने पूजनीय पिताजी से सब कुछ प्राप्त किया है। उनके साथ रहने और उनका अनुकरण करने के कारण ही ऐसा है।

विद्यालय में आत्मीयता का वातावरण होना चाहिए

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र प्रचारक माननीय श्री राम जी का दीनदयाल विद्यालय में आना जाना होता ही रहता है। वह विद्यालय की चिंता करते हैं और संघ कार्य का विस्तार करते हैं। एक दिन माननीय श्री राम जी से बातचीत करने का अवसर मिला। प्रधानाचार्य माननीय श्री राकेश राम त्रिपाठी जी की प्रेरणा से मेरे द्वारा लिया गया यह साक्षात्कार यहाँ अविकल रूप में प्रस्तुत है।)

–डॉ. दुर्गेश वाजपेयी

दीनदयाल विद्यालय ने अपनी जीवन–यात्रा के पचास वर्ष पूरे कर लिए हैं। विद्यालय के विद्यार्थियों ने देश–विदेश में खूब प्रतिष्ठा अर्जित की है। आप विद्यालय के लिए क्या संदेश देना चाहेंगे ?

समाज में अनेक विद्यालय चल रहे हैं और वह सभी विद्यार्थियों के विकास के लिए काम कर रहे हैं। लेकिन दीनदयाल विद्यालय विवेकानंद जी के सपनों को साकार करता हुआ दिखाई देता है। उनका कहना था कि शिक्षा केवल जीविकोपार्जन के लिए नहीं बल्कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए होनी चाहिए। दीनदयाल विद्यालय के विद्यार्थी जैसा कि अभी आपने बताया कि ''देश–विदेश में बहुत प्रतिष्ठा अर्जित कर रहे हैं'' तो यह इस प्रकार की शिक्षा पद्धति का ही प्रभाव है। और मेरा कहना है कि दीनदयाल विद्यालय के विद्यार्थी स्वामी विवेकानंद और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सपनों को साकार करें।

दीनदयाल जी के व्यक्तित्व की क्या बात आपको सर्वाधिक प्रभावित करती है ?

दीनदयाल जी के जीवन की सहजता और सरलता अतुलनीय थी और वह सर्वाधिक प्रभावित करती है। दीनदयाल जी एक बार साइकिल चला रहे थे और साइकिल चलाते हुए उनका पैर सुन्न हो गया। उनके पैरों के जूते कहीं गिर गए और यह उनको पता ही नहीं चला। संकटा प्रसाद जी इसके बारे में बताते हैं कि उनकी आँखों में आँसू थे। दीनदयाल जी का जीवन बहुत सादगी से भरा हुआ था। ''प्रतिकूल परिस्थिति में भी संकल्प की दृढ़ इच्छाशक्ति का होना'' यह दीनदयाल जी के व्यक्तित्व की दूसरी प्रमुख विशेषता है जो प्रभावित करती है। जब हम लोग उनके जीवन के विषय में पढ़ते हैं तो पता चलता है कि बचपन से ही उनके जीवन में बड़ी प्रतिकूलताएँ और संकट थे, लेकिन इतनी प्रतिकूलताओं के बीच रहने वाला बालक भी इतने बड़े संकल्प को लेकर चला और इतना बड़ा काम किया यह बहुत प्रेरणादायक है।

बिल्कुल इसी तरह के विचार माननीय बैरिस्टर साहब के इस विद्यालय को प्रारंभ करने के समय में थे। अगला प्रश्न आपसे यह है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में हम लोग एक दूसरे को ''भाई साहब'' कहते हैं। इसके पीछे क्या भावना है ?

हम सभी लोग परस्पर भ्रातृ– भाव से जुड़े हुए हैं। और केवल संघ में ही नहीं संघ के बाहर भी जो लोग हैं उनके प्रति भी हमारा भ्रातृत्व

का भाव रहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को भारत माता का पुत्र माने और इस नाते हम सभी परस्पर भाई हैं। यह भावना राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की इसके पीछे है।

माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में संघ का क्या विचार है ?

(हँसते हुए) ! इसके विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता।

आज के समय में मोबाइल फोन और इंटरनेट सर्वसुलभ होने की वजह से बच्चों को सुसंस्कृत करना एक चुनौतीपूर्ण काम है। इस पर आप क्या कहना चाहेंगे ?

बिल्कुल ठीक है। लेकिन यह कोई बड़ी चुनौती भी नहीं है। चुनौती विद्यार्थियों के लिए नहीं है, चुनौती अभिभावकों के लिए है। हम सभी लोग अपने मूल काम से कहीं न कहीं भटके हैं। केवल एक बात परिवारों में बच्चों को बचपन से अगर सिखाई जाए कि ''आध्यात्मिकता के आधार पर आधुनिकता को स्वीकार करना'' तो कोई भी चीज हमारे लिए बुरी नहीं है। इसलिए आज के समय की जरूरत के हिसाब से इंटरनेट और मोबाइल का उपयोग होना ही चाहिए, लेकिन विवेकपूर्ण ढंग से। इसके लिए हम लोगों को पहले स्वयं को उस हिसाब से ढालना होगा। अभिभावक अपने समय का प्रबंधन ठीक रखें तो यह कोई चुनौती नहीं है।

इस विद्यालय का शिलान्यास परम पूज्य गोलवलकर जी के कर कमलों से माननीय भाउराव देवरस जी की प्रेरणा से हुआ था। ऐसे विद्यालयों के सम्बन्ध में संघ का क्या विचार है ?

संघ का ही विचार था तभी इस विद्यालय की नींव परम पूज्य गुरु जी ने और भाउराव जी ने रखी थी। हम लोग चाहेंगे कि इस प्रकार के और भी विद्यालय खुलें। हम लोगों को तमाम जगहों पर बहुत अच्छी तरीके से काम करते हुए लोग मिलते हैं और जब वह यह बताते हैं कि मैं दीनदयाल विद्यालय से पढ़ा हुआ हूँ तो बहुत गर्व की अनुभूति होती है। आत्मीयता की अनुभूति होती है। और यह आत्मीयता की भावना संघ की मूल भावना है, दीनदयाल विद्यालय की भी यही भावना है। इस प्रकार की आत्मीयता की अनुभूति पूरा समाज भी करें।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के मन में हम लोग राष्ट्रभक्ति का बीज किस प्रकार बो सकते हैं ?

हमको बच्चों को प्रेरणादायक कहानियाँ सुनानी चाहिए। ऐसे महापुरुषों की कथाएँ जो उनके जीवन को प्रभावित करें, प्रेरित करें। महापुरुषों की जीवनी बच्चों के मन को बहुत प्रभावित करती हैं। बच्चे या तो देखकर सीखते हैं या सुनकर या पढ़कर। पहले हम लोग घरों में महापुरुषों के, क्रांतिकारियों के, समाजसेवियों के चित्र लगाते थे। उन चित्रों से प्रेरणा मिलती थी कि ऐसा करना चाहिए। हमको बच्चों को अधिक से अधिक पौराणिक, आध्यात्मिक और महापुरुषों की कथाएँ सुनानी चाहिए।

हमारे विद्यालय का उद्देश्य भी व्यक्ति निर्माण करना है, और संघ का उद्देश्य भी व्यक्ति निर्माण करना है। आजकल समाज में बहुत नैतिक पतन हो रहा है। ऐसी स्थिति में हम लोगों को किस प्रकार से कार्य करना चाहिए ?

ऐसा नहीं है कि बहुत नैतिक पतन हो गया है। सूचना का तंत्र बहुत तेज हो गया है, इसलिए हमें तत्काल सूचनाएँ मिल जाती हैं। पहले हमको सूचनाएँ नहीं मिल पाती थीं या देर से मिलती थीं। अगर वास्तव में समाज में नैतिक पतन हो गया होता तो आज भी जो अच्छे लोग हमको दिखाई देते हैं या जो अच्छे कार्य हो रहे हैं वह न दिखाई देता। हमको अच्छी चीजों को ज्यादा से ज्यादा फैलाना चाहिए। हाँ यह जरूर है कि समाज में नकारात्मकता का ज्यादा फैलाव हो गया है। घर परिवारों में, समाज में सब जगह नकारात्मक चर्चाएँ ज्यादा होती हैं। इनको रोककर हमको सकारात्मक चर्चाएँ करनी चाहिए तथा ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक चीजों को फैलाना चाहिए।

विद्यालय के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

भारतीय संस्कृति में पहली गुरु माँ होती है और उसके बाद विद्यालय के शिक्षक होते हैं। आज भी बच्चों के मानस पटल पर गुरु का स्थान सम्मानजनक है और वह जो भी बात कहते हैं उसका उनके ऊपर असर पड़ता है। हम सभी लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े। पहले हम सभी लोगों के परिवार कहीं न कहीं कांग्रेस से जुड़े हुए थे। फिर हमारे गुरु लोगों ने हमको यह प्रेरणा दी कि हम संघ से जुड़ें, राम जन्म भूमि आंदोलन से जुड़े और इस प्रकार से परिवर्तन आया। गुरु के प्रति शिष्य की अपार श्रद्धा होती है, इसलिए शिक्षकों का कर्तव्य है कि वह अपने विद्यार्थियों से बहुत आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध रखें। शिक्षक यह भावना रखें कि यह मेरा ही बालक है, और यह पढ़ लिखकर हमसे भी कहीं ज्यादा योग्य बनाकर निकले। शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति आत्मीयता का भाव दिखाएँ। परस्पर के बहुत अच्छे सम्बन्ध हों और इस प्रकार से शिक्षक का, विद्यार्थी का और संस्था का सभी का यश खूब बढ़ता है।

!! शिवा जी का शौर्य !!

साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धारि
सरजा सिवा जी जंग जीतन चलत हैं।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के
नदी नद मद गैबरन के रलत हैं।
ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल,
गजन की ठैलपैल सैल उलसत हैं।
तारा सों तरनि धूरि धारा में लगत जिमि
थारा पर पारा पारावार यों हलत हैं।

.... महाकवि भूषण

वयं राष्ट्रे जागृयां पुरोहिता :

विद्यालय के **प्रधानाचार्य श्री राकेश त्रिपाठी जी** विद्यालय के हनुमान मंदिर में प्रतिदिन सदाचार वेला आयोजित करते हैं, और कुछ महत्त्वपूर्ण, आध्यात्मिक और प्रेरक विषय रखते हैं। एक वेला में ''वयं राष्ट्रे जागृयां पुरोहिता :'' विषय पर रखे गये विचार यहाँ प्रस्तुत हैं –

पुरोहित उसको कहते हैं जो संपूर्ण राष्ट्र के कल्याण की भावना रखते हुए नेतृत्व करता है। राजा के पुरोहित होते थे, कोई भी समस्या राज्य में आती थी तो वह राजा को सलाह देते थे। एक तरह से वह राजा के मंत्री होते थे, जैसे कि चाणक्य, वह भी मंत्री थे और पुरोहित भी थे । उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया राष्ट्र के लिए। चाणक्य ने चंद्रगुप्त के रूप में समाज से एक सामान्य बालक को चुनकर उसको विदेशी आतताई के विरुद्ध सशक्त रूप से खड़ा कर दिया। एक सम्राट का मस्तिष्क और चित्त हमेशा शांत रहना चाहिए, एक अच्छा सम्राट सभी की मदद करता है। चाणक्य ने चंद्रगुप्त का क्रमश : निर्माण किया, उसको सँवारा। नीतियाँ चाणक्य की होती थीं और चंद्रगुप्त उसका परिपालन करते थे। जितनी भी कुशलताएँ और दक्षताएँ हो सकती हैं उनका चाणक्य ने चंद्रगुप्त के भीतर आरोपण किया। एक समय आया जब चंद्रगुप्त सम्राट बने, चंद्रगुप्त राजा नहीं सम्राट थे।

सच्चा सम्राट वही होता है जो समाज के लिए, देश के लिए जीता है सच्चा मनुष्य भी वही होता है जो समाज के लिए जीता है। ''यही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे, वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे''।

सामान्य मनुष्य यही सोचता है कि हमारे बच्चे अच्छे से पढ़ें, उनके पास धन हो उनका विवाह अच्छे परिवार में हो। देश दुनिया में क्या हो रहा है इसकी उनको परवाह नहीं होती, जब बड़ी समस्या उसके पास आती हैं तब वह पहचान पाता है।

लोग अपने घरों की सफाई करते हैं और कूड़ा सड़क पर फेंक देते हैं और यह सोचते हैं कि मैं बहुत साफ सुथरा हो गया। बाहर फेंका हुआ कूड़ा भी तो आपको ही बीमार करेगा। अगर हमारे आसपास चारों तरफ कर गुंडे और बदमाश होंगे तो हम कितने भी अच्छे हों, सुरक्षित कैसे रह पायेंगे?

अगर हमारा पूरा समाज भी हमारे साथ अच्छा हो जाए तो सच्चे अर्थों में यही जागरण है, यही राष्ट्र का जागरण है। एक शिक्षक के रूप में हमारा यह धर्म भी है कि हम अपने विद्यार्थियों को यह भी बताएँ कि देश और दुनिया में क्या हो रहा है? समाज को कैसा होना चाहिए, हमको किस प्रकार से रहना चाहिए।

समय के साथ अगर हमने अपना विकास नहीं किया तो हम पीछे छूट जायेंगे। आपको कौन सा काम करना है और किस गति से करना है यह भी महत्त्वपूर्ण है। दीनदयाल जी को लोग जब देखते थे तो यह समझते थे कि ये बहुत साधारण व्यक्ति हैं, लेकिन जैसे ही उनसे बात करते थे तो उन्हें उनकी असाधारणता का बोध हो जाता था।

जब श्री नरेंद्र मोदी जी भारत के प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने दुनिया भर में भारत की संस्कृति का प्रचार प्रसार किया।

बच्चों! हमको अच्छा व्यक्ति बनना चाहिए तभी हम राष्ट्र का जागरण कर सकेंगे। सबसे पहले हमको अपने परिवार और संबंधियों के बीच आदर्श व्यक्ति बनना चाहिए। हमारा स्वभाव बहुत अच्छा होना चाहिए, हमको विनम्र होना चाहिए। परिवारों में बालिकाएँ बहुत सेवाभावी होती हैं, उनको अधिक स्नेह दिया जाना चाहिए।

परम्परा का प्रवाह

किसी भी शिक्षण संस्थान के लिए पचास वर्षों तक सफलतापूर्वक यात्रा पूरी कर लेना एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। हम सभी पुराने लोग दीनदयाल विद्यालय की स्थापना का उद्देश्य और उसका इतिहास ठीक प्रकार से जानते ही हैं इसलिए बार-बार उसको क्या ही दोहराना।

दीनदयाल विद्यालय से पढ़े हुए विद्यार्थियों ने विश्व भर में प्रतिष्ठा अर्जित की है। इस संस्थान से पढ़कर निकले हुए विद्यार्थी बड़े-बड़े वैज्ञानिक, अभियंता, चिकित्सक, अधिवक्ता, न्यायाधीश, व्यापारी, शिक्षक तथा पत्रकार सभी तो हैं। यह विद्यालय अन्य सभी विद्यालयों से कुछ कारणों से विशिष्ट रहा है, उनमें से एक कारण तो यह है कि हमारे यहाँ गुरु-शिष्य परंपरा का निर्वाह हुआ।

दीनदयाल विद्यालय के विद्यार्थी जहाँ एक ओर व्यावसायिक रूप से सफल हैं वहीं दूसरी ओर वे अपने आचरण और व्यवहार के कारण भी समाज में सम्मान पाते हैं। वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना ही नहीं होता, बल्कि सच्चे, संवेदनशील, परोपकारी और समझदार मनुष्य का निर्माण करना होता है। दीनदयाल विद्यालय के प्रारंभिक शिक्षकों में ये विशेषताएँ विशेष रूप से थीं। यही कारण है कि ये सभी पूर्व छात्र परस्पर मैत्री भाव रखते हैं तथा एक दूसरे का ही सहयोग नहीं करते बल्कि आवश्यकतानुसार समाज के किसी भी सुपात्र व्यक्ति की सेवा करते हैं। दीनदयाल विद्यालय के विद्यार्थी शिक्षकों का बहुत सम्मान करने वाले रहे हैं और शिक्षक भी अपने विद्यार्थियों से स्नेह करने वाले रहे हैं। इसलिए जब कभी भी पूर्व छात्रों का समागम होता है तो विद्यार्थियों और अध्यापकों का यह मिलन देखने लायक होता है। ''सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्य करवावहै''-कृष्ण यजुर्वेद तैत्तरीय उपनिषद का यह मंत्र ही हम लोगों की गुरु- शिष्य परंपरा का संपोषक है।

दीनदयाल विद्यालय के संस्थापक श्रद्धेय बैरिस्टर नरेंद्रजीत सिंह जी परम भागवत् पुरुष थे। यह मेरा सौभाग्य है कि मैंने विद्यार्थी जीवन में उनके दर्शन किए हैं, उनके महत्त्वपूर्ण अमृत वचनों का श्रवण किया है और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का शुभ अवसर मिला है। यह भी मेरा सौभाग्य है कि मैं इस विद्यालय का विद्यार्थी रहा हूँ और आज मैं इस विद्यालय में शिक्षक हूँ। मेरे जैसे अत्यंत साधारण शिक्षक को अपने श्रेष्ठ शिक्षकों और दीनदयाल विद्यालय की प्रबंध समिति के विद्वान् और भगवत् परायण सत् पुरुषों से जो भी सद्विचार और सद्चिंतन प्राप्त हुआ है उसको मैं निरंतर अगली पीढ़ी तक संचरित करता रहूँ, यह मेरा धर्म है।

दीनदयाल विद्यालय माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त विशिष्ट कोटि का विद्यालय था। वर्ष 2014 में हमारे विद्यालय ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त कर ली। अब अपना विद्यालय समय के साथ अपनी चाल को मिलते हुए नवीन और आवश्यक परिवर्तनों को अंगीकार करता जा रहा है। अब हमारे विद्यालय में विज्ञान के साथ कला और

वाणिज्य के संकाय भी हैं। बालकों के साथ बालिकाएँ भी शिक्षा प्राप्त करती हैं तथा बालकों के छात्रवास की ही तरह एक अलग स्थान पर बालिकाओं का छात्रवास भी संचालित है। विद्यालय जो पहले कक्षा षष्ठ से द्वादश तक होता था अब वह प्राथमिक कक्षाओं से लेकर इंटरमीडिएट तक सफलतापूर्वक संचालित है। विद्यालय के भवन का भी भव्य और आकर्षक विस्तार हुआ है। विद्यालय में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी हो गया है लेकिन विद्यालय में होने वाला प्रात: स्मरण, पूजा और प्रार्थनाएँ उसी प्रकार से होती हैं। कानपुर में ही तात्यागंज में दीनदयाल विद्यालय की एक और शाखा स्थापित हो चुकी है और वह भी सुचारू रूप से संचालित है।

दीनदयाल विद्यालय के नवीन प्रधानाचार्य श्री राकेश त्रिपाठी जी मुंबई के एक बड़े विद्यालय से पधारे हैं। आप गणित विषय के श्रेष्ठ शिक्षक हैं। प्रधानाचार्य श्री राकेश त्रिपाठी जी ने दीनदयाल विद्यालय में नई ऊर्जा का संचार किया है। आप एक धार्मिक और आध्यात्मिक सत्पुरुष हैं। अत्यंत संयमित जीवन जीने वाले राकेश जी अत्यंत मृदुभाषी, विनम्र, सुहृद तथा बहुत अधिक परिश्रमी हैं। दीनदयाल विद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्रीमान् योगेंद्र भार्गव जी जो एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में प्रबंधक थे। अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं और विद्यालय की सदैव चिंता करते हैं। विद्यालय की प्रबंधक श्रीमती नीतू सिंह जी के ही प्रयासों का प्रतिफल है कि बदलते दौर में दीनदयाल विद्यालय ने बहुत तेजी के साथ प्रगति करते हुए अपनी चमक बिखेरी है।

''नीराजन'' के इस स्वर्ण जयंती अंक में सन् 1975 से लेकर 2023 तक के जितने भी बैच हैं, लगभग सभी से प्रतिनिधित्व करते हुए पूर्व छात्रों के कोई न कोई लेख, संस्मरण अथवा संदेश इस पत्रिका में सँजोए गए हैं। यह महत्त्वपूर्ण कार्य आचार्य श्री दीपक जी के सहयोग से ही संभव हो पाया है। मैं आचार्य श्री दीपक जी के प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ। आचार्य जी अपने विद्यार्थियों का यथासंभव सहयोग ही किया करते हैं। किसी के भी सुख-दुख में सदैव भागीदार होना यह उनकी विशेषता है।

''नीराजन'' के इस स्वर्ण जयंती अंक का हमने ''ई संस्करण'' भी उपलब्ध करवाया है। हमारे जो साथी विदेशों में हैं या देश में कहीं सुदूर पर अवस्थित हैं, यदि उन तक ''नीराजन'' की स्थूल प्रति नहीं पहुँच पाती है तो वे इसके ''ई संस्करण'' से लाभान्वित होंगे।

कोई भी व्यक्ति अथवा संस्थान अपने सद्गुणों के कारण ही समाज में सम्मान पाता है। यदि अग्नि से दहकता खत्म हो जाए, जल से उसकी शीतलता खत्म हो जाए, प्रसूनों से उनकी सुगंध चली जाए तो वे अपना प्रभाव और आकर्षण खो देते हैं। इसी प्रकार से हम सभी लोगों को उन सभी श्रेष्ठताओं की ओर निरंतर अग्रसर होते रहना चाहिए जो मनुष्य जीवन को सार्थकता प्रदान करती हैं और इस सम्बन्ध में भगवत् गीता एक अप्रतिम ग्रंथ है।

डॉ. दुर्गेश वाजपेयी

From Editor's Desk

We are pleased to bring out the Golden Jubilee Issue of 'Neerajan' the school Magzine. The past few months have been very evenful started with inaugural event of the Golden Jubilee celebration during September 25, 2021 - 13th July 2022 Guru Poornima 'Tap Ka Vandan' Celebration. This issue presents the glimpses of all the important exhilarating events since 1970 and highlights the contribution of the individuals and teams, belonging to Pt. Deen Dayal Upadhyaya Sanatan Dharm Vidyalaya. In this issue, while we have been able to give decent coverage to most of the important events at our school, we have been constrained by the limited information on the positive contribution made by individuals, teams and departments. We have yet to see the enthusiasm among the larger section of community.

I would fervently appeal to you all to come forward and share with the editorial team your stories, articles and help us to showcase the same to the larger community. We must know, celebrate and rejoice each other's achievements and success. You are also welcomed to contribute in any other way that you deem fit to sustain and improve this 'Neerajan'.

We have ended one more eventful and memorable academic year and preparing for a new one. I take this opportunity to wish you and may the next year be even more special for you and your family.

Best wishes for ensuing session.

Education does not merely mean academic education and even that appears incomplete to me unless it includes culture and character building.

..... Pt. Deen Dayal Upadhyaya

Mrs. Rekha Nigam
English Department

50वाँ अंक

शुभकामना–संदेश

न्यायमूर्ति सुरेश कुमार गुप्त
(पूर्व न्यायमूर्ति) उच्च न्यायालय
प्रयागराज

JUDGE HIGH COURT AT ALLAHABAD

लखनऊ खंडपीठ
लखनऊ

यह अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव का विषय है कि विद्यालय की वार्षिक पत्रिका "नीराजन" स्वर्णिम ५० वर्ष पूर्ण कर रही है तथा इस अवसर पर स्वर्ण जयंती अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह अत्यन्त सौभाग्य का विषय है की मुझे प्रथम बैच में शिक्षा गृहण करने का अवसर मिला था। इस शिक्षण संस्थान के विद्वान् एवं समर्पित शिक्षकों से प्राप्त ज्ञान एवं संस्कार के फलस्वरुप हम सभी लोगों के जीवन को नयी दिशा प्राप्त हुई।

मैं "नीराजन" पत्रिका के स्वर्ण जयंती प्रकाशन हेतु आपको एवं संपूर्ण विद्यालय परिवार तथा छात्र एवं छत्राओ को हार्दिक बधाई देता हूँ। विद्यालय इसी प्रकार निरंतर प्रगति करता रहे। मेरी पुनः अनंत शुभकामनाएँ।

सेवा में,
श्री राकेश राम त्रिपाठी
प्रधानाचार्य,
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
नवाबगंज, कानपुर

18/08/2023
(सुरेश कुमार गुप्त)

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

शुभकामना-संदेश

हम सभी के लिए अत्यधिक हर्ष का विषय है कि हमारे विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''नीराजन'' का स्वर्ण जयंती (50वाँ) अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

हम सभी का यह का यह सौभाग्य रहा है कि हमने इतने अच्छे शिक्षण संस्थान से विद्या प्राप्त की है। इसके विद्वान एवं समर्पित शिक्षकों से प्राप्त जीवन मूल्यों और अनुशासन ने हमारे जीवन को नई दिशा दी है। **''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर:''** को चरितार्थ करते हुए हमारे शिक्षकों ने हम सबको जीवन में निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। विशाल कक्ष में स्थापित हनुमान जी की प्रतिमा हम सबके लिए सदैव प्रेरणा स्त्रोत रही है।

नवीन काल में उभरते शक्तिशाली भारत के समाज को ऐसे विद्यालयों की आवश्यकता आज बहुत है। हमारा विद्यालय भविष्य में अधिकाधिक विद्यालयों को राष्ट्र निर्माण हेतु प्रेरित करता रहेगा, ऐसी प्रभु से कामना करता हूँ। जय हिन्द।

16.8.23

रंजन खन्ना (1988 Batch of 12th Class)
अपर महानिदेशक (निर्यात)

सत्यमेव जयते

50वाँ अंक

शुभकामना-संदेश

Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20 भारत 2023 INDIA

Urban Development & Urban Housing Department
Government of Gujarat
Block No. 14, 9th Floor, Sardar Patel Bhavan
Sachivalaya, Sector-10/A,
Gandhinagar-382 010, Gujrat (India).
E-mail : securban@gujarat.gov.in

Date : **14/08/2023**

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता है कि अपना विद्यालय, विद्यालय की वार्षिक पत्रिका "नीरांजन" का स्वर्ण जयंती अंक निकाल रहा है।

प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ पचास वर्षों का समय पूरा करना एक गौरवपूर्ण उपलब्धि होती है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे एक बहुत अच्छे शिक्षण संस्थान में, समर्पित एवं विद्वान शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला।

जीवन के हर पड़ाव पर विद्यालय में मिली शिक्षा, सामाजिक जीवन के उच्च आदर्शों एवं अनुशासन ने मुझे एक नई ऊर्जा प्रदान की है और निरंतर आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया है।

हमारा विद्यालय हमेशा प्रगति करता रहे और राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित नागरिकों का निर्माण करता रहे ऐसी मेरी शुभकामनाएं।

(अश्विनी कुमार)
प्रमुख सचिव
शहरी विकास एवं शहरी आवास विभाग
गुजरात सरकार

प्रति,
प्रधानाचार्य महोदय,
पं. दीनदयाल उपाध्याय अपन धर्म विद्यालय,
कानपुर

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

50वाँ अंक

शुभकामना-संदेश

पत्रांक 177/दि 12.08.2023

संतोष कुमार मल्ल
भा.प्र.से.
प्रधान सचिव
सूचना प्रावेधिकी विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

द्वितीय तल, टेक्नोलॉजी भवन
बेली रोड, पटना-800 015
फोन : 0612 – 2547 315
फैक्स : 0612 – 2547 316
ई-मेल : prsec_it@bihar.gov.in

यह अत्यन्त प्रसन्नता एवं गर्व का विषय है कि ''**नीराजन**'' का स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित हो रहा है। मैं इसके लिए आपको एवं पूरे विद्यालय परिवार को बधाई देता हूँ।

1970 से प्रारंभ विद्यालय की गौरवमयी यात्रा में वर्ष 1983 से मुझे सहभागी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 1983 से 1990 के सात वर्ष स्मृति पटल पर आज भी स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं तथा मेरे व्यक्तित्व को उस समय गढ़ने के अतिरिक्त आज भी प्रभावित, परिमार्जित, उद्वेलित एवं स्पंदित करते रहते हैं । इसे मैं ईश-कृपा मानता हूँ कि अत्यन्त विद्वान प्रधानाचार्य एवं आचार्यगण का परम समर्पण भाव के साथ स्नेहसिक्त मार्गदर्शन मिला ।

जीवन की मेरी प्रथम मौलिक साहित्यिक अभिव्यक्ति 'नीराजन' के वर्ष 1985-86 में प्रकाशित अंक में ही हुई थी और इस कारण से भी 'नीराजन' का मेरे हृदय में विशेष स्थान सदैव बना रहेगा । मैं पुनः स्वर्ण जयंती अंक के प्रकाशन हेतु आपको बधाई देता हूँ तथा मारुतिनन्दन श्री हनुमान जी से प्रार्थना करता हूँ कि विद्यालय निरंतर प्रगति करता रहे और इसकी ख्याति दिग्-दिगन्त तक बनी रहे।

सेवा में,
श्री राकेश राम त्रिपाठी
प्रधानाचार्य,
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
नवाबगंज, कानपुर

संतोष 12/8/23
(संतोष कुमार मल्ल)

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

शुभकामना-संदेश

प्रिय मित्र दुर्गेश जी।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि अपना विद्यालय जीवन के पचास वर्ष पूरे कर रहा है और इस अवसर पर विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''**नीराजन**'' का स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित हो रहा है।

दीनदयाल विद्यालय का इतिहास स्वर्णिम रहा है। यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में श्रद्धेय बैरिस्टर साहब तथा बूजी के द्वारा स्थापित हुआ था। श्रीमान् ओम शंकर जी जैसे विद्वान प्रतिभाशाली और समर्पित प्रधानाचार्य तथा श्री प्रकाश जी, राजेश जी, और श्री दीपक जी जैसे समर्पित शिक्षकों की बदौलत दीनदयाल विद्यालय के विद्यार्थियों ने देश-विदेश में बड़ी प्रतिष्ठा अर्जित की है।

विद्यालय इसी प्रकार से सदैव प्रगति करता रहे, इसके लिए मैं अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

सिद्धार्थ सिंह
अपर जिला जज,
अलीगढ़

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता है कि अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''**नीराजन**'' का स्वर्ण जयंती अंक निकल रहा है।

प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ पचास वर्षों का समय पूरा करना एक गौरवपूर्ण उपलब्धि होती है। मैं अपना यह सौभाग्य समझता हूं कि मुझे एक बहुत अच्छे शिक्षण संस्थान में और बहुत समर्पित तथा विद्वान शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला था। विद्यालय निरंतर प्रगति करता रहे, मैं इस प्रकार की शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

तरूण सक्सेना
जिला न्यायाधीश,
रायबरेली

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

सत्यमेव जयते

50 वाँ अंक

शुभकामना-संदेश

Azadi Ka Amrit Mahotsav

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता है कि अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''नीराजन'' का स्वर्ण जयन्ती अंक निकल रहा है।

प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ पचास वर्षों का समय पूरा करना एक गौरवपूर्ण उपलब्धि होती है। मैं अपना यह सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे एक बहुत अच्छे शिक्षण संस्थान में और बहुत समर्पित तथा विद्वान शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला था। विद्यालय निरन्तर प्रगति करता रहे। मैं इस प्रकार की शुभकामनायें व्यक्त करता हूँ।

राहुल मिठास
अपर पुलिस उपायुक्त कानून एवं व्यवस्था
कमिश्नरेट, कानपुर नगर

सेवा में,
श्री राकेश राम त्रिपाठी
प्रधानाचार्य,
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय
नवाबगंज, कानपुर

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

50वाँ अंक

शुभकामना–संदेश

आदरणीय प्रधानाचार्य जी,

सादर प्रणाम,

यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि ''**नीराजन**'' का स्वर्ण जयंती अंक निकल रहा है। किसी भी विद्यालय की पत्रिका उसके छात्रों की प्रतिभा और संस्कारों की दर्पण होती है। मुझे पूरा विश्वास है कि नीराजन का स्वर्ण जयंती अंक एक संगृहणीय अंक होगा। इस सुअवसर पर मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त करने से रोक नहीं पा रहा हूँ।

बड़े भाग मानुष तन पावा
सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन्हिं गावा।।

और फिर इस मनुष्य जन्म में परमात्मा ने हमारे माता पिता को हमें इस विद्यालय में शिक्षा एवं संस्कार हेतु भेजने के लिए प्रेरित किया।

विद्यालय में प्रदत्त संस्कारों और अनुशासन की वजह से हम सभी अपने अपने कार्य क्षेत्र में शीर्ष स्थान पर रहकर राष्ट्र की सेवा कर रहे हैं।

श्रद्धेया बूजी एवं परम श्रद्धेय बैरिस्टर साहब ने जिन संकल्पों और उम्मीद के साथ इस विद्यालय की स्थापना की थी, हमारा कर्तव्य है कि हम उनके सपनों को साकार करें।

समस्त विद्यालय परिवार को शुभकामनाओं के साथ।

डॉ. अमित गुप्ता
न्यूरोसर्जन, कानपुर
(द्वादश, 1989 बैच)

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि दीनदयाल विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''**नीराजन**'' का स्वर्ण जयन्ती अंक प्रकाशित हो रहा है।

हस्त लिखित पत्रिका से प्रारम्भ कर पत्रिका का स्वर्ण जयन्ती अंक प्रकाशित करना किसी भी संस्था के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि है।

एक छोटे से कमरे से प्रारम्भ होकर पचास वर्ष का समय प्रतिष्ठा एवं सम्मान के साथ पूर्ण करना, विद्यालय के विद्वान एवं समर्पित शिक्षकों द्वारा वर्तमान समय में, प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, संस्कार युक्त शिक्षा प्रदान करना वास्तव में गर्व का विषय है।

प्रथम बैच का छात्र होने के कारण इतने लम्बे समय के बाद भी विद्यालय द्वारा सम्मान प्राप्त होना स्वयं को अभिभूत कर देता है। विद्यालय निरन्तर प्रगति करता रहे और भविष्य में नये कीर्तिमान स्थापित करता रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

विनय अजमानी
1975 बैच

50वाँ अंक

शुभकामना-संदेश

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका नीराजन के स्वर्ण जयंती अंक के प्रकाशन की सूचना पाकर मन प्रफुल्लित है। अतीत की अनेक स्मृतियाँ मानस पटल पर अंकित हैं और ऐसा लग रहा है कि अभी कुछ वर्ष पहले ही रजत जयंती अंक विद्यालय में पढ़ने को मिला था।

सदुद्देश्य से, नियम पूर्वक, आधी शताब्दी का समय प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ पूरा करने के इस अवसर पर मैं विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों और अन्य सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे अत्यंत उत्कृष्ट विद्यालय में समर्पित और विद्वान शिक्षकों द्वारा न केवल विभिन्न विषयों की शिक्षा प्राप्त हुई अपितु जीवन दृष्टि का भी सम्यक् मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। विद्यालय के निरंतर प्रगति की शुभकामनाएं देते हुए आशा करता हूँ कि प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल और प्रबल आत्मविश्वास से युक्त बौद्धिक क्षमता निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः शक्ति से ओतप्रोत विद्यार्थियों की नई पीढ़ी गढ़ने में विद्यालय सतत प्रयत्नशील रहकर अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करेगा।

अनुराग त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर
आई.आई.टी., कानपुर
पूर्व छात्र, 2001 बैच

नीराजन विद्यालय का इतिवृत्त मात्र नहीं वरन स्वर्णिम इतिहास है, पंडित दीनदयाल एक विद्यालय नहीं एक मूवेमेंट है। इसने हमें सोचना सिखाया है और फिर उस सोच से उत्पन्न निर्णय पर खड़ा होना सिखाया है। इसीलिए विद्यालयी शिक्षा खत्म होने के बाद भी यह और हम अभिन्न हैं। आज भी यह विद्यालय मेरे परिचय पत्र (Visiting Card) का हिस्सा है। दीनदयाल विद्यालय की तुलना Eton & Harrow से की जानी चाहिये। इस शिल्पशाला के मूर्तिकार होने के कारण आप आदरणीय हैं। निश्चय ही यह विद्यालय भविष्य की अनंत संभावनाओं की दहलीज पर खड़ा है, पूरे जोश से।

डॉ. मलय चतुर्वेदी
President Elect
UP State Ophthalmological Society
पूर्व छात्र 1982 बैच

मैं अपना यह सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे एक बहुत अच्छे शिक्षण संस्थान में और बहुत समर्पित तथा विद्वान शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला था। विद्यालय निरंतर प्रगति करता रहे। मैं इस प्रकार की शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

डॉ. उमेश्वर पाण्डेय
ह्रदय रोग विशेषज्ञ, पूर्व छात्र 1994 बैच

जीवन-निर्माता आचार्य

दिनांक 8 नवम्बर 2001 वर्ष को आचार्य श्री ओम शंकर जी ने मनीष कृष्ण भैया' 83 बैच के नाम मेरे संदर्भ में एक पत्र लिखा था। इससे पहले मैं पत्र पर चर्चा करूँ , अपना परिचय दे देता हूँ , मैं शैलेन्द्र दीक्षित , वर्ष 1994से 2000 तक विद्यालय का छात्र रहा हूँ। वर्तमान में वरिष्ठ नौवहन (माल वाहक जलयान) अधीक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ चेन्नई में स्थित एक निजी कम्पनी में दे रहा हूँ। कानपुर मूल निवास है। सत्र 1994 षष्ठ क वर्ग से सत्र 1997 नवम 'ख' तक मैं विद्यार्थियों की उस भीड़ में था जो उस विद्यालय में केवल पढ़ने आते हैं, जैसे कि उनके जीवन का एक पड़ाव है जिसे लाँघ कर वे आगे बढ़ जाएंगे और फिर जो समय तय करेगा वैसा करेंगे ! सत्र 1997 से सत्र 1998 दशम कक्षा का वर्ष थोड़ा घटनापूर्ण रहा।

आचार्य श्री महेश जी से मेरे स्वर्गीय पिता श्री की एक अनौपचारिक भेंट हुई, जिस के आधार पर आचार्य श्री महेश जी ने परिवार की आर्थिक स्थिति एवं अपने छात्र की मानसिक उथल पुथल को भाँप लिया था और उसकी चर्चा प्रधानाचार्य जी से बिना अधिक समय गवाएँ कर दी थी।

प्रधानाचार्य जी ने मेरी कक्षा में सम्भवतः सुरेश जी (भौतिकी प्रयोगशाला) को भेजा कि दशम 'ख' से शैलेन्द्र दीक्षत को उनके कार्यालय भेजा जाये। पिछले 4 वर्षों की विद्यालय यात्रा में आचार्य जी के चरण अनेक बार स्पर्श किये थे, परन्तु कभी एकाकी संवाद नहीं हुआ था, इसलिए मन में ऊहापोह थी, उलझन थी और विचार आ रहा था कि क्या हुआ होगा ?

आचार्य जी के कार्यालय में प्रवेश की अनुमति माँग चरण स्पर्श किये और आने वाली डाँट के लिए तत्पर होना शुरू ही किया कि प्रश्न आया कि ''घर में कौन कौन है ?'' कितने बजे उठते हो, अध्ययन कैसा चल रहा है आदि ? और फिर उन्होंने पूछा कि क्या यह सत्य है कि आप टयूशन पढ़ाते हैं ? यह एक अप्रत्याशित प्रश्न था क्योंकि नेपथ्य में हो चुकी पिता जी और श्री महेश जी की बातचीत और उसके बाद आचार्य महेश जी और प्रधानचार्य जी की परस्पर चर्चाओं से मैं अनभिज्ञ था! मैंने उत्तर तो नहीं दिया पर सम्भवतः मेरे मौन और नम नेत्रों ने उन्हें वांछित उत्तर दे दिया! कार्यालय से आने के बाद इस सबकी चर्चा मैं अपने परिवार के अतिरिक्त अपने बैच के सहपाठी संतोष और नागेंद्र से ही कर सका था जो ये सब भली भाँति जानते थे !

फिर उन्होंने मुझसे कहा कि ''तुम अपने घर बुलाओगे ?'' मैंने मिश्रित भावों के साथ उन्हें देखा और सिर हिला कर उनके आदेश को स्वीकार किया। कुछ दिन तक सब सामान्य चला , भाव आये कि बात आयी गयी हो गयी। एक दिन अचानक छुट्टी से थोड़ा पहले फिर सुरेश जी पधारे और बोले कि आज आचार्य जी आपके घर जायेंगे, आप अपना बस्ता बाँध कर उनके कार्यालय के बाहर प्रतीक्षा करें। थोड़ी देर में प्रधानाचार्य जी श्री प्रदीप जी और श्री महेश जी के साथ घर के लिए निकल पड़े।

यह वो दौर नहीं था जब मोबाइल से पूर्व सूचना दी जा सके कि आज आचार्य जी घर आएंगे। इसलिए अस्तव्यस्तता की पूरी संभावना थी। आचार्य जी घर पहुँचे और उन्होंने वहाँ का परिवेश देखा, सीमित संसाधनों के बीच एक ओर माता श्री नन्हे बालक बालिकाओं को अक्षर ज्ञान करा रही थीं, एक ओर पिताश्री सम्भवतः इतिहास पढ़ा रहे थे, दीदी अपने स्तर पर गणित का ज्ञान दे रही थीं और कमरे के एक भाग में कुल तीन चार छात्र छात्रएँ जो कि हाईस्कूल (दसवीं) में ही पढ़ती थीं, वे विज्ञान एक की शिक्षा के लिए मेरी प्रतीक्षा कर रही थीं।

आचार्य जी ने वहाँ उन छात्रों के साथ कुछ समय बिताया, उनसे कुछ बातें कीं, सूक्ष्म जलपान हुआ और फिर वे सभी चले गए। उसके बाद आचार्य श्री ओमशंकर जी ने पाल्य पिता के रूप में मेरी आगे की सभी चिंताओं से मुक्ति का दायित्व स्वभावतः अपने ऊपर ले लिया और जब तक मैं आत्मनिर्भर नहीं हो गया तब तक बिना इंटरनेट, बिना मोबाइल वाले दौर में विद्यालय से निकलने के बाद भी सम्पर्क रखा, यह सुनिश्चित किया कि मेरी शिक्षा में कोई बाधा नहीं आये और जब मैं उच्चतर शिक्षा के लिए घर से चला गया तो उन वर्षों में उन्होंने परिवार की भी चिंता की। आज भी करते हैं !

कोचिंग की फीस, शिक्षा ऋण, न्यायिक संघर्ष और न जाने कब- कब आचार्य जी ने मुझको सम्हाला और ये सुनिश्चित किया कि मैं कुछ कर सकूँ ! कुछ बन सकूँ। मनीष भैया से संपर्क भी तभी हुआ था !

इन सबके अतिरिक्त एक और छोटा संस्मरण है जो वर्ष 2001 के अंत में घटित हुआ। आई आई टी की तैयारी के लिए जब धनाभाव हुआ तो मैंने प्रीलिम्स की तैयारी बिना किसी कोचिंग के आरम्भ की, वर्षांत में जब मेरा चयन हो गया और मेंस के बैच की शुरुवात हुई तब भी मैं संकोचवश घर पर ही रहा और जैसे तैसे सोचने लगा कि जो भी ईश्वर चाहेंगे वैसा हो जायेगा। तब मेरे बैच के ही कुछ साथियों ने प्रयास पूर्वक मुझे ढूँढ़ा, घर से निकाला और जब मैंने उन्हें कहा कि मैं फीस नहीं दे सकता तो उन्होंने कहा कि तीनो कोचिंग में तुम्हारा पंजीकरण हो गया है और ये तुम्हारे बैच हैं, क्या तुम शिवालय से रावतपुर आने जाने की स्वयं व्यस्था कर सकते हो, यदि नहीं तो हम उसका भी कोई मार्ग खोजते हैं। मेरे सहपाठियों सौरभ कुमार साहू, अविजित, विवेक सिंह, सपन और रोहित वर्मा ने आपसी सहयोग से मेरी फीस की व्यवस्था की और यह सुनिश्चित किया कि मैं चयनित हो सकूँ।

अपने सहपाठियों की चिंता करना, उन्हें अपना परिवार मानना सम्भतः युगभारती की आत्मा का भाव है और इसीलिए यह संगठन बहुत विशेष है।

आचार्य जी, युग भारती, दीनदयाल विद्यालय और सभी स्नेहीजनों के सहयोग ने मुझे आत्मनिर्भर बनाया और मेरा परिवार विस्तृत हो गया !

मुझे गर्व है इस परिवार पर !

आप सबने ये छोटा संस्मरण पढ़ा , समय दिया इसके लिए आभार।।

शैलेन्द्र दीक्षित
कैप्टन (मर्चेंट नेवी)
पूर्व छात्र, बैच :- 2000

सत्यमेव जयते

50वाँ अंक

शुभकामना-संदेश

डॉ. मोहन कृष्ण मिश्र, कार्यकारी अधिकारी
Dr. Mohan Krishna Misra, Executive Officer
(पूर्व छात्र, बैच : 1986)

चन्द्रकांता केशवन ऊर्जा नीति एवं पर्यावरण समाधान केन्द्र
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर
Chandrakanta Kesavan Center for Energy Policy and Climate Solutions Indian Institute of Technology Kanpur

पत्रालयः आईआईटी कानपुर 208016 (भारत)
Post Office : IIT Kanpur-208016

अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे ''पंडित दीनदयाल विद्यालय'' की वार्षिक पत्रिका **''नीराजन''** का स्वर्ण जयंती अंक प्रकाशित हो रहा है।

प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ पचास वर्षों का समय पूरा करना किसी भी संस्था के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण उपलब्धि होती है। मेरे लिए ये व्यक्तिगत सम्मान का विषय है कि हमारे शिक्षण संस्थान की इस यात्रा में 7 वर्षों के लिए अति समर्पित एवं विद्वान शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मुझे भी प्राप्त हुआ था।

हमारे आराध्य हनुमान जी महाराज से कामना करता हूँ कि हमारा विद्यालय यूँ ही सफलता के सोपान पर निरंतर आगे बढ़ता रहे।

शुभकामना-संदेश

IntraFi

1300 N. 17th Street, Suite 1800
Arlington, VA 22209, USA

आदरणीय आचार्य जी,

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता है कि अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''**नीराजन**'' का स्वर्ण जयंती अंक निकल रहा है।

प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ पचास वर्षों का समय पूरा करना गौरवपूर्ण उपलब्धि होती है। मैं अपना यह सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे एक ऐसे शिक्षण संस्थान में और बहुत समर्पित तथा विद्वान् शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला। विद्यालय निरंतर प्रगति करता रहे, मैं इस प्रकार की शुभकामनाएँ करता हूँ।

आनंद अवस्थी
(वाइस प्रेसिडेंट ऑफ इंजीनियरिंग स्वीप)
पूर्व छात्र, बैच 1992

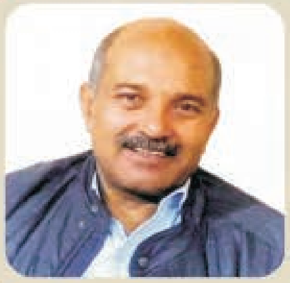

शुभकामना संदेश

अत्यंत गौरव एवं प्रसन्नता का विषय है कि सनातन धर्म महामंडल द्वारा संचालित पं दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय की वार्षिक पत्रिका नीराजन का यह स्वर्ण जयंती अंक है। सनातन धर्म एवं हिन्दू जीवन पद्धति पर आधारित शिक्षाप्रद एवं संस्कारपरक लेखों के माध्यम से विद्यार्थियों के उत्कर्ष हेतु पत्रिका निरंतर सेवा दे रही है।

विद्यालय की पचास वर्ष की यात्रा अविस्मरणीय व अभिनंदनीय है। इस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर सैकड़ों प्रतिभावान् विद्यार्थी देश - विदेश में रहकर राष्ट्र के विकास में अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियाँ हम सभी को गौरवान्वित करती रहती हैं।

मेरे लिए यह अत्यंत सौभाग्य का विषय है कि मैं सन् 1977 से 1980 तक इस प्रतिष्ठित विद्यालय का छात्र रहा हूँ। मैं समस्त आदरणीय आचार्यों एवं श्रद्धेय बैरिस्टर नरेंद्र जीत सिंह जी का अत्यंत आभारी हूँ। उनकी अनेक स्मृतियाँ आज भी मेरे मानस पटल पर अंकित हैं।

स्वर्ण जयंती विशेषांक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

प्रो. मनोज अवस्थी (पूर्व छात्र, 1984 बैच)
अध्यक्ष - वाणिज्य संकाय
वी.एस.एस.डी. कॉलेज कानपुर।
कार्यकारी सदस्य
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़

देशदर्शन के संस्मरण

विद्यालय और मेरी तरुणाई करीब-करीब एक साथ आई। जुलाई 1983 से मई 1990 तक के सात वर्ष विद्यालय के परिसर में, छात्रवास के विभिन्न कक्षों में बीते हैं। लॉर्ड्स के मैदान पर भारतीय क्रिकेट टीम की जीत की खुमारी के माहौल से शुरू होकर विश्वनाथ प्रताप सिंह के पराभव की आहट तक के इन वर्षों में जब देश की परिस्थितियों में व्यापक परिवर्तन की आहटें आना शुरू हुई थीं- नई शिक्षा नीति, कम्प्यूटर क्रांति, संचार क्रांति और नई आर्थिक नीति ठीक यही समय हम लोगों ने विद्यालय में छात्रवास में बिताया था।

विद्यालय से जुड़ाव छात्रवास छोड़ने के बाद भी रहा है। अभी भी आचार्यों से और मित्रों से मिलना होता रहता है। बहुत सारे प्रसंग भी हैं- कई अच्छे, कुछ थोड़े परेशान करने वाले। छात्रवास के उन सात वर्षों की अनेक यादें हैं- सुबह प्रातः स्मरण करते समय विशाल कक्ष में सोने से लेकर रात्रि में चुपके से बाहर से कुछ मँगाकर खाना और रेडियो पर फिल्मी संगीत सुनना या फिर भाग कर सिनेमा देखने जाना और पकड़े जाना और पकड़े जाने पर सभी के साथ पीटा जाना। वार्षिकोत्सव में सांस्कृतिक संध्या में नाटक में भाग लेने से लेकर मर्चेंट्स चैम्बर में क्विज प्रतियोगिता होना। वाद-विवाद प्रतियोगिता में एकाएक निःशब्द हो जाना और नाटक करते समय संवाद भूलने की स्थिति में स्टेज पर इम्प्रोवाइज करना। इन सभी पर लिखा जा सकता है, लेकिन यहाँ पर मैं केवल एक विषय पर ही केंद्रित रहूँगा- देशदर्शन!

विद्यालय में बिताये उन सात वर्षों में मुझे चार बार भारत की चार दिशाओं की यात्रा करने का सुअवसर मिला- 1983 में उत्तर दिशा में वैष्णो देवी, जम्मू और श्रीनगर, 1985 में दक्षिण दिशा में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक होते हुए रामेश्वरम् और कन्याकुमारी, 1986 में पूर्व दिशा में गुवाहाटी हाफलॉंग और शिलॉंग और 1988 में पश्चिम दिशा में नासिक, पुणे और मुम्बई। 1987 और 1989 में बोर्ड परीक्षाओं के कारण नहीं जा सकता था और 1984 में अपने पुराने विद्यालय (सरस्वती शिशु मंदिर) के साथ राजस्थान गया था।

विद्यालय में देशदर्शन का समय नियत था- विजयादशमी के आस-पास शुरू होकर देशदर्शन कार्यक्रम दीपावली के पहले समाप्त हो जाता था जिससे हम सभी विद्यार्थियों को घर जाकर दीपावली का पर्व मनाने का समय मिल जाता था। बारिश का अंत और शीत के आगमन से पहले का यह समय भारत के किसी भी भूभाग में घूमने का उपयुक्त समय है।

जुलाई 1983 में कक्षा 6 में विद्यालय और छात्रवास में प्रवेश लेने के बाद, विजयादशमी-दीपावली का अवकाश पहला अवसर था जब मैं घर जा सकता था। लेकिन कश्मीर जाने की उत्कट इच्छावश मैंने घर जाने का मोह त्यागा और मेरे

माता-पिता ने भी इसका समर्थन किया। आज जब हमारे बच्चे बड़े होकर कॉलेज चले गये और हम हर छुट्टी पर अपने बच्चों का बेसब्री से इंतजार करते है, तब समझ में आता है कि उस समय में- जब हमारी उम्र 10-11 वर्ष थी, हमारे माता-पिता ने कितना बड़ा त्याग किया था कि पहली बार घर आने के अवसर पर भी देशदर्शन की अनुमति दी। उस यात्रा में कक्षा 6 से केवल एक ही मित्र साथ गया था- अजित कुमार सिंह। इसके अतिरिक्त छात्रवास से कुछ सीनियर भी साथ गये थे और सबसे अधिक संख्या थी- एकादश के भैया लोगों की। यतीन्द्र जीत सिंह भी उस यात्र में हमारे साथ थे। आचार्यों में श्री अनिल जी, श्री गया प्रसाद जी थे। जम्मू तक की यात्रा हमने ट्रेन से की थी- लखनऊ होकर। जम्मू से कटरा और वैष्णो देवी गये थे। बाणगंगा एक पहाड़ी नदी जैसी लगती थी उस समय और उसमें नहाने लायक पानी होता था। वहाँ नहाने के बाद कठिन चढ़ाई चढ़े थे। 1983 में रास्ता बहुत पथरीला और ऊबड़-खाबड़ था। अर्धक्वाँरी में थोड़ा विश्राम करने के बाद बाकी चढ़ाई चढ़े थे। मंदिर की मुख्य गुफा बेहद सँकरी होती थी और घुटनों तक के बर्फीले ठंडे पानी में से होकर जाना पड़ता था। जम्मू में रघुनाथ मंदिर भी गये थे। उसके बाद श्रीनगर की यात्रा बस से हुई। श्रीनगर में किसी विद्यालय के परिसर में ही रुकने की व्यवस्था थी। उस समय निशात बाग, चश्मे शाही और डल झील घूमने की याद है। कश्मीर में अराजकता की शुरूआत हो चुकी थी। एक दिन कर्फ्यू जैसा भी कुछ था- हम सभी के लिए एकदम नया अनुभव!

उत्साह से भरे जब हम वापस विद्यालय पहुँचे थे- तब पता चला कि विश्व विजयी भारतीय क्रिकेट टीम को क्लाइव लॉयड की टीम ने बुरी तरह धोना शुरू किया है और अपनी ससुराल कानपुर में मार्शल की तेज गेंद पर सुनील गावस्कर के हाथ से बल्ला ही छूट गया।

1985 की दक्षिण भारत यात्रा अनोखी थी। छात्रावास के तीसरे वर्ष में, कई मित्र बन चुके थे। घर से बाहर रहना भी पसंद आने लगा था। इस बार 17 दिनों की पूरी यात्रा बस से होनी थी। करीब 40-45 हम छात्र जिसमें कई अनन्य मित्र भी थे- रघु, अजय, विवेक, स्वदेश, आशीष, 5-6 आचार्य गण (श्री गणेश जी, श्री सतीश जी, श्री सुभाष जी) और 2-3 कर्मचारी गण। भोजन के लिए राशन बस के ऊपर लादा गया क्योंकि कई बार हमने पूरी रात यात्रा की थी। उस यात्रा की सबसे मुखर यादें रात में कहीं जल स्रोत के किनारे रुक कर खाना पकाने और खाने की ही हैं। 17 में से करीब 8-10 रातें तो हमने बस में यात्रा करते हुए ही काटी थीं। कानपुर से शुरु करके चित्रकूट, खजुराहो,मैहर देवी, जबलपुर, गोलकुण्डा, हैदराबाद, तिरुपति-तिरुमला, कांचीपुरम, रामेश्वरम, कन्याकुमारी, मदुरै, बंगलौर, मैसूर, बीजापुर, शोलापुर होते हुए वापस कानपुर पहुँचे थे। अपने जीवन में, पहली बार समुद्र के दर्शन मैंने रामेश्वरम में ही किये- वह भी सुबह के 4 बजे जब ज्वार के कारण समुद्र की लहरें 3-4 मीटर ऊँचाई तक उछल रही थीं। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के इन स्थानों में से कई पर अभी तक दुबारा जाना नहीं हुआ है। यात्र के दौरान कुछ समय के लिए 2-3 विद्यार्थियों का स्वास्थ्य भी खराब हुआ था, लेकिन हम सभी के उत्साह और जोश में कभी कोई कमी नहीं आई और सभी साथियों के साथ पूरा आनंद लिया गया। कन्याकुमारी के समुद्र तट पर सूर्यास्त और सूर्योदय के बिहंगम दृश्य, विवेकानन्द शिला स्मारक की अद्भुत शांति (तब वहाँ तिरुवल्लुवर की प्रतिमा नहीं थी), मीनाक्षी मंदिर के भव्य गोपुरम, जबलपुर का धुँआधार प्रपात और

भेड़ाघाट, बीजापुर का गोल गुम्बज, हैदराबाद का चारमीनार – इन सब की स्मृतियाँ अभी भी मानस पटल पर मौजूद हैं।

1986 की असम यात्रा बहुत ही निराली थी। कक्षा नवम और एकादश के करीब 15 छात्र और श्री दीपक जी एवं श्री नारायण जी के साथ हम लोग ट्रेन से गोहाटी पहुँचे थे। उस समय 1985 के असम समझौते के बाद में असम गण परिषद की नई-नई सरकार बनी थी- प्रफुल्ल महंत के नेतृत्व में। असम आंदोलन के समय 1984 में, प्रफुल्ल महंत और भृगु फुकन एक शाम को दीनदयाल विद्यालय भी आये थे। उस समय बहुत राजनीतिक समझ तो थी नहीं, बस ऐसा लगा था कि कुछ तो अच्छा करना चाहते हैं ये लोग। जो भी हो, पुरानी स्मृति के आधार पर ही, मुख्यमंत्री के आवास पर उनसे हम सभी विद्यार्थियों की एक बैठक हुई थी- करीब आधे घण्टे की। ब्रह्मपुत्र नदी का विकराल स्वरूप देखकर हम सभी लोग हतप्रभ थे- इतनी बड़ी नदी भी हो सकती है। शिलांग भी हम घूमने गये पर वहाँ की उस समय की कोई विशेष याद अब नहीं है।

उस यात्रा का सबसे आकर्षक भाग था- ट्रेन से हाफ्लाँग की यात्रा, फिर वहाँ बनवासी कल्याण आश्रम के विद्यालय-छात्रवास में रुकना और सुबह शाम पहाड़ों की सैर। गुहाटी से लाम्डिंग पहुँच कर हमें दूसरी ट्रेन पकड़नी थी। ट्रेन लेट थी और ट्रेन में बर्थ/सीट रिजर्वेशन की तो सम्भावना ही नहीं थी। भीड़ बहुत ज्यादा थी। रात की करीब 8-10 घण्टों की यात्रा हम सभी को जनरल डिब्बे में खड़े होकर ही गुजारनी पड़ी। अपनी अटैची और बिस्तर-बंद को हाथों में उठाए हुए। सुबह के 3 बजे के आस-पास लोअर हाफलाँग स्टेशन पर उतरने के बाद, किसी की भी खड़े रहने की भी ऊर्जा नहीं थी। प्लेटफार्म जैसा वहाँ कुछ था ही नहीं, न ही कोई यात्री था हमारे अलावा। हम लोग वहीं स्टेशन के किनारे अपने बिस्तर खोल कर सो लिये। फिर 3-4 घण्टे बाद उठे और वनवासी कल्याण विद्यालय जाने के लिए साधन की तलाश की। पर वहाँ कोई भी नहीं था जिससे कुछ पूछा जा सके। अंततः हम सभी अपने सामान के साथ पैदल ही बढ़े 3-4 घण्टे पहाड़ी रास्तों पर भटकते हुए, रास्ते खोजते हुए (आचार्य जी! रास्ता इधर से है- इसकी खोज तभी हुई थी)। किसी तरह हम लोग दिन के भोजन के समय तक विद्यालय पहुँचे। लेकिन विद्यालय के अध्यापकों और छात्रों ने जितने हर्ष से हम सभी का स्वागत किया, हम सभी की थकान एकदम खत्म हो गयी। विद्यालय में दो-तीन दिन का प्रवास था। आस-पास एकदम शांति और सन्नाटा। रोज ही हम लोगों को सुबह-शाम पहाड़ी रास्तों पर घूमने का समय मिल जाता था। हाफलाँग की प्रसिद्ध जटिंगा पहाड़ी वहीं पर है- जहाँ पर चाँदनी रातों में पक्षी आग में आत्महत्या कर लेते हैं। उस समय सुनी हुई, अनेकानेक भूत-प्रेत की कहानियाँ अभी भी स्मृति में हैं। उस यात्रा में हमारा काफी धन शेष रह गया था। सभी ने सहमति से 200 रुपये प्रति विद्यार्थी सहयोग राशि हमने वहाँ विद्यालय को दी थी।

1988 की बम्बई (तब इसी नाम से पुकारते थे), नासिक, पूना और अजंता-एलौरा की यात्रा के समय एकादश कक्षा में थे। फिर से इस बार नवम और एकादश के करीब 15 विद्यार्थी और आचार्य श्री दीपक जी। बड़ी कक्षा में होने के एहसास के कारण यात्रा के आयोजन-कहाँ जाना है, कब जाना है, कैसे जाना है, क्या खाना है- में भी हम लोगों का दखल रहा। मायानगरी की हमारी पहली यात्र थी। अधिकांशतः पैदल और लोकल ट्रेन या बस। एलिफैण्टा की गुफाएँ भी देखीं। गेटवे, मरीन ड्राइव, चौपाटी और जुहू बीच – इन सभी अलावा मुम्बई की आपा-धापी भरी जीवनशैली हम लोगों के लिए

कुछ अनूठी थी। हर तरफ भागते हुए लोगों की भीड़। और रविवार के दिन नई रिलीज हुई फिल्म के सभी शो हाउसफुल - सभी सिनेमाघरों में, फिर चाहे वह कितनी भी वाहियात फिल्म हो। हम लोग जीतेन्द्र और मिथुन चक्रवर्ती की मर मिटेंगे फिल्म देखने के लिए करीब 4-5 जगह गये परंतु सभी शो फुल मिले। फिर एक पुरानी फिल्म देखी थी- रजनीकांत की जान जानी जनार्दन। मुम्बई में सस्ता और अच्छा भोजन करने के लिए प्रयासपूर्वक पश्चिम रेलवे मुख्यालय की कैंटीन जाते थे।

पूना में जिस विद्यालय में रुके थे वहाँ पर लिफ्ट लगी हुई थी। हमारे लिए एकदम नयी चीज। जब भी खाली समय मिलता था, हम उसी में चार मंजिल ऊपर नीचे होते रहते थे। पुणे के पास दो-तीन किलों में भी गये- तानाजी के लिए प्रसिद्ध सिंहगढ़ में भी।

अजंता-एलौरा जाते समय जिस परिसर में रुके थे, देर शाम वहाँ पर कुछ किशोर-किशोरियाँ गरबे का अभ्यास करने आते थे। उस अभ्यास को देखने और उन लोगों से वार्ता करने की भी कुछ सुमधुर यादें हैं। गरबा देखने का भी वह हमारा पहला अवसर था। वापसी की यात्रा- मुम्बई से कानपुर फिर ट्रेन से हुई थी। जनरल डिब्बे में कुली की सहायता से नीचे की दो बर्थ ले लेने के बाद। बीच की जगह पर सामान भर कर हमने 6 फीट चौड़ी और 6 फीट लम्बी एक जगह तैयार कर ली थी जिस पर सभी लोग लदे हुए थे। लेटे/बैठे। उरई स्टेशन पर गुलाब जामुन भी लिया गया था।

घूमना आज भी होता है। इनमें से कुछ जगहों पर दुबारा भी जाना हुआ है। ट्रेन से, फ्लाइट से, बस से और अपनी गाड़ी से भी। अकेले भी गये हैं, परिवार के साथ भी और मित्रों-सहकर्मियों के साथ भी। लेकिन विद्यालय के दिनों की ये यात्राएँ कुछ अलग ही थीं। पहली बार समुद्र देखने का कौतुक। यात्रा के समय साथियों और आचार्यों के साथ हँसना, बोलना और झगड़ना भी। ये सभी संस्मरण कुछ अलग ही हैं और सबसे कौतुक का विषय है- यात्रा का खर्च। किसी भी यात्रा का शुल्क 650 रुपये से अधिक नहीं था। रहना, खाना, घूमना सब कुछ जोड़ लेने के बाद। और कभी-कभी तो धन बच भी गया! पिछले दस वर्षों में इस तरह समूह में यात्रएँ की हैं- एक बार तो सहकर्मियों के साथ 40 लोग तक एक साथ गये हैं। 15-20 के मित्रों/परिवार समूह में तो कई बार घूमे हैं। लेकिन अभी तक उस तरह की अनुभूति नहीं हुई जो उस समय हुई थी।

अभिषेक

वरिष्ठ महाप्रबंधक (तकनीकी विकास)

पावरग्रिड, गुरुग्राम

पूर्व छात्र, (बैच- 1990)

संस्मरण

संस्मरण 1 : विद्यालय में व्यतीत कालखंड : जुलाई 1979 से जून 1983

विद्यालय में प्रवेश के समय :

दीनदयाल विद्यालय में प्रवेश के पूर्व मैं सेंट जैवियर्स स्कूल का छात्र था। मेरे एक टीचर श्री जी पी दीक्षित ने मझे बुलाया और कहा कि वो मुझे स्कूल से निकालना चाहते हैं। उनकी इच्छा थी कि मैं पंडित दीन दयाल विद्यालय से आगे की पढ़ाई करूँ। उन्होंने मेरे पिताजी, को पत्र लिख कर स्वीकृति ली। मुझे अपनी साइकिल पर बिठाया और चल पड़े दीनदयाल विद्यालय की ओर। रास्ते में उन्होंने मुझे बताया कि उनके एक मित्र (आचार्य महेश जी) विद्यालय में वरिष्ठ आचार्य हैं अत : एडमिशन तो हो जायेगा।
मैं भी बहुत उत्साहित था।

विद्यालय पहुँच कर, आचार्य महेश जी से मुलाकात हुई। आने का प्रयोजन बताया। आचार्य जी ने दीक्षित जी और मुझे बड़े प्रेम से बिठा कर पानी और चाय कर प्रबंध किया।

उसके बाद आचार्य जी ने स्पष्ट किया कि उनकी दीक्षित जी से मित्रता के बावजूद वो कुछ भी सहायता करने में असमर्थ हैं। पंडित अनुराग को प्रवेश परीक्षा के माध्यम से ही विद्यालय में प्रवेश मिलेगा।
दीक्षित जी को कुछ निराशा अवश्य हुई लेकिन मेरी तरफ देखते हुए बोले कि यदि ये मेरा असली चेला होगा तो परीक्षा में अवश्य चयनित होगा। गुरुवचन सत्य हुआ।

आज सोचता हूँ तो कितने आचार्यों के वैचारिक मानक आचार्य महेश जी जैसे उच्च कोटि के होंगे। बहुत कम। उनका सादर चरण वंदन।
श्री दीक्षित जी अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनकी निस्वार्थता के कारण ही यह सब है। उनको भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

संस्मरण 2 विद्यालय में व्यतीत कालखंड : जुलाई 1979 से जून 1983

विद्यालय से निकलते समय :

1983 इंटरमीडिएट परीक्षा का परिणाम आ चुका था। बिट्स पिलानी में इंजीनियरिंग में प्रवेश मिल गया था। मेरे साथ मेरी कक्षा के ही आनंद गुप्त, आशीष जोग, लाला अनिल राय को भी वहीं प्रवेश मिला था।
उस समय मेरे परिवार कि आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण मैं प्रवेश शुल्क जो लगभग 5100 रूपए था, जमा करा पाने में असमर्थ था।
मेरे पास दूसरा विकल्प HBTI और MNRE के रूप में अवश्य था किन्तु मेरा मन बिट्स, पिलानी में प्रवेश के लिए था। मन दुखी और असमंजस में था। ''मैं कासे कहूँ अपने जिया की माई रे'' गाना गा गा के रो रहा था।

पिलानी जाने के लिए ट्रेन मे बैठने का दिन पास आता जा रहा था। तभी विद्यालय से आचार्य जी ने मेरे दुख का कारण पूछा सो

मैंने बता दिया। उन्होंने भरोसा दिलाया की चिंता मत करो सब हो जायेगा। ज्यादा विस्तार से बात हुई नहीं सो चिंता थी कि कैसे हो जायेगा।

जाने के दिन में एक सप्ताह बचा होगा तो मैंने आचार्य जी से पूछा कि क्या करूँ तो बोले कि ट्रेन में टिकट ले के बैठ जाओ। देखा जायेगा। मैं परेशान कि क्या होगा।

अंतत: वो दिन भी आ गया। मैं अपने साथियों के साथ ट्रेन में बैठ गया। साथियों को इस विषय में कुछ पता न था। ट्रेन चलने वाली थी। मेरी धड़कने बढ़ रही थीं। 40 साल पहले मोबाइल फोन भी नहीं थे। तभी लाला बोला कि देखो आचार्य जी हम लोगों को see off करने आ रहे हैं।

फिर.. फिर क्या। आचार्य जी ने एक लिफाफा मेरी तरफ बढ़ाया।

वो लिफाफा आज तक मैं उनको वापस नहीं कर पाया और न कर पाऊँगा।

और हाँ.... आचार्य जी का नाम इस संस्मरण में ना लिखने कि वजह है। वो परिचय के मोहताज नहीं हैं। आवश्यकता ही नहीं है। उनका सादर चरण वंदन।

अनुराग मिश्र
1983-बैच

भावों का बंधन और हिन्दी की रवानी देने वाला हमारा विद्यालय

नीराजन के स्वर्ण जयंती अंक के प्रकाशन पर विद्यालय परिवार को बधाई।

जब भी मैं अपने विद्यालय का परिचय किसी को देता हूँ या उसकी स्मृतियों, वहाँ की संस्कृति के बारे में और हमारे बीच के परस्पर स्नेह के बारे में बताता हूँ, तो सामने सुनने वाले व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाते हैं। उनका विस्मय उचित है क्योंकि अखंड भारतवर्ष में कदाचित् एक या दो ऐसे संस्थान होंगे जो शिक्षा को आज भी सिर्फ आय के स्रोत की तरह नहीं प्रयोग में लाते हैं, जिनमें या तो पहले या अब भी गुरुकुल का परिवेश है। एक दूसरे को न जानने के उपरांत भी सभी भैया लोगों में जो भावों का बंधन है वह दूसरे संस्थानों में कहीं नहीं मिलेगा। किसी आपात् स्थिति के समय एक मैसेज या एक कॉल से अविलंब सहायता दी जाती है। सहायता का माध्यम कुछ भी हो ....यतो यत: समीहसे।।

यही मेरे बैच में मैने देखा, हम अनुजों या अग्रजों को जानते हों या नहीं और कई बार तो विद्यालय का व्यक्ति भी नहीं हो तब भी बैच के मित्र के सिर्फ एक बार बोलने पर ही सहायता में लग जाते हैं। यद्यपि आज तक मुझे ऐसी आवश्यकता नहीं पड़ी किंतु ये देखकर कितना आनन्द होता है।

जब भी मैं अपने प्रधानाचार्य श्री ओम शंकर जी के विषय में गौरव से बताता हूँ, या आचार्य श्री दुर्गेश जी के बारे में, उनके हिंदी के

अध्यापन, लेखन और संभाषण के बारे में तो डिग्री कॉलेज के अध्यापक भी चकित हो जाते थे। मेरे दीनदयाल विद्यालय के छात्रों की हिंदी भाषा सुनकर यूनिवर्सिटीज के प्रोफेसर्स भी प्रशंसा करते हैं और मैं यह बढ़ा चढ़ाकर नहीं बोल रहा, यह स्वयं डिग्री कॉलेज के प्रोफेसर ने कहा था, जिसे सुनकर कोई भी अभिभूत हो सकता है।

जब मैं सूरत जिले में स्थानांतरित हुआ तो मैं स्वतः ही एक युगभारती समूह में जोड़ लिया गया। जिन भैया ने मुझे जोड़ा था मैं पहले से उनको जानता भी नहीं था। अद्‌भुत शृंखला है। और मैं इस परंपरा को आगे बढ़ाता हूँ या प्रयत्न करता हूँ। अभी कुछ दिवस पूर्व हम पाँच भैया लोगों ने सूरत में गेट टु गेदर किया, सब अलग बैच के लेकिन पहली बार मिलने के बाद भी बातें विश्राम नहीं ले रही थीं। बैठक के अंतिम क्षण तक भी। यह प्रेम है जो हर दीनदयाल के छात्र की डिफाल्ट सेटिंग में है।

यह गर्व केवल मेरा नहीं है अपितु मेरे परिवार और मेरे मित्रों का भी है। मैं हार नही मानता हूँ, ऐसा मुझे लगता है, अभी पिछले सप्ताह मेरे एक मित्र ने कहा कि सौरभ मुझे लगता है कि तुम्हारे इस गुण का श्रेय तुम्हारे विद्यालय को जाता है। कदाचित् और भाई मुझे भी लगता है कि काश ऐसे विद्यालय में मैं भी पढ़ पाता जहाँ प्रतियोगिता में भी चरित्र के साथ लड़ना सिखाया जाता है।

जब मैं विद्यालय आया था, मैं घबराया हुआ था, बड़ा विद्यालय था,बड़े हुनर वाले विद्यार्थी थे। लेकिन शीघ्र ही पता चला कि सब अव्वल दर्जे के उद्धत और उद्दण्ड हैं, मतलब सब एक तरह के दोस्त मिल गए। और मिले कुछ आदर्शवादी अध्यापक, अत्यधिक सम्मान उनके प्रति हृदय में। मैं भाग्यशाली मानता हूँ स्वयं को कि श्री कैलाश जी मेरे कक्षाध्यापक थे। आदर्शवादी लेकिन विनोद का अभाव नहीं।

हिंदी तो हम सब जानते ही हैं। विद्यालय की परीक्षा में केवल आपकी गंदी लेखनी ही आपके अंक काटेगी। यही हुआ था एक बार मैं हिंदी की परीक्षा दे रहा था और शिक्षक बोले कि कितना गंदा लिख रहे हो? उसमें मुझे 76 अंक मिले थे। यह स्तर था हमारे विद्यालय का। क्या कोई मानेगा कि हिंदी में विज्ञान है, नहीं , लेकिन हर पुराने दीनदायली छात्र को ज्ञात है ये कि न सिर्फ विज्ञान अपितु गणित है ,बस ध्यान से देखना होगा। श्री ओझा जी , श्री मयंक जी का पुस्तकालय देखना, जाने कितनी यादें : सूची समाप्त नहीं होगी।

मैं यह भी बता दूँ , हो सकता है कुछ मित्र क्रोधित हो जाएँ, लेकिन सभी अध्यापक लोगों की नकल भी उतारी जाती थी। हाँ सम्मान के साथ।

यद्यपि मैं इक छोटी सी डाली हूँ इस विशाल और महान विद्यालय रूपी पेड़ की, लेकिन मैं हर समय हर संभव साधनों से मेरे भाइयों के लिए खड़ा हूँ, हाँ कभी व्यस्त हो सकता हूँ परंतु आप उत्तर अवश्य पाएंगे।

अंत में विद्यालय प्रबंधन से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी महात्माओं को शुभकामनाएँ , श्री मनीष कृष्ण भैया और श्री मोहन भैया को साधुवाद। सभी मोतियों को एक धागे में पिरोकर रखने के लिए और प्रतिदिन प्रधानाचार्य जी के भाषण को भेजने के लिए जो कि एक अलार्म की तरह जगाती है और कहती है कि ''उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्त वरान्निबोधत ''। देखिए बातें समाप्त नहीं होगी, कम शब्दों में रोक रहा हूँ स्वयं को। मैं आशा करता हूँ कि विद्यालय हजारों वर्षों तक अपने गौरव और विरासत को बनाए रखे। और मुझे विश्वास है कि नई पीढ़ी और भी ज्यादा सजग होगी।

धन्यवाद ! बड़ो को प्रणाम और छोटो को स्नेह ।

सौरभ शुक्ल, बैच-2006
वरिष्ठ प्रबंधक,एनटीपीसी लिमिटेड,
सूरत, गुजरात।

शुभकामना-संदेश

मैं यह जानकर अत्यधिक प्रसन्न एवं गौरवांवित अनुभव कर रहा हूँ कि अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''**नीराजन**'' का स्वर्ण जयंती अंक निकल रहा है। प्रतिष्ठा और सम्मान के साथ पचास वर्षों का समय पूरा करना एक गौरवपूर्ण उपलब्धि होती है। अपने शैक्षणिक काल में मैं बड़ी उत्सुक्ता से प्रति वर्ष अपनी कविताएँ/लेख नीराजन में प्रकाशन हेतु लिखा करता था और जब मेरी कविताएँ/लेख नीराजन में प्रकाशित होते थे तो मुझे बहुत प्रसन्नता और संतोष का अनुभव होता था।

मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे एक बहुत अच्छे शिक्षण संस्थान में और बहुत समर्पित तथा विद्वान शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला था। मेरे व्यक्तित्व एवं मेरे जीवन के निर्माण में इस विद्यालय की सदैव महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि मेरा विद्यालय निरंतर प्रगति करे एवं नए कीर्तिमान स्थापित करे। मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएँ।

प्रणव त्रिपाठी
सिविल जज/न्यायिक मजिस्ट्रेट
उत्तर प्रदेश न्यायिक सेवा, 2016
(पूर्व छात्र- 2011 बैच)

स्वास्थ्य परीक्षण की आवश्यकता

स्वास्थ्य ही धन है एवं सफलता की कुंजी है

मीरा रानी संस्था ट्रस्ट द्वारा कानपुर में विभिन्न स्कूलों में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में स्कूली बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, जिसमें से सबसे अधिक बच्चे दाँतों की समस्या से पीड़ित थे। ये वह बच्चे हैं, जिनमें समस्या उभरना शुरू हुई है या फिर काफी हद तक समस्या बढ़ चुकी है।

अधिकतर बच्चे ऐसे थे जो कि ठीक तरह से ब्रशिंग नहीं करते थे। दांतों को साफ रखने के लिए, ब्रशिंग को ठीक तरह से करना बहुत जरूरी है। यदि आपने इसमें लापरवाही की तो दाँतों की समस्या बहुत ही कम उम्र में हो जायगी। इसलिए, कैंप में बच्चों को ब्रशिंग करने के सही तरीके बताए गये। सस्ते ब्रश का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

अजय खन्ना
सचिव, पूर्व छात्र
श्रीमती मीरा रानी
सामाजिक उत्थान संस्थान

सभी बन्धु आत्मीयता से जुड़े रहें

50वाँ अंक

सम्मानित पाठकबंधु,

सादर प्रणाम। आधनिक युग में शिक्षा 'कोर्स' का सीमित रह गयी है किन्तु 'राष्ट्र निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष' का जो ज्ञान हमारे पण्डित दीन दयाल उपाध्याय विद्यालय ने कराया है; वह स्वयं में हमारे आत्मिक-संतोष का मूलाधार है। 'ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती है' और यह ऊर्जा सिद्धान्त विद्यालय के प्रारंभ से लेकर आज तक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को अपने यशस्वी आचार्यों एवं संवेदनशील-प्रबंधतंत्र के माध्यम से स्थानांतरित हो रहा है। और इसका प्रमाण है कि इस विद्यालय के सभी उत्तीर्ण 47 बैच किसी न किसी सदस्य के माध्यम से विद्यालय में आकर आत्मीयता के साथ मिलते रहते हैं। प्रमाणस्वरूप **'नीराजन'** पत्रिका के स्वर्ण जयंती अंक के लिए, यह निहारे जाने योग्य चित्र है।

अपना विद्यालय आने वाली पीढ़ियों को भी ऊर्जस्वित करता रहे, शुभकामनाओं के साथ।

मनीष कृष्णा
(एडवोकेट)
1988 बैच

शुभकामना-संदेश

हमारे लिए यह हर्ष का विषय है, कि हमारे विद्यालय की पत्रिका ''**नीराजन**'' का स्वर्ण जयंती अंक इस वर्ष प्रकाशित हो रहा है ।

हम सभी का स्वर्णिम समय इस विद्यालय में व्यतीत हुआ । इतने अच्छे शिक्षण संस्थान से हमने विद्या के साथ अच्छे संस्कार, समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपने कर्तव्यों के बारे में शिक्षा प्राप्त की । पं. दीनदयाल उपाध्याय जी एवं अन्य महापुरुषों के जीवन मूल्यों व सद्‌गुणों की शिक्षा तथा समर्पित एवं विद्वान आचार्यों के मार्ग दर्शन से शिक्षा प्राप्त कर, अपने जीवन में अनुशासन व नैतिक मूल्य प्राप्त किए।

विद्यालय छात्रवास में रहकर सब के साथ मिल-जुलकर परिवारिक भाव से रहना अपने आप में सुखद अनुभव था। विद्यालय के आचार्यों ने हमें जीवन में निरंतर अनुशासन एंव राष्ट्र की सेवा के साथ आगे ऊँचाई पर बढ़ने की शिक्षा एवं प्रेरणा दी।

आज हमारा देश तेज गति के साथ हर क्षेत्र में प्रगतिशील है, विश्व गुरु के साथ, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में विश्व शक्ति के रूप में उभर रहा है। ऐसे समय में हमारे विद्यालय के अधिक से अधिक विद्यार्थी राष्ट्र एवं सामाज निर्माण में जुडें, ऐसी ईश्वर से कामना करता हूँ।

विवेक कुमार सचान
उप महाप्रबंधक,
इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड
पूर्व छात्र, (1988- बैच)

संस्मरण

दीनदयाल विद्यालय की अमिट छाप

दीनदयाल विद्यालय की अमिट छाप वैसे तो संस्मरण लिखना सरल कार्य नहीं है और वह भी तब जब संस्मरण आपके हृदय के बहुत निकट भी हो और मन–मस्तिष्क में घनीभूत भी तथापि मेरा प्रयास यही रहेगा कि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति मूल रूप में ही हो। सबसे सरल है सत्य समझना और सत्य ही व्यक्त करना अतएव मैं आज उस दिन की घटना की चर्चा करना चाहता हूँ जब मैं वैधानिक रूप से पं. दीनदयाल विद्यालय का छात्र नहीं हो पाया था। हाईस्कूल, सेंट फ्रांसिस जेवियर्स, अशोक नगर से उत्तीर्ण होने के उपरांत किसी अच्छे इंटर कॉलेज में प्रवेश के लिए प्रयासरत था। बी.एन.एस.डी. कॉलेज का फॉर्म भर दिया था। नम्बर अच्छे थे इसलिए बायोलॉजी ग्रुप में सेक्शन ए मिल भी गया था जो सबसे अच्छा माना जाता था। फिर भी मन मुझे पं. दीनदयाल विद्यालय में पढ़ने की इच्छा से वहाँ खींच ले गया। वहाँ दोस्तों के साथ पहुँचा तो अंदर जा कर आचार्य गयाप्रसाद जी से भेंट हुई, बड़े ही प्यार से मिले और कहा–''कैसे आये, क्या काम है'' उनसे पूछा कि एडमिशन लेना है तो उन्होंने कहा कार्यालय में जाकर पता कीजिये, बहुत अच्छा विद्यालय चुना है तुमने लेकिन जब चयन हो जाये तो। कार्यालय पहुँचा तो संयोगवश कोई था नहीं। इधर–उधर देखा तो सामने हनुमानजी महाराज का दिव्य तेजोमय स्वरूप, थोड़ी देर वहाँ रुक कर प्रणाम किया और पुनः कार्यालय अधिकारी की राह देखने लगा। तभी एक मित्र ने कहा कि प्रिंसिपल ऑफिस में जा कर पूछो। बस यहाँ से मेरी जीवन यात्रा को एक अद्भुत मोड़ देना नियति ने निर्दिष्ट किया था। मैंने बाहर का जालीदार दरवाजा खोला और अंदर देखा तो धवल वस्त्र में एक आभामय व्यक्तित्व अपने कार्य में मग्न दिखाई दिये। मन कुछ देर ठहर सा गया, मैं निःशब्द था। एक क्षण बाद स्वयं को संयत कर मैंने पूछा–'May I come in sir' (उस समय तक यही आदत थी)। उनकी दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी और उन्होंने सपाट शब्दों में पूछा–''कहिये, क्या काम है?'' मैंने कहा कि 11th में एडमिशन लेना है, उसी के बारे में पता करना था लेकिन ऑफिस में कोई है नहीं। इतना सुनकर वह बोले कि कोई बात नहीं पहले बाहर जाइये और दाहिनी ओर एक नोटिस बोर्ड पर एक नोटिस मिलेगा, उसे ढंग से पढ़ लीजिये। पढ़ने के बाद अगर लगे कि मुझसे मिलना चाहिए तो फिर से आ जाइयेगा। मैं बाहर निकला और नोटिस को पढ़ा जोकि केवल दो पंक्तियों का था कि ''एकादश कक्षा में प्रवेश के इच्छुक केवल वहीं छात्र संपर्क करें जिनके हाईस्कूल में कुल प्राप्तांक 75% से ऊपर हों।'' अर्थ स्पष्ट था कि आनर्स है तो आओ अन्यथा जाओ। मेरे अंक 80% थे, इसलिए मैं वापस गया। जैसे ही दरवाजा दुबारा खोला, आचार्य जी ने कहा यानी विशेष योग्यता प्राप्त हो, जाओ फॉर्म भर दो, इंटरव्यू होगा तब पता चलेगा। मैं चुपचाप बाहर आ गया और फॉर्म भर दिया। प्रधानाचार्य जी से यह मेरा पहला साक्षात्कार था जिसकी अमिट छवि आज भी मेरे मन–मस्तिष्क में जीवंत है। इंटरव्यू तो और भी मजेदार था। उस समय की बायो लैब में इंटरव्यू

हुआ था। जब नाम पुकारने पर अंदर घुसा तो दृश्य देखने लायक था। एक साथ एक ही पंक्ति में चार टेबल लगी थीं। उन पर झक सफेद चादर बिछी थीं। एक बार ऐसा लगा कि आईएएस का इंटरव्यू है क्या? अपने प्रिय स्व. श्री हेमन्त जी ने फिजिक्स का, श्री राजेश जी ने केमिस्ट्री का, स्वर्गीय श्री कृष्ण कुमार जी ने इंग्लिश का और श्री प्रकाश जी ने बायो का टेस्ट लिया, सब अच्छा गया। उस दिन केवल एक चेहरे पर मुस्कान देखी और वह थे श्री प्रकाश जी। शेष सभी लोग बेहद गंभीर मुद्रा में थे। मेरा चयन हो गया, मैं बहुत खुश था क्योंकि मेरा हृदय और मन दोनों उस परम पवित्र विद्या के मंदिर में पढ़ना चाहते थे। मेरे मित्र छूट गए क्योंकि वे सब बी.एन.एस.डी. चले गये। मेरा घर भी बहुत दूर था लेकिन मैं स्वयं के बहुत निकट। विधाता ने मेरे उस चयन के माध्यम से जो दो वर्ष मुझे अध्ययन हेतु दिए वह मेरे जीवन के अप्रतिम दो वर्ष हैं (मैं 'थे' इसलिए नहीं कह रहा क्योंकि आज भी मैं अपने भावरूप में उस विशाल कक्ष में हनुमानजी महाराज, माँ शारदा और माँ भारती के समक्ष प्रतिदिन उपस्थित होता हूँ)। मैं आज जो भी कुछ हूँ वह उन दो वर्षों की देन है। अंग्रेजी माध्यम से इतने वर्षों पढ़ने के बाद शुद्ध हिन्दी संस्कृत के वातावरण में स्वयं को ढालना कम दुष्कर नहीं था किंतु सब बहुत सरल हो गया क्योंकि मुझे लगता है कि मैं अपने ऊपर पड़े सभी भौतिक एवं औपचारिक आवरण उतार कर स्वतंत्र हो रहा था और अपने आप को प्राप्त कर रहा था। मैं और मेरी आत्मा उस विद्या मंदिर के सभी आचार्यों और वहाँ से प्राप्त हर संस्कार, हर शिक्षा, हर विश्वास के लिए जीवनपर्यंत ऋणी रहेगी और इससे भी अधिक आनंददायक बात यह कि मैं इस ऋण से कभी उऋण नहीं होना चाहता। **'नीराजन'** की एक प्रति आज भी मेरे ग्रंथागार में रखी है। मैं अक्सर उसको पलट लेता हूँ। पुन: उसमें संस्मरण का योगदान देना संस्कार यज्ञ में आहुति के समान ही होगा। मैं बहुत अनुग्रहीत हूँ कि 32 वर्षों उपरांत नीराजन के माध्यम से उस प्रांगण में पुन: उपस्थित हो पाऊँगा। अवसर देने के लिए बहुत आभार। आप सबका ऋणी –

डॉ0 पंकज श्रीवास्तव (1991 बैच)
MBBS, MS
लैप्रोस्कोपिक एवं चेस्ट सर्जन
ओम सर्जिकल सेंटर एवं मैटर्निटी होम
श्रीकृष्णा नगर, पहड़िया,
वाराणसी, उ0प्र0

संस्मरण

विद्यालय का अक्षय आशीष : युगभारती परिवार

50वाँ अंक

कहने को तो मेरी विद्यालय की पढ़ाई 1993 में समाप्त हो गई थी परंतु विद्यालय के भावात्मक संबंध की दृढ़ता बहुत आगे चल-चल कर पता चली।

नौकरी करने के एक मात्र उद्देश्य से विद्यालय के बाद इंजीनियरिंग और फिर एमबीए करते हुए एक सॉफ्टवेयर कंपनी से तथाकथित कैरियर की शुरुवात हुई, लेकिन विद्यालय के सहपाठियों और आचार्यों से जुड़े भावात्मक सम्बन्ध रह-रह कर यदा कदा मन, मस्तिष्क को कुरेदते रहे। पीछे मुड कर देखता हूँ तो समझ में आता है कि अपने दीनदयाल विद्यालय को वहाँ की पढ़ाई या भवन विशेष नहीं बनाते बल्कि विद्यालय से निकलने के बाद भी विद्यालय के संस्कार और भाव जिन भिन्न-भिन्न रूपों में पूर्व छात्रों के जीवन में जुड़ा रहता है, वह भाव ही विद्यालय को विशेष बनाता है।

सन् 1987 में 10 वर्ष की आयु में जब मैंने माता पिता और संयुक्त परिवार को छोड़ कर विद्यालय के छात्रवास में प्रवेश लिया तब प्रारंभिक दिनों में अपने आपको बहुत अकेला और कमजोर पाया। छात्रवास जीवन की पहली संध्या में सजल नेत्रों ने विशाल कक्ष में हनुमान जी महाराज के चरणों में जो विश्वास पाया वह विश्वास आज भी दृढ़ है। हनुमान जी महाराज में प्रगाढ़ श्रद्धा और आस्था, विद्यालय का दिया हुआ अक्षय आशीर्वाद है। जो मुझे जीवन के फिर किसी और स्कूल, कॉलेज, कंपनी या मंदिर में बाद में नहीं मिला।

छात्र तो विद्यालय से निकल कर जीवन के संघर्षों में खो से जाते हैं लेकिन अपना विद्यालय तो जैसे सदा सदा के लिए हमारे मन, मस्तिष्क और परिवार में बना हुआ है। मेरे पिता जी आज भी प्राचार्य जी (ओमशंकर जी) की सदाचार वेला नियमित रूप से सुनते हैं और इस कारण उनका भावनात्मक संबंध भी विद्यालय से निरंतर बना हुआ है।

कहने को तो आज मेरे इंजीनियरिंग कॉलेज, एमबीए कॉलेज और मेरी पीछे छूट गई कंपनियों के पूर्व छात्रों और सहकर्मियों के समूह हैं लेकिन उन सबमें युग भारती वाली आत्मीयता कहीं परिलक्षित नहीं होती। विद्यालय से निकले हुए 30 वर्ष हो गये लेकिन युगभारती एक दिन के लिए भी नहीं छूटी।

भारत से निकल कर मुझे सिंगापुर आये भी 8 वर्ष से अधिक हो गये। नये देश और नये परिवेश में आने की एक झिझक तो थी लेकिन युगभारती सिंगापुर परिवार से जुड़ने के बाद एक दिन के लिए भी ऐसा नहीं लगा कि हम अपने परिवार या देश या विद्यालय से दूर हैं। मेरे बेटे और मेरी अर्धांगिनी ने कभी विद्यालय को चर्म चक्षुओं से नहीं देखा लेकिन उन दोनों ने युग भारती परिवार के भाव नेत्रों से इतना देखा सुना है कि मानों उन्होंने भी विद्यालय को मन ही मन जी लिया है।

युग भारती के माध्यम से हमारे बच्चे विद्यालय में साक्षात् भले ही न पढ़ पा रहे हों, लेकिन हमारे परस्पर के व्यवहार और आचरण को देख कर उनमें भी इस संस्कार श्रृंखला का प्रभाव ज्वलंत है अभी भी जीवित है। विद्यालय में सीखी हुई प्रार्थना और सुभाषित हम अभी भी अपनी पत्नी और बच्चों के समक्ष गर्व से पढ़ते और गाते हैं।

नौकरी पाने के चक्कर में जो संस्कृत और गीता की पढ़ाई विद्यालय में अधूरी रह गई थी, वह युग भारती सिंगापुर परिवार के संपर्क में आने से पुन: प्रारंभ हो गई। मैंने और पारुल (मेरी भार्या) ने फिर से मिल कर संस्कृत भारती के माध्यम से 2 स्तर पार किए और आगे दो और की तैयारी है। हम सब मिल कर विष्णु सहस्र नाम, भगवद् गीता, रामचरित मानस का पाठ नियमित रूप से करते हैं। विद्यालय की स्थापना से जुड़े मनीषियों के आशीर्वाद से युग भारती के सदस्यों की धर्म पत्नियों ने भी विद्यालय के संस्कारों को सप्रेम स्वीकारा और युगभारती के नियमित मिलन समारोहों का संयोजन पूर्ण प्रेम और श्रद्धा भाव से किया।

हमारे विद्यालय से छूटने के बाद भी विद्यालय से जोड़ें रखने में हमारे अग्रज भैया दीपक शर्मा जी , आचार्य दीपक जी, प्राचार्य जी और युग भारती के सदस्यों का असीम सहयोग और योगदान रहा है।

जब मैं विद्यालय और छात्रवास से 1993 में निकला था और आई .आई .टी . की तैयारी कर रहा था तो कभी कभी सोचता था कि अगर मैं किसी अंग्रेजी मीडियम या सीबीएसई बोर्ड के स्कूल में पढ़ा होता तो इंजीनियरिंग एग्ज़ाम निकालने में आसानी होती। लेकिन आज मैं पीछे मुड़ के देखता हूँ कि शायद और शायद किसी और स्कूल में पढ़ने से इंजीनियरिंग के एग्जाम में कुछ अच्छी रैंक आ जाती लेकिन युग भारती परिवार, आचार्य गणों का जीवन पर्यंत जुड़ाव और संस्कारों की अच्छी नींव जिस पर खड़े हो कर हम अगली पीढ़ी को भी संवार रहे हैं, वह कहाँ से लाते?

प्राचार्य जी सदैव कहते हैं, ईश्वर जो करता है वह सदा ही हमारे अच्छे के लिए करता है। मैं संपूर्ण श्रद्धा भाव से आज यह स्वीकार करता हूँ कि विद्यालय मेरे और मेरे संपूर्ण परिवार के जीवन के लिए अब तक का ईश्वर सबसे बड़ा आशीर्वाद है।

अंत में मैं सिर्फ और सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि मुझे गर्व है कि मैं दीनदयाल विद्यालय का छात्र रहा हूँ और मेरे पिता जी मुझे इस विद्यालय में प्रविष्टि करवाने के अपने निश्चय को अपने जीवन के सबसे अच्छे निर्णयों में से एक मानते हैं।

पंकज रुसिया (1993 बैच)
रीजनल वाईस प्रेसिडेंट-SAP
सिंगापुर

SELFLESS BENEVOLENT ACHARYA JI

There was a major breakout of Jaundice in Kanpur in the year 1991 and thousands of people were impacted by it. In our hostel also many students got impacted by this including myself. We were feeling significant weakness and sick most of the time due to this. Irony is that it was our Board year. High school exams were very near and hence we could not afford to go home and get the treatment there. At that time, Acharya Shri Deepak Ji was the Hostel-In-Charge. Given the seriousness of the situation and impending board exams, he swiftly swung into action and made solid plan to tackle the situation. Arrangement were made to provide us with the appropriate food in case of jaundice which was roti, curd and bottle gourd vegetable without salt. This was served to us daily as the regular food with spices, oil and salt is prohibited in jaundice. Acharya Ji reached out to ayurvedic expert and obtained the recommended treatment. He used to daily arrange the recommended ayurvedic herbs, grind the same in a mixer himself to extract the medicinal juice for us. He put so much of affection and thoughtfulness in this. As the taste of the juice was really bitter, he would keep a small piece of sweet (Petha) and offer it to us once we had finished having the medicinal juice. It was due to his great efforts that all of us recovered to great extent by the time of our board exams. His selfless act allowed us to prepare for the exams well and take the exams confidently. All of us passed the exams with flying colours and some of us even went on to achieve the place in the state merit list. This incident has served as an inspiration to me for teaching following:

1. Be selfless while helping others
2. Learning to make sacrifice of small pleasures in life for greater good.

POSITIVE REINFORCEMENT

I think it happened sometime in the year 1992. I was a hosteller and there were certain rules in place to watch TV. We were allowed to watch only a few programs in pre-determined time slots. But as we were growing up, sometimes we ended up doing some adventures. I along with few of other students did such an adventure once. There was a cricket match going on in which our national team was playing (cannot really remember against which other nation). We could not contain our excitement and decided to take the risk of switching on the TV in the common room and watch the match. We were enjoying the match with lot of excitement and nervousness. Nervous as there was always a fear of being noticed by someone. And that is what exactly happened. A really dutiful care taker saw us watching the match. We knew in our hearts that there was 75% probability that he will report it and 25% probability that may be, he will spare us and not report this time. So, being very optimistic and considering the 25% probability of not being reported, we switched off the TV immediately and went straight to our rooms to save ourselves.After around 15 minutes,

the same care taker came to my room and told that Acharya Ji has instructed me to come in front of 'Vishal Kaksh'. Clearly, the game of probabilities had played against our hope and he had reported our 'act of (mis)adventure directly to Pradhan Acharya Ji. Evidently, before coming to me, he had conveyed the same message to all the students who were reported for the incident. Every one of us came out of our rooms and went towards the Vishal Kaksh. As students were reaching there, Pradhan Acharya ji asked them to stand there in a queue facing towards him. I was the last one to reach there and joined the queue. I did not dare to look at him directly but just by a glimpse of his reaction on seeing me, I could sense that he was certainly not expecting me as part of this. Apparently because I was also holding a position of responsibility in hostel's Student council (this is completely my interpretation of situation).I would have stood there for 5 seconds and suddenly he asked all of us to go back to our rooms. This was really nothing less than a shock for all of us as we were expecting some harsh words in the form of scolding for not respecting the hostel rules. Some of us were happy that they escaped with literally no punishment but personally for me the mental trauma had just started. I really felt disgusted and wanted Acharya ji to give appropriate punishment and scolding to me for this. His silence was feeling like a huge slap in my face without even raising his hand.Somehow I managed to spend the night with may be some sleep as I was feeling uneasy whole night. In early morning the first thing I did was to go to Pradhan Acharya ji's residence and met him. He was his normal self and met me like nothing had happened. I started crying and requested for his forgiveness. He said that there was nothing left to forgive as I had realised my mistake and made that effort to come to him again and being so apologetic about it. Then he asked me to do something good and positive for the students during the day as it was holiday (Sunday). I thought briefly and then proposed that I would arrange a GK Quiz and Maths competition for all the students of class 6th to 8th along with Cleanest Room completion in the hostel. He was happy with the plan and gave his approval for the same.Now, when I think of this incident in retrospective, I believe this whole incident has served as a life lesson for me in Leadership and Responsibility for following reasons :

1. By not giving punishment to me in front of other students, he saved me from falling down in the eyes of fellow students.
2. Positive Reinforcement & Leading by Example - Inspiring me to correct my mistake and motivate to do some good deeds.

Kshemendra Bajpai

Batch - 1993

Working in Tata Consultancy Services as Client Partner for Retail Business Unit. Worked across geographies of US, Sub-Saharan Africa and currently based in Kolkata (Bharat)

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

शुभकामना-संदेश

My classmate Ashish Dwivedi has been a generous, kindhearted and eloquent speaker. During pandemic, one student of my class lost his father. I thought of rendering some monetary help.I shared my feeling with Ashish. He, with the help of other classmates of 1994 batch, collected the amount of 1,75000 and transferred the amount in the account of that student's mother. Such are the alumni of Deendayal Vidyalaya and their values.

- Dr. Durgesh Vajpeyi

As we reach this milestone, I bow in the memory of Shraddheya Bu Ji and Pujniy Barrister Saaheb who built and nurtured this great institution and selflessly dedicated it to the society at large.. I fondly recall how Barrister Saaheb used to take time out every once in a while to meet and address the students.. Every word that he uttered left a lasting impression on our young minds and inspires us to this day..

I also take this opportunity to express profound gratitude to Aadarniy Shri Virendra Parakramaditya Singh Ji for having carried forward that torch through long years under his able guardianship..

And.. It's equally heartening to observe that while adapting to the changes over the course of 50 years the present management team teachers and the Vidyalay Parivaar has successfully preserved those core values which our rich motto volubly proclaims..

Most of us (the former students) landed here chasing academic excellence.. We got much more than that.. We got rich moral values, an awakening towards Sanatan Dharm, a sense of duty towards our families society and our country, foundation to a strong character..

Every big school usually has an old boys association, ours has been a brotherhood & no matter which year you went to the school and no matter where you live.. This wealth is far more than what we could ever imagine or ask for

There is an entire generation of our Acharys who dedicated their youth and their lives in building this great institution and shaping the future of the students-- We have seen their tapasya.. No words are enough to express what we owe to them

I sincerely hope, wish and pray that the future batches coming out from the Vidyalay carry forth the core values of this great institution and continue to make rich contribution towards this country and mankind..

Best Wishes !

नीराजन के स्वर्ण जयंती अंक के प्रकाशन पर विद्यालय परिवार को बधाई...

Ashish Dwivedi
Senior Corporate Leader (CBO)
Safe Upay [Former SVP] Paytm

50वाँ अंक

संस्मरण

विद्यालय से जुड़े संस्मरणों को लिपिबद्ध कर पाना मेरे लिये अति दुष्कर कार्य है। मेरे जीवन के स्वर्णिम काल की तरह हैं वो सात वर्ष जो मैंने विद्यालय में जिये। सोने पे सुहागा यह रहा कि छात्रवास में रहने का सुअवसर मिला। बहुत कुछ प्राप्त किया विद्यालय से। सन् उन्नीस सौ नवासी में अपने घर, अपने परिवार से साढ़े चार सौ किलोमीटर दूर जब प्रथम बार विद्यालय के प्रांगण में प्रवेश किया तो तब से लेकर आज तक उस मंदिर से प्रसाद ही तो लेता रहा हूँ। विद्यालय और छात्रवास से जुड़ी आज भी ढेरों स्मृतियाँ मन मस्तिष्क में जीवंत हैं। रात्रि भोजन से पूर्व यदा-कदा सो जाने पर आचार्य जगपाल जी का हम सभी को मातृवत स्नेह से जगाना, परिवार के मुखिया की तरह आचार्य ओमशंकर जी का वो पितृवत आचरण हो या छोटी-बड़ी हर समस्या पर आचार्य दीपक जी का साथ होना तब भी बहुत ऊर्जा देता था और आज भी बहुत सम्बल देता है। विद्यालय मंदिर में स्थापित हनुमान जी महाराज का विग्रह प्रतिक्षण आँखों के समक्ष रहता है, संकटों से जूझने की शक्ति देता है, विश्वास देता है।

आज जब स्वयं का एक शिक्षक और एक कवि के रूप में आकलन करता हूँ तो यह पाता हूँ कि मेरे शिक्षकत्व, मेरे कवित्व, मेरे व्यक्तित्व के हर एक आयाम को पुष्ट करने में विद्यालय और मेरे गुरुओं की ही महती भूमिका है।

आज नीराजन के स्वर्ण जयंती अंक के माध्यम से पुन: विद्यालय में प्रवेश पा अभिभूत हूँ, अनुगृहीत हूँ।

एकात्म मानववाद की, परिकल्पना का मान हो।
अंग्रेजियत की भीड़ में, हिंदी का जब सम्मान हो।
तब राष्ट्र का निर्माण हो।।
वंचितों की भीड़ में जो, अंत में बेबस खड़ा है।
वस्त्र वंचित देह भीतर, भूख लेकर जो पड़ा है।।
बजबजाती नालियों से, रात दिन जो जूझता है।
अश्रुपूरित नैन में जो, स्वप्न लेकर घूमता है।।
उस मनुज का उत्थान हो, तब राष्ट्र का निर्माण हो।।

चीथड़ों से तन लपेटे, वक्ष पे नवजात बाँधे।
अनवरत जो चल रही है, पीठ पर संसार साधे।।
जीवन थपेड़ों से यहाँ, किंचित नहीं भयभीत जो।
नित कंटकों से लड़ रही, साहस के गाती गीत जो।।
उस नार का सम्मान हो, तब राष्ट्र का निर्माण हो।।

डॉ0 पवन मिश्र
कानपुर, उ0प्र0
पूर्व छात्र, बैच- 1996

संस्मरण

कर्मण्येवाधिकारस्ते

भाग 1 : तमस

वर्ष 2011 कक्षा एकादश। हिन्दी विषय की वेला में आचार्य जी (श्री दुर्गेश वाजपेयी जी) ने बताया कि एक देश-स्तरीय निबंध प्रतियोगिता होने वाली है। इच्छुक छात्र अपनी रचनाएँ आगामी दस दिनों में प्रतिभाग हेतु प्रस्तुत कर सकते हैं। मैंने भी भाग लेने का मन बनाया और नियत समय में अपना लिखा निबंध आचार्य जी को सौंप दिया। आगामी कुछ महीने बड़ी जिज्ञासा और उत्सुकता में बीते। इसके पहले भी मैं आध्यात्म, दर्शन एवम साहित्य में रुचि के कारण इन विषयों पर लेखन किया करता था। कोई बड़ी प्रतियोगिता नहीं जीती थी पर आचार्यजी का प्रशंसा-प्रसाद मिलता रहता था अत: मन में अच्छे परिणाम की आशा प्रबल हो रही थी। परिणाम का दिन आया। आयोजक संस्था ने अपने कार्यालय पर आमंत्रित किया। पिताजी के साथ मैं निर्दिष्ट स्थल पर पहुँचा। देखते-देखते पूरा हॉल बच्चों और अभिभावकों से भर गया। परिणाम घोषित किए जाने लगे। सबसे पहले सांत्वना पुरस्कारों की बारी थी अस्तु मैं आराम से बैठ गया। पर अचानक मुझे अपना और विद्यालय का नाम सुनाई दिया। खुद को संभालते हुए मैं मंच तक गया और सांत्वना का प्रमाण पत्र लेकर चुपचाप अपने स्थान पर वापस बैठ गया।

मन में हताशा घर करने लगी कि क्या मैं इस योग्य भी नहीं था कि कम से कम अपने शहर में ही प्रथम आ पाऊँ। मैंने पिताजी की ओर देखा। वे शांत भाव से बस इतना बोले कि कोई बात नहीं पर अब अर्थपूर्ण चीजों में अपना ध्यान लगाओ। उनका आशय आई.आई.टी. की तैयारी से था। लज्जा और ग्लानि के विचारों में गुंथा हुआ मैं घर वापस लौटा और कुछ दिन विद्यालय में भी इस भय में रहा कि कोई प्रतियोगिता का परिणाम न पूछ ले जो हालांकि किसी ने नहीं पूछा।

भाग 2 : ज्योति

एक वर्ष बीत गया। द्वादश कक्षा आ गई। बोर्ड परीक्षाओं और आई.आई टी. की तैयारी का माहौल गर्म था। इसी बीच वह निबंध प्रतियोगिता भी लौट आई। विगत वर्ष की असफलता की टीस अब भी मन में थी। भाग लेने में कोई विशेष रूचि भी नहीं थी। पर आश्चर्यजनक तौर से आचार्य जी ने मुझसे कहा कि इस बार विद्यालय से सिर्फ एक ही रचना भेजी जानी है और वह तुम्हें लिखकर देनी है।

मैंने लिखना शुरू किया। पर इस बार मन में यही भाव रखकर कि मैं जो कुछ लिख रहा हूँ वह अपने गुरु के प्रीत्यर्थ ; इसके अतिरिक्त किसी अभिलाषा के बिना। इस भाव के कारण मुझे खुद में नवीन सामर्थ्य का अनुभव हुआ जिसके प्रकाश में मैं दिन-रात लिखता गया। फिर न कक्षा का शोरगुल बाधा पहुंचा पाया और न ही अतीत से आती कोई निराशा छू पाई।

तकरीबन सत्रह पन्नों का वह निबंध पूरा करके मैंने आचार्यजी को सौंप दिया। निबंध पढ़कर उनकी स्नेहपूर्ण सस्मित टिप्पणी कि ''अच्छा लिखा है'' को ही मैंने अपना पारितोषिक समझा और सब कुछ सामान्य तौर से चलता रहा।

एक दिन आचार्य जी मुस्कुराते हुए कक्षा में आए और बताया कि तुम्हारे निबंध को पूरे देश में पहला स्थान मिला है। सुनकर जो हर्ष हुआ उसे मन ही मन ईश्वर और गुरु चरणों में समर्पित किया। बोर्ड की प्रायोगिक परीक्षा होने के कारण आयोजक संस्था के सम्मान समारोह में नहीं गया। पर यहां भी आश्चर्य कि संस्था के गणमान्य सदस्यों ने स्वयं विद्यालय आकार मुझे पुरस्कार प्रदान किया। पुरुस्कार पारितोषिक और पुस्तकें आचार्य जी के हाथों में देकर चरण छुए और उससे मिला सुख आज भी हृदय पर स्पष्ट अंकित है।

भाग 3 : पाथेय

यद्यपि मैंने इस संस्मरण को लिखते हुए अहंभाव से बचने का भरसक प्रया किया है, फिर भी कहीं उसकी झलक आती दिखे तो मेरे मंतव्य पर ध्यान दें। मेरे जो अनुज भाई-बहन इस लेख को पढ़ते हुए इस भाग तक पहुँचे हैं उनसे दो बातें कहना चाहता हूँ।

1. जीवन में जो भी कर रहे हैं उसमें अपने भाग पर ध्यान केंन्द्रित करें। आपका भाग क्या हैं? वह यह कि हाथ में आए कर्म को पूरी निष्ठा और तल्लीनता से करें। अपने और औरों के जीवन में उत्कृष्टता लाने का प्रयास करें। परिणाम की चिंता किए बिना सत्कर्म में जी-जान से जुट जाएँ।

2. और कर्म का को जो फल मिले, खुद को उसका स्वामी न समझते हुए उसे ईश्वर या समतुल्य (माता-पिता, गुरु) को अर्पण कर दें। इससे आप अहंकार के बोझ से बचेंगे, हल्के रह सकेंगे और अधिक ऊँचे शिखरों को छू सकेंगे।

अपनी सफलता और प्रसन्नता के मानक खुद तय करते हुए हमें बहुत आगे जाना है। ईश्वर हमारा मार्ग प्रकाशित करें और गुरु कृपा की शीतल छाया सदैव हम पर बनी रहे- इसी शुभच्छा के साथ।

शुभम श्रीवास्तव
2012 बैच
निरीक्षक, केन्द्रीय GST लेखा-परीक्षा
नागपुर

संस्मरण

देशभक्ति के संस्कार

वर्ष 2006, तत्कालीन सरकार विद्यालयों में वन्दे मातरम् गाने पर पाबंदी लगाने का विचार कर रही थी, इस के विरोध में विद्यालय में वन्दे मातरम् दिवस आयोजित किया गया था।

प्रति दिन अवकाश के समय वन्दे मातरम् हमारी दिनचर्या का हिस्सा होने के साथ साथ एक संस्कार एवं राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक था।

विद्यालय में ये खबर सुनने के बाद आरंभ में तो इसके क्या प्रभाव होंगे उतनी समझ नहीं थी लेकिन सदाचार वेला के बाद स्वर्गीय आचार्य श्री दिनेश जी का एक वक्तव्य होना था.. आचार्य श्री दिनेश जी के बारे में बहुत लोग शायद नहीं जानते होंगे इसलिए उनके बारे में एक पंक्ति में ये बताना चाहूँगा कि दिनेश जी के भाषण में आपके जीवन धारा को मोड़ने की शक्ति थी, तो मैं जो उस समय अष्टम कक्षा का विद्यार्थी था, विशाल कक्ष में बैठा एवं प्रार्थना के बाद आचार्य श्री दिनेश जी बोलने हेतु उठे, आचार्य जी ने वन्दे मातरम्, उसके महत्व एवं उसकी हमारी सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चेतना में क्या भूमिका पर है उस पर ऐसा वक्तव्य दिया कि मेरे बाल मन पर अमिट छाप पड़ गई उस वक्तव्य की। अब इस बाल मन में गुस्सा था, संकल्प था, बहुत कुछ करने की चाह थी लेकिन कैसे ?

उस समय उस गुस्से को प्रेरणा बना कर अपने विचारों को कविता के माध्यम से सब तक पहुँचाने का निर्णय लिया। किशोर भारती अगले दिन भाषण एवं गीत गायन का आयोजन करने वाली थी, किशोर भारती के अध्यक्ष भैया प्रकाश केशव जी थे, मैं ऊहापोह में था एक तरफ गुस्सा था और उसे लोगों तक सकारात्मक रूप में पहुँचा उन्हें भी ऊर्जस्वित करने का मन था, दूसरी ओर स्टेज फोबिया था, कभी मंच पर गया नहीं था, दोस्त मजाक बनायेंगे, भूल गया तो क्या होगा, लोग क्या कहेंगे आदि। इसी उधेड़बुन में जब कार्यक्रम के लिए नाम लिखने की सूचना आयी तो उसमें नाम नहीं दिया संकोच वश..। द्वन्द्व था ..आत्म विश्वास की कमी, डर और राष्ट्र प्रेम की प्रबल भावना।

लेकिन विद्यालय ने जो हमारे विचार प्रवाह को सींचा था संस्कारों और राष्ट्र प्रेम से उसकी वजह से मैं लघु शंका की अनुमति माँग केशव जी को ढूँढ़ने भागा..। उन्हें ढूँढ़ कर निवेदन किया कि मेरा नाम डाल दीजिए, वो बोले पहले क्यों नहीं डलवाया मैं झेंप कर बोला– ''डर गया था।''

अब नाम लिखा जा चुका था और मेरे मित्र गण ये योजना बना रहे थे कि मुझे चिढ़ाया कैसे जायेगा कैसे हूटिंग की जाएगी ..।

अब कार्यक्रम का दिन था, मामला गंभीर हो चला था.. हूटिंग की सविस्तार योजना कई बार सुन चुका था, बार–बार विचार आते नहीं जाते हैं, बहाना बना देते हैं, या मैं इनकी तरफ देखूँगा ही नहीं। मैं दोस्तों के बीच बैठा विशाल कक्ष में अपनी बारी का इंतजार कर रहा था.. नाम बुलाया गया और हूटिंग का पहला दौर मेरे उठने के साथ ही प्रारंभ हो गया...।

मैं पोडियम पर पहुँचा, कविता एक डायरी में लिखी थी और डायरी मैं सामने रख कर पढ़ने वाला था..।

कविता थी– मैं घायल घाटी की धड़कन गाने निकला हूँ– हरि ओम पवार जी की।

उस समय लंबाई अधिक नहीं थी और सामने से सिर्फ चेहरा ही दिख रहा था..।

काव्य पाठ शुरू हुआ.., काश्मीर जो खुद सूरज के बेटे की राजधानी थी, डमरू वाले शिव शंकर की जो घाटी कल्याणी थी.. अब डर की जगह ओज था, आवेग था, भारत माँ की पुकार थी, बंकिम चंद्र चटर्जी की वेदना थी.. डायरी के पन्ने पलटते जा रहे थे, कविता लंबी थी, लेकिन अब विशाल कक्ष में सन्नाटा था सिर्फ कविता की पंक्तियाँ गूँज रही थीं.. सामने एक पत्रकार नीचे बैठ कर फोटो लेने की कोशिश कर रहा था, रेखा मैम ने दो बार कोशिश की, कि मैं सामने देख कर पढ़ूँ जिससे वो फोटो ले सके, लेकिन मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था .. कविता खत्म हुई, मैंने सामने देखा.. तालियों से विशाल कक्ष गूंज रहा था, पीछे आचार्य गण खड़े हो कर तालियाँ बजा रहे थे..।

उस दिन के बाद से कोई डर कभी मंच से बोलने से नहीं रोक पाया। विद्यालय आपके चरित्र में जो मूल्य डाल रहा है वो आपको आपकी युवा अवस्था में समझ आयेंगे। आप विशिष्ट हैं क्योंकि आप दीनदयाली हैं, और आप दुनिया में कहीं हो आप दीनदयाली रहेंगे और विशिष्ट रहेंगे, लेकिन क्यों है ?

क्योंकि हमारा ध्येय है– ''प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल आत्म विश्वास युक्त बौद्धिक क्षमता एवं निस्सीम भाव संपन्ना मनः शक्ति का अर्जन कर अपने जीवन को निस्वार्थ भाव से भारत माँ के चरणों में अर्पित करना ही हमारा परम साध्य है।''

अनुराग त्रिवेदी (2011 बैच)
संस्थापक, ऋत फाउंडेशन,
शान आई.ए.एस., एकेडमी
गुरुग्राम

संस्मरण

मेरा विद्यालय स्मृतियों में सनातन

जब भी मैं अपने विद्यालय का स्मरण करता हूँ, मैं खुद को एक ऐसी जगह के बारे में याद करता हुआ पाता हूँ जो एक संस्था से कहीं अधिक थी चरित्र निर्माण और शैक्षणिक उत्कृष्टता का अद्वितीय संगम।

आज जब हम अपने विद्यालय की स्वर्ण जयंती वर्षगाँठ मना रहे हैं, तो इस अवसर पर इस संस्मरण के सहारे मैं न केवल अपनी यात्रा का जश्न मनाता हूँ बल्कि उन अनगिनत व्यक्तियों के सामूहिक अनुभवों का भी जश्न मनाता हूँ जिनको मेरे समान उस पवित्र विशाल कक्ष में अतुलित बल धामं श्री हनुमान जी, माँ सरस्वती और माँ भारती के नित्य दर्शन और वंदन का मौका मिला। मैं अपने सभी आचार्यों को इस संस्मरण के माध्यम से प्रणाम करता हूँ और उन से आशीर्वाद की प्रार्थना करता हूँ। मेरे विद्यालय के गलियारों में अनुशासन सिर्फ एक शब्द नहीं था। यह जीवन का एक तरीका था। विद्यालय के दिनों में मुझे कई बार आचार्यों से दंड पाने का सौभाग्य मिला। यद्यपि उस समय यह घटनाएँ चुनौतीपूर्ण प्रतीत हुई, लेकिन यह सभी मेरे चरित्र निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम थे। आज पीछे मुड़कर देखने पर, मैं उन दण्डों को कठोर सबक के रूप में नहीं, बल्कि विकास के अवसरों के रूप में पाता हूँ, जो मुझे खुद के एक बेहतर संस्करण में ढालते हैं।

आचार्य श्री मनोज जी के डस्टर की कृपा से मुझे आज भी माहेश्वर सूत्र कंठस्थ है, आचार्य श्री सतीशजी की इतिहास एवं नागरिक शास्त्र की कॉपी सँवारते–सँवारते मेरी लिखावट सुधर गयी, आचार्य श्री महेशजी के त्रिकोणमिति रुपी दंड इत्यादि। ऐसे प्रसंग तो अनेक हैं और पत्रिका में स्थान सीमित, इस कारण एक किस्सा बताना चाहूँगा जिससे मुझे एक बहुत ही महत्वहीन सी लगने वाली क्रिया विधि, भोजन करने के तरीके को लेकर एक नया दृष्टिकोण मिला। मुझे विद्यालय में आये कुछ महीने ही हुए थे, एक बार विलम्ब होने की वजह से मैंने विशाल कक्ष के बजाय कक्षागृह में ही भोजन करने का निर्णय लिया। संयोग से उस दिन प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर जी दौरा करने निकले और मुझे कक्षा में छुपा पाया। प्रधानचार्य जी का व्यक्तित्व और उनके बारे में प्रचलित दंत कथाओं से उनकी एक छवि मेरे दिमाग में पहले से थी। इस कारण, जब उन्होंने मुझे पकड़ा तो मेरा दिमाग तो बंद ही पड़ गया। उस समय मैं उनके किसी भी प्रश्न का उत्तर तक नहीं दे पाया। आचार्य जी ने शायद मेरी स्थिति को भाँप लिया और अपनी तथा कथित छवि के विपरीत जाकर मुझे प्यार से भोजन करने की शैली

के बारे में समझाया। उस समय जब उनका उपदेश खत्म हुआ तो मुझे कुछ समझ नहीं आया, मैं तो सिर्फ इस बात से खुश था कि पिटने से बच गया। परन्तु आज जब मैं इस घटना को याद करता हूँ तो लगता है कि आज के समय में यह कितना महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक है। मेरे विद्यालय के उल्लेखनीय पहलुओं में से एक है यहाँ की कुशल शिक्षण विधियाँ। हालाँकि यह एक हिंदी माध्यम संस्थान था, परन्तु मुझे कभी भी अंग्रेजी बोलने वाली दुनिया में किसी प्रकार की समस्या नहीं हुई। भौतिकी और रसायन विज्ञान की प्रयोगशालाओं का मेरी विज्ञान के प्रति समझ और जिज्ञासा में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। रसायन विज्ञान की प्रयोगशाला में लाल और पारदर्शी द्रव्यों को चुपके से मिलाकर नीला बना देने में जो विस्मय और कौतूहल होता था, वो अमूल्य था और सदैव रहेगा।

गुलशन गुप्त
इसरो, वैज्ञानिक (बैच- 2010)

MY INNOVATIVE EXPERIENCE AT DEENDAYAL VIDYALAYA

For the first time in my life, I was in boarding school at PDDUSDV, Kanpur. I met new classmates who are now my brothers, and I met new teachers who are my guiding lights to date. I thought I would be staying in a hostel, but I lived there in a house named Vivekananda Bhavan, which is still a dream place to stay with all those people again. I used to take tuition classes till 10th grade, but as soon as I reached PDDUSDV, I learned how to finish a chapter in the best possible way and also, if required, how to make someone else understand the concepts in the best possible manner. I not only did my 12th grade at PDDUSDV, but I also learned how to live like a man who can stay calm, humble, dedicated, and withstand the worst in the best possible manner. For me, PDDUSDV is not a school; it is a centre where you learn the best of the spiritual, social, and educational aspects of life to live the life of a gentleman who can lead society.

Shakti Mayank Singh
(Engineer Grid Controller Of India (Government Of India Undertaking)

सदाचार वेला का महत्त्व

आज मैं विद्यालय से जुड़ा हुआ कोई संस्मरण लिखने के विषय में सोच रहा हूँ, तो जीवन के वे सात वर्ष आँखों के सामने से निकल रहे हैं। मैं समझता हूँ वह प्रत्येक छात्र जिसने भी दीनदयाल विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की है वह भी यही अहसास करता होगा। छात्रवास से जुड़े होने के कारण एक नियमित दिनचर्या का पालन छोटी सी उम्र से ही हर छात्र को स्वयं को आगे निकालने के लिए प्रेरणादायक होता था। प्रातः शीघ्र उठाना, प्रातः स्मरण करना, जलपान, अध्ययन, भोजन, स्वाध्याय व दीपविसर्जन का समय अनुसार पालन करना आत्मनिर्भर बनाने में सहायक रहा। इसके साथ ही सदाचार वेला में आचार्यों द्वारा संबोधन व प्रतिदिन नया ज्ञान मार्गदर्शक होता था जो कि संपूर्ण जीवन के लिए उपयोगी है। अध्ययन के अतिरिक्त जो एक चीज विद्यालय को अलग बनाती है वह है आचार्यों द्वारा दिए गए संस्कार एवं छात्रों व आचार्यों के बीच का रिश्ता। परिवार से दूर रह रहे छात्रों को कभी कोई कमी न महसूस होने देना तथा उनके सर्वांगीण विकास में योगदान विद्यालय को बाकी सबसे अलग श्रेणी में रखता है। यह आज के समाज में बहुत ही दुर्लभ है। इसके साथ मैं एक घटना का वर्णन करना चाहूँगा जो मुझसे जुड़ी हुई है। इंटरमीडिएट की बोर्ड की परीक्षा के दौरान मेरी तबीयत खराब हो गई और मैं इस परिस्थिति में भी नहीं था कि मैं परीक्षा देने जा सकूँ। भविष्य को लेकर भी डर लगा ,कि कहीं साल व्यर्थ न हो जाए लेकिन विद्यालय के एक आचार्य जी ने प्रेरित किया और मुझे हिम्मत दिलाई और मुझे परीक्षा दिलवाने की पूरी जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं ली। सुबह 7 से 10 वह हाईस्कूल की परीक्षा विद्यालय में करवाते फिर मेरे चाचा के घर श्याम नगर जो कि 15 किलोमीटर दूर है वहाँ से मुझे लेकर परीक्षा केंद्र पर छोड़कर 2 से 5 पुनः विद्यालय में इंटरमीडिएट की परीक्षा के लिए आते। उसके पश्चात् फिर केंद्र पर आकर मुझे लेकर घर छोड़ते। ऐसा उन्होंने हर परीक्षा के दिन किया और मेरी परीक्षाएँ संपन्न करवाई, ऐसा केवल दीनदयाल विद्यालय में ही संभव है। ऐसे गुरुओं का मैं जीवन भर आभारी रहूँगा और अपने को भाग्यशाली समझता हूँ जो अपने जीवन के 7 वर्ष दीनदयाल विद्यालय में व्यतीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और ऐसा मार्गदर्शन मिला। अंत में हनुमान जी से प्रार्थना है कि विद्यालय की कीर्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती रहे तथा उनका आशीर्वाद हम सभी पर बना रहे।

राहुल तिवारी
Lead Consultant, TCS, Noida
(बैच 2003)

अविस्मरणीय सदाचार वेला

जब मेरा चयन दीन दयाल विद्यालय में हुआ, तब मुझे विद्यालय की अनंत सीमाओं और महत्त्व का बोध हुआ। घर में आने वाले परिचितों तथा निकट सम्बन्धियों से यह तो अच्छे से पता चल गया कि दीन दयाल विद्यालय का विद्यार्थी संस्कारित होता है और यहाँ शिक्षा प्राप्त करना परम सौभाग्य होता है।

विद्यालय में अध्ययन करने के दौरान एक बात का अनुभव अवश्य हुआ कि जिस विद्यालय में मैं पढ़ रही हूँ इसकी एक गौरवशाली विरासत है। यह ऐसा स्वर्णिम अवसर है जो कि समाज और अच्छे भविष्य को जन्म देता है।

मुझे आज भी अच्छे से याद है विद्यालय प्रार्थना के पश्चात् की 'सदाचार वेला', जिसमें हमारे आदरणीय गुरुजनों द्वारा सदैव परोपकार व सच्चाई का मार्ग प्रदर्शित किया गया है। मैं आजीवन सदाचार वेला का ज्ञान विद्यालय की अमूल्य धरोहर के रूप में सम्भाल कर रखूँगी। विद्यालय ने मुझे बहुत कुछ दिया है, इसने मुझे आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और नैतिक तथा भौतिक ज्ञान प्रदान किया है। वास्तव में गीत-संगीत, शिक्षा व सांस्कृतिक और अंतर स्कूली प्रतियोगिताओं में मैंने जो पुरस्कार और ट्राफियाँ जीती हैं, वह इस विषय में काफी कुछ बयान करती हैं। यह गुरुजनों द्वारा हमारी पढ़ाई और मानसिक विकास के लिए किए गये कठिन परिश्रम को दर्शाता है। आज भी जब मैं अपने विद्यालय के बारे में सोचती हूँ या कोई भी संस्मरण याद आता है तो मन अत्यंत आह्लादित हो जाता है। मैं खुद को काफी भाग्यशाली मानती हूँ जो मुझे इस विद्यालय में अध्ययन का अवसर मिला जहाँ हर एक बच्चे के समग्र विकास पर हर तरीके से ध्यान दिया जाता है। मुझे इस विद्यालय की छात्रा होने पर वास्तव में काफी गर्व है।

अपूर्वा मिश्रा
2018 बैच

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

50वाँ अंक

शुभकामना-संदेश

मेरे लिए और मेरे जैसे असंख्य छात्रों के लिए बहुत ही हर्ष का विषय है की विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'नीराजन' स्वर्णिम पचास वर्ष पूर्ण कर रही है तथा इस अवसर पर स्वर्ण जयंती अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं खुद को बहुत ही ज्यादा सौभाग्यशाली मानता हूँ की मुझे इस विद्यालय रूपी मंदिर में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला।

प्रतिष्ठा, संस्कार और सम्मान के साथ पचास वर्षों का समय पूरा करना अत्यंत ही गौरवपूर्ण उपलब्धि होती है। मैं अपना यह सौभाग्य समझता हूँ कि मुझे इस गरिमापूर्ण शिक्षण संस्थान में समर्पित तथा विद्वान शिक्षकों से ज्ञान एवं संस्कार प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ था।

विद्यालय इसी प्रकार निरंतर समाज एवं देश को प्रगति के रास्ते पर ले जाने वाली संस्कारी और शिक्षित युवा पीढ़ी को तैयार करता रहे।

पूरे विद्यालय परिवार को बहुत बहुत साधुवाद एवं भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रत्यूष त्रिवेदी ''सौरभ''
2016 बैच, पं. दीनदयाल उपाध्याय
सनातन धर्म विद्यालय

विद्यालय रूपी वट वृक्ष की वार्षिक पत्रिका ''नीराजन'' के स्वर्ण जयंती अंक के प्रकाशन पर बहुत शुभकामनाएँ।

विद्यालय सनातन एवं शाश्वत मूल्यों के आधुनिक एवं गतिशील संप्रेषण द्वारा पाँच दशकों से भी अधिक समय से राष्ट्र निर्माण हेतु चरित्र निर्माण में लगा है। विद्यालय भारत की स्वतंत्रा के 100 वर्ष पूर्ण होने पर सभी शिक्षण संस्थानों के लिए राष्ट्र निर्माण का और बड़ा प्रतिमान बने ऐसी मंगल कामना है।

अनुराग त्रिवेदी
संस्थापक : ऋत फाउंडेशन,
(पूर्व छात्र- 2011 बैच)

I am extremely happy to know that my "Vidhyalaya" is bringing out the Golden Jubilee issue of the Vidyalaya's annual magazine "Neerajan". Completing fifty years with such dignity and respect is a landmark moment & proud achievement for any institution. I consider it as my greatest fortune that I had the opportunity to learn in such an unparalleled educational institution and from very dedicated and learned teachers. The school continues to make progress; I express my best wishes.

Gauri Tripathi
Passing Year : 2017 B. Sc.-VSSD College, Kanpur, , 2017-2020 M.Sc. (Chemistry), 2021-2023 IIT Jodhpur , Ph.D (Chemistry) (Present), Georgia State University, Atlanta, Georgia,, United States of America

शुभकामना संदेश

आज भी जब मैं अपने विद्यालय का स्मरण करता हूँ तो असंख्य स्मृतियाँ आँखों के सामने आ जाती हैं। छात्रावासी जीवन में दिनचर्या का सुबह 5 बजे से प्रारंभ होना, फिर प्रात : स्मरण व एकात्मता स्तोत्र का पाठ आपको भारतवर्ष की मिट्टी से प्रेम करना सिखा देता है। आज मैं देखता हूँ तो बहुत से मोटिवेशनल स्पीकर्स सुबह उठने का महत्त्व बताते हैं जो मुझे विद्यालय से विरासत में मिला है। भारतवर्ष को सिर्फ एक भूभाग ही न समझना अपितु एक जीवंत राष्ट्रपुरूष के रूप में देखना मैंने विद्यालय से ही सीखा है। विद्यालय जीवन में मेरे श्रेष्ठ आचार्यों ने सीमित संसाधनों के होते हुए भी उच्च मनोबल से हम सब में शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक व नैतिक मूल्यों का समावेश किया। यह मुझमें कभी बौद्धिक शून्यता नहीं आने देता है। विद्यालय में अध्ययन के समय जो सदाचार वेला होती थी, उसकी भी आज तक मेरे मानस पटल पर अमिट छाप है। धर्मरथ, गुरूवंदना इत्यादि आपको सदैव उत्साहित रखते हैं। मेरे विद्यालय ने मुझे अनुशासन, अपने कार्य के प्रति ईमानदारी आदि जीवन मूल्य सिखाये जो आज भी मेरी बहुत सहायता करते हैं। मैं अपने सभी आचार्यगणों के चरणों में दंडवत प्रणाम करता हूँ जिन्होंने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से मुझे सही जीवन जीने की प्रेरणा दी। मेरे विचार से दीनदयाल विद्यालय न केवल एक शिक्षण संस्थान है वरन एक वैचारिक शक्ति केंन्द्र है जिसमें एक पक्ष भावनाओं का है जो विद्यालय में अपने गौरवशाली अतीत का ज्ञान समाहित करता है तो दूसरी ओर शिक्षा में अग्रणी रहता है। सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष श्रीमद् हनुमान जी महाराज के प्राण प्रतिष्ठित विग्रह का विराजमान होना दीनदयाल विद्यालय को अद्वितीय बनाता है। मैं हनुमानजी महाराज से प्रार्थना करता हूँ कि मेरे विद्यालय की यश पताका सदैव अनंत गगन में लहराती रहे।

सौरभ कुमार अवस्थी
पूर्व छात्र, बैच-2003
Software Engineer, Synopsys India Pvt. Ltd. (Noida)

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

50वाँ अंक

शुभकामना संदेश

सन् 1971 में कक्षा षष्ठ में प्रवेश लिया। तब मैं ग्यारह वर्ष का बालक था। इसके पश्चात् मैंने अपना शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया। पढ़ाई में ज्यादा रुचि न होने के कारण मैं मध्यम वर्ग का छात्र था। परन्तु मेरा स्वाभाव थोड़ा शरारती हुआ करता था। जिस कारण मुझे खेल-कूद अत्यधिक प्रभावित करते थे। विशेष रुचि होने की वजह से मैं खेल -कूद प्रतियोगिता में अपना सौ प्रतिशत अपना योगदान देकर प्रथम आया करता था। मैं अपने विद्यालय का सबसे निर्भीक विद्यार्थी होने के कारण कक्षा षष्ठ में ही सेनापति बनाया गया। हमारे विद्यालय में काफी प्रतिभावान आचार्य जी थे परन्तु मैं ओमशंकर जी से अत्यधिक प्रभावित होने कारण उन्हें अपना आदर्श मानता था। अन्ततः मैंने अपने विद्यालय से बहुत सी विषय वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त किया और तीन साल के अनुभव के बाद एक निर्भीक और आदर्श नागरिक बनकर निकला। मैं इस समय धर्मयुक्त जीवन जीता हूँ। मैं 'युग भारती' बुन्देलखण्ड का अध्यक्ष हूँ। मैं विद्यालय के लिए बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।

राघवेन्द्र सिंह
पूर्व छात्र, हाई स्कूल(1976)
कृषिकर्म एवं व्यवसाय

विद्यालय की वार्षिक पत्रिका (नीराजन) के स्वर्ण जयंती अंक का प्रकाशन एक अत्यंत हर्ष का विषय है। निरंतर पाँच दशकों तक एक विद्यालय के द्वारा उच्च गुणवत्तापूर्ण प्रदर्शन एक प्रेरणादायक उपलब्धि है। मैं विद्यालय में प्रति अत्यंत कृतज्ञ हूँ।

मैं विद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु अनेक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

आलोक यादव
पूर्व छात्र,
2007 बैच
उपाध्यक्ष, विकास प्राधिकरण, झाँसी

दीनदयाल विद्यालय का महत्त्व

जिस दिन इस विद्यालय के चद्रांकर भवन और विशाल कक्ष में हनुमान जी मूर्ति पर निगाह पड़ी थी, उस दिन उस छोटी उम्र में ही यह आभास हो गया था कि ये पवित्र स्थान महज़ शिक्षा का केन्द्र नहीं है। एक विद्यार्थी होने के लिए जो भी चीजें भावनात्मक और प्रयोगात्मक रूप से विद्यमान रहती हैं वो सभी इस विद्यालय परिसर में मौजूद हैं। लोगों के लिए स्कूल हुआ करते हैं, इस संस्था में अध्ययनरत लोगों के लिए सम्बोधन शब्द ''दीनदयाल विद्यालय'' ही रहता है। दीनदयाल जी जैसे महान व्यक्ति की निर्मम हत्या के बाद जिन ममतामयी बूजी ने अपने गहने बेचकर इस विद्यालय की बुनियाद रखी हो ताकि एक दीनदयाल जाने के बाद उनके आदर्शों पर चलने वाले हज़ारों दीनदयाल खड़े होकर समाज को नयी दिशा देने का काम कर सकें। आज बहुत लोग अक्सर ये बोलते हैं कि तुम लीक से हटकर चलने वाले लोग हो। मैं भी तपाक से बोलता हूँ हम कानपुर के दीनदयाल विद्यालय से हैं, जहाँ सिर्फ पढ़ाई करके कैरियर बनाना ही विद्यार्थी जीवन की कसौटी नहीं है, वरन् सामाजिकता के सभी पहलुओं पर खुद को बनाना, यही इस विद्यालय की ख़ासियत है।

जब भी दीन दयाल विद्यालय की बात आएगी मेरे लिए तीन शब्द हमेशा सम्मान के साथ खड़े और डटे रहेंगे – गौरव, पहचान और अभिमान। व्यक्तिगत रूप से पढ़ने लिखने, बोलने और अपनी अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने की देन भी यही विद्यालय है। पढ़ने के दरम्यान नीराजन पत्रिका में अपनी छपी कविताएँ और लेख आज याद आने लगे हैं, ''चैरेवेति चैरेवेति'' नाम से निकलने वाले विशेषांक को मैंने पूरा पढ़ा था, वो सब कुछ याद आने लगा। जो इस पत्रिका से जुड़ा था, मैं बधाई देता हूँ वर्तमान विद्यालय परिवार को जिनके दिशा निर्देशन में पत्रिका 50वें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं । विद्यालय से सम्बंधित न जाने कितने संस्मरण और स्मृतियाँ मेरे जेहन में उमड़ने लग रहें हैं, पर लिखने की सीमा है और यहीं पर अपनी कलम को विराम देकर पत्रिका के समस्त सम्पादक मंडल को अग्रिम बधाई और इस पत्रिका के आने की इसको पढ़ने की ललक और बैचैनी बढ़ती रहेगी ।

प्रशांत मिश्र
एसिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय
पूर्व छात्र, बैच– 2012

संस्मरण
विद्यालय की स्मृतियाँ

पंडित दीनदयाल उपाध्याय विद्यालय मेरे जीवन में एक अविस्मरणीय छवि अंकित करता है। मैं इस विद्यालय में जुलाई 2002 में नियुक्त हुई। इसके पूर्व मैं आर्मी पब्लिक स्कूल में अध्यापनरत थी। आर्मी पब्लिक स्कूल के परिवेश एवं यहाँ के परिवेश में बहुत अंतर था। मेरे मन में एक अनजान सा भय समाया हुआ था कि मैं यहाँ के परिवेश में कैसे ढल पाऊँगी । परंतु मेरे माता-पिता अत्यंत प्रसन्न थे कि मैं ऐसी सम्मानित संस्था का अंग बनने जा रही हूँ जिसकी प्रतिष्ठा देश में ही नहीं बल्कि विश्व विख्यात है। विद्यालय में पदार्पण करते ही शिक्षक परिवार भगवान बजरंगबली के समक्ष नतमस्तक होकर आशीर्वाद लेता है। यह दृश्य नयनाभिराम था । प्रधानाचार्य जी का वात्सल्यपूर्ण व्यवहार देखकर मेरा हृदय हर्ष से गद्‌गद हो गया । संपूर्ण विद्यालय में मात्र तीन महिला शिक्षिकाएँ थीं, परंतु उन्हें बहनों से कम सम्मान नहीं मिलता था। इतना प्यार पाकर अनायास ही आज भी आँखें सजल हो जाती हैं । माननीया शारदा दीदी के मार्गदर्शन के अभाव में हमारा वहाँ कार्य करना संभव नहीं हो सकता था। पग-पग पर उनका स्नेह एवं मार्गदर्शन मेरा हौसला बुलंद करता गया और मैंने अपने जीवन के छह वर्ष वहाँ सम्मान एवं प्यार से व्यतीत किये। आज भी दिल उन दिनों को भूला नहीं।

प्रधानाचार्य जी का वात्सल्य पूर्ण व्यवहार हमें विद्यालय में माता-पिता की कमी महसूस नहीं होने देता था। बड़ी से बड़ी समस्या वह मुस्कुरा कर दो शब्दों में ही हल कर दिया करते थे। दीपक जी का स्नेह और मार्गदर्शन हर पल काम आया और आज विद्यालय से जुड़े रहने का सौभाग्य सिर्फ दीपक आचार्य जी के कारण ही हो पाया है जिसकी लिए उन्हें बहुत बहुत धन्यावाद देती हूँ। वर्तमान में अनेक शिक्षण संस्थाएँ मात्र व्यवसायिक केंद्र बनकर रह गई हैं। ऐसे समय में दीनदयाल जैसे विद्यालय भारत को ऐसे नागरिक प्रदान करते हैं, जो अपने प्राचीन संस्कारों, राष्ट्रहित तथा समाज हित को प्राथमिकता देते हैं। विद्यालय प्राचीन गुरुकुल की याद दिलाता है। मंत्रोच्चारण एवं वाणी वंदना से दिन का प्रारंभ; संस्कार और ज्ञान के धनी गुरुजन और अच्छा संस्था प्रधान एक साथ देखना हो तो अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं। मैं गर्व का अनुभव करती हूँ कि मैं ऐसी संस्था का अंग रह चुकी हूँ। जिसके तार आजीवन मुझसे जुड़े रहेंगे।

सीमा मिश्रा,
भूतपूर्व शिक्षिका
(दीनदयाल विद्यालय)

IMMORTAL CREATION *of a great school*

Pt.Deendayal Upadhyay Sanatan Dharma Vidyalaya - a name to reckon with in the 80s & 90s ,saw a change in the new millennium and now it's a school with the board changed to CBSE and above all transformed into a co- education system with language of education being changed to English.

Change is welcome, change is a must for being relevant in the present but I hope they haven't changed the value system of the school that I see prevalent in all the men of my husband's batch and many batches senior and junior to them .

I am proud to be the spouse of a deep rooted deendayali as they call themselves .What I admire is the rock solid sanskars they grew up with having utmost respect for their gurus (who are now mere teachers for the present generations) and supreme regard for anaj - the food we all eat with zero tolerance to wastage and unwavering reverence for parents, human values and mankind . I admire the way my husband and all his friends respect their seniors and even batchmates so as to say touch the feet of seniors something I have not seen before .

I always admire the fact that teachers of the school not only took care of the boys but grommed them in all ways during school and even beyond school hours . Training of boys for IITs would be done in the school after classes and scores of IIT aspirants rolled out each year under the insightful guidance of school mentors who did it all in an extremely selfless way . Coaching or tuitions weren't part of the school system during those times .To find such gurus and and be able to shape your personality under them is surely a blessing .

Principal and teachers played a huge role in shaping the ideology of children. The sadachar vela which Alok talks about was such a phenomenal idea used to instill and inspire patriotism in young minds through stories on brave leaders and freedom fighters . If we don't know our past, we won't value our freedom and the fighters/ leaders who selflessly fought for it .

For me this is such an important thought which should be followed in all schools irrespective of board, medium, gender and level whether at grassroot level as in villages or bigger schools in metros with international boards . International curriculum is great which I am not against but children growing up in all schools of India should have these inherent. Indians respect indian culture and cherish their Indian brave heros and live in awe of them when they grow up . It helps us value our country and take pride in it .

Acharya Om Shankar ji the then principal is a great orator and I always look forward to hearing him. He was an excellent teacher guru and managed the school brilliantly with utmost discipline and Acharya Deepak ji has shaped so many lives of boys as he has dedicated his whole youth and his later years to groom, educate, mentor and connect boys who are now grownup men. His binding with his students is something that

facinates me and inspires me to know that gurus still exist. Although he doesn't have children of his own but he has hundreds of chidrens and their families who take care of him in his older years.

Just sharing an instance by which I was over awed - the bond that students from this school have was beyond my imagination, one of the juniors 15years down the line sent help and meals for had been a senior which had been in a hospital for almost a month shows the grooming of each student that was instilled in them during school days ,such was and I do hope is the value system of a school such as this.

All in all it has been a school that has shaped good humans who have been raised with a very high value system.

Nalini Sanwal
Batch - 1988
Wife of Alok Sanwal

संस्मरण

बालक के रूप

साल था 2001, महीना था जुलाई का और वो था विद्यालय का दूसरा दिन। हमारा प्रवेश कक्षा षष्ठ में हुआ था और इस बात पर हम फूले नहीं समाते थे। विद्यालय- जिसके सामने से गुजरते कितने महीनों तक ये स्वप्न मन में बुना जाता रहा कि इसके भीतर ससम्मान प्रवेश पाकर इसमें पढ़ पाएँ, हम अब उसके भीतर पहुँच चुके थे ।

इस विद्यालय का परिवेश मेरे पिछले स्कूल के परिवेश से एकदम भिन्न था। सांस्कृतिक रूप से भी और मूल्यों के आधार पर भी। भाषाई भिन्नता अपनी जगह थी सो अलग। उत्तिष्ठ, उपविश, सावधान, विश्राम, अर्धवृत्त प्राचल, मातृ प्रणाम- एक, दो, तीन, वंदना स्थिति, कुरु इस तरह के शब्द उस समय तक मेरे शब्दकोश का हिस्सा नहीं बने थे। ताऊजी के लड़के यानि बड़े भाई ने, जो कि पास के ही हिन्दी माध्यम के एक विद्यालय में मुझसे दो साल पहले से पढ़ रहा था उसने इतना सिखाकर भेजा था कि उत्तिष्ठ बोलने पर खड़े होना है और उपविश बोलने पर बैठ जाना है। इतना बेसिक लेवल ज्ञान उसके हिसाब से पहले दिन के लिए पर्याप्त था। बाकी तो समय के साथ-साथ सीख ही जाएँगे ऐसा उसने और हमने दोनों ने मान लिया था।

पहले दिन सिर्फ हवन हुआ। सत्र का पहला दिन ऐसे भी शुरू होता है, पूरे पूजा पाठ के साथ ये हमें पहली बार पता चला था। पर

जीवन में कुछ शुभ घट रहा है, इस चीज की खुशी लगातार बनी हुई थी। मैं उत्साहित भी था और जगह के अज्ञात होने की वजह से थोड़ा सकपकाया हुआ भी। भीड़ जैसा करे बस वैसा करते जाना है – ये उस वक्त का मंत्र था। तो पहले दिन तो हवन के अतिरिक्त ज्यादा कुछ नहीं हुआ। असली शुरुआत तो दूसरे दिन से थी।

दूसरा दिन। क्लास में पहुँचे तो एक–एक करके अलग अलग विषय की वेला (पीररयड) शुरू हुई। पढ़ाई का पहला दिन था तो हर शिक्षक जिन्हें अब से 'आचार्य जी' बुलाना था, वो आते और अपना परिचय देने के बाद अमूमन सारे बच्चों का परिचय पूछते जिसमें उनसे उनका नाम, उनके पिता का नाम और फैमिली बैकग्राउंड क्या है, पिता जी क्या करते हैं इत्यादि सवाल रहते। लंच के पहले के चार पीरियड और बाद के तीन पीरियड कमोबेश इन्हीं प्रश्नों को अलग–अलग तरीके से घुमा फिरा के पूछा गया। ये शायद इसलिए भी जरूरी रहा होगा कि सारे बच्चे एक दूसरे के बारे में जान जाएँ। उसके बाद आई आठवीं और अंतिम वेला – संस्कृत की।

संस्कृत पाँचवीं कक्षा तक हमने पढ़ी ही नहीं थी। मतलब अभी कक्षा षष्ठ में आने तक हमें पता ही नहीं था कि संस्कृत होना क्या होता है? उसके ओर छोर से दूर–दूर तक कोई वास्ता नहीं। संस्कृत के शिक्षक कक्ष में आए। धोती कुर्ता पहने हुए, घुँघराले, लच्छेदार बाल, माथे पर चंदन तिलक जैसा कि मोहल्ले में पंडित जी के लगा रहता था एकदम वैसा वाला। उनको देखकर ही लग रहा था कि ये कोई बहुत विद्वान प्रकांड टाइप के शिक्षक साबित होंगे। नाम बताया – **मनोज शुक्ल।**

वो आए, कुसी पर विराजमान हुए और सुबह से जो क्रम चालू था उसी को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने भी बाकी की तरह ही एक कोने से सबका परिचय लेना शुरू किया। बस उनका प्रश्न थोड़ा अलग था। सबसे कोने वाले विद्यार्थी को खड़ा करके उन्होंने कहा ''बालक के रूप सुनाओ''।

अब पिछली सात वेलाओं से अलग–अलग शिक्षक अलग–अलग तरह से सबका परिचय ही ले रहे थे। कोई सिर्फ विद्यार्थी का नाम पूछ रहा था। तो कोई पिताजी क्या करते हैं ये भी पूछ रहा था। किसी–किसी ने इससे भी दो कदम आगे बढ़ते हुए पूछा कि पिताजी क्या करते हैं? उससे जुड़े भी एक दो सवाल जोड़ दिए थे। ये सारी डिटेल इतनी बार दी जा चुकी थी कि अब तक लगभग सबको नाम याद हो गये थे। हमको लगा कि सुबह से वही बात, बता–बताकर सब लोग ऊब चुके होंगे इसलिए आचार्य जी जो कि समझदार और विद्वान लग ही रहे थे उन्होंने भांप लिया है और इसलिए उन्होंने एक अलग तरीके से परिचय देने के लिए कहा है। ''बालक का रूप'' मतलब अब सबको नए तरीके से अपना परिचय देने का मौका दिया जा रहा था। ताकि प्रश्न और उत्तर दोनों की गरिमा बनी रहे।

उस समय तक 'बालक का रूप' इस बात से मेरा आशय इतना था कि बालक ये बताए कि उसकी लबांई कितनी है, रंग क्या है– गोरा, गेहुंआ, दबा हुआ, वजन कितना है इत्यादि। हमको लगा कि जैसे घरों में रंग बताकर एक दूसरे का परिचय दे दिया जाता है, अरे फलां जो बहुत गोरे हैं, या फलां जो बहुत दबे रंग के हैं उसको ध्यान में रखकर ही प्रश्न को बुना गया है।

हमें लगा वाह ये होता है शिक्षक। क्या अद्‌भुत रवैया! कितनी बढ़िया तरीके से अपने छात्रों का परिचय लेने की विधि सोची है। अपना नाम, पिता का नाम तो सब कोई बता सकता है क्योंकि इसमें सचेत होने जैसी कोई बात नहीं लेकिन ये हुई असली मेधा की परीक्षा कि पहले ही दिन विद्याथी से ये पूछ लो कि उसका रूप क्या है । असल में इससे पता चलेगा कि वो अपने बारे में कितना सजग और जागरूक है। आखिर जिसको अपनी लंबाई, वजन, रंग नहीं पता वो बाकी दुनिया के बारे में क्या जान पाएगा! क्या ही सीख पाएगा!

खैर, बालक का रूप सुनाने की बात थी। एक कोने से मामला शुरू हुआ। सबसे बाईं तरफ का विद्याथी खड़ा हुआ पर कुछ बोला नहीं। एकदम सन्नाटा। कक्षा शांत। 'बालक के रूप' के नाम पर उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ गईं जैसे ये कितना कठिन सवाल हो। आचार्य जी ने उसे अपने पास बुलाया और पीछे से डस्टर उठाकर चट्ट चट्ट की ध्वनि के साथ प्रति हथेली दो डस्टर की मार चिपका दी। सन्नाटे की एक गूंज होती है जो उस पल कक्षा में सबको सुनाई दी। ये कैसी वीभत्सता! लड़के की आांख पनीली हो गई। आचार्य जी ने कहा –''जाओ कल याद करके आना।''

एक गया दूसरे का नंबर आया। दूसरे का भी वही हाल। 'बालक का रूप'। क्षण भर सन्नाटा। फिर चार डस्टर की मार। ये क्रम धीरे धीरे चलने लगा। जो आता, चुपचाप आता, मार खाकर चला जाता। कुछ बच्चे मार खाने में शालीन थे। चुपचाप हाथ आगे करते, मार खाते, वापस आ जाते। कुछ विद्रोही थे, वो मार खाते तो सीधे आचार्य जी की आंखों में घूरते। उन्हें और ज़्यादा हौंका जाता। कुछ जो पुराने खिलाड़ी थे उन्हें मार खाने का सारा फिजिक्स पता था। डस्टर जिस गति से हथेली की तरफ आता वो उसी गति से हथेली पीछे कर लेते। इससे चोट कम लगती। लेकिन आचार्य जी तो आचार्य जी थे। वो भी ऐसे वालों को चेतावनी दे देते कि हथेली एकदम पत्थर की तरह स्थिर रखो नहीं तो हथेली हिली तो आठ मारेंगे, फिर हिली तो सोलह।

दिक्कत ये थी कि बाएं कोने से शुरू हुई इस श्रृंखला में तबसे 20 बच्चे लगातार मार खा चुके थे। कक्षा में कुल 45–46 ही बच्चे थे जिसमें हमारा नंबर 29वां था जो हम गिनकर बैठे थे। हमें ये नहीं समझ आ रहा था कि यार इतनी सीधी साधारण सी बात किसी को क्यों नहीं पता ? सब लोग आखिर प्रवेश परीक्षा पास करके आए हैं। अंग्रेजी, हिंदी, गणित, रीजनिंग और सामान्य ज्ञान का पेपर देकर आए हुए लोग हैं और इनमें से किसी को अपने बारे में इतनी बेसिक चीजें नहीं पता। बालक अपना रूप आखिर क्यों नहीं बता देता। और थोड़ा बहुत ही बता दे कोई, सब कुछ न पता हो तो।

अपनी 29 वीं पोजीशन के अनुसार हमने अपनी जानकारी तैयार करके साध ली थी और अपनी बारी के बेसब्री से इंतिज़ार में थे कि मौका मिलते ही आचार्य जी को अपना रूप बताकर सिद्ध कर देंगे कि हम उनकी दी जाने वाली विद्या के लिए तैयार हैं। मेरे हिसाब से हमें अपना रूप बाकायदा पता था क्योंकि हम अपने बारे में सजग थे। हमारा तैयार किया हुआ जवाब मन में कुछ ऐसा था–

सवाल– बालक का रूप?

जवाब– रंग गेहुआ, लंबाई 4 फुट 4 इंच।, वजन 40 किलो, नाम निखिल। हमें लगा कौन सा आचार्य जी सब नापने ही वाले हैं।

बस इतना ही तो बोलना था। लगभग 23 बच्चों को पीटने के बाद जब एक से भी जवाब नहीं आया तो आचार्य जी ने सामूहिक रूप से पूरी कक्षा से ही पूछ लिया कि किसी को आता भी है बालक का रूप तो अभी बता दो नहीं तो समय न बार्बाद करो एक लाइन से मार खाने आते जाओ। हमें लगा यही मौका है पर आत्मविश्वास उतना ज़्यादा नहीं था कि हम अपना आधा उठा हुआ हाथ जो अब तक कांधे से भी नीचे तक ही उठा था उसे ऊपर उठाते। बची हुई क्लास में शायद पीछे किसी ने हाथ उठाया। आचार्य जी ने इंगित करते हुए बोला– हाँ चौथी पंक्ति में तुम खड़े हो जाओ। बताओ। डर के माहौल में हमने तब तक पीछे नहीं देखा था कि उनका इशारा किसकी तरफ था। तभी पीछे से आवाज आना शुरू हुई –

''बालक : बालकौ बालका :

बालकम् बालकौ बालकान ....

हे बालक हे बालकौ हे बालका :''

ये हम अब साफ–साफ वलख ले रहें लेकिन उस समय हमें ये बस एक अगड़म बगड़म शब्दों की धुन सुनाई दी थी। आरोह और अवरोह में सनी हुई। उस आवाज ने एक सांस में कुछ तो उलूल- जुलूल कह दिया था जिसका हमें कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। पर आचार्य जी को राहत और गर्व की मिश्रित अनुभूति हुई जैसे गुरु द्रोणाचार्य को उनका अर्जुन मिल गया हो। वैसी ही चमक उनकी आखों में उतरी।

उन्होंने उस आवाज से पूछा– ''क्या नाम तुम्हारा?''

''जी संकल्प त्रिवेदी।''

जोर से बोलो

''जी संकल्प त्रिवेदी।''

उस वक्त तक अगर ओटीटी प्लेट्फॉर्मर्स आ गए होते तो ये स्थिति एक उभरते नायक का Introduction सीन होने का माद्दा रखती थी। ''संकल्प त्रिवेदी'' इस नाम को मुझे सालों तक याद रखना था इसलिए हमने हसरत भरी नजरों से पीछे मुड़कर इस दिव्य बालक के दर्शन करने चाहे। चेहरे पर अलौकिक तेज–सच में था या नहीं ये नहीं पता। लेकिन हमें दिख रहा था। आचार्य जी ने सबको उसका उदाहरण देते हुए कहा कि सबको संकल्प की तरह ही सारे रूप याद करने हैं और उसे शाबाशी देकर बैठा दिया। बाकी बचे हुए लोगों को बोला कि बेहिचक आगे आयें और अपने हिस्से के चार डस्टर प्राप्त करते जाएँ। हमको समझ में आ गया कि हम तबसे मन ही मन जो सोच रहे थे वो बालक का रूप तो कतई नहीं है। और ''संकल्प त्रिवेदी'' ने जो सुनाया है उसको समझना पड़ेगा क्योंकि बालक का रूप वैसा ही कुछ है। कुछ ऐसा जो इतना कठिन और अनजान है कि उसको सुनने के बाद भी अभी हम समझ ही नहीं पाएँ हैं कि वो है क्या?

अपनी अज्ञानता के चार डस्टर पाकर हम भी वापस लौटे। मन क्षुब्ध कि यार विद्यालय का पहला दिन और मार खा गए और वो भी ऐसी चीज के लिए जिसके अस्तित्व से दूर–दूर तक हमारा कोई वास्ता ही नहीं रहा। शर्मिंदगी अपने चरम पर थी।

तब तक आचार्य जी ने लाभग घोषणा करते हुए कहा– अगली कक्षा में बालक, राम और नदी के रूप याद करके आने हैं सबको। 'कमल संस्कृत व्याकरण' या 'गरिमा संस्कृत व्याकरण' इन दोनों पुस्तकों में से किसी में से याद कर लें। पूरी तरह कंठस्थ होना चाहिए। जो हल्का सा भी चूका उसको– आठ डस्टर। ये घोषणा हुई और थोड़ी देर में एक लंबी घंटी। अर्थात् वेला समाप्त। राष्ट्रगीत हुआ । सब घर जाने लगे। 'संकल्प त्रिवेदी' के लिए मन में सम्मान जाग गया था। अपने लिए तिरस्कार। सत्र का पहला साधारण दिन असाधारण तरीके से खत्म हुआ था।

खैर उस दिन घर पहुँचकर कपड़े बाद में उतारे गए पहले मम्मी से पैसे मांगे गए कि हमको 200 रुपये दे दो किताब लानी है। मम्मी ने बोला शाम को पापा आयेंगे ऑफिस से ले लेना। हमारी आँखों में आँसू थे क्योंकि नए स्कूल में पहले ही दिन मार खाकर आए थे वो भी इस बात पर कि इतनी सी चीज नहीं आती। हमें लगा था कि पिछले स्कूल में तो कभी मार नहीं खाए थे यहाँ पहले ही दिन मार

यानि यहाँ के शिक्षक को लग गया होगा कि हम तो कूड़ा हैं। कुछ आता ही नहीं हमको। मम्मी ने मनोदशा समझी और अलमारी के लॉकर से 100 के दो नोट लाकर दिये कि जाओ ले आओ किताब। दोनों किताब लाए और खाना खाते ही रट्टा मारना शुरू किया। समझ कुछ नहीं आ रहा था। बस याद करने की टोन पकड़ में आ गई थी। 'संकल्प त्रिवेदी' का सुनाया हुआ रूप हमारे लिए मास्टर टोन थी जिस पर हमें हर शब्द रूप के लिरिक्स सेट करने थे। उस दिन की बेइज्जती, शर्मिंदगी और डस्टर की मार ने ऐसा बदलाव ला दिया था कि शब्द रूप, धातु रूप समझे जाने से पहले ही याद हो गए थे। हालांकि उनका उपयोग बहुत बाद में समझ में आया।

उस दिन वो आचार्य जी बहुत अजीब लगे थे पर बाद में उनकी वजह से ही संस्कृत समझ में आने लगी। आई तो ऐसी आई कि शब्दों का सन्धि विच्छेद करके उनका अर्थ समझने में मजा आने लगा। श्लोकों के अर्थ खुलने लगे। भाषा के प्रति प्रेम पनपना शुरू हुआ तो धीरे-धीरे उसे पढ़ने में रूचि बढ़ती गई। आगे चलकर वो ही आचार्य जी जब हिन्दी के अध्यापक बने तो हमारी विनती पर उन्होंने हमारे पाठ्यक्रम के बाहर की चीजें (रस,छंद, अलंकार) विद्यालय के बाद रुककर सिखानी शुरू कर दीं। मेरी पढ़ने, सीखने, समझने में जो रूचि बनी वो उन दिनों में ही बनी। आत्मवविश्वास के बीज भी तभी पड़े। मार के डर से शुरू हुई इस यात्रा ने बाद में बहुत कुछ जोड़ा। भाषा के लगाव ने बहुत समय तक सींचा हमें। जिस बच्चे को 'बालक का रूप' नहीं पता था, नए विशाल कक्ष के उद्घाटन के समय उसको सांस्कृतिक कार्यक्रम में नाटक करने के लिए चुना गया। बाद के दिनों में खुद को व्यक्त करने की इच्छा हुई तो भी भाषा ने ही हाथ थमाया।

विद्यालय के दिनों की स्मृवतयों में ये मेरी सबसे पहली स्मृति थी जो बहुत समय तक साथ बनी रही। 'संकल्प त्रिवेदी' बाद में मित्र बन गया। अब सम्मान उसके लिए भी था और अपने लिए भी। पर सबसे ज़्यादा सम्मान था 'आचार्य मनोज शुक्ल' जी के लिए। कभी-कभी बहुत छोटी घटनाएँ आपके बाद के जीवन में बहुत बड़े परिवर्तन की शुरुआत करती हैं। मेरे लिए षष्ठ कक्षा की वो सांस्कृतिक वेला वही शुरुआत थी। उस शुरुआत ने बाद में मुझे ये भरोसा दिया कि एकदम जीरो से शुरू करके भी चीजें सीखी जा सकती हैं।

विद्यालय हम क्यों ही जाते हैं। किसी एक विषय की विद्या लेने थोड़े ही। ''सीखने की प्रक्रिया क्या है'' ये सीखने समझने के लिए। वो प्रक्रिया डराने, मारने, प्यार करने, पुचकारने और संभालने के अलग अलग दौर से गुजरती है। यहीं पर शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है और शिक्षक से ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है विद्यालय। वही विद्यालय- जिसके सामने से गुजरते कितने महीनों तक ये स्वप्न मन में बुना जाता रहा था। इसके भीतर सम्मान प्रवेश पाकर इसमें पढ़ पाएँ। वही विद्यालय जिसके सामने से गुजरते हुए अब अक्सर इस तरह से कोई जी हुई स्मृति जीवित हो उठती है।

निखिल श्रीवास्तव
2008-बैच
सहायक प्रबंधक
(भारतीय रिजर्व बैंक) मुम्बई

सशक्त परिवार एक सशक्त राष्ट्र का निर्माता

50वाँ अंक

माननीय दत्तात्रेय होसबोले
सरकार्यवाह (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)

परिवार संस्था हमारे समाज का मूल आधार है। परिवार की वह धुरी जिस पर पूरा परिवार आश्रित होता है वह माँ है। माँ के द्वारा एक परिवार सशक्त होता है। एक सशक्त परिवार एक सशक्त समाज एवं राष्ट्र का निर्माण करता है। विद्यालय परिवार अपनी शानदार यात्रा के पचास वर्ष पूरे कर चुका है। विद्यालय की स्वर्ण जयंती के अवसर पर आयोजित विचार-गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबोले जी का आगमन हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि मातृशक्ति पर ही भारतीय संस्कृति निर्भर है क्योंकि माँ ही है जो कुटुंब में भारतीय संस्कृति का संचार करती है।

घर में दिए गए संस्कारों से ही बच्चों के सुन्दर भविष्य की नींव पड़ती है जो काल, स्थिति एवं वातावरण के आधार पर पुष्पित एवं पल्लवित होकर राष्ट्र का उन्नयन करती है। आज के बदलते परिवेश में एक स्वस्थ तथा सम्पन्न कुटुंब बनाने के लिए यह आवश्यक है कि परिवार के सदस्य एक दूसरे के साथ समय दें, एक साथ बैठकर भोजन करें, घर के सदस्यों द्वारा बालकों को धार्मिक ग्रंथों के मूल तत्त्वों को सरलतम रूप में बताते हुए उनका मार्गदर्शन करें। उन्हें हमारी सभ्यता एवं संस्कारों से परिचित कराएँ। महापुरुषों के व्यक्तित्व के विषय में बताएँ जिससे उनमें ओज, ऊर्जा एवं विनम्रता का समन्वय स्थापित हो सके। आज के बदलते परिवेश में टेक्नोलॉजी हमारे सहायक के रूप में बहुत तेजी से उभर रही है। किंतु टेक्नोलॉजी का उपयोग यदि हम सहायक की दृष्टि से करें तो ही अच्छा है। इसके बढ़ते नकारात्मक प्रभावों तथा उसके दुरुपयोग से अपने परिवार को बचाएँ। आज के इस दौर में अपनी प्रकृति एवं नैतिकता को अक्षुण्ण बनाए रखना तथा हमारी भावी पीढ़ी को इन दुष्प्रभावों से बचाना हमारा उत्तरदायित्व है। हमें उनमें उचित एवं अनुचित को समझने की क्षमता का सृजन करना चाहिए जिससे वह किसी भी परिस्थिति में चयन उचित मार्ग का ही करें। उनमें इस प्रकार के संस्कारों का सृजन करें कि वह देव, पितृ, ऋषि, समाज एवं सृष्टि का ऋण उतारने में सक्षम हों।

युगद्रष्टा दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद को और आगे बढ़ाने की बात कहते हुए विचार - गोष्ठी में माननीय होसबोले जी ने आगे कहा कि हमें योग और आयुर्वेद को अपनी अगली पीढ़ी को स्थानांतरित करना होगा जिससे वह स्वयं भी लाभान्वित होकर विश्व पटल पर 'सर्वे भवन्तु सुखिन: की संकल्पना को साकार करें। तब वह दिन दूर नहीं होगा कि हमारा 'सोने की चिड़िया' भारतवर्ष एक दिन पुन: विश्व में 'विश्व गुरु' बनकर उभरेगा।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि का स्वागत तिलक एवं स्वस्तिवाचन के साथ हुआ। एनसीसी कैडेट्स द्वारा परेड की गई एवं घोषदल द्वारा उनके स्वागत हेतु अनुगमन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय वीरेंद्रजीत सिंह जी (क्षेत्र संघ चालक, पूर्वी उत्तर प्रदेश, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) द्वारा किया गया। सभी अतिथियों ने दीनदयाल जी की प्रतिमा एवं विद्यालय परिसर में स्थापित मारुति मंदिर में श्री हनुमान जी की प्रतिमा पर पुष्पार्पण किया। कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय दत्तात्रेय जी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ ''माँ बूजी सभागार'' में किया गया। विद्यालय की प्रबंधक श्रीमती नीतू जी तथा अध्यक्ष योगेन्द्र नाथ भार्गव जी ने प्रतीक चिह्न देकर उनका स्वागत किया।

Symposium- Kutumb Prabodhan

Pt. Deendayal Upadhyaya Janmotsav

Arrival of Hon'ble Dattatrey Hosabale ji on the occasion of symposium (Kutumb Probhan) during Golden Jubilee Celebration.

Distinguished Dattatreya Ji (Kutumb Prabodhan)captivating the audience with his motivational & mesmerizing address.

NCC Cadets : Marching forward.

Symposium- Kutumb Prabodhan

Pt. Deendayal Upadhyaya Janmotsav

Hoborable Virendraji (Right) Shri Dattatreya Ji (Middle) & Dr. Yogendra Bhargav Ji (Left) engaged in a thoughful discussion.

Respected Neetu Singh Ji (Manager of our School) presenting the model of Shri Ram Mandir to Hon'ble Dattatreya Ji.

Symposium- Kutumb Prabodhan

Pt. Deendayal Upadhyaya Janmotsav

Esteemed Dattatreya Ji lighting the Lamp with hon'ble Virendra ji (Patron), Shri Yogendra Bhargav Ji (President) and Smt. Neetu Singh Ji (Manager).

Extending a warm welcome to our distinguished Chief Guest.

50 Years of Glory & Legacy

Honorable Virendra Ji, Shri Yogendra Bhargav ji, Smt. Neetu Singh Ji, Shri Rakesh Triphathi Ji, Shri K.K. Gupta welcoming Cabinet minister Smt. Smriti Irani Ji on Golden Jubilee Celebration of school.

Cabinet Minister Smt. Smriti Irani Ji mesmerized audience with her eloquence.

Unleasing potential : Smt. Smriti Irani Ji and Smt. Neetu Singh Ji motivating our young performers on the Golden Jubilee celebration.

Prize Distribution during Honour's Day

Our Alumni, Dr. Amit Gupta ji, leading Neuro- Surgeon of Kanpur, felicitating meritorious students on HONOURS DAY.

Principal Shri Rakesh Tripathi ji, Dr. Amit Gupta ji, Smt. Nandita Singh Ji & Shri Virendrajeet Singh ji (Patron of our school) blessing the young achievers.

Glimpses of Ganit Mahotsav-2022

Yoga Day was celebrated on 21st June. Theme of the event was "Yoga for humanity".

Respected Rakesh Tripathi ji (Principal and Maths Wizard) explaining the working of the model.

Swayam Srivastava along with mentor Shri Siddharth Pandey ji, receiving the praises and blessings of hoborable Neetu ji and other dignitaries present there.

The mega model showcased by senior students received much praised.

Glimpses of Ganit Mahotsav-2022

Dignitaries, Shri Balvinder Singh (CBSE City Coordinator) and Shri Vivek Awasthi praising models displayed by students.

Honorable Shri Brijesh Dixit Ji mathematicians of our school.

Young Mathematicians with their models.

First Initiative towards Science, Technology and Innovation on the occasion of Golden Jubilee celebration dedicated to Booji, the fonunder of the school.

Tech-O-Innova

Dedicated to Booji, the founder of the school

Competitors of Tech-O-Innova completing their charts.

Future scientists with their creation.

Students with their model giving Pollution ka Solution.

Experts testing the knowledge of students.

First time this event was organise on 12th October, 2021 on the occasion of Golden Jubilee Celebration. Since then it is organised every year on 'Booji Jayanti' the birth anniversary of Late Sushila Narendrajeet Singh. Students from various schools exuberantly participate in this Mega envent.

Glimpses of the Annual Sports Day Celebration

Students of Dhairay Kunj marching on the track.

School Head boy Anshuman Singh marching with school flag.

Captain of Satya Kunj along with team leading on sports track.

Young atheletes with the Principal Shri Rakesh Tripathi ji, Acharya Shri Deepak Raje ji and the sports department.

Principal Shri Rakesh Tripathi ji, Academic Head Shri Manjeet ji with proud winners.

A Fest of technology and innovation

Tech-O-Innova

Victorious Fervour !

Shri Bhargava ji, President of the School Management being briefed by the sudents about the Science Project on display.

The Science of today is the technology of tommorow, Tech O Innova was organised our 25th Aug 2022. To give young mind platform to innovate. Every year, this event is dedicated to our founders late sushila Narendrajeet Singh ji on her Birth Anniversary.

Building scientists ready with their model.

Ace Performers

Our Talented Winners

Alok Kumar Gupta (on behalf of Shiva Pandey) and Alok kumar pal receiving trophy of winners in IT Quest.

Guru Poornima Celebration

On the auspicious occasion of Guru Purnima cultural programme was organised.

Guru Purnima Reverence: Hoborable Virendrajeet Singh Ji felictating the former Principal Shri Om Shanker Tripathi Ji.

Students of Primary Section expressing the reverence and gratitude towards their teachers through a melodious song.

Creativity of our students- Art And Animation.

Alumni Meet

Reunion of great minds : Former Principal honorable Shri Om Shanker Tripathi ji (In the Middle) with esteemed Alumni- Raj Kumar Srivastava Ji {Croatia} (Right) & Shri Suresh Gupta ji Justice- High Court.

Deendayal Ratn Awardees (Alumni with special achievements) gracing the occasion along with Smt. Neetu Singh Ji, Dr. Yogendra Bhargava Ji (President of the management committee) former Principals Shri Om Shanker ji, Shri Mahesh Ji & Shri Prakash Narayan ji & Shri Rakesh Tripathi Ji (Principal).

Showcase of Activities

The State Minister (Up Govt) Mr. Chandrika Prasad Upadhyay paid visit in the school. The Manager of School Mrs. Neetu Singh and Mr. Rakesh Tripathi welcomed him.

Geeta Shlok Competition was organised by Laxmi Lahoti Charitable Trust. Vinayak Vajpeyi secured 1st position.

Yoga Activities during Youth (Olympic Games)

Yoga Day was celebrated on 21st June. Theme of the event was "Yoga for humanity".

Azadi ka Amrit Mahotsava

Tiranga Yatra

Principal Shri Rakesh Tripathi ji leading the NCC Cadets.

Honorable Neetu Singh ji (Manager of School) and Shri Rakesh Tripathi Ji (Principal) participating in Tiranga Yatra.

Prime Minister's Dream Tiranga every where.

Freedom Fighters at Atal Ghat.

Our students with our National Flag at Atal Ghat.

Glimpses of Azadi ka Amrit Mahotsav

Freedom is our legacy and Independence is our pride! Celebrating freedom and embracing unity.

NCC- Marching Ahead

शिक्षा क्या है?

वर्ष 2008 तक दीनदयाल विद्यालय के यशस्वी और कर्मठ प्रधानाचार्य रहे माननीय ओमशंकर जी का 'युग-भारती' की सदाचार वेला में 'शिक्षा' पर दिया गया वक्तव्य यहाँ प्रस्तुत है।

शिक्षा संस्कार है, विचार है, व्यवहार है। शिक्षा मनुष्य का मनुष्यत्व है। समाज में लोग कहते हैं- अरे! आप तो पढ़े लिखे हैं। यानी आपको अनुचित व्यवहार नहीं करना चाहिए। शिक्षा ट्रेनिंग नहीं होती है। जो ट्रेनिंग समझकर करेगा वो गड़बड़ करेगा। ड़िजिटल स्कूल से कोई काया कल्प नहीं होगा। मनुष्य मशीन नहीं होता। जहाँ जितना डिजिटल व्यवहार होता है वहाँ भाव समाप्त हो जाता है। केवल विचार चलता है और क्रिया चलती है। अभी ये डिजिटल स्कूल्स का जो विचार आया है उस पर मैंने कहा था कि ये प्रशिक्षण केन्द्र हो सकते हैं, विद्यालय नहीं होंगे। एक होती है विद्या, एक होती है शिक्षा। आप जो ईशावास्योपनिषद की प्रार्थना करते हैं-

विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।

विद्या को परा और अविद्या को अपरा कहते हैं। ये जो प्रत्यक्ष जगत् है- वह प्रकृति है। एक प्रकृति का मूलभाव होता है, एक प्रकृति का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। ये सब अविद्या का विषय है। अविद्या को जानकर आप मृत्यु को सफलतापूर्वक पार कर सकते हैं और अगर विद्या को आप जान जायेंगे तो अमरत्व की उपासना करेंगे। हमारा शरीर अमर नहीं है लेकिन हम अमर हैं। ये विद्या का मूल दर्शन है। दर्शन का मतलब है- प्रत्यक्ष अनुभूतियाँ। ज्ञान को नाम दिया गया- ''वेद''- वेद यानी जानो। जिसमें कवित्व नहीं है, उसमें शिक्षकत्व नहीं है। कवित्व भी गहन अनुभूतियाँ हैं। कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः। वेद को ऋषियों ने शरीर का रूपक देकर समझाया है। फिर वेदांग हैं। वेदांग हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त ज्योतिष और छन्द। शिक्षा वेद- पुरुष की नासिका है, छन्द पैर हैं, व्याकरण मुख है। फिर शुद्ध उच्चारण यानी ध्वनि का शास्त्र है। स्वर और व्यंजनों का शुद्ध उच्चारण ठीक अर्थ बोध कराता है। जो स्वयं शासन करता है उसको स्वर कहते हैं। स्वरों को व्यवस्थित करके भाषा का रूप व्यंजन देते हैं।

शरीर माध्यम है। शरीर बोझ न बने इसलिए हमको अपनी मानसिकता को सामाजिक संदर्भों में संयुक्त करना चाहिए। मनुष्य को मनुष्यत्व की ओर प्रेरित करती है शिक्षा। इस संसार में हम आए हैं तो हमको विधि के अनुसार चलना चाहिए। ''विधि विपरीत भलाई नाहीं''। सारी सृष्टि में प्रकृति ने एक व्यवस्था बनाई हुई है। सूर्य संसार को तेजस प्रदान करता है, आकाश सभी प्रकार के शब्दों और भावों का संवहन करता है। आकाश से पृथ्वी तक एक सामंजस्य बना हुआ है। पृथ्वी में और अन्य ग्रहों में आकर्षण शक्ति है। आकर्षण की भी एक सीमा और व्यवस्था है। हर जगह एक व्यवस्था है और जो इस व्यवस्था के विरुद्ध जाते हैं, उनको अपनी शक्ति और बुद्धि के साथ बड़ा संघर्ष करना पड़ता है। संघर्ष में शक्ति का क्षय होता है। या तो आपके पास अपार शक्ति हो, आपका क्षय न हो और आप उसमें सफल हो जाएँ। विश्वामित्र ने त्रिशंकु से कहा- हाँ हम आपको सशरीर स्वर्ग भेज देंगे। कथा है- लेकिन

कथा के पीछे रहस्य है। लेकिन उनका दंभ टूट गया, वो बीच में ही रुक गया। ये तमाम ग्रह- नक्षत्र हैं जो अपने - अपने स्थान पर चक्कर लगा रहे हैं। इसी शिक्षावल्ली में ऋषि कहते हैं-

ऊँ शं नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा।
शन्न इन्द्रो वृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः।।
नमो ब्रह्मणे त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु तद् वक्तारम् अवतु।
अवतु माम् अवतु वक्तारम् ।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

प्रकृति के साथ हमारा सामंजस्य बना रहे। हे प्रकृति में व्याप्त ईश्वर! हमारी रक्षा करो । मेरे शिक्षक की भी रक्षा करो। मेरी भी रक्षा करो। शिक्षक कहता है- मेरे शिष्य की भी रक्षा करो और मेरी भी रक्षा करो। वेद कहता है-

ऊँ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु
सह वीर्यं करवावहै, तेजस्विनावधीतमस्तु
मा विद्विषावहै, ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

''ऊँ'' प्रत्येक के साथ जुड़ा हुआ है। 'ऊँ' एक मन्त्र है। 'ऊँ' एक शान्ति है। 'ऊँ' एक भाव और विचार है। इस सृष्टि के प्रारम्भ का एक तात्विक स्वरूप है। ये आसानी से समझ में नहीं आता। इसके लिए शिक्षक भी उसी स्तर का हो, शिक्षार्थी को भी उसी स्तर से तैयार किया गया हो। हर शिक्षार्थी तपस्वी नहीं हो सकता और हर शिक्षार्थी मजदूर नहीं हो सकता। इस संसार को मजदूर की भी आवश्यकता है और तपस्वी यानी अनुसंधित्सु की भी आवश्यकता है। इस सम्पूर्ण सामंजस्य को तैयार करने के लिए शिक्षक तैयार होता है। इसलिए शिक्षक को सम्पूर्ण मनोविज्ञान का वेत्ता होने की जरूरत है। ये मनोविज्ञान बिना तप के नहीं आता। ये तप जन्म-जन्मान्तर से आता है। फिर कैसे परिवार में जन्म हुआ ? माता-पिता ने कैसी शिक्षा दी है? कैसे संस्कार दिये हैं ? ये सारी बातें जब आपके जीवन में आती हैं- तब फिर बाल्यावस्था कैसी होती है आपकी-

''अनुज सखा संग भोजन करहीं।
मातु पिता आग्या अनुसरहीं ।''

ऐसा नहीं सिखाया जाता कि तुम खा लेना, उनको मत देना, उनसे बोलना मत।

''जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोगा।
करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा।
वेद-पुरान सुनहिं मन लाई
आपु कहहिं अनुजहिं सुमुझाई''।।

यानी राम गुरु से ज्ञान प्राप्त करते हैं और अपने मित्रों सखाओं को देते भी हैं। शिक्षार्थी भी हैं और शिक्षक भी हैं।

''प्रात:काल उठि कै रघुनाथा।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा।
आयसु माँगि करहिं पुर काजा
देखि चरित हरषहिं मन राजा।।

अब लोगों से पूछो, आपका बेटा क्या कर रहा है? - लोग कहते हैं- पढ़ रहा है। कैसे पढ़ रहा है ? और क्या कर रहा है? राम को देखिए वो आज्ञा माँगकर नगर के कार्य करते हैं। दशरथ राम के चरित्र को देखकर मन ही मन हर्षित होते हैं। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तो विचार कीजिए- उनकी शिक्षा कैसी हुई होगी? शिक्षा विद्यार्थी को तात्विक रूप से उद्‌बुद्ध करती है। ये मशीन नहीं समझ सकती। ये सब डिजिटल शिक्षा वगैरह से कुछ सांसारिक कौशल आप प्राप्त कर लेंगे लेकिन मनुष्य जीवन की सार्थकता जिस विद्या से होती है, उससे आप वंचित रह जायेंगे। शिक्षा यानी संस्कार, विद्या यानी ज्ञान। ज्ञान सांसारिक भी है और ये संसार जहाँ से उद्‌भूत हुआ है वह ज्ञान भी है।

भारत का वैज्ञानिक कम संसाधनों में भी बड़ा अनुसंधान कर लेता है, क्योंकि वह अपनी मानसिक शक्ति झोंक देता है। जिनकी मानसिक शक्ति जितनी ज्यादा विकसित होती है वो उतने ही ज्यादा प्रभावशाली हैं, यशस्वी हैं। शिक्षा ही कीर्तिमान बनाती है। ''कीर्तिर्यस्य स: जीवति।'' - जिसकी कीर्ति है, वही जीवित है। इसलिए मैं बहुत बार कह चुका हूँ कि शिक्षक को संस्कारित करने का प्रबंध हो। शिक्षक पहले खो जाए। शिक्षक कुछ जन्मजात होते हैं। शिक्षकों को विशेष रूप से तैयार किया जाए, उनका भाव, उनके विचारों का परिष्कार-संस्कार हो। शिक्षक को तपस्वी होना चाहिए। शिक्षक की खोज आप गिरि-कन्दराओं में नहीं कर सकते । इस तरह के कुछ विशिष्ट शिक्षा-संस्थानों का विकास करना पड़ेगा। दीनदयाल विद्यालय के सम्बन्ध में इस तरह की योजना बनाई गई थी। परम पूज्य गुरु जी ने शिलान्यास किया था। उच्च कोटि के चिंतक थे वे लोग। फिर संस्था का उद्‌भव और विकास भी उसी तरह से हुआ। फिर हम लोगों पर संसार की सांसारिकता ने असर बना लिया। तो हमको परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारी शक्ति, बुद्धि को पवित्र रखें।

हमारे यहाँ सारा प्राचीन वाङ्0मय काव्यमय है। कविता जल्दी कंठस्थ हो जाती है, गद्य याद नहीं हो सकता। वेद को एक पुरुष का रूपक दे दिया गया है, उसके मस्तिष्क की चर्चा कहीं नहीं है, उसके अंगों की चर्चा है। शिक्षा वेद पुरुष की नासिका है। अब देखिए जब भी कोई काम खराब होता है- तो लोग कहते है कि नाक कट गई । नाक को घ्राणेन्द्रिय भी कहते हैं। इससे हम केवल गंध ही नहीं लेते बल्कि प्राणवायु भी ग्रहण करते हैं। स्वस्थ पुरुष नासिका से ही साँस खींचता है। मुँह से जब वह साँस लेता है तो वह अस्वस्थ माना जाता है। नासिका अच्छे बुरे का फर्क भी बताती है। नासिका शिक्षा है।

''भए कुमार जबहिं सब भ्राता।
दीन्ह जनेउ गुरू पितु माता।।
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई
अलप काल विद्या सब आई।।''

प्रतिभाशाली को बहुत जल्दी सब आ ही जाता है। तो वो गुरु के गृह पढ़ने गये। ट्यूशन नहीं लगाया। ट्यूशन वाला रावण और दुर्योधन बन जाता है। राम राजपुत्र हैं। ''विद्या-विनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृपलीला।'' वो विद्या और विनय दोनों में ही प्रवीण हैं। उनके हाथों में धनुष-बाण सुशोभित हैं, तब वो मर्यादा-पुरुषोत्तम बनते हैं। इस तरह की विद्या से राम की निर्मिति होती है और तब वे राक्षसों से सताए हुए मुनियों को देखकर भुजा उठाकर संकल्प करते हैं-

''निसिचर हीन करउँ महि,
भुज उठाइ प्रन कीन्हि।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि
जाइ-जाइ सुख दीन्हि।।''

यही समत्व जिनके भीतर प्रवेश कर जाता है, वह शिक्षित व्यक्ति होता है। कहाँ बोलना, कितना बोलना, कैसे बोलना ये व्याकरण सिखाता है। व्याकरण वेद-पुरुष का मुख है। हनुमान जी जब सीता जी के सामने जाते हैं तो वह प्रसंग देखिए- कैसे बोलते हैं। यह व्याकरण का प्रभाव है । कान निरुक्त हैं। कितने शब्द हम सुनते हैं, उनके भावों का निर्धारण करते हैं। कल्प हाथ हैं। पूरा जीवन यज्ञमय है। शौच-सूत्र और गृह-सूत्र में यज्ञों की व्याख्या है। धर्मसूत्र बड़ा महत्त्वपूर्ण है। धर्म के नाम पर आजकल लोग बहुत भ्रमित हैं। धर्ममय जीवन-शैली होनी चाहिए। जहाँ पर शिक्षक इन सब चीजों को आत्मसात् कर लेता है तब उसको मदालसा जैसा विवेक आ जाता है कि बालक को बड़ी महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक चीजें कैसे आसानी से समझा दी जाएँ। जैसे मदालसा अपने बच्चों से कहती थी कि मुझे छुओ। तो बच्चे उसे छूते थे, तब वह कहती थी कि तुमने तो मेरी पीठ या मेरा हाथ छुआ है या शरीर छुआ है, मुझे नहीं। मैं तो अलग हूँ। छोटी आयु से ही बालक ज्ञान की गहराई में प्रवेश कर जाता था, ऐसे सिखाया जाता था।

"राम का आदर्श गीता ज्ञान का निष्कर्ष लेकर
बढ़ चलो साथी अभी गहरा अंधेरा है।

विश्रवा का वंश अंधक वंश का अवतंस
सुख से मुस्कुराता है, छिपा तम में सवेरा है।"

श्री ओमशंकर त्रिपाठी

प्रकाश नारायण वाजपेयी
पूर्व प्रधानाचार्य
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

शुभकामना–संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''नीराजन'' के स्वर्ण जयंती अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह पत्रिका विद्यालय के विद्यार्थियों, अध्यापकों, पूर्व छात्रों तथा सेवा निवृत्त शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इस पत्रिका से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का विकास होगा तथा उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलेगी।

विद्यालय परिवार तथा पत्रिका के संपादक को बहुत बधाई और शुभकामनाएँ।

ये दुनिया है उसकी तुम्हारी नहीं है ....

प्रेम पारस से जमीन कुंदन बनी है
आस्था विश्वास की नंदन बनी है
सर्वे भवंतु सुखिनः वेदवानी का अमृत
जहाँ छलका वह माटी चंदन बनी है।

संत के स्वभाव में बसंत है
मंत्र के प्रभाव में बसंत है।
हो जब मन का निर्मल आँगन
तो समझो जीवन में बसंत है।

स्वप्न दिन में दिख रहे कुछ रात में।
हो रही गणना गणित की बात में
है परिधि तो केंद्र भी होगा कहीं
पहचान उसकी है उसी के हाथ में।
यात्रा है लम्बी सवारी नहीं है।
वहाँ बोझ हल्का या भरी नहीं है
खुदा बनकर जीने की जिद छोड़ दो
यह दुनिया है उसकी तुम्हारी नहीं है।

धर्म की धरती आस्था का बगीचा है
प्रेम सद्भावना जल से इसे संतों ने सींचा है।
हिमाच्छादित हिमालय से भी गहरा है महासागर
शिवोहम के शिवालय में न कोई ऊँचा है न नीचा है।

सुभाष चन्द्र शर्मा,
सेवानिवृत्त आचार्य
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

मेरे विद्यालय के संस्मरण

आचार्य श्री राजेश जी से दीनदयाल विद्यालय से जुड़े हुए सभी पुराने लोग परिचित हैं। यहाँ पर वे विद्यालय से जुड़े हुए अपने कुछ संस्मरण साझा कर रहे हैं। यह संस्मरण आचार्य जी ने अपनी डायरी में अलग–अलग लिखे हैं। उनके लेख को कोशिश करके समझते हुए मैंने टाइप किया है। – संपादक

1. मैंने इंटर की कॉपियाँ चेक कीं, एक विद्यार्थी को मैंने को 35 में 33 अंक दे दिए। वह विद्यार्थी मेरे पास आया और उसने कहा कि आचार्य जी आपने मुझे तीन अंक ज्यादा दे दिए हैं। मैंने उसे ठीक कर दिया। वह छात्र अत्यंत संतुष्ट था। उसका नाम था विवेक भागवत।
2. सन 1975 में मैं हिन्दी भी पढ़ता था। कक्षा षष्ठ क, षष्ठ ख और सप्तम यही तीन कक्षाएँ थीं। मैं एक कहानी पढ़ा रहा था। उसमें एक शेर झाड़ियों की आड़ लेकर जा रहा था। मैं भूल से ''आड़ियों की झाड़'' का प्रयोग कर गया। अनुशासन के कारण कोई छात्र कुछ बोला नहीं लेकिन बाद में एक विद्यार्थी मेरे पास आया और उसने कहा कि आचार्य जी एक बात आपसे कहना चाहता हूँ, आप बुरा तो नहीं मानेंगे। मैंने कहा नहीं। मैं छात्रों की सभी बातों को सुन लेता था और उनकी कठिनाइयों को दूर कर देता था। उसने कहा कि यह बात आपसे गलती से हो गई है। मैंने स्वीकार किया और वह छात्र बहुत संतुष्ट हुआ। अब उसका नाम आप ही समझिए कौन हो सकता है?
3. इंटर की कक्षाओं में पीरियाडिक टेबल मेरा प्रिय विषय रहा है। हमारे विद्यार्थियों ने कुछ वाक्य बनाकर पूरी पीरियाडिक टेबल याद कर ली थी। इसे हमारे पूज्य गुरु श्रद्धेय ओम प्रकाश शुक्ल जो वीएसएसडी कॉलेज में इन ऑर्गेनिक केमिस्ट्री के बहुत योग्य प्राध्यापक थे, उन्होंने सिखाया था। मैं और मेरे छात्र 103 तत्वों के नाम याद रख लेते थे। उसकी एक विशेष तकनीक थी, जो आज भी हमारे छात्र जानते हैं। जब वे डिग्री क्लासेस में जाते तो अपने जूनियर विद्यार्थियों को पीरियाडिक टेबल बड़ी आसानी से सिखा देते थे, और उसका श्रेय मुझे मिलता था। इससे मुझे बड़ा आत्म संतोष होता था । एक बार मैं बिरहाना रोड से संघ के वेश में जा रहा था। एक छात्र विनय भरतिया जो विपरीत दिशा से कार से आ रहा था, उसने कार रोकी और मेरे चरण स्पर्श किए। कई लोगों ने देखा कि इस साधारण से व्यक्ति का इतना सम्मान क्यों हो रहा है? यह सब पंडित दीनदयाल विद्यालय के संस्कार थे जो आज भी उनको मिल रहे हैं।
4. एक बार मैं एकादश कक्षा का कक्षाचार्य था। उसमें चिरंजीव आनंद गुप्त भी थे, जो हमेशा परीक्षा में प्रथम आते थे। उन्होंने एक परीक्षा नहीं दी। मैंने उनसे पूछा कि क्यों नहीं दी परीक्षा? उन्होंने उत्तर दिया कि प्रथम नहीं आता इसलिए नहीं दी। मैंने कहा क्या बोर्ड में प्रथम स्थान आएगा ? उन्होंने निश्चय पूर्वक कहा ''क्यों नहीं?'' फिर उत्तर प्रदेश बोर्ड की परीक्षा में उनका प्रथम स्थान पूरे उत्तर प्रदेश में आ ही गया। यह थी उस छात्र की दृढ़ता और अटल निश्चय जो उसने पूरा किया।

इसी कक्षा में चिरंजीव आशीष जोग भी थे। उनके घर मैं अधिकांश जाता था। बड़े ही पारिवारिक सम्बन्ध थे। वह भी बहुत मेधावी छात्र थे और अभी भी युग भारती में सक्रिय हैं।

राजेश शुक्ल, सेवानिवृत्त आचार्य
पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

संस्मरण

जब गोलवरकर जी ने मुझे प्रवेश दिया

वर्ष 1971, मैं अपनी पाँचवीं कक्षा सरस्वती शिशु मंदिर से पास कर, अगले विद्यालय में प्रवेश के लिए उत्सुक था। कौतुहलवश पिताजी से पूछा कि मेरा एडमिशन कब होगा, संक्षिप्त उत्तर था–''बता दूँगा''।

एक दिन बोले, तैयार हो जाओ, एडमिशन के लिए चलना है, मैं पिताजी के साथ चल दिया। नया विद्यालय, नया प्रांगण, नए आचार्य, नया ऑफिस, मैं अत्यधिक प्रभावित व उत्साहित था। जिज्ञासा थी कि इस नए विद्यालय में कौन प्रवेश की औपचारिकताएँ पूरी कराएगा? थोड़ी देर में प्रांगण में एक कार ने प्रवेश किया। सभी का ध्यान उस ओर पिताजी मेरा हाथ पकड़कर कार की ओर अग्रसर हुए। मैंने माननीय बैरिस्टर नरेंद्र जीतसिंह को ड्राइव सीट पर और साथ में बिलकुल सफेद परिधान, लंबी सफेद दाढ़ी, काले फ्रेम का चश्मा पहने, एक अत्यन्त ओजवान व्यक्ति को देखा, सोचा शायद यही प्रधानाध्यापक हैं और निश्चय ही यही विद्यालय में प्रवेश देंगे।

पिताजी से कुछ समय बातें करने के बाद वह व्यक्ति मुझसे बोले, ''विद्यालय में प्रवेश लेना है''। मैंने हामी भरते हुए जल्दी से प्रपत्र उनको दे दिया। उस ओजस्वी व्यक्ति ने मेरे प्रपत्र पर लिखा–''स्वीकृत'' और बोले कि एक त्रुटि सुधार कर रहा हूँ। उन्होंने नाम हरी कान्त काट कर 'हरि कांत कर दिया और बतलाया है कि इसका अर्थ है दिव्यता से परिपूर्ण, इसे जीवन में अनुसरण करो और इस नए विद्यालय में प्रतिभा अर्जित करो। बहुत आशीर्वाद।

वह ऊर्जस्वी व्यक्ति जिससे कि पिता जी ने मेरा प्रवेश अनुमोदित करवाया, वह कोई और नहीं बल्कि परम पूज्य गुरु जी, श्री माधव–सदाशिव गोलवरकर जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख थे, जो कि स्वयं पण्डित दीनदयाल विद्यालय के प्रेरणा स्रोत थे और उनके साथ में विद्यालय संस्थापक व संरक्षक, माननीय बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी थे। मेरे जीवन का वह अति महत्वपूर्ण क्षण था। पिताजी ने एक युग पुरुष से प्रवेश दिलाकर न सिर्फ उच्च आदर्शों को अनुसरण करने की प्रेरणा दी, बल्कि जीवन पर्यंत मुझे यह एहसास भी दिलाया कि विद्यालय–छात्रवास प्रवेश की वह प्रक्रिया मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय था।

हरिकांत मिश्र, पूर्व छात्र, हाईस्कूल, 1976 बैच
पूर्व प्रमुख, एरिवन्स इण्डिया

‘नीराजन’ के रजत जयन्ती अंक से

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

अपना जीवन भारतीय संस्कृति के अनुरूप बनाएँ

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

(1991 में 21 वें वार्षिकोत्सव पर अटल जी के साथ पूर्व छात्रों के प्रश्नोत्तर कार्यक्रम का बैरिस्टर साहब द्वारा समापन)

अभी एक प्रश्न आया है कि क्या दीनदयाल विद्यालय जैसी और संस्थाएँ खोली जाएंगी? यह तो आप पर निर्भर करता हैं। ऐसा होता है न कि एक दिया जला दिया और उस दिये से और दीपक जलाये जाते हैं। जलते रहते हैं। जितनी हम लोगों की सामर्थ्य है, उतना तो हम करना ही चाहते हैं। कुछ किया है, कुछ करना चाहते हैं। पता नहीं कितनी सफलता मिलेगी? समाज की बड़ी भारी शक्ति है। आज समाज यह निश्चय कर ले, हमारे पूर्व छात्र ही यह निश्चय कर लें कि ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता है, ऐसी संस्थायें जिले–जिले में हों, कानपुर नगर में भी ऐसी और संस्थायें हों तो मैं समझता हूँ कि ऐसा हो जाना कोई कठिन बात नहीं है। देखा जाये तो हम लोगों ने यह विद्यालय इसी दृष्टि से प्रारम्भ किया था। आज एक होड़ मच गयी है अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की जिनमें भारतीय संस्कृति का नाम कोई महत्व नहीं रखता। नैतिकता का भी वहाँ कोई स्थान नहीं है। तो इस विद्यालय की स्थापना का उद्देश्य था कि किस प्रकार से अपने नवयुवकों द्वारा अपनी संस्कृति का कुछ महत्व समझा जा सके, उसके अनुरूप अपना जीवन बनाया जा सके, किस प्रकार समाज और राष्ट्र के प्रति व्यक्ति अपनी सारी शक्ति को लगाने के लिए इच्छुक हो सके। अपने यहाँ कहा गया है कि यज्ञ, दान और तप– ये तीन काम करणीय हैं। यज्ञ का मतलब यही रखा गया है कि जो कुछ काम करते हो, लोक कल्याणार्थ करो। समाज के हित में क्या होगा, यह समझ कर ही काम करो। अभी एक और प्रश्न आया कि हम काम करते हैं, हम चाहते हैं कि हम संघ कार्य में अधिक लग सकें, राष्ट्र कार्य में अधिक लग सकें, लेकिन हमारी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ भी रहती हैं। तो पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ भी आदमी बहुत कुछ कर सकता है। अपने समाज में तमाम लोग ऐसे हैं जो अपना कार्य भी करते है, राष्ट्र का कार्य भी करते हैं। सभी ऐसे नहीं है कि जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन दे रखा हो। जिन्होंने अपना कार्य आवश्यक समझा है, वे अपना कार्य भी करते हैं और साथ–साथ जितना हो सकता है, उतना समाज का कार्य भी करने का प्रयास करते हैं। यदि मन में यह इच्छा है कि जो कुछ भी हम काम करें वो समाज कल्याणार्थ होना चाहिए, तो मैं यह समझता हूँ कि रास्ता अवश्य निकलेगा। भगवान् ने जब कहा कि यज्ञ, दान और तप ये काम करने के हैं– 'यज्ञो दानं तपश्चैव भावनानां मनीषिणां ....' तो तप का आशय था मन, वाणी, शरीर से संयम; दान का अर्थ था त्याग; और यज्ञ की भावना थी कि हम अपनी सारी शक्ति को समाज के प्रति समर्पित करें। ये जो अपनी संस्कृति के मूल तत्व हैं, उनके अनुरूप ही हमें अपना जीवन बनाना चाहिए। यही हमारी संस्कृति का संदेश है। आज देश में बड़ा संघर्ष है इस बात पर कि भारतीय संस्कृति क्या होती है? यहाँ भारतीय संस्कृति का क्या सवाल, यह तो मिश्रित संस्कृति है। यह मिश्रित संस्कृति क्या होती है? हमारी संस्कृति सहिष्णुता की है। दूसरी संस्कृतियाँ असहिष्णुता की हैं। कई धर्मों ने तलवार के बल पर धर्म–परिवर्तन किये। हमने धर्म–परिवर्तन किया ही नहीं, विचार–परिवर्तन किया। तो इन दो प्रवृत्तियों का कैसे आप मेल बैठायेंगे मिश्रित संस्कृति कैसे बनायेंगे ? इसी प्रकार की और अनेक बाते हैं जिनका मेल बैठ नहीं सकता। हिंसा, अहिंसा को ही लीजिए। हमारी संस्कृति अहिंसा प्रधान है और आज जो संस्कृतियाँ फैल रही हैं, वे हिंसा प्रधान हैं। दोनों का मेल कैसे बैठाइयेगा? अतः भारत में भारतीय संस्कृति के अनुरूप जीवन चलेगा, तभी हमारा जीवन भी सुख एवं शन्ति का हो सकता है और तभी हम संसार को सही दिशा दिखा सकते है। हमें यही देखना है कि हम कैसे अपना जीवन अपनी संस्कृति के अनुरूप बना सकें। हमारी जो कुछ भी क्षमता, योग्यता है वह हमारे समाज और राष्ट्र के उपयोग में कैसे लग सके। इस दृष्टि से ही आप को अपनी समस्यायें समझने व सुलझाने की दिशा मिलेगी। और जैसा कि अटल जी ने कहा– जो अपना साक्षी अन्तरात्मा है, उससे पूछो कि हम क्या करें? क्या कर्म है, क्या अकर्म है, क्या कर्तव्य है, क्या कर्तव्य नहीं है, क्या अच्छा है, क्या बुरा है, क्या पाप है, क्या पुण्य है? अपने आप से पूछो और तुम्हें उत्तर मिलेगा कि भाई ये कार्य करो, ये सब समाज के कल्याण एवं राष्ट्र के कल्याण का है। स्वयं उत्तर खोजोगे, तभी तुम्हें संतोष होगा। तुम ऊपर उठोगे और जिन्होंने मर्यादायें दी है, उन महापुरुषों के जीवन के अनुरूप अपने जीवन को ढाल सकोगे।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

पढ़ाई में सफलता कैसे प्राप्त करें

" श्रद्धेय बैरिस्टर साहब का सन्देश "

'उद्धरेत् आत्मात्मानम्, न अवसादेत् आत्मनेम्' 'अपना मन कभी दुखी मत करो और सफलता के पीछे पड़ जाओ।' किसी भी सफलता के लिए पाँच बिन्दु अनिवार्य हैं – कर्ता, करण, अधिष्ठान, चेष्टा और प्रारब्ध। किसी चीज को Observe करके ही हम उसके बारे में गहन ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अतः We must increase our grasping power इसके लिए जरूरी है कि – किसी वाक्य अथवा question की गहराई तक जाना चाहिए। हम अपनी बौद्धिक शक्ति का जितना प्रयोग उस प्रश्न के विषय में करेंगे, उतनी ही उस विषय में हमारी समझ विकसित होगी। 'Speak so that I may know you' ; जब कालिदास शास्त्र पारंगत होकर घर लौटे तो विद्योत्तमा ने पूछा– 'अस्ति कश्चित् वाग्विशेषः' ? उत्तर में कालिदास ने इन तीन शब्दों से प्रारम्भ कर क्रमशः तीन महान कृतियाँ मेघदूत, रघुवंश और कुमार सम्भव के रूप में साहित्य जगत् को प्रदान कीं। यानी इतनी प्रतिभा कि ज्ञान की निर्झरिणी फूट पड़ी। छात्र को अपने विकास के लिए अपनी नियमित दिनचर्या बनानी चाहिए, जिसमें मुख्यतः अध्ययन, व्यायाम, मनोरंजन, विश्राम व संतुलित भोजन पर बल दिया जाये। भली–भाँति अध्ययन के लिए 'युक्त आहार–विहार' तथा '7 घण्टे अवश्य सोना' इसका विशेष महत्व है। सदैव स्वस्थ व प्रसन्न रहने का प्रयास करना अपने व्यक्तित्व के विकास में अत्यंत लाभकारी है। समय का सदुपयोग कैसे हो – Time of work is not important. More important is how much work we have done in a given time. किसी भी कार्य के तीन पक्ष हैं–

Quantity, Quality, Direction अर्थात् कार्य कितना, कैसा (स्तर) एवं सही दिशा में हो रहा है अथवा नहीं। अतः निश्चित समय में एकाग्रचित होकर जमकर व जुटकर परिश्रम करना ही सार्थक होगा। यह नहीं सोचना चाहिए कि 'घण्टी' बजने में अब केवल पन्द्रह मिनट बचे हैं। इतने समय में भला मैं क्या कर सकता हूँ? वरन् हमको अपने उस समय का छोटे–छोटे कामों में सदुपयोग करना चाहिए। पढ़ाई का तरीका क्या हो– In first reading main topics, in second some minor things, and in third very minor, then whole. If we make notes, in only a short time we can get total knowledge. We must have a systematic reading and a fine writing. स्वच्छ लेख का एक अलग प्रभाव होता है। एक ही विषय को सुन्दर व स्पष्ट एवं गन्दा व अस्पष्ट लिखने पर अंकों में जमीन–आसमान का अन्तर हो जाता है। जब हम अपनी कॉपी आचार्य जी को दें, तो उनसे कॉपी (उत्तर) की अच्छाई पर नहीं, कमी पर Remark देने को कहें, वह भी Pointwise ताकि हमें अपने लेखन के कमजोर पक्ष का पता लग सके। तत्पश्चात् उसके Notes बनाकर उसे दोहराने के लिए रखें। चलताऊ काम से संतुष्ट न होकर अच्छे से अच्छा कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसी Will Power या इच्छा शक्ति अपने भीतर उत्पन्न करना चाहिए कि जो विचार किया है उसे कर के ही छोड़गे। ध्यान रहे कि संकल्प कभी टूटने न पाये। हतोत्साहित तो होना ही नहीं चाहिये, व संघर्ष से कभी हार नहीं माननी चाहिए। कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने लिखा है–

'जिस दिन सपनों के मोल भाव पर उतरूँगा,
जिस दिन संघर्षों पर जाली चढ़ जायेगी,
जिस दिन लाचारी मुझ पर तरस दिखायेगी,
उस दिन जीवन से मौत कहीं बढ़ जायेगी।'

बोर्ड परीक्षा व प्रत्येक गृह परीक्षा में हमारी पकड़ एक–एक अंक पर होनी चाहिए। कोशिश यह करनी चाहिए कि एक अंक भी न कटें। वास्तव में Genius व्यक्ति के अन्दर जितनी बुद्धिमत्ता होती है, उतना ही वह परिश्रम भी करता है। अतः योग्यता बढ़ाना, सही ज्ञान पाना, तत्पश्चात् बुद्धि कुशाग्र करना। इस प्रकार यदि हम शिक्षा की सीढ़ी पर चढ़ेंगे तो विकास अधिक होगा।

पं. दीनदयाल जी के सान्निध्य में

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

अटल बिहारी वाजपेयी
पूर्व प्रधानमंत्री

दीनदयाल जी का स्मरण आते ही हृदय भर आता है, आँखें छल–छला उठती हैं। जीवन में इतने बड़े अभाव का अनुभव अभी तक नहीं हुआ। पंडित जी नेता और मार्गदर्शक ही नहीं, सहोदर और सखा भी थे। जब तक वे बैठे थे, किसी प्रकार की चिन्ता नहीं थी। सारी चिन्ताओं और सारे चिन्तन का भार उन पर डालकर हम निश्चिन्त थे। विश्वास था कि यदि कोई गलती भी हो गई तो उसे अपने माथे लेकर पीठ पर हाथ रख कर, वह आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।

आँखों में वह आग :

मैंने उपाध्याय जी के प्रथम दर्शन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शीत शिविर में किए थे। वह आगरा से अन्य स्वयंसेवकों को साथ लेकर आये थे। देखने में सीधे तथा सरल, किन्तु उनकी आँखों में एक आग की अनुभूति उस समय भी मुझे हुई थी। बाद में सन् 1942 में उन्हें तब देखा और सुना जब मैं संघ के शिक्षण शिविर में द्वितीय वर्ष की शिक्षा लेने गया था। उस समय से स्थापित स्नेह का सम्बन्ध 11 फरवरी को अचानक टूट गया। आँखों के आगे अनेक स्मृति–चित्र उभरते और आँसुओं में डूब जाते हैं, किसे भूलूँ, किसे याद करूँ?

जब राष्ट्रधर्म प्रकाशित हुआ :

उपाध्याय जी के साथ रहने का अवसर पहली बार सन् 1947 में मिला। लखनऊ से मासिक 'राष्ट्रधर्म' प्रकाशित करने का निश्चय किया गया था। मैं डी0ए0वी0 कॉलेज कानपुर से सीधा लखनऊ पहुँचा था। लिखने–लिखाने का शौक जरूर था, किन्तु पत्र का सम्पादन करना पड़ेगा, यह सुनकर ही सिट्टी–पिट्टी गुम हो गयी थी। मेरे साथ श्री राजीव लोचन अग्निहोत्री भी थे जो सम्पादन कला में मेरी तरह कोरे थे। किन्तु यह देखकर ढाढ़स बंधा कि सम्पादन केवल नाम का था, काम करने एवं करवाने के लिए उपाध्याय जी स्वयं मौजूद थे। 'राष्ट्रधर्म' का पहला सम्पादकीय उपाध्याय जी ने ही लिखा था। यह बात नहीं कि उपाध्याय जी को पत्रकारिता का कोई पुराना अनुभव था। एक दृष्टि अध्ययन और अध्यवसाय से उन्होंने न केवल स्वयं सम्पादन का कार्य सीख लिया, अपितु साथ–साथ हमें भी सिखा दिया। उनके लिए सीखना और सिखाना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया थी। काम करते–करते वे सीखते जाते और सीखते–सीखते सिखाते थे। प्रेस में सामग्री देने से लेकर कम्पोज करने और प्रूफ पढ़ने तक के सभी कार्य उन्होंने किये, यहाँ तक कि छपाई की मशीन पर काम करने वाले कारीगरों के थक जाने या न आने पर वे वहाँ भी खड़े हो जाते और हाथ बँटाते।

वे जब बेहोश हो गये :

एक दिन की बात है। राष्ट्रधर्म के साथ साप्ताहिक 'पाञ्चजन्य' और दैनिक 'स्वदेश' का भी प्रकाशन होने लगा था। सम्पादकीय विभाग में काम ज्यादा, लोग कम थे। उपाध्याय जी दिन–रात जुटे रहते। हम लोग थक कर चूर हो जाते, किन्तु उन्होंने जैसे थकना जाना ही नहीं था। न खाने का ध्यान न सोने की सुधि। एक बार लगातार कई रात जागना पड़ा। शरीर ने जवाब दे दिया। सवेरे जब वे मशीन पर खड़े आखरी फॉर्म निकलवा रहे थे, तो गिर पड़े और बेहोश हो गये। उपाध्याय जी एक सच्चे कर्मयोगी थे। उनका कर्म में विश्वास था और कर्म को कुशलता पूर्वक करके उसे योग का रूप देने का गुण भी उनमें विद्यमान था। कर्म करते हुए उन्होंने फल की कभी कामना

नहीं की। वह कहा करते थे, बीज की चिन्ता करो, फल अपनी चिन्ता आप कर लेगा। पंडित जी का जीवन एक समर्पित जीवन था। शरीर का कण–कण, जीवन का हर क्षण उन्होंने राष्ट्रदेव के चरणों में चढ़ा दिया दिया था। सम्पूर्ण देश उनका था, सारा समाज उनका परिवार। उनकी आँखों में एक ही सपना था। उनके जीवन का एक ही व्रत था।

राजनीति उनकी मंजिल नहीं थी :

राजनीति उनके लिए साधना थी, साध्य नहीं । मार्ग था, मंजिल नहीं। वे राजनीति का आध्यात्मीकरण चाहते थे। भारत के उज्ज्वल अतीत से प्रेरणा लेते थे तथा उज्ज्वलतर भविष्य का निर्माण करना चाहते थे। उनकी आस्था सदियों पुराने अक्षय राष्ट्र जीवन की जड़ों से रस ग्रहण करती थी किन्तु वे रूढ़िवादी नहीं थे। भविष्य के निर्माण के लिए वे भारत के समृद्धिशील आधुनिक राष्ट्र बनाने की कल्पना लेकर चले थे। वे महान चिन्तक थे। चिन्तन के क्षेत्र में बंधे–बंधाये रास्ते से चलने के हामी नहीं थे। इसलिए उन्होंने भारतीय जनसंघ का ऐसा स्वरूप विकसित किया जो अतीत की गौरव गरिमा को लेकर चला और जो आने वाले कल की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी सन्नद्ध रहा। जनसंघ जो कुछ भी हुआ, वह सब उन्हीं की देन थी।

चलो विन्ध्याचल के पार :

उन्हें कभी किसी पद ने मोहित नहीं किया। वे संसद के सदस्य नहीं थे लेकिन संसद सदस्यों के निर्माता थे। उन्होंने कभी पद नहीं चाहा। बड़ी मुश्किल से उन्हें अध्यक्ष पद का भार सम्भालने के लिए तैयार किया गया था। उन्होंने प्रेरणा दी कि चलो विन्ध्याचल के पार कन्याकुमारी जहाँ पर भारत माता के चरणों को सिन्धु धो रहा है। भारत की एकता का जागरण–मंत्र फूँकें। उनके नेतृत्व में हमने आसेतु हिमाचल भारत की एकात्मता को गुँजाने का संकल्प किया। कालीकट अधिवेशन हुआ, हम वहाँ गये। उनकी अध्यक्षता में अधिवेशन सफल हुआ। लोगों ने कहा कि जनसंघ ने कार्यसिद्धि का ऐतिहासिक दृश्य उपस्थित किया। जनता की आँखें आशा और विश्वास के साथ उन पर आ लगी थीं देश और विदेश के लोगों ने कहा कि कालीकट में जनसंघ ने नया रूप धारणा किया है। परन्तु जनसंघ ने नया रूप धारण नहीं किया था, वरन् देखने वालों की आँखों में बदल आया था।

चिता से निकली चिनगारियाँ :

पंडित जी जिस कार्य के लिए जन्मे, जिए और जूझे, उसी के लिए हुतात्म्य (शहादत) स्वीकार कर उन्होंने अपना जीवन–व्रत पूर्ण कर लिया। नन्दा दीप बुझ गया, हमें अपना जीवन दीप जलाकर अन्धकार से लड़ना होगा। सूरज छिप गया, हमें तारों की छाया में अपना मार्ग ढूँढ़ना होगा। किन्तु उनका स्वप्न अभी अधूरा है। उनका कार्य अभी अपूर्ण है। आइए! पंडित जी के रक्त की एक–एक बूँद को माथे का चन्दन बनाकर ध्येय–पथ पर अग्रसर हों। उनकी चिता से निकली एक–एक चिनगारी को हृदय में धारण कर परिश्रम की पराकाष्ठा और प्रयत्नों की परिसीमा करें। उस दधीचि की अस्थियों का वज्र बनाकर आधुनिक वृत्रासुरों पर टूट पड़ें और इस पवित्र भूमि को निष्कंटक बनायें।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

शिक्षकों का स्वधर्म

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

महादेवी वर्मा

हमारी संस्कृति सदा से ही शासन और समाज, दोनों की मार्गदर्शिका रही है, किन्तु पिछले दो सौ सालों से, जबसे शासकों ने शिक्षा पर काबू करने का प्रयोग किया, तबसे हमारा मनोबल गिरने लगा और शिक्षा शासनपरक बनती गयी। आज जीवन के हर क्षेत्र में और शिक्षा में भी राष्ट्रीयकरण का नारा व्याप्त है, किन्तु इस राष्ट्रीयकरण का अर्थ केवल "सरकारीकरण" है। यह शाश्वत दासता की माँग है। जब बन्दी खुद ही कहने लगे कि मेरे पैरों में बेड़ियाँ डाल दो, तब उसका उद्धार कौन कर सकता है? हम आज भी अंग्रेजों के द्वारा चालू की गयी शिक्षा पद्धति को चला रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा नहीं बदली। पुराना चौखटा आज भी कायम है। नतीजा यह हुआ है कि आज स्वतंत्र भारत का तरुण हमसे कुछ प्राप्त नहीं कर पा रहा है। वह बुद्धि से बौना और जीवन के सम्बल से वंचित होता जा रहा है। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति न शासनपरक थी, न समाजपरक थी। हमारी परम्परा में गुरु तथा शिष्य दोनों का लक्ष्य आत्मशोधन के लिए विद्या देना तथा विद्या प्राप्त करना था और यही कारण था कि उस वक्त का तरुण आत्मविश्वास से भरा होता था। आज तरुण विक्षुब्ध है। वह अपने जीवन की विक्षुब्धता को भरने आता है, लेकिन शिक्षक के आने से, जाने से, उसके होने से या न होने से विद्यार्थी के जीवन पर कोई असर नहीं पड़ता। आज तरुण प्यार और सम्वेदना का प्यासा है, उस अमृत के लिए प्यासा, जिसे केवल आचार्य ही दे सकता है। हम मेघ बनकर बरस जायें, सब दरारें, सब विषमताएं पाट दें। समाधान अगर नहीं हुआ, तो ध्वंस होगा और तब नयी पीढ़ी हमें क्षमा नहीं करेगी। यदि आज का छात्र विध्वंस के मार्ग पर जाता है, तो उसका दायित्व हम शिक्षकों पर है। तरुण के आवेश को विवेक की शक्ति देकर उसका सर्जनात्मक विकास करना शिक्षकों का कर्तव्य है, लेकिन इस ओर शिक्षकों का ध्यान नहीं गया है। उनके संगठन अधिक वेतन तथा ग्रेड आदि की माँग तक सीमित है। समस्याओं का समाधान हो, शिक्षा सरकार से मुक्त हो, शिक्षकों का वर्चस्व रहे, ऐसी माँग कोई नहीं करता। विनोबा जी ने जब आचार्य कुल का विचार सुझाया, तो उनके मन में शिक्षा स्वायत्तता, शिक्षकों के अखंडित वर्चस्व की बात थी। आचार्य कुल का काम आत्मशोधन तथा आत्ममंथन की प्रेरणा देना है। अपने मनोबल और तपस्या के द्वारा नागरिक तथा समाज के वर्चस्व को कायम रखना तथा नयी पीढ़ी के मार्ग को आलोकित करना हम शिक्षकों का कर्तव्य होना चाहिए। यह हम तभी कर सकेंगे जब हमारा चरित्र उज्ज्वल हो, भावनाएँ उदात्त हों और हम आज के राजनैतिक दलदल से बचे रहें। हमारी राजनीति तो विक्षिप्तों का एक मेला है। विक्षिप्तों के इस मेले में, जहाँ साँझ–सवेरे सत्ता के लिए दलबदल होता है, कुर्सियाँ खींची और उल्टी जाती है, कोई यह नहीं जानता कि कल क्या होगा। इस राजनीति ने शिक्षकों का मनोबल दुर्बल किया है और समाज को तोड़ा है। इतने बड़े समृद्ध ज्ञान के इस समृद्ध देश में शिक्षक क्या यंत्र बनकर ही रह जाना चाहता है? वास्तव में ज्ञान के सम्प्रेषण में ही हम अपनी कीमत बना सकते हैं। शिक्षकों का काम अतिदान का नहीं, आत्मदान का सौदा है। आज पश्चिम की दुनिया में साधनों का वैभव है, लेकिन अन्दर से वे खाली हैं। जब बुद्धि का वैभव अपनी मर्यादा छोड़ देता है, तब जीवन का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। हमारी संस्कृति के कुछ तत्व शाश्वत हैं। इस देश के चिन्तन में कुछ मूल्य हैं, जो सनातन हैं। विचार एक यज्ञ है, संकल्प भी एक यज्ञ है। आचार्य कुल का हर सदस्य संकल्प करे और स्वयं दीपक बनकर जले, तभी वह नयी पीढ़ी को, समाज को आलोकित कर सकेगा। आज एक आंधी आयी है। अगर आचार्य कुल तरुणों को समाज को प्राणदायिनी साँस दे सकें, तो आंधी और झंझावात गुजर जायेंगे, लेकिन जीवन कायम रहेगा। शिक्षकों का स्थान समाज रूपी वृक्ष की जड़ों में है, इसलिए शिक्षकों को शाश्वत मूल्यों और तत्वों से युक्त होना है। विनोबा ने आचार्य कुल की स्थापना इसलिए की कि शिक्षक भौतिक और आर्थिक स्तर पर ही संघर्ष न करें, वह जीवन के मूल्यों के लिए आत्म–शोधन, मंथन करें। यदि शिक्षक आत्मशोधन में लगे, तो वह परमुखापेक्षी नहीं रहेगा। उसका वर्चस्व, उसकी स्वायत्तता अखण्डित रहेगी। हम विनोबा के इस स्वप्न को सार्थक कर दें, अपने आपको सार्थक कर दें, जीवन को सार्थक कर दें। वह शिक्षक भी क्या है, जो तपे और धरती में दरारें पड़ जाये। हम मेघ की तरह उमड़ें और बरस जायें। धरती को तृप्त कर दें। आकाश की बातें जानें और धरती पर पाँव धरकर चलें।

मेरे संस्मरणों में बैरिस्टर साहब

चंद्रपाल सिंह
विद्यालय के प्रथम प्रधानाचार्य

मुझे इस बात का गर्व है कि जो विद्यालय माननीय बैरिस्टर साहब तथा उनकी सहधर्मिणी महीयसी 'बूजी' द्वारा संकल्पित एवं संस्थापित हो, परम पूज्य श्री गुरु जी द्वारा जिसकी आधारशिला रखी गई हो तथा देश के गौरव पं. दीनदयाल उपाध्याय के नाम से जो प्रसिद्ध हो, उसका संस्थापक प्रधानाचार्य होने का मुझे सौभाग्य मिला। यह भी मेरा सौभाग्य है कि मैं उपर्युक्त चारों महानुभावों के सम्पर्क में आया। चारों ने ही मुझे प्रभावित एवं प्रेरित किया। बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह से मेरा सम्पर्क सबसे अधिक रहा– लगभग 14 वर्ष। 1970 से 75 तक प्रधानाचार्य की हैसियत से और 1984 से 93 तक विद्यालय के 'संरक्षक' अथवा 'परामर्शदाता' के रूप में। बैरिस्टर साहब की गणना कानपुर के ही नहीं, प्रदेश के इने–गिने प्रतिष्ठित लोगों में थी। प्रतिष्ठा के आधार मुख्यतः चार होते हैं : धन, विद्या, पद और चरित्र। बैरिस्टर साहब के पास चारों की प्रचुरता थी। वे रायबहादुर विक्रमाजीत सिंह के सुपुत्र, महाराजा कश्मीर के दीवान के जामाता, उच्च कोटि के बैरिस्टर, अपने समय के शीर्षस्थ कम्पनी लॉ के वकील, कानपुर कॉमर्स चैम्बर के परामर्शदाता, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्तीय संघचालक, सनातन धर्म महामण्डल के अध्यक्ष तथा कई शैक्षिक संस्थाओं की प्रबन्ध समितियों के सदस्य थे। पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त तथा अनेक पाश्चात्य देशों का भ्रमण किये हुए होने पर भी उन्हें भारतीय संस्कृति से प्रेम था। अपनी पुत्रियों को एक प्रतिष्ठित विद्यालय से उन्होंने इसीलिए हटा लिया था कि वहाँ स्कर्ट पहनना अनिवार्य था और उनकी पुत्रियों को सलवार कुर्ता पहनने की अनुमति नहीं दी गयी। प्रति रविवार को मध्याह्न में वे छात्रावास में आते थे तो बच्चों से उनकी पढ़ाई, स्वास्थ्य, खेलकूद तथा पाठयक्रमेतर गतिविधियों के विषय में पूछताछ करते थे और उपयोगी सुझाव दिया करते थे। व्यवस्थित रहन–सहन के बारे में उनका कथन था– 'A Place for everything and everything in its place – जब मैं कोई वस्तु रखकर भूल जाता हूँ, जैसा कि मेरे साथ अब बहुधा होता है, तो उनका यह कथन मुझे अवश्य स्मरण हो जाता है। 'सादा जीवन उच्च विचार' की बैरिस्टर साहब साक्षात् मूर्ति थे। छोटे से छोटे व्यक्ति का भी वे सम्मान करते थे। अभिजात अथवा सामान्य वर्ग का अभिमान उन्हें छू भी नहीं गया था। मिलने वालों का चाय–पानी से सत्कार करना तथा उन्हें द्वार तक छोड़ने जाना उनके स्वभाव का अंग बन गया था। भगवद्गीता में वर्णित दैवी सम्पदा के गुणों को अपने जीवन में ढालने का वे सदैव यत्न करते रहते थे। बैरिस्टर साहब और मैं लगभग एक ही आयु के थे। उनका जन्म वर्ष 1911 था और मेरा भी। वे मई में पैदा हुए थे और मैं भी। वे मुझसे कुछ दिन ही बड़े थे। जब भी मिलते थे, मुझसे मेरे स्वास्थ्य के विषय में पूछते थे। वे सन्त स्वभाव के राजर्षि थे। उनको मेरा शत–शत नमन।

ईशावास्यमिदं सर्वं....

नीरज कुमार को दिये गये साक्षात्कार के आधार पर 'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

ओमशंकर त्रिपाठी
पूर्व प्रधानाचार्य

प्रथम दर्शन :

सन् 59—60 की बात होगी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कानपुर विभाग के कार्यकताओं की कानपुर में बैठक थी। जनवरी की बारिश में भीगकर उन्नाव के कई कार्यकताओं के साथ मैं भी पहुँचा। बैरिस्टर साहब उन दिनों उत्तर प्रदेश (सम्पूर्ण) के संघचालक थे। बैठक उन्हीं के आवास पर थी। बैठक गुरु जी ने ली। बैठक में बैरिस्टर साहब ने कोई बातचीत नहीं की, लेकिन उनके बैठने—उठने, चलने के तरीके से लगता था, उनमें शील—सौजन्य के साथ—साथ बड़ी गम्भीरता है। व्यक्तित्व तो उनको भगवान ने दिया ही ऐसा था कि आँखे उनकी ओर बरबस उठ जाती थीं। उनसे मेरी प्रत्यक्ष मुलाकात हुई विद्यालय की स्थापना के बाद जब मैं प्रथम प्रधानाचार्य श्री चन्द्रपाल सिंह के साथ आचार्य प्रतिनिधि के रूप में पहली बैठक में गया। बैठक के बाद उन्होंने मुझसे बातचीत की तो सहज ही मेरा उत्साह बढ़ा। फिर से जैसे—जैसे विद्यालय बढ़ता गया, मेरी जिम्मेदारियों के साथ—साथ बैरिस्टर साहब से मुलाकातें भी बढ़ती गयी।

परिवार :

बैरिस्टर साहब के पूर्वज पंजाब से ही सनातन धर्म की संस्थाओं से जुड़े रहे थे। उनके पिता रायबहादुर विक्रमाजीत सिंह अपने समय के अग्रगण्य एडवोकेट थे और कानपुर में एक प्रकार से सनातन धर्म के कर्णधार थे। सनातन धर्म उनके जीवन में रचा—बसा था। आचार—व्यवहार सधा—बँधा था— हर काम निश्चित समय से करना, कपड़े उतार कर, पटे पर बैठकर भोजन करना, बाहर फलों के अतिरिक्त कुछ न खाना इत्यादि। बैरिस्टर साहब को व्यवस्थित जीवन विरासत में ही मिला था। पत्नी बैरिस्टर साहब को मिली 'बूजी' जैसी, जिन्होंने अपनी भावुकता, संवेदनशीलता, सादगी और त्याग से उनके सद्गुणों को परिपुष्ट ही किया। बूजी का जन्म कश्मीर में हुआ था, जहाँ उन्होंने पहले आक्रमण के समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के योगदान को देखा था। गोखले जी से सम्पर्क के साथ—साथ निश्चय ही पिता के संस्कारों तथा बूजी के अनुभवों ने भी उन्हें संघ से जुड़ने को प्रेरित किया होगा। बूजी की आदर्श जीवन शैली का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि गाँधी जी की हत्या के उपरान्त संघ पर प्रतिबन्ध लगने के कारण जितने दिन बैरिस्टर साहब जेल में रहे, घर पर बूजी ने भी उसी प्रकार का जीवन बिताया—भूमि पर सोना, रूखा—सूखा खाना इत्यादि। दीनदयाल जी को वे अपने छोटे भाई या पुत्र के समान देखती थी। दीनदयाल जी की मृत्यु पर मैंने उनको ऐसे व्यथित देखा जैसे परिवार का जवान भाई या जवान बेटा चला गया हो। तभी उन्होंने संकल्प लिया कि ऐसा विद्यालय बनाना है, जहाँ दीनदयाल जी के विचारों का पल्लवन हो। इस काम के लिए उनके पास पर्याप्त धन भी नहीं था। यह ठीक है कि सम्पन्न थीं, लेकिन ऐसे तो कानपुर महानगर में इतने सम्पन्न लोग हैं, जिनके पास पैसा रखने का स्थान नहीं है। इतना पैसा अगर बूजी के पास होता तो जेवर बेचने की उनको आवश्यकता नहीं पड़ती। गहना बेचा उन्होंने । कहा, 'विद्यालय बनना चाहिए और यथाशीघ्र बनना चाहिए'। नियमित रूप से देखने आती थीं जब विद्यालय बन रहा था। प्रभु की इच्छा कि विद्यालय का पहला बैच भी उनके सामने नहीं निकल पाया। इस प्रकार बूजी की भावना के आधार पर विद्यालय का मूर्त रूप बना जिसमें प्राण और रंग भरने का काम बैरिस्टर साहब ने किया, जो शिक्षाविद् थे और शिक्षा जगत से जुड़े हुए थे।

परिश्रम से पाई सफलता :

बैरिस्टर साहब का जीवन सदैव नियमित रहा– नींद के घंटे कम न करना, प्रातः जागरण और स्नान, प्रतिदिन खेलना। फिर भी वे पोजीशन होल्डर विद्यार्थी थे। दसवीं कक्षा तक साइंस नहीं पढ़ी थी। इण्टरमीडिएट में जब साइंस ली और पहली बार पिपेट उपयोग किया तो रसायन मुँह, में चला गया। बंगाली अध्यापक बोले, 'अरे, मरेगा!' साइंस नहीं पढ़ी? जा, इकॉनॉमिक्स ले ले। नम्बर कैसे थे?' 'फर्स्ट क्लास।'

फर्स्ट क्लास उन दिनों बहुत कम आते थे। फिर अध्यापक ने पानी से पिपेट का अभ्यास कराया। कहने का आशय यह कि बड़ी कक्षा में नया विषय लेकर भी उन्होंने प्रतिष्ठापूर्ण ढंग से उत्तीर्ण किया। बाद में भी जब वे बैरिस्टर बनकर विलायत से लौटे तो निश्चय किया कि बहस हिंदी में करूँगा। इसके लिए प्रयासपूर्वक हिन्दी का अभ्यास किया। प्रेमचन्द, वृन्दावनलाल वर्मा इत्यादि के उपन्यास पढ़े। तो अपने सिद्धान्तों पर चलकर सफलता पाने हेतु उन्होंने संघर्ष करने में कभी संकोच नहीं किया।

सिद्धान्तों की दृढ़ता :

छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी किसी भी बात में अपने सिद्धान्तों से उन्होंने समझौता नहीं किया। एक बार चीनी की किल्लत आ गयी। उन्होंने ये पूछकर कि विद्यालय में अतिरिक्त चीनी है, कुछ चीनी मँगाई। इधर से चीनी गयी, उधर से उन्होंने पैसा भेजा। यहाँ तक कि विद्यालय से एक गमला मँगाया तो वहाँ से दो गमले भिजवाये। ये बातें छोटी नहीं है, बहुत बड़ी है। उनके इस आचरण और चरित्र का प्रभाव ही संचरित होकर विद्यालय के वातावरण और विद्यार्थियों की सोच को संस्कारित करता था। उनकी पुत्रियाँ किसी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती थीं। उस समय तक लड़कों के लिए तो बी.एन.एस.डी. और जी.एन.के. जैसे हिन्दी माध्यम के अच्छे विद्यालय खुल गये थे, पर लड़कियों के लिए अंग्रेजी स्कूल ही थे। जब स्कूल से शिकायत आई कि आपके घर में अंग्रेजी नहीं बोली जाती तो बैरिस्टर साहब का कहना था कि स्कूल में आप अंग्रेजी पढ़ायें, बुलवाये पर हमारे घर की संस्कृति को बदलने का प्रयास न करें। घर में तो हिन्दी ही बोली जायेगी। लड़कियाँ जब बड़ी कक्षा में पहुँची तो बैरिस्टर साहब ने उन्हें स्कर्ट पहनाना उचित न समझकर वेश के ही रंग का सलावार–कुर्ता बनवा दिया। स्कूल में डाँट पड़ी। जब स्कूल वालों ने स्कर्ट पर ही जोर दिया तो लड़कियों को उन्होंने स्कूल से हटा लिया और घर पर ही योग्य अध्यापकों से पढ़वाया।

राष्ट्रीय सोच :

जब गांधी जी की हत्या हुई और अनुचित रूप से संघ पर प्रतिबंध लगाया गया तो संघ ने सत्याग्रह किया। बैरिस्टर साहब के जेल जाने की बात आई। बड़े भाई साहब ने लिखा, 'देखो, अब पिताजी नहीं है और उनके स्थान पर मैं हूँ। मैं आदेश देता हूँ कि तुम जेल मत जाओ। परिवार बर्बाद हो जायेगा'। दो मिनट विचार किया कि पितृतुल्य भाई के आदेश का पालन करके परिवार चलाना है या देश के हित में अन्याय अत्याचार का विरोध करना है, भारत माता की सेवा में लगी, निष्ठापूर्वक सर्वस्व समर्पण कर देने वाले कार्यकताओं की देशभक्त संस्था पर लगे गलत आरोप का प्रतिकार करना है? थोड़ी देर ऊहापोह में पड़े रहे फिर निर्णय लिया, 'नहीं, हमको तो जेल जाना चाहिए। इस अन्याय के विरोध में यदि अपना परिवार भी समर्पित करना पड़े तो करना चाहिए' और जेल चले गये। वे हमेशा कहते थे कि जीवन में अपनी जितनी भी उन्नति कर सकें, करनी चाहिए लेकिन वह उन्नति व्यक्तिगत न होनी चाहिए। जैसे हमारे देश के प्रतिभाशाली विदेशों में जाते हैं। ठीक है, विदेशों में जाना है पढ़ने के लिए समझने के लिए, कमाने के लिए, लेकिन अन्ततः उन्हें यह समझना चाहिए कि हमारा देश और घर यहीं है। कहते थे, अगर धरती से हमारा मोह छूट गया तो यह धरती हमें कष्ट देगी। धरती हमको कष्ट देगी तो व्यथा में हम कितने दिन

तक रह सकेंगे? अमेरिका से लौटने वालों को यहाँ की धूल और गर्मी बहुत सताती है। इसलिए धरती से उनका मोह छूट जाता है। उनका कहना था कि विद्यार्थियों को यह सोचना चाहिए कि देश ने हमारे ऊपर बहुत खर्च किया है। हमारे देश को हमसे उम्मीदें भी बहुत हैं। हमारा उसका सम्पर्क केवल धन के खर्चे तक सीमित नहीं है। यह तो ऐसा ही हुआ कि हम जिस घर में पैदा हुए उसमें गरीबी है। फिर भी हमारे माता–पिता ने अपना पेट काटकर, अपने को कष्टों में डालकर, सब कुछ हमारे ऊपर वार दिया और हमको इस लायक बना दिया कि हम कुछ हो सकें और संसार में स्वाभिमान से जी सकें। और हमने सुविधाओं की दौड़ शुरू कर दी। हमने यह सोचना छोड़ दिया कि यह माँ हमारी है, ये पिता हमारा है। और तरह–तरह के ताने देने लगे– लो हम घर जाते हैं तो हमें ठीक से बैठने की भी जगह नहीं मिलती। हम उस जगह को ठीक करें यह प्रयास नहीं करते! हम ताना देते हैं। और माता–पिता यही कहते हैं, अच्छा बेटा, हम कोशिश करेंगे। यह नहीं कि तुम भी कुछ करो। और लड़का ऐसा निकला कि साहब सुविधा की जगह तो वहाँ पर है, हम वहीं रहेंगे। आयेंगे भी नहीं तो माता–पिता लड़के को बुरा तो न कहेंगे। लेकिन भीतर–भीतर घुटेंगे कितना? भारत माता की यही स्थिति है। आज हमारे समाज की यही दशा है। जब किसी नौजवान से मिलते है, तो शुरू में अगर विदेश जाने का अवसर मिलता है तो बहुत दीवाना हो जाता है। वहाँ जाने के बाद सुविधायें तो हैं ही। भौतिक सुख हैं। तो यह नहीं कहता कि हम सुख से वहाँ ललचा गये हैं। वह तर्क क्या देता है? अरे साहब, वहाँ तो हमारे अनुसंधान की सुविधायें हैं, हमारे विकास की सुविधायें है यह देश तो बिल्कुल हमारी बकत ही नहीं करता, काम करने का अवसर नहीं देता। साहब, वहाँ काम का सुख है। काम के दो अर्थ है– काम माने, वहाँ काम का सुख है। काम के दो अर्थ है– काम माने यह वो काम है उसका सुख तो है लेकिन इसका अर्थ Work से लगाते हैं। यह सुविधाओं की अंधी दौड़ जो नौजवान की थी, उनको बुरी तो लगती थी लेकिन इसको वे प्रकारान्तर से कहा करते थे। कभी आवेश में नहीं बोलते थे– 'हम किसके लिये पढ़ रहे हैं? हमारा समाज, हमारी संस्कृति हमारा देश'। और अगर ऐसा न होता तो जिस जमाने में वे विदेश गये थे, उस समय विदेशों में रहने की सुविधा बहुत थी। फिर भी वे लौटकर आये और यहीं अपना जीवन लगाया। राजनीति के बारे में कहते थे कि राजनीति में चमक–दमक बहुत है। और जितनी चमक–दमक होगी, आदमी अपने उद्देश्य से उतना ही दूर हो जायेगा। राजनीति से जितनी समाज सेवा हो सकती है उससे ज्यादा अन्य संगठनों से हो सकती है। राजनीति शासन कर सकती है, सेवा नहीं कर सकती । और समाज, विशेषकर ऐसा दुर्बल और इतने दिन का सताया हुआ समाज बिना सेवा के स्वस्थ नहीं होगा। शासन से स्वस्थ नहीं होगा, मर जायेगा। इस सबके बावजूद उनका मत था कि चूँकि संगठन देश सेवा कर रहा है और हम उसके अंग हैं इसलिए संगठन यदि आदेश करता है कि राजनीति में जाना है तो जाना चाहिए। हमको सत्ता की इच्छा नहीं है, पर संगठन यदि सोचता है कि राजनीति में हमारी आवश्यकता है तो यही करना उचित है। यह था उनका संगठन के प्रति समर्पण का भाव।

त्याग के प्रतिदान की अपेक्षा नहीं :

मैं उनके बहुत पीछे पड़ा रहता था कि इण्टरमीडिएट होना चाहिए। दसवें तक बच्चों से इतना लगाव हो जाता था कि उनकी आगे की पढ़ाई की चिंता होती थी। तो उन्होंने कुछ अपने आप, कुछ मेरा मन रखने के लिए कहा कि जब तक इण्टर नहीं होता तक तक आप इन बच्चों को छात्रावास में रखकर बाहर पढ़ाइये। दो–तीन साल तक यह क्रम चलाया इण्टरमीडिएट की मान्यता के लिए प्रयास करने पर शासन की ओर से आपत्ति आई कि आपके यहां एक कमरा कम है। उस समय एक कमरे की लागत थी 30000 रुपये। संयोग कि विद्यालय की कुल बचत उस समय करीब इतनी ही थी। बैरिस्टर साहब ने कहा कि एक कमरा बनवा लीजिए। मैंने कहा कि इतना व्यवस्थित भवन, इसमें एक कमरा कहाँ बनवाया जाये। इसमें तो पूरी एक विंग बनानी चाहिए। उन्होंने कहा, विंग बनाने में तो बहुत पैसा लगेगा। मैंने कहा, धीरे–धीरे हो जायेगा। बोले, अरे, कानपुर में कोई देता–वेता नहीं है। तब तक मैं कुछ

लोगों से सम्पर्क कर चुका था। उन्होंने उत्साह बढ़ाया था कि कानपुर में दीनदयाल विद्यालय के लिए पैसे की कमी नहीं पड़ेगी। आप योजना बनाइये, काम शुरू करिये। बैठक में कई लोगों के पूर्ण सहयोग की बात लिखित रूप में प्रस्तुत की गई। बैरिस्टर साहब को कानुपर की एक–एक नब्ज पता थी। फिर भी उन्होंने कहा कि ठीक है, आप शुरू कराइये। अनेक बार वे यह कहते थे कि यदि कोई अच्छे उद्देश्य के लिए बहुत व्यग्र हैं तो उसे दो–चार बार दिशा देकर काम करने दिया जाये। जैसे तैरना सिखाते समय पानी में डाल दिया गया तो देखा जायेगा, बचाया जायेगा। अब मुहूर्त निकाला गया, नक्शा बनवाया गया। नक्शा बनवाने के लिए एक सज्जन ने बहुत कम पैसे में काम किया। फिर उनका बनाया नक्शा स्वीकार भी कर लिया गया। इसके बाद सचान साहब सम्पर्क में आये। HBTI में Maintenance के Incharge थे। भवन निर्माण का भी काफी ज्ञान था। ये आये, काम शुरू हुआ। विद्यालय के 30000 रुपये और इकट्ठा किया हुआ रुपया नींव में ही खप गया। एक स्थिति ऐसी आई कि कमरा ऊपर तक बन गया और स्लैब बनाने के लिए पैसा नहीं रहा। तो मैं बैरिस्टर साहब के पास गया (क्योंकि मैं ही भवन निर्माण का संयोजक बनाया गया था)। रास्ते में मैंने देखा कि ये जो एस.डी. कॉलेज है, यहाँ चुनाव चल रहे थे। यूनियन के चुनाव में जैसी कि प्रवृत्ति हो गई है, लोग बिल्कुल सस्ते स्तर पर उतर कर काम करते है। बड़े गन्दे किस्म के पोस्टर लगे थे । ऐसे में माहौल मैनेजमेंट बनाम विद्यार्थी का हो जाता हैं वह तस्वीर मेरे दिमाग पर थी। बातचीत शुरू हुई। हमेशा मुस्करा कर बात करते थे। पता ही नहीं चलता था कि वे अस्वस्थ हैं। लेटे होने पर ही अस्वस्थता प्रकट होती थी। उन्हें स्थिति बताई कि छत के लिए पैसा नहीं है। उन्होंने कहा कि अच्छा देखिये कुछ व्यवस्था करते हैं। उन्होंने कहा कि बूजी की कुछ ज्वेलरी बची हुई है। उसे बेच देंगे। मैं थोड़ा भावुक हो गया। उन्होंने पूछा, क्या बात है। मैंने कहा, एक तरफ मैं आपका यह स्वरूप देख रहा हूँ। प्रत्यक्ष। और दूसरी तरफ इस तरह के गंदे पोस्टर देखकर आया हूँ। तो आखिर इस समाज सेवा से आपको क्या मिल रहा है? मैंने तो अपने छोटे मन से बात कह दी। एक क्षण शान्त रहने के बाद वे बोले– 'समाज सेवा के बाद उसका प्रतिदान नहीं चाहा जाता' । इससे बड़ी और कौन–सी उदात्त अवस्था होगी मनुष्य की? और फिर लोगों के लाख मना करने पर उन्होंने कोटा के शेयर बेचे। बहुत बड़ा भाग हमको दिया और बाकी होमियोपैथिक चिकित्सालय के लिए दिया। अपने ऊपर खर्च नहीं किया। अब आप यह सोचिये कि हम क्या समाज सेवा कर रहे है?

विद्यालय से स्नेह और अपेक्षाएँ :

विद्यालय वे अक्सर आते थे। आते थे तो रुकते थे। काफी समय तक रहते थे। एक–एक चीज पर ध्यान देते थे– यहाँ जाला लगा हैं, कोने में गंदगी है, बच्चों को इस तरह रहना चाहिए। पहले वो ऊपर चढ़कर कमरों में भी जाते थे। यह पोंछा लगाने का सिस्टम उन्हीं का शुरू किया हुआ है। इसकी वजह से फर्श जो चमकता दिखता है, यह उन्हीं की देन है। अपने साथ पोंछा लाये थे। कर्मचारियों को पोंछा लगाना भी सिखाया। यह पोंछे का सिस्टम बाद में कर्मचारियों ने और विकसित किया जो और कहीं देखने को नहीं मिलता। उनकी दृष्टि कहाँ–कहाँ तक जाती थी। ओमशंकर जी लगता है हनुमान जी की मूर्ति आज साफ नहीं की गई। अमृतसर स्वर्ण मंदिर का उदाहरण देते थे, 'वही सिख बन्धु अपने केशों से सफाई करते हैं। इतनी श्रद्धा होनी चाहिए। तब स्वच्छता होगी। हनुमान जी का यह मंदिर हमारा साधना स्थल तो है ही, हमारा शो पीस भी है। कोई आये तो वह प्रभावित हों। ऐसी छोटी–छोटी चीजें हमारे ऊपर असर करती थीं। छात्रों, अध्यापकों के नाम कोशिश करके याद करते थे। कभी हमें ऐसा अनुभव नहीं हुआ कि ये हमारे अध्यक्ष हैं। लगता था हमारे परिवार के मुखिया हैं। इनसे हम अपना सारा दुख–दर्द कह सकते हैं। जब वे किसी भी समस्या का निराकरण देते थे तो किसी को खीझ नहीं लगती थी। अगर अच्छा नहीं भी लगा तो सोचते थे– 'चलो बैरिस्टर साहब ने कहा है तो ठीक ही होगा' । बैरिस्टर साहब चाहते थे, छात्रों में ईश्वर के प्रति विश्वास हो, देशभक्ति हो। उसके पश्चात् हमारा व्यक्तित्व भौतिक दृष्टि से विकसित होकर

आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख हो। विकास भौतिकता में हो किन्तु उसका उद्देश्य आध्यात्मिक हो। क्योंकि वे कहते थे कि हम हिन्दू धर्म के चिन्तन के व्यक्ति हैं। हिन्दू संस्कृति यह बताती है कि हम शरीर नहीं हैं। यह सोच वे विद्यार्थी को देना चाहते थे। उनका कहना था कि अगर कार्यक्रमों की रचना इस प्रकार की बनाई जायेगी जिससे संकुचितता और स्वार्थपरता विद्यार्थी में कम से कम आये तो समझिये उद्देश्य में सफल हुए। इसीलिए बच्चों का चयन करवाते थे, कौन बच्चे अच्छे हैं। फिर आकर वे स्वयं उनसे बात करते थे। फिर अपने जीवन के उदाहरण बड़े आनन्द से बताते थे। छोटी–छोटी बात पूछते थे। गुस्सा उन्हें कभी आता ही नहीं था। कभी निराशा होती थी तो यही कहते थे– 'बड़ी चिंता की बात है बड़ी आवश्यकता है – देखिये यह विषय तो इन्हें आता ही नहीं' इत्यादि। दूसरों के सामने बड़ी प्रशंसा करते थे, लेकिन जब हम लोग बैठते थे तो फिर कहते थे– 'ये चीज और करनी है....। जब वे बीमार हुए तो बैठक में नहीं आ पा रहे थे। वीरेन्द्र जी ने उनसे पूछा कि आपको क्या निर्देश देना है। इतनी घोर बीमारी के बाद भी उन्होंने कहा, 'बस एक ही चीज कठोर परिश्रम, कठोर परिश्रम'।

'ईशावस्यमिदं सर्व, यत्किञ्च जगत्याम् जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।'

उनका कहना था कि उपनिषद का यह श्लोक अपने जीवन में उतारना चाहिए। एक–एक बात के बारे में स्वयं चिंतन भी करते थे। गीता का उनको अध्ययन था और गीता को अपने जीवन में उन्होंने ढाला भी था। उनका कहना था, विद्यालय देश को, समाज को दिशा देने वाले भावी नागरिकों का संस्कार केन्द्र है। देश को दिशा देने के लिए कैसे लोग चाहिए। न तो ऐसे जो पूरी तरह से अपरिग्रही, सर्वत्यागी, संन्यासी हों। रिजल्ट भी बताना है। पोजीशन भी लानी है। अर्थात् समाज के मापदण्डों पर सफल हो कर समाज की विकृत परम्पराओं से हटकर चलना। उनका कहना था कि पूर्ण मानवीय सफलता के लिए भौतिक सफलता भी जरूरी है लेकिन भौतिक सफलता का उपयोग साधन के रूप में अपने उदात्त उद्देश्यों की प्राप्ति में होना चाहिए।

'वह बात'

एक बार बड़ी मजेदार बात हुई। हमारी प्रबन्ध समिति के सदस्य हैं– श्रीमान् इन्द्रजीत जी जैन। उनसे जे.के. वालों ने सम्पर्क किया। जे.के. का विद्यालय तब तक नहीं बना था। उन्होंने उनसे कहा, 'जैन साहब, हम दीनदयाल विद्यालय जैसा एक विद्यालय बनाना चाहते है'। 'कुछ हमारी मदद कीजिए'। जैन साहब बोले 'अरे आप भवन बनवा दोगे, ज्यादा तनख्वाहें देकर अध्यापक पढ़े–लिखे ले आओगे, लेकिन ''वह बात'' कहाँ से लाओगे?' तो वे बोले कि यह 'वह बात' क्या है ? जैन साहब ने कहा, कि यह तो मैं भी नहीं जानता लेकिन बात कोई जरूर है। अब बात तो हँसी की हो गई लेकिन मैं गहराई से सोचता रहा कि ''बात कोई जरूर है।'' यह इन्हीं लोगों के तप की बात है। इनके चिन्तन की बात है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय जैसे व्यक्तित्व का नाम, बूजी का त्याग, और इतने उच्चकोटि के दार्शनिक और समाजसेवी पूज्य गुरु जी के द्वारा शिलान्यास, हनुमान जी की मूर्ति की प्रतिष्ठापना, और बैरिस्टर साहब के सतत् चिन्तन का समर्पण। इन सारी बातों से जो परिणाम और निष्कर्ष निकल रहा है, वही 'वह बात' है जो लोगों की समझ में नहीं आती। इसका सूक्ष्मतर प्रभाव ही है जो विद्यार्थियों का चिन्तन बदलता है। यह रिजल्ट में समाहित नहीं होता। नौकरियों में समाहित नहीं होता। दीनदयाल विद्यालय इससे नहीं पहचाना जाता। दीनदयाल विद्यालय पहचाना जाता है विद्यार्थी के चिन्तन के प्रभाव से। उसके काम करने के तरीके के प्रभाव से। 'वह बात' से जो दीनदयाल विद्यालय को दीनदयाल विद्यालय बनाती है।

भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतीक

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

मोरार जी देसाई
पूर्व प्रधानमंत्री

पंडित दीनदयाल भारतीय संस्कृति के केवल समर्थक ही नहीं बल्कि इसके सच्चे प्रतीक थे। वह आदर्श लोकसेवक थे। उनकी निर्भयता का मूल उनकी सेवा की भावना में था। पद या वैभव के प्रति उनकी आसक्ति नहीं थी। अगर उनकी दिलचस्पी सत्ता या धन में होती तो वे इन दोनों को प्राप्त कर सकते थे। लेकिन उन्होंने सादा जीवन बिताया और 'एकात्म मानववाद' का अत्युत्कृष्ट दर्शन प्रतिपादित किया। उनका जीवन निःस्वार्थ सेवा, बलिदान और परिश्रम की भावना का उदाहरण था। इन्हीं कारणों से दीनदयाल जी भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतीक थे। एकात्म मानववाद का लक्ष्य व्यक्ति–व्यक्ति के बीच एकात्म सम्बन्ध के आधार पर सामाजिक विकास है, केवल सामाजिक बराबरी नहीं। यह इस बात पर जोर देता है कि सभी व्यक्तियों के बीच एक अंदरूनी बराबरी है, और यही अंदरूनी बराबरी सामाजिक प्रगति का आधार बन सकती है। यही गरीबों और समाज के दबाये गये तबकों के बारे में उनकी चिन्ता का आधार था, जिनके कल्याण के लिए वे जीवन भर प्रयास करते रहे। उनकी आकांक्षा एकात्मक समाज की थी। गाँधी जी ने भी सत्ता की आकांक्षा न करके अपना जीवन ग्रामीण पुनर्निर्माण और समाज के निचले स्तर के जीवन को सुधारने के लिए समर्पित किया था। वे स्वराज प्राप्ति के लिए जिए। दीनदयाल जी ने भी उसी निःस्वार्थ तरीके से स्वराज को सु–राज में बदलने और एकात्म मानववाद के दर्शन को प्रचारित करने के लिए काम किया। निःस्वार्थ समाज सेवा में उन्हें आनन्द मिलता था। महात्मा गाँधी और दीनदयाल जी के जीवन मूल्यों में यही बुनियादी समानता है। हमें भिन्नतायें नहीं खोजना चाहिए। स्वराज की प्राप्ति और स्वराज को सु–राज में बदलने के लिए जरूरी दृष्टिकोण एक तरह से समान हैं। आज भी हमारा देश ऐसे निःस्वार्थ सेवा करने वालों के कारण ही जिन्दा है। गाँधी जी के अन्त्योदय की कल्पना और एकात्म मानववाद के तत्व समान हैं। हमारे गाँव हमारी राष्ट्रीय संस्कृति के प्रतीक हैं। अगर वे कमजोर रहेंगे तो देश मजबूत नहीं हो सकता। हर गाँव आत्म–निर्भर बने, हर घर में छोटे कुटीर उद्योग हों, सब लोग इस प्रयास में हाथ बँटायें। हमारे देश में मुख्यतः ग्रामीण संस्कृति है। आज गाँव गरीब तथा पर निर्भर हैं। शहरी संस्कृति में दी जाने वाली शिक्षा अनुत्पादक है। ऐसा लगता है कि हम ग्रामोत्थान की जरूरत भूल गये हैं। हर जगह शहरी संस्कृति की बात होती है। ये हमारे आर्थिक नियोजन के प्रमुख दोष हैं। जब तक हम उन्हें समाप्त नहीं करते और ग्राम अभिमुखी योजना नहीं बनाते तब तक ग्रामोत्थान सम्भव नहीं होगा। इसके लिए हमें दीनदयाल जी द्वारा दिखाये रास्तों पर चलना होगा। अगर हर सामाजिक कार्यकर्ता एक गाँव चुन ले और उसके विकास के लिए अपने को समर्पित करे तो हम बहुत विकास कर सकते हैं। हर मामले में सरकार की मदद पर निर्भर रहने वाला समाज आत्म–निर्भर नहीं बन सकता । आत्मनिर्भरता ही समाज को मजबूत बनाती है। इसलिए यही एकमेव रास्ता है।

सादगी की प्रतिमूर्ति थे 'दीनदयाल जी'

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

प्रो. राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैया'

दीनदयाल जी अत्यन्त मेधावी विद्यार्थी थे। उन्होंने राजस्थान में मैट्रिक तथा इण्टर में सर्वोच्च स्थान पाया, यह सभी जानते हैं। इतने मेधावी होते हुए भी उन्होंने उसका कभी व्यक्तिगत सुख–सुविधा प्राप्त करने में उपयोग नहीं किया। वे कैरियरिस्ट नहीं थे। उन्हें जो भी विषय ध्यान में आता गया, उसे वे पढ़ते गये। उन्होंने दो विषयों में एम0ए0 प्रीवियस किया पर फाइनल किसी में भी नहीं किया, क्योंकि नौकरी करना उनका उद्देश्य नहीं था। प्रयाग में एल0टी0 कर उन्होंने अपने आपको देश कार्य के लिए समर्पित कर दिया। जब वे गोला में संघ कार्य के लिए गये तब विद्यार्थियों से सम्पर्क बढ़ाने के लिए उन्होंने वहाँ के विद्यालय में जाना शुरू किया। प्रधानाचार्य से उन्होंने कहा कि जिस भी विषय का अध्यापक अनुपस्थित हो, वह उनको पढ़ाने के लिए दे दिया जाये। गणित से लेकर संस्कृत तक पढ़ाने की उनमें ऐसी क्षमता थी कि विद्यार्थी उनसे बड़े निकट से जुड़ गये। विद्यालय की कार्यसमिति ने उनसे प्रधानाचार्य बनने का प्रस्ताव रखा, तो उपाध्याय जी ने उनसे कहा कि मुझे तो 20 रुपये मासिक की आवश्यकता है, तो 200 रुपये लेकर क्या करूँगा। मैं तो मुख्यतः संघ कार्य करने के लिए आया हूँ। उनके कारण लगभग पूरा स्कूल ही संघ शाखा पर आने लगा। उन्होंने गोला में विद्यार्थियों के साथ अनेक प्रमुख व्यापारी, वकील और अध्यापकों को संघ से जोड़ा। दीनदयाल जी अपने वेश के विषय में बिल्कुल चिंता नहीं करते थे। उनके खद्दर के कुर्ते बिना इस्त्री के, सलवटों से भरे हुए रहते थे। धोती धोने का कभी अवकाश मिला न मिला तो उस मैली धोती में ही काम चलाते थे। मुझे स्मरण है कि साकेत में, जो कि मेरे क्षेत्र में था, वे प्राथमिक शिक्षा वर्ग के समारोह के लिए आये तो उनके पास एक भी धुली हुई धोती नहीं थी। मेरे द्वारा आपत्ति करने पर उन्होंने कहा कि लोग मेरी धोती देखेंगे कि मेरा भाषण सुनेंगे। उनका भाषण स्वयं इतना प्रेरणादायक था कि शायद ही किसी का ध्यान उनके वस्त्रों पर गया हो। इस प्रकार अपनी निजी सुख–सुविधा से वे निर्लिप्त थे। विश्व में उस समय दो प्रणालियाँ बड़े जोरों पर थीं एक जनतंत्र, जिसमें व्यक्ति– स्वातंत्र्य, फलस्वरूप अत्यधिक संग्रह करने की छूट और दूसरी समाजवाद जिसमें सरकार के नियंत्रण से सारे समाज की रचना और व्यक्ति– स्वातंत्र्य का पूर्ण अभाव। कांग्रेस ने लोकतांत्रिक समाजवाद की घोषणा की, जो अपने में ही एक–दूसरे के विरोधी शब्द हैं। इसीलिए आज कांग्रेस को विश्व में साम्यवाद के बिखराव के बाद धीरे–धीरे लोकतंत्र के सहारे पूँजीवाद की ओर बढ़ना पड़ रहा है। दीनदयाल जी ने पूँजीवाद का उत्तर समाजवाद को नहीं माना बल्कि अपने देश की प्राचीन पद्धतियों का चिंतन कर एकात्म मानववाद के सिद्धान्त पर जनसंघ को आगे बढ़ाया। इसमें व्यक्ति और समाज दोनों का ही अपना–अपना स्थान है और दोनों परस्पर विरोधी नहीं है। यह रचना अखिल मण्डलाकार रचना है। जहाँ व्यक्ति, परिवार, गाँव, प्रान्त, देश और विश्व ही नहीं समस्त सृष्टि के साथ एकात्मकता है। यह वास्तव में भारतीय चिंतन का सार है;, "सर्वे भवन्तु सुखिन", "वसुधैव कुटुम्बकम्" का व्यावहारिक रूप है। दीनदयाल जी के इस विचार को हमें आगे बढ़ाना है, जिससे जहाँ व्यक्ति की गरिमा भी नष्ट न हो तथा गरीबी की पंक्ति में खड़े हुए सबसे पीछे के व्यक्ति की भी चिंता हो। दीनदयाल जी का यही योगदान राष्ट्र जीवन को सबसे बड़ा योगदान है। वह 51 वर्ष की छोटी अवस्था में ही हमारे बीच से उठ गये, अब उनके विचारों को आगे बढ़ाना ही हम सभी का काम है।

आशीर्वचन

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

''नीराजन'' पत्रिका हेतु माननीय बैरिस्टर साहब द्वारा भेजे गए संदेश

परम प्रिय बन्धु दिनेश जी,

सप्रेम नमस्कार ।

अपने विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'नीराजन' के लिए आपने मुझे अपना संदेश देने के लिए आमंत्रित किया है। इसके लिए मैं आपका हृदय से आभारी हूँ।

किसी भी अच्छे विद्यालय की पत्रिका न केवल उसकी गतिविधियों का दर्पण होती है, वरन् उसके छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों को प्रोत्साहित कर उन्हें अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा भी देती है।

मैं आशा करता हूँ कि आपके कुशल सम्पादकत्व में 'नीराजन' इस उत्तरदायित्व का वहन तो करेगा ही और उस महापुरुष के, जिनका नाम इस विद्यालय से जुड़ा है, जीवनादर्श को अपनाकर सच्चे अर्थों में भारत माता का 'नीराजन' सिद्ध होगा।

भवदीय

3.3.1983 **बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह**

प्रिय बन्धु डॉ0 अवस्थी,

सप्रेम नमस्कार।

आपका पत्र मिला। 'नीराजन' का यह अंक 'नयी शिक्षा–नीति विशेषांक के रूप में प्रकाशित हो रहा है, यह जानकर अतीव आह्लाद की अनुभूति हुई। लगता है कि नयी शिक्षा–नीति भारतीय जीवन–मूल्यों की एक बार पुनः उपेक्षा कर रही है। आज की शिक्षा के स्वरूप में भारतीयता का अनुप्रवेशन एक नितान्त अनिवार्य आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आयातित पाश्चात्य संस्कृति का बढ़ता हुआ प्रभुत्व अहितकर सिद्ध होगा। अब तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भावी पीढ़ियाँ गीता और तुलसी तो क्या, प्रेमचन्द को भी भूल जायेंगी। वस्तुतः यह चिन्त्य है। नयी शिक्षा–नीति के निर्धारकों को इस ओर अपेक्षित ध्यान देना चाहिए कि हिन्दी भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उदारता का परिचय देते हुए स्वीकार किया जाना चाहिए। हाँ, अंग्रेजी का एक विषय व भाषा के रूप में अच्छा ज्ञान कराया जाये, यह अच्छी बात है। पर अंग्रेजी को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित करना किसी भी दृष्टि से युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता है। मैं समझता हूँ कि नीराजन का यह अंक नयी शिक्षा–नीति के संदर्भ में एक सही दिशा प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो सकेगा। इसी आशा और शुभकामनाओं के साथ।

आपका

मार्च 1987 **बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह**

परम प्रिय डॉ0 प्रेम नारायण जी,

सादर नमस्कार।

आपने विद्यालय की पत्रिका नीराजन के लिए संदेश माँगा है। हमारे यहाँ बालकों के लिए उपयुक्त साहित्य, जिससे वह अपने श्रेष्ठ पुरुषों का जीवन तथा उनके द्वारा स्थापित जीवन मूल्यों को समझ सकें, की बहुत कमी है। आपका प्रयास इस दिशा में महत्वपूर्ण रहता ही है। यदि आप पौराणिक तथा ऐतिहासिक प्रसंगों को विशेष रूप से लेकर प्रेरणाप्रद कहानियाँ प्रस्तुत करें तो मेरी समझ में अपनी संस्कृति को समझने में सुगमता होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाओं सहित!

आपका

22.2.1988 **बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह**

परम प्रिय दुबे जी,

सप्रेम नमस्कार।

आपका पत्र दिनांक 11 अप्रैल को प्राप्त हुआ । विद्यालय की वार्षिक पत्रिका निकलने वाली है ऐसा आपने सूचित किया। जानकर प्रसन्नता हुई। शिक्षा की दिशा पर कुछ वर्षों से सुनने को तो बहुत मिल रहा है किन्तु सफल प्रयोग बहुत कम होते दिखाई दे रहे हैं। मैकाले की शिक्षा पद्धति का स्थान नई शिक्षा नीति लेगी, अब दोहरी शिक्षा नीति नहीं चलेगी, ऐसा हम सुन रहे हैं। यह सब नारों का ही स्वरूप ले रहे है, ऐसा लगता है। शिक्षा स्वाभिमान, आत्म विश्वास, नैतिकता, साहस, स्वानुशासन जैसे गुणों के साथ शारीरिक और बौद्धिक क्षमता का विकास कर व्यक्ति को समाजोन्मुख बनाये इसका अभाव दिखता है। मुझे विश्वास है कि आपकी पत्रिका शिक्षा की सही दिशा पर प्रकाश डालेगी। आज देश में नैतिकता और चारित्र्य का जो ह्रास दिखाई दे रहा है उसे उपयुक्त शिक्षा पद्धति ही दूर कर सकती है। ऐसी पद्धति कैसे विकसित हो, यह विचारणीय है।

समस्त शुभकामनाओं सहित।

आपका

मार्च 1987 **बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह**

प्रिय दुबे जी,

सादर नमस्कार।

आप विद्यालय की पत्रिका को इस बार बलिदानी रामभक्तों के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में प्रस्तुत कर रहे है, जानकर प्रसन्नता हुई। राम भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। उन्होंने शौर्य और धैर्य, सत्य और शील, त्याग और तपस्या के जो आदर्श हमारे सम्मुख रखे हैं, उन्हीं से आज एक हजार वर्ष के आक्रमणों के बाद भी हिन्दू समाज जीवित है। हमारी संस्कृति में ही वह बात है, जिससे हमारी हस्ती नहीं मिटी।

आक्रमणकारियों ने हमारे मनोबल को तोड़ने के लिए हमारे श्रद्धा केन्द्रों को ध्वस्त किया। राम के नाम पर सारा हिन्दू समाज आज एकात्मकता का अनुभव कर रामराज्य की स्थापना हेतु जाग्रत हो गया है। इसी कड़ी में अनेक कष्टों और बाधाओं को पार करते हुए रामभक्त अयोध्या पहुँचे। वह रामराज्य की शिलायें स्वयं ही बन गये। अपना बलिदान दे दिया किन्तु उन्होंने जो नींव डाल दी है, उस पर जाग्रत समाज भव्य मंदिर बना कर रहेगा। यहीं से रामराज्य की भी नींव पड़ेगी। ऐसे बलिदानियों के लिए श्रद्धा व्यक्त करने के लिए शब्द ढूँढ़ पाना अत्यन्त कठिन है। उन्हें हृदय से प्रणाम करता हूँ।

आपका

अप्रैल 1991 **बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह**

परम प्रिय श्री सुमन,

सप्रेम नमस्कार।

विद्यालय की पत्रिका 'नीराजन' शीघ्र प्रकाशित होने वाली है, जानकर प्रसन्नता हुई । आज देश की एकता और अखण्डता का प्रश्न गम्भीर रूप से हमारे सामने है। अंग्रेजों ने तरह–तरह के भ्रम उत्पन्न करने वाले तथ्य हमारे शिक्षित वर्ग के दिमाग में डालकर विघटन के बीज बोये थे। आर्य बाहर से आये और उन्होंने यहाँ के आदिवासियों को दक्षिण में और जंगलों में खदेड़ दिया, बतलाकर आर्य और द्रविड़ का विभाजन किया, गिरिवासियों, वनवासियों को समाज से अलग किया। अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यक हिन्दू समाज से सुरक्षा की आवश्यकता हैं, बतलाकर, अल्पसंख्यकों को विशेष दर्जा देकर अलग किया। दुर्भाग्य यह है कि अंग्रेजियत में पला हुआ हमारा समाज इन भ्रामक धारणाओं को छोड़ नहीं सका है। वास्तविकता तो यह है कि भारत अत्यंत प्राचीन

काल से एक राष्ट्र है। इसकी एक प्राकृतिक भौगोलिक इकाई है। हिमालय और समुद्र से घिरा हुआ अपनी विशेषता रखने वाला यह देश है जिसमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक ही संस्कृति पनपी और रग–रग में समाई हुई है। सर्वात्मैक्य, सहिष्णुता, त्याग, तपस्या, कर्म के आधार पर पुनर्जन्म– इस संस्कृति की यह मान्यता देश के किसी भी कोने में जाने पर जीवन का आधार दिखेगी। हमारा एक इतिहास, एक ही जीवन आदर्श तथा एक ही प्रेरणा देने वाले महापुरुष हैं। यह एकात्मता अनुभव न करके आज का विदेशी मानसिकता में पला शिक्षित व्यक्ति भी ऊपरी बातों को महत्व देकर, हमारा देश बहुराष्ट्रीय, बहुभाषा–भाषी, मिश्रित संस्कृति वाला, विभिन्न क्षेत्रों का एक गणराज्य है, ऐसा मानने लगता है। ऐसा समझने पर एकात्मता व अखण्डता सम्भव नहीं होती। भ्रामक धारणाओं का निराकरण कर देश की मौलिक एकात्मता को उजागर करने का महत्वपूर्ण कार्य डॉ0 मुरली मनोहर जोशी की एकता यात्रा ने किया है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक इस देश की आत्मा एक है। यह हमारी मातृभूमि हिमालय से समुद्र पर्यन्त भारत माता के रूप में हमारी पूज्या है। यहाँ के सारे पर्वत–नदियाँ हमारी श्रद्धा के पात्र है, यही संदेश इस यात्रा ने देश के कोने–कोने में पहुँचाया है तथा सुप्त राष्ट्रीयता को जाग्रत किया है। हमारा भी यही कर्तव्य है कि हम भारत की मूलभूत एकात्मता का अनुभव करें। सारा भारत एक है। हम कोई भी भाषा बोलें, हमारा रहन सहन कैसा भी हो हमारी आत्मा, जीवन मूल्य, आदर्श महापुरुष एक हैं। हम प्राचीन राष्ट्र हैं। यह आत्म विश्वास, आत्मानुभूति प्रत्यक्ष रूप से व्यवहार में आने पर हम एक शक्तिशाली, संगठित, अखण्ड, अनुशासित राष्ट्र के रूप में संसार में अपना सम्मानपूर्वक स्थान बना सकते हैं। आपकी पत्रिका विद्यालय के छात्रों को जीवन की सही दिशा देने का प्रयास करती रहती है, यह आनन्द का विषय है। समस्त शुभकामनाओं सहित।

आपका

बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह

अप्रैल 1965

पाटलिपुत्र की गंगा से

चल अतीत की रंगभूमि में,
स्मृति-पंखों पर चढ़ अनजान।
विकल चित्त सुनती तू अपने,
चन्द्रगुप्त का क्या जयगान ।।
घूम रहा पलकों के भीतर,
स्वप्नों सा गत विभव विराट्?
आता है क्या याद मगध का,
सुरसरि! वह अशोक सम्राट?

.... रामधारी सिंह 'दिनकर'

बैरिस्टर साहब

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

डॉ. विश्वेश्वर दयाल शुक्ल
पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, वी.एस.एस.डी. कॉलेज, कानपुर

भारतीय संस्कृति के पोषक एवं उपासक, हिन्दू–राष्ट्र के समर्थक एवं शिल्पी, सनातन–धर्म के उन्नायक एवं आराधक, आधुनिक विज्ञान और टेकनालॉजी के प्रशंसक एवं प्रसारक, शिक्षा के मर्मज्ञ एवं विधायक श्री नरेन्द्रजीत सिंह जी को हम लोग बैरिस्टर साहब कहकर अभिहित करते हैं। यह शब्द–युग्म उनके पद अथवा उपाधि का द्योतक नहीं, अपितु उनके प्रति आत्मीयता का अभिव्यंजक है। इसमें उस सरसता की व्यंजना है जिसकी अनुमति स्वजनों को बुलाने में होती है। किसी ने ठीक ही कहा है कि 'To be too near the sun is to get blind' किसी ऐसे व्यक्तित्व का छोटे से छोटे पैमाने पर भी रेखांकन, जिसके साथ रेखाकार का घनिष्ठ सम्बन्ध हो, सही नहीं उतरता क्योंकि उसकी तूलिका तरल भावनाओं की स्निग्धता के कारण स्वच्छंद गति से नहीं चलती, उसकी गौरव–गरिमा से अभिभूत हो जाती है। दूर और तटस्थ होकर ही किसी विशिष्ट व्यक्तित्व की इयत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है। साथ ही, यह भी तो सबके दैनिक अनुभव की बात है कि जिस धरती की छाती पर हम चलते–फिरते हैं, जिसके पानी और जिसकी मिट्टी से हमारी काया का निर्माण होता है, उसकी गुरुता, गंभीरता, धैर्य, उदारता, विस्तार–प्रसार, शील, शक्ति, आकर्षण आदि का हमें रत्ती भर ध्यान नहीं होता, परन्तु दूरस्थ चन्द्रमा की चारुता की प्रशंसा में कल्पना क्रियमाण हो जाती है। बैरिस्टर साहब से हम इतने घुले–मिले हैं कि उनसे अलग होकर उनका परखना–निरखना, उनको देखना–दिखाना सम्भव नहीं। उनके विषय में लिखना–पढ़ना ऐसा प्रतीत होता है मानो हम अपने विषय में ही कुछ कह रहे हों– आत्मश्लाघा वांछनीय नहीं समझी जाती। बैरिस्टर साहब का जन्म कानपुर में 18 मई, 1911 को एक सुसम्पन्न और प्रख्यात परिवार में हुआ था। इनके पूज्य पिता राय बहादुर श्री विक्रमाजीत सिंह जी उन देशरत्नों में थे जिन्होंने अपने अमूल्य योगदान से समाज और राष्ट्र को समुन्नत किया था। वकालत के क्षेत्र में तो वे अग्रणी थे ही, साथ ही वे कानपुर की नगरपालिका के चेयरमैन, तत्कालीन संयुक्त–प्रदेश की कौसिंल के सदस्य, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के प्रेसीडेंट रहे, और इन सभी क्षेत्रों में उनकी सेवाएँ सतत् स्पृहणीय रहेंगी। वे 'योगःकर्मसु कौशलम्' के ज्वलंत उदाहरण थे। जिस वी.एस.एस.डी. कॉलेज की हम स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं, उसकी स्थापना का श्रेय इनके पुरुषार्थ और कार्य कौशल को था। इसकी स्थापना में इन्होंने न केवल अपनी प्रभूत सम्पत्ति वरन् लाखों रुपये चंदे में संग्रह कर लगा दिए। श्री नरेन्द्रजीत सिंह को जहाँ विपुल वैभव विरासत में मिला, वहीं उन्हें अनेक उदात्त गुण भी पैतृक सम्पत्ति में प्राप्त हुए। जिस 'आचरण की सभ्यता' के कारण नरेन्द्र बाबू आज समग्र समाज के कंठहार बने हुए हैं वह इनको घुट्टी में पिला दी गई थी। जीवन की पृष्ठभूमि में जो सुख–सुविधा, अध्ययन के साधन, कार्य–क्षेत्र, पुस्तकालय, साज–सज्जा आदि पं. जवाहर लाल नेहरू को पैतृक सम्पत्ति में मिली थी, उसी प्रकार की सुख–सामग्री और साधन सम्पन्नता नरेन्द्र बाबू को भी सुलभ थी। राय बहादुर साहब ने इनकी शिक्षा–दीक्षा का समुचित उपबंध किया। स्वदेश और विदेश में इनको सुशिक्षित बनाने के लिए कोई कसर बाकी न रखी गई। नरेन्द्र बाबू ने भी उन समस्त साधनों का सदुपयोग किया। इनका छात्र जीवन उदात्त सफलताओं से संकुलित था। ये प्रारम्भ से ही मेधावी और कुशाग्र –बुद्धि थे। स्थानीय बी.एन. एस.डी. स्कूल में (उस समय यह कॉलेज नहीं था) इन्होंने 1920 से 1926 तक शिक्षा प्राप्त की और 1926 में प्रथम श्रेणी में गणित में विशेष योग्यता के साथ हाई स्कूल उत्तीर्ण किया। यू0पी0 बोर्ड की योग्यता की सूची में इनका बाहरवाँ स्थान था। इसी प्रकार क्राइस्ट चर्च कालेज से 1928 में इन्होंने इण्टरमीडिएट रसायन और गणित में विशेष योग्यता के साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया और बोर्ड की योग्यता की सूची में इनको छठा स्थान प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1930 में इन्होंने प्रथम श्रेणी में बी.एस.सी. की उपाधि और विश्वविद्यालय में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। विलायत जाने के पूर्व ये दो महीने तक अपने एस.डी. कॉलेज की एल. एल.बी. कक्षा में पढ़ते रहे। इंग्लैंड में इनका छात्र–जीवन सफल रहा। 1932 में इन्होंने मैथेमेटिक्स में बी.एस.सी. स्पेशल पास किया और 1932 में इनर टेम्पल, लंदन से बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की। जिस प्रकार कक्षा में इनका

स्थान वैभवपूर्ण था, उसी प्रकार क्रीड़ा क्षेत्र में भी ये अग्रणी थे। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दू छात्रावास में टेनिस के कैप्टन रहे। लंदन यूनिवर्सिटी कालेज में भी ये टेनिस में फर्स्ट नेट के सदस्य रहे। विलायती वातावरण में रहकर भी इनका जीवन भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल आदर्शों से उद्भासित रहा, अथवा यों कहिए, कि पश्चिमी सभ्यता की प्रतिक्रिया ने इनकी भारतीय संस्कृति के प्रति भावना को और अधिक प्रदीप्त कर दिया। कभी भी आहार–विहार, आचार–विचार में इन पर विलायत का रंग नहीं चढ़ा। एक बार एक अंग्रेज मित्र ने इन्हें और इनके एक भारतीय साथी को भोजन के लिए आमंत्रित किया। पूछे जाने पर कि आप लोगों को बीफ खाने में कोई आपत्ति तो नहीं, इनके भारतीय साथी ने मौन स्वीकृति प्रदान की, परन्तु इन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि ये निपट शाकाहारी हैं, और इनको सुरापान आदि से भी परहेज है। इनकी इच्छानुसार ही भोजन का प्रबन्ध किया गया। उस अंग्रेज मित्र ने इनके संयम, निर्भीकता और विवेक की बड़ी सराहना की। आज इस देश को ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जिनका शरीर और मस्तिष्क दोनों स्वस्थ हों, चारित्रिक संघटन में स्वस्थ शरीर और कुशाग्र बुद्धि दोनों का सम्यक् समन्वय हो। बैरिस्टर साहब के छात्र–जीवन में इन दोनों पक्षों का मणि–कांचन संयोग संघटित हुआ था। पाठ्य–क्रम की पुस्तकों के अध्ययन के साथ इण्टरमीडिएट में ही इन्होंने टॉमस हार्डी और डिकेन्स के सभी उपन्यास पढ़ डाले। उसी प्रकार विलायत में भी विज्ञान और विधि के वाङ्मय के गम्भीर अध्ययन के साथ इन्होंने अंग्रेजी साहित्य सरोवर से भी छक कर पान किया था। वहीं से इनको राजनीति एवं दर्शन के प्रति श्रद्धा बढ़ी और उन सबका इन्होंने गहन अध्ययन किया। उन पर अंग्रेजियत तो नहीं चढ़ी परन्तु अंग्रेजी जीवन की पाबन्दी, अनुशासन, कार्य–दक्षता, उद्देश्य की पवित्रता आदि का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसकी छाया अभी तक नहीं मिटी, वरन् समय पाकर वह और सघन हो गई। बैरिस्टर साहब भाग्यशाली भी बहुत हैं। जहाँ पिता का वैभव–विलास और शीतल छाया इनको फूलने–फलने के लिए मिली, उसी प्रकार इनका विवाह भी कश्मीर राज्य के धन कुबेर स्व0 दीवान बद्रीनाथ जी की कन्या से हुआ। कश्मीर के महाराज के बाद उनके राजय में धन, वैभव, अधिकार आदि में यदि समाज में किसी का दूसरा स्थान था, तो वह दीवान साहब का। इनका सुविशाल महल, जो 'शाश्वत भवन' के नाम से श्रीनगर में प्रख्यात है, शंकराचार्य पर्वत के अंचल में काश्मीर महाराज के महलों की शृंखला में स्थित है। जम्मू और कश्मीर के सुविस्तृत राज्य में दीवान साहब की बहुत बड़ी जागीर थी। जम्मू और श्रीनगर की कोठियाँ, मंदिर, ठाकुरद्वारे, अतिथि भवन, पुस्तकालय, उपवन, फलों के बगीचे, केसर के खेत आदि इनके अपार वैभव के प्रतीक हैं। जिन दीवानिनी महोदया के एक लाख रुपये के दान के फलस्वरूप हमारे विज्ञान–संकाय का आरम्भ संभव हो सका, वे इन्हीं दीवान साहब की पत्नी थी। आज ये दम्पति अपनी ऐहिक लीला संवरण कर दिवगंत हो चुके हैं। इन्हीं की सुपुत्री, श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह जी ने बैरिस्टर साहब के सामाजिक जीवन को और अधिक समुन्नत, धर्मपरायण एवं हिन्दू भावापन्न बनाने में बड़ा सहयोग दिया है। ऐसा सुयोग पुण्य पुराकृत के परिणाम–स्वरूप ही सम्भव हो पाता है। हिन्दी, हिंदू और हिंदुत्व के प्रति इनकी प्रगाढ़ आस्था है। जिन्होंने इनके पुत्रों के यज्ञोपवीत तथा लड़के–लड़कियों के विवाहादि संस्कारों को देखा है, जिन्होंने इन तथा अन्य अवसरों पर शास्त्र–विहित चतुरश्री, सर्वत्रोभद्र, श्रीधरी तथा पद्मिनी वेदि–रचना तथा मंडप वास्तु के कौशल का निरीक्षण किया है, जिन्होंने उनके प्रत्येक अवयव के सम्यक् मनोन्मान, संस्थान निवेश एवं हव्य सामग्री आदि को सामुद्रिक गणित तथा ज्योतिष के विचार से परखने का प्रयास किया है तथा जिन्होंने कुल पुरोहित'चंदा पंडित' के नेतृत्व में ब्राह्मण वेश में ग्यारह–ग्यारह आचार्यों के समवेत स्वर से सामगान के स्वरों को सुना हैं, वे जहाँ एक ओर कल्पना के पंखों पर बैठ कर अत्यन्त अभ्युन्नता प्राचीन महिमामयी भारतीय संस्कृति का गोचर साक्षीकरण कर सकते हैं, वही इस बाते के भी साक्षी हैं कि वह परिवार धर्म की सनातन विवेक सम्पन्ना विचार–परम्परा को सजीव और सम्प्राण बनाने में कितना जागरूक है। कहना न होगा, इन समग्र आयोजनों की पृष्ठभूमि में श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह की बलवती प्रेरणा है। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है –

यदि राधे न होती,
तो आधे राधेश्याम होते।

बैरिस्टर साहब के व्यक्तित्व के विविध पक्ष हैं। ये कहा करते हैं कि इनको पाठ्यक्रम कार्यकलाप (Extra

curricular activities) से अवकाश नहीं मिलता। वकालत के उद्यम के अतिरिक्त इन्होंने समाज के अनेक दायित्यपूर्ण कार्यों को अपने ऊपर ले रखा है। ये श्री सनातन धर्म महामण्डल के 1955 से सभापति हैं। इस 'महामंडल' के अन्तर्गत अनेक संस्थाएँ हैं – वी.एस.एस.डी. कॉलेज, बी.एन.एस.डी. कॉलेज, दीनदयाल उपाध्याय विद्यालय, औषधालय, पुस्तकालय आदि। इसके अतिरिक्त ये छोटेलाल गयाप्रसाद ट्रस्ट, रावतपुर ट्रस्ट, नारायणी देवी धर्मार्थ औषधालय ट्रस्ट आदि के सभापति तथा जे.के. सिन्थेटिक्स लिमिटेड, कानपुर तथा नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता के डाइरेक्टर हैं और साथ ही बी.आई.सी. आदि के निगमों के विधि मंत्रणाकार हैं। इसके अतिरिक्त न जाने कितनी संस्थाओं के सदस्य, सचिव तथा कार्यकर्ता हैं। ये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्तीय संघचालक हैं। जिस संस्था से इनका संबंध हो जाता है उसकी कार्यक्षमता बढ़ जाती है और उस पर जनता का विश्वास टिक जाता है। कानपुर उद्योगपतियों तथा लक्ष्मी के लालों का नगर है। यह पूँजीपतियों का गढ़ है। यहाँ के नागरिकों की देश–विदेश सभी जगह ख्याति फैली हुई है। इनमें जो मान–प्रतिष्ठा, विश्वासपात्रता, तथा लोक श्रद्धेयता इनके बाँट पड़ी है, ऐसी गौरव–गरिमा की भाग्यरेखा विरले के ही हाथ में पड़ी होगी। इनकी निष्पक्षता, समग्रता, सत्यसन्धता, वैधी–ज्ञान की गहराई के कारण उच्च न्यायालय पेचीदा मामले इनके पास विवाचन (Arbitration) के लिए भेज देते हैं। इनके विवाचकीय निर्णय बहुत लोक–प्रिय हैं। दोनों पक्ष स्वयमेव अपने वाद पंचनिर्णय के लिए इनको सौंप देते हैं और आजकल के लाल फीते के झंझटों तथा अपव्ययता के भार से बच जाते हैं। मेरे दो–एक पूर्व छात्रों ने जो यहाँ न्यायाधिकारी होकर आए, बैरिस्टर साहब की युक्तियुक्त संतुलित तर्कशैली की प्रशंसा करते हुए कहा कि इनके Court etiquette को देखकर सर तेज काटजू, पं. मोती लाल नेहरू आदि स्मरण हो आता है। एक मेरे पूर्व छात्र मजिस्ट्रेट ने मुझसे यहाँ तक कहा, "जिस समय यह बहेस करते हैं तो मेरा ध्यान इतना अधिक इस पर नहीं जाता है कि वह क्या कह रहे हैं। मैं तो यह देखा करता हूँ कि यह कैसे कहते हैं। What a contrast between him and many others! जैसा ऊपर संकेत किया जा चुका है कि श्री नरेन्द्रजीत सिंह जी वी.एस.एस.डी. कॉलेज की प्रबंध समिति के मंत्री हैं। मंत्री शब्द के द्वारा कॉलेज के प्रति इनकी घनीभूत श्रृद्धा का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। वे कहा करते हैं कि 'मेरे लिए तो यह कालेज नहीं मंदिर है जिसकी स्थापना पूज्य बाबू जी ने की थी। मैं अपना यह पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ कि इसकी अखण्ड ज्याति जगाता रहूँ।' सचमुच जिस बिरवा को स्वर्गीय राय बहादुर साहब ने लगाया था, बैरिस्टर साहब के सतत् उद्यान कौशल के द्वारा आज वह प्रौढ़ वृक्ष के रूप में प्रतिष्ठित है, और फल–फूलों के भार से अवनत उसकी विविध शाखायें चातुर्दिक फैल रही हैं। उसके पुष्पों के स्निग्ध सौरभ से सारी दिशायें सुरभित हो रही हैं। रोजी के बाजार में उसके फलों की काफी कदर है। परन्तु कोई चीज स्वतः नहीं बन जाती। कहा जाता है रोम का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ था। इस कॉलेज के निर्माण में कई व्यक्तियों के त्याग, तपस्या एवं तितिक्षा का योगदान है। स्वर्गीय स्वामी दयानन्द जी की वरद छत्रछाया में इस संस्था का सूत्रपात हुआ। स्व0 रायबहादुर साहब ने अपने सुपुत्र श्री महेन्द्रजीत सिंह को न तो प्रयाग विश्वविद्यालय भेजा और न समीपस्थ क्राइस्टचर्च कॉलेज में प्रवेश दिलवाया वरन् उनको एस.डी. कॉलेज में पढ़ने के लिए भेजा, यद्यपि इसके लिए उन्हें अलग से एक कार का प्रबंध करना पड़ा। बैरिस्टर साहब को तो सारा परिवार दोनों लड़के और दोनो लड़कियाँ, वे स्वयं थोड़े दिन के लिए ही सही – अपने कालेज के वरिष्ठ विधार्थी रहे। इनके कनिष्ठ पुत्र श्री वीरेन्द्र पराक्रमादित्य ने उसी वर्ष इस कालेज में प्रवेश लिया जिस वर्ष यहाँ विज्ञान की कक्षाओं का श्री गणेश हुआ। इनके भाइयों के बच्चों ने काल्विन तालुकेदार कॉलेज तथा कान्वेंट में शिक्षा प्राप्त की। परन्तु बैरिस्टर साहब का विश्वास तो उस अंग्रेज देशभक्त की भाँति है जो प्रत्येक वस्तु के लिए कहा करता था – If it is British it is the best ये भी सगर्व कहते हैं – If you want to educate your child, V.S.S.D. College is the best इस कालेज की प्रतिष्ठा वृद्धि और सर्वतोमुखी विकास के लिए इनकी अनेक योजनाएँ हैं जिनके कार्यान्वयन के लिए ये सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। इनकी योजना प्रक्रिया विवेकपूर्ण और क्रमसंगत होती है। इन्हें ऊल–जलूल कोई काम पसन्द नहीं। दोनों छात्रावासों के सामने एक विशाल क्रीड़ा क्षेत्र बना दिया गया है जिससे उनका गौरव और अधिक हो गया है। कालेज के विविध भवन, छात्रालय, क्रीड़ा क्षेत्र, स्कॉलर्स लॉज, योगाश्रम, जलाशय, भोजनालय, छोटे–छोटे गुरु गृह, प्राचार्य कुटीर आदि यों ही अन्धाधुन्ध नहीं बना दिए गए।

यदि ध्यानपूर्वक इनका सामूहिक निरीक्षण किया जाय, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इनमें स्थापित निजी प्रज्ञा, परिकल्पना, क्रिया कौशल, शील, दूरदर्शिता और बौद्धिक एवं शास्त्रीय योग्यता कितनी उच्चकोटि की है। स्थपति को शास्त्र, प्रज्ञा, शील सम्पन्न एवं वास्तु विषय के लक्षण और लक्ष्य में कुशल और निष्णात होना चाहिए। इस महाविद्यालय निवेश (College planning) के अधियोजक में स्थपति के सभी गुणों का सन्निवेश है – **'स्थापकान् स्थापतींश्चापि पूजयामि स्वशक्तितः'**

बैरिस्टर साहब को कॉलेज के आधिविद्य जीवन (Academic life) के स्तर को ऊँचा करने का भी ध्यान रहता है। इनके पास प्रथम श्रेणी के छात्रों की सूची रहती है और ये प्रतिभाशाली विद्यार्थियों से सम्पर्क रखते हैं और उनकी उत्तरोत्तर प्रगति को देखते रहते हैं। यदि किसी के मार्ग में कोई बाधा पड़ती है, तो अविलंब उसका निवारण करते हैं। उनका कालेज के विशिष्ट छात्रों और सभी अध्यापकों से निजी सम्बन्ध है। वे उनके नाम जानते हैं। गाँधी जी की लोकप्रियता का एक कारण यह भी बतलाया जाता है कि उनका सभी दलों के नेताओं, साथियों तथा दूरस्थ व्यक्तियों से व्यक्तिगत सम्बन्ध रहता था। जो व्यक्ति जिस बात में बद्धहित होता गाँधी जी पहले उससे उसी की चर्चा करते थे। वे टैगोर से शान्ति निकेतन और सरोजनी नायडू से अंग्रेजी कविता की चर्चा करते थे। राजेन्द्र बाबू से दमा और मौलाना आजाद से जुकाम की बाबत पूछा करते थे। एक सज्जन की केवल एक लड़की थी, जो प्रायः बीमार रहती थी। प्रत्येक पत्र में वे उस लड़की के सम्बन्ध में लिखा करते थे। उनकी इस आत्मीयता को देखकर प्रत्येक व्यक्ति यही समझता था कि वह बापू के सबसे निकट है। यह गुण बैरिस्टर साहब में प्रभूत मात्रा में पाया जाता है। उनके और प्राध्यापकों के बीच समता का भाव रहता है। वे योग्यता वृद्धि के प्रयास में सबकी सहायता करते हैं। यहाँ से चले जाने के बाद भी अनेक छात्रों और प्राध्यापकों का इनसे पत्र व्यवहार और आना–जाना बना रहता है। वे पत्र कई बातों में महत्त्वपूर्ण हैं। उनमें घरेलू बातों का उल्लेख तो रहता ही है अन्य विषयों का प्रतिपादन भी उनमें मिलता है। अमेरिका और विलायत से आने वाले पत्रों में विज्ञान, शिक्षा, समाज तथा अनेक आधुनिक विषयों का विश्लेषण किया जाता है। इन सारे पत्रों का प्रत्युत्तर उसी स्तर पर भेजा जाता है। इस सामाजिक व्यवहार साधना में कितना समय और शक्ति लगती है, परन्तु इससे शील की महत्ता का अनुमान भी लगाया जा सकता है। उनको निर्धन छात्रों की सहायता करने में बड़ी दिलचस्पी रहती है। कालेज के छात्र तो उनसे ऐसी श्रद्धा और प्रेम करते हैं, मानो ये उनके माता–पिता हों। जब कभी किसी छात्र से पिछली फीस माँगी जाती, तो वह चट यही उत्तर देता कि वह बैरिस्टर साहब के पास जायेगा। उसके उत्तर में उस विश्वास और दृढ़ता की झलक मिलती जैसी उस व्यक्ति के कथन में होती है जिसका किसी बैंक में पैसा जमा हो। बैरिस्टर साहब निर्धन छात्रों के बैंक हैं जहाँ बिना पैसा जमा किए पैसा मिल जाता है। आपद ग्रस्तों एवं संत्रस्तों के त्राता हैं, गुमराहों के रहनुमा और होनहार बिरवानों के सर्वस्व। जिस किसी को कालेज के अनुशासन में कुछ कशमकश होती वह सारे बन्धन तुड़ाकर इनके पास पहुँचता। वे उसकी बात सुनते और कालेज के अनुशासन और उस व्यक्ति की निजी कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए ऐसा हल निकालते कि वह व्यक्ति गर्व स्फीत होकर लौटता।

एक बात निपट व्यक्तिगत होते हुए भी यहाँ उसके उल्लेख का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता। मुझे एक बार कालेज से ऋण लेने की आवयश्यकता हुई। परिस्थितियाँ ऐसी थी कि उतना धन प्रोनोट पर मुझे अकेले नहीं मिल सकता था। बैरिस्टर साहब ने प्रोनोट पर मेरे नाम के साथ अपने एक लड़के को सहऋणी बनाया। जिस पर इनकी कृपा की गई हो वह व्यक्ति तो इनके हाथ बिक गया। ऐसे अनेक ज्वलन्त उदाहरण हैं जो उनकी अध्यापकों के प्रति आत्मीयता के परिचायक है। छात्रों और अध्यापकों के साथ तो इनकी घनिष्ठा है ही, अल्प वेतन भोगी कर्मचारी भी अपने को निरालंब नहीं पाता। कई चपरासियों का उनसे सीधा सम्बन्ध है। शासन की ओर से जीविका की इतनी प्रतिभूति (Security) नहीं मिल सकती जैसी इन लोगों को सुलभ है। अवकाश प्राप्ति के समय इनकी सजल विदा भी कम महत्व की नहीं। यह जानकर कि इनका कोई सहारा है, इनकी बाँह पकड़ने वाला कोई मौजूद है, ये यूनियन आदि के चक्कर में नहीं पड़ते।

बैरिस्टर साहब का विश्वविद्यालय में, शिक्षा विभाग में, समग्र शिक्षा क्षेत्र में एक विशिष्ट सम्मानपूर्ण स्थान है। इनकी ख्याति सुनकर भारतीय गणतंत्र के राष्ट्रपति ने इन्हें अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के कोर्ट का सदस्य मनोनीत किया है।

उन्होंने अभी हाल में श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल के अन्तर्गत एक दीनदयाल उपाध्याय विद्यालय की स्थापना की है, जहाँ पर छठवीं कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक पढ़ाई होगी। यह संस्था अंग्रेजी स्कूल का भारतीयकरण है। इसमें पढ़ने वाले छात्र यहीं रहेंगे। इनका अध्यापन, क्रीड़न, अवकाश यापन क्रमबद्ध और सुश्रृंखल होगा। इनके संस्कारों पर भारतीयता की छाप होगी। जैसे काशी विद्यापीठ के स्नातक आत राजनीतिक नीलगगन में जगमगा रहे हैं, उसी प्रकार एक दिन समाज के प्रांगण में इनकी प्रभा का भी प्रसार होगा।

श्री नरेन्द्रजीत सिंह भारतीय संस्कृति के भक्त हैं। ये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त संघचालक हैं। इस संस्था के संगठन, संचालन, इसकी गतिविधि के नियमन, प्रस्फुटन आदि में इनका मनसा, वाचा, कर्मणा सहयोग है। इसकी प्रतिष्ठावृद्धि के हेतु इनको कुछ अदेय नहीं है। समय, धन सम्पत्ति, श्रम, परामर्श, मेधा, विवेक बुद्धि, कार्यकौशल सभी कुछ संघ की वेदी पर समर्पित है। आज 'धर्म निरपेक्ष' भारत के सामाजिक वातावरण में अपने को हिन्दू कहना – कहलाना मानो साम्प्रदायिकता का विज्ञापन देना है, संकीर्णता एवं अप्रगतिशीलता का बिल्ला लगाना है। हिन्दुस्तान में रहकर हिन्दू कहलाने में संकोच! कैसी विडम्बना है। पर बैरिस्टर साहब अपने आपको हिन्दू कहने में गौरव और हिन्दुत्व में गर्व की अनुभूति होती है। हिन्दू कभी संकीर्ण हो नहीं सकता। जिसने व्यष्टि और समष्टि–सारे चराचर जगत को एक चैतन्य शक्ति आत्मा अथवा ब्रह्म की अभिव्यक्ति माना है, जिसने प्राणि–मात्र को अपना स्वरूप समझा है भला फिर वह किससे बैर की बात सोचे। इनका हिन्दुत्व महामना मालवीय का हिन्दुत्व है। सहिष्णुता, उदार राष्ट्रीयता जिसके उपलक्षण हैं। इनका हिन्दुत्व तिलक का हिन्दुत्व है जिनकी सामाजिक विचार अवधारणा में सृष्टि व्यापिनी करुणा है। इनके हिन्दुत्व में स्वामी विवेकानन्द के वेदान्त गर्जन की प्रतिध्वनि है, जिस गर्जन ने सारे अमेरिका की आँखें खोल दी, जो गूँज सारे ईसाई जगत पर छा गई, जो समझ गए कि वेदान्त ही धर्म का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है और जिसने 19वीं शती के उत्तरार्द्ध में नवोत्थान के प्रभात में भारतीयों को राष्ट्रीयता का ''ऊँ नमः सिद्धम्'' आरम्भ कराया।

उनके विचार से हिन्दुत्व और राष्ट्रीयता की भावनाओं में कोई विरोध नहीं। दोनों में अन्योन्याश्रय भाव है। वीर सावरकर ने एक स्थल पर कहा है, "A Hindu patriot worth the name can't but be an Indian patriot as well." इसका कारण भी स्पष्ट है। हिन्दुओं के लिए हिन्दुस्थान ही पितृ देश, मातृ देश तथा पुण्य देश है। यही उनका मक्का, यही येरुशलम। अस्तु, इस देश के प्रति उनका प्रेम स्वााभाविक है। तभी स्वतंत्रता संग्राम में उनकी संख्या बेशुमार थी। मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर बाकी और लोगों को तो बालू बांध कर सती किया गया था। वे तो खून लगाकर शहीद बने थे। हिन्दुत्व की यह अवधारणा संकीर्ण नहीं कही जा सकती। फिर सावरकर के ही शब्दों में – ''आमुचा स्वदेश। भुवनत्रया मध्ये वास।'' हिन्दू शब्द की ध्वनि निम्नांकित श्लोक में भरी है –

आसिन्धु सिन्धु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिंदुरिति स्मृतः।

बैरिस्टर साहब की राष्ट्र की परिकल्पना में सबको स्थान है। उनके परिकल्पित समाज में 'आचरण की सभ्यता' होगी।, परस्पर भ्रातृ–भाव की स्निग्धता होगी, राष्ट्र की ममता होगी, परन्तु साथ ही विश्व–व्यापिनी सहानुभूति एवं सम्वेदना होगी। उसमें प्रत्येक युवक के लिए स्वास्थ्य का एक राष्ट्रीय स्टैंडर्ड होगा (National standard of physique for every youth)। सभी नागरिकों की मिल–जुल कर रहने की, और मिल–बाँट कर खाने की प्रवृत्ति होगी। वह समाज और राष्ट्र उद्भावना मात्र न होंगे। उनका गोचर साक्षीकरण करने के लिए पुरातन के प्रति प्रत्यावर्तन करना होगा। प्राचीन समाज और संस्कृति को आधुनिक विज्ञान और टेक्नॉलाजी के साँचे में ढालकर संजोना पड़ेगा। उस समाज में शरणागत वत्सलता होगी जिससे प्रेरित होकर प्रथम शती में ईसाईयों का दक्षिण प्रदेश में स्वागत किया गया। उसमें चालुक्य नरेशों की उदारता होगी जिससे प्रभावित होकर मुसलमानों के लिए मस्जिदों का निर्माण किया गया। परन्तु उसमें ईसाइयों और मुसलमानों को अपने–अपने धर्म पर आरूढ़ रहते हुए भारतीय राष्ट्र का घटक बनना पड़ेगा। उसके दुःख में रोना और सुख में हँसना होगा। हिन्दू राष्ट्र योजना में समाविष्ट होने के लिए धर्म परिवर्तन की आवश्यकता नहीं वरन् भाव परिवर्तन की आवश्यकता होगी। सिन्ध से

सिन्धु तक फैले हुए देश की संस्कृति के प्रति उसकी सफलता और विफलता, उसकी राजनीतिक और आर्थिक उन्नति–अवनति, उसके कला और साहित्य में समभाव और सम्वेदना की अनुभूति और अभिव्यक्ति अपेक्षित होगी। हिन्दुत्व की इस परिकल्पना में साम्प्रदायिकता की गंध ढूंढ़ने वालों की घ्राण शक्ति भले ही तीव्र हो, उनकी बुद्धि की दुर्बलता छिपाना कठिन है।

बैरिस्टर साहब के स्वजन–परिजनों को यह आश्चर्य होता है कि आज के लोकतंत्रात्मक वातावरण में जब मंत्रिपद शाक–भाजी से सस्ता हो गया है, जो तुलसीदास के शब्दों में 'अनइच्छित आवइ बरियाई', उनका उधर ध्यान भी नहीं जाता है। ये सपने में भी उधर आँख उठाकर नहीं देखते। क्या इसका कारण है कि इनमें क्षमता नहीं, इनको समय और सुविधा नहीं, समाज का समर्थन नहीं, इनके व्यक्तित्व में आकर्षण नहीं, नागरिकों का इन पर विश्वास नहीं? तो फिर इस उदासीनता का क्या रहस्य है? यद्यपि आज विधान मण्डल के सदस्य या मंत्रिपद के लिए उपर्युक्त किसी गुण की अपेक्षा नहीं, पर इनमें ये सारी विशिष्टताएँ उपलब्ध हैं। इनमें क्षमता है क्योंकि ये राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे सुविशाल संस्थान के प्रान्त संघचालक हैं। क्योंकि ये वकालत के अतिरिक्त विविध भाँति की समाज सेवा करते हैं। इनमें आकर्षण है और जनता की श्रद्धा भी है क्योंकि इन्होंने स्वामी विवेकानन्द स्मारक निधि के लिए प्रभूत धनराशि एकत्रित की, और वे अनेक ट्रस्टों के अध्यक्ष हैं। यह भी नहीं ये वीताराग हों, समाज की भीड़–भाड़ इनको पसन्द न हो। ये अपनी और कालेज की अचल सम्पत्ति के प्रबन्धकों से कहा करते हैं कि अदालत को निर्णय के लिए जाने के पहले उस अनधिकारी को अर्धचन्द्र देकर निकाल दो जो तुम्हारे मकान को बलात् अधिकृत करना चाहता हो। आज ये राष्ट्र के उच्चतम पद पर आसीन होने के योग्य हैं और इनकी पद स्वीकृति से इनकी इतनी शोभा नहीं बढ़ेगी जितनी उस पद की। यह पद अस्वीकृति ही इनके त्याग और सिद्धांत पर अटल रहने की परिचायिका है। इनका यह विचार है कि आजकल की राज्य व्यवस्था में पदाधिकार राष्ट्र के लिए श्रेयस्कर नहीं होगा। विधान मण्डल में जो अकांड तांडव मचा हुआ है, पदों की प्राप्ति के लिए जो छीना–झपटी हो रही है, शक्ति हथियाने के लिए विभिन्न दलों के सदस्य जो बैडमिंटन की चिड़िया की भाँति इधर से उधर सभा प्रांगण का अतिक्रमण कर रहे हैं, इन परिस्थितियों में पद ग्रहण करके व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की संतृप्ति भले ही कर ली जाये, वंश और परिवार के स्वर को दो–चार इंच भले ही ऊँचा किया जा सके परन्तु इससे राष्ट्र की मंगलाशा मृगमरीचिका के समान निष्फल सिद्ध होगी। स्वराज्य के बाद हमारा राष्ट्र और विशृंखल हो गया है। जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा आदि के भेदभावों ने इसकी उस दृढ़ता को झकझोर दिया जो ब्रिटिश शासन से जूझने के लिए स्वभावतः उसमें आ गई थी। समाज को संघटित करने की आवश्यकता है। उसके बिखरे हुए तत्वों को जोड़ने की जरूरत है। संघटन ही शक्ति का केन्द्र है। शक्ति संचय के लिए सामूहिक चेतना अपेक्षित है। चेतना तभी जाग्रत होती है जब समाज में अनुशासन होता है, चरित्र बल का संग्रह होता है। व्यक्ति के अनुशासन और चरित्र बल पर ही राष्ट्र का अनुशासन और चरित्र बल आधारित रहता है।

यह समग्र हिन्दू राष्ट्र को समय की चुनौती है कि यदि वह अपने–आप को सम्बद्ध, संगठित, सशक्त, चरित्र सम्पन्न और जागरूक न बना पाया तो न तो हिन्दू ही रहेगा और न राष्ट्र ही। यह तभी सम्भव है जब प्रत्येक हिन्दू की हृदय तंत्री से एक ताल पर एक ही झंकार निकले। सामूहिक चेतना का उदबुद्ध करने के लिए तंत्री और ताल दोनों को संभालना पड़ेगा। इसके लिए हम अपने प्राचीन तत्वदर्शकों, धार्मिक मार्गदशकों, आप्त ऋषियों, राष्ट्र निर्माताओं की उपलब्धियों की सुखद स्मृतियों का जगाए। हिन्दू संस्कृति के उन्नायकों की स्मृति जगते ही हमारी शिराओं में नवजीवन का संचार और हृदय में अभिनव स्पंदन हो उठेगा। राष्ट्रीयता की भावना सुविशाल भूभाग में सन्निहित नहीं रहती, पर कुछ प्रमुख सांस्कृतिक आदर्शों तथा वरेण्य परम्पराओं पर दृढ़ता पूर्वक आरूढ़ रहने में है। हिन्दुत्व का सामाजिक और नैतिक पुनरुद्धार निस्वार्थ सेवा, आत्मसमर्पण तथा भक्तिभावना के द्वारा ही सम्भव है। डॉ हेडेगेवार ने ठीक ही कहा है कि संस्कृति एक बड़ा व्यापक शब्द है– इसमें धर्मनीति, राजनीति, अर्थनीति, कला–साहित्य सभी समाविष्ट हैं। सांस्कृतिक दृढ़ता के लिए यह अनिवार्य है कि कोटि–कोटि कंठों में उत्साह की अविराम, अजस्त्र, अटूट वेगवती धारा फूट निकले। तभी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास सम्भव हो सकेगा। अभी ऐसा अवसर नहीं आया। इन परिस्थितियों में सीधे राजनीति के पचड़ों में पड़ना राष्ट्र के विघटन को योग देना है। बैरिस्टर साहब की इस ओर तटस्थता का यही कारण जान पड़ता है।

बैरिस्टर साहब का लघु–शब्द–चित्र तब तक पूर्ण न होगा, जब तक उनकी कार्य–प्रणाली के विषय में दो–चार शब्द अंकित न किए जाएँ। उनकी रीति–नीति व्यावहारिक है। वे यथार्थवादी हैं। वे किसी बात को दूसरे दिन के लिए नहीं छोड़ते और न उसके दायित्व को दूसरे के सिर पर मढ़ते हैं। उनमें कार्य कौशल के साथ कार्य–प्रवर्तन की अपार क्षिप्रता है। वे किसी काम को अर्से तक टाँगे रखने के पक्ष में नहीं है। उनका कहना है कि हमें प्रत्येक कार्य के मूल में गहराई तक जाना चाहिए, फिर अविलम्ब निर्णय ले लेना चाहिए। वे 'नेति, नेति' के समर्थक नहीं है। दीर्घ–सूत्रता उनको खलती है। उन्हें यह पसन्द नहीं कि साधारण बात को अकारण तूल दिया जाए। उनकी बुद्धि सारग्राही है। वे लम्बे–चौड़े बयान या लेख से अपने मतलब की बात चट से निकाल लेते हैं। उनका कहना है कि यह सम्भव नहीं कि हमारे निर्णय सर्वांशतः ठीक ही बैठें। परिस्थितियों को देखकर सर्वोत्तम निर्णय कर लेना चाहिए। प्रायः बिल्कुल निर्णय न लेने से सदोष निर्णय ले लेना अच्छा है क्योंकि दोष का तो कालांतर में निवारण सम्भव है, परन्तु विलम्ब से निर्णय लेने से अथवा निर्णय के अभाव में अधिक हानि की आशंका रहती है। वे चाहते हैं कि उनसे नपी–तुली बात की जाए और वे स्वयं भी अनर्गलता में विश्वास नहीं करते। कुछ लोगों का स्वभाव होता है कि उनसे कोई मिलकर बात करे। ये इसको उचित समझते हैं कि उनके पास उद्देश्य लिखकर भेज दिया जाय। उसे पढ़कर वे उसका समुचित उत्तर दे देतें हैं और कहते हैं, इससे श्रोता–वक्ता दोनों का समय बच जाता है।

इस छोटे शब्द चित्र में उनके प्रतिभा सम्पन्न जीवन के विविध पक्षों की व्याख्या न सम्भव ही है और न अभीष्ट ही। उनके व्यक्तित्व में वह आकर्षण है कि उनसे वाद–विवाद में पराजित होने में भी विजय की अनुभूति होती है। एक अंग्रेज विद्वान ने महापुरुष के लक्षणों की व्याख्या की है। उन्हें पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः ऐसी महानता का प्रत्यक्षीकरण नहीं हो सकता, परन्तु जिनका बैरिस्टर साहब से सम्पर्क हुआ है, वे निर्विवाद कह सकते हैं कि उनमें महापुरुष के सभी लक्षण विद्यमान हैं। एक सज्ज्न का कॉलेज से सुप्रीमकोर्ट में मुकदमा चल रहा है। हम लोग स्वर्ण जयन्ती का चन्दा माँगने के लिए उनके पास पहुँचे और अपनी माँग को प्रभावी बनाने के लिए उनसे कहा कि अबकी बार हम लोग बैरिस्टर साहब को भी साथ लायेंगे। उनका नाम सुनते ही वह स्नेह विभोर होकर अंग्रेजी में कहने लगे, "Please don't bring him. He is a noble soul. I will myself go to him." मुझे बाबा तुलसीदास की निम्नांकित अर्धाली का स्मरण हो आया जो बैरिस्टर साहब पर सम्यक् रीति से चरितार्थ होती है।

बैरिउ राम बड़ाई करहीं,

बोलनि मिलनि विनय मन हरहीं।

उनकी 'बोलनि', 'मिलनि' सुनकर और देखकर किसी विरोध अथवा वैर का भाव ही तिरोहित हो जाता है। मैंने उनको हर्षोल्लास में भी देखा है, विचारशील मुद्रा में भी, आक्रोश की छाया में भी उनके दर्शन हुए हैं, परन्तु हर हालत में उन्होंने संयम के बाँध को नहीं तोड़ा। आक्रोश में उनके मुख से एक भी अपशब्द नहीं निकलता। परन्तु उनकी विनम्रता का अनुचित लाभ लेकर कोई उनको अपने संकल्प और धारणा से च्युत् नहीं कर सकता। ऐसा नहीं होता कि कोई बात कहकर चला जाए, और ये उसका उत्तर न दें। परन्तु इनके उत्तर में शालीनता की मिठास होगी। से सत्य भी बोलते हैं और प्रिय भी। उनकी विनोदप्रियता और वाग्विदग्धता भी असामान्य है। एक बार वे मेरे यहाँ भोज में पधारे। मैंने पूछा, ''बैरिस्टर साहब आपका ड्राइवर है?'' उत्तर मिला, ''है''। मैंने कहा, 'कहाँ'? अपनी ओर संकेत करके कहने लगे, 'यह कैसा बैठा है।' इसी प्रकार एक बार कालेज में अखिल भारतीय वॉलीबॉल टूर्नामेंट हुआ। समापन करते हुए आपने अपने व्याख्यान में कहा 'प्रिंसिपल शर्मा ने जिस स्वयंवर की रचना की थी उसमें पंजाब विश्वविद्यालय आज देश–विदेश के उम्मीदवारों को पराजित कर विजय श्री जीत कर लिए जा रहा है।' ऐसा विनयशील, दृढ़ संकल्पवान, सच्चरित्र, लोकसंग्रही व्यक्ति जिस वंश में जन्म ले, जिस समाज में उसका प्रादुर्भाव हो, जिस राष्ट्र को उसका साहाय्य सुलभ हो, वह वंश धन्य है, वह समाज धन्य है, और वह राष्ट्र धन्य है।

एकात्म मानववाद की अवधारणा

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

दत्तोपन्त ठेंगड़ी

भारत में कोई आस्तिक है, कोई नास्तिक है, कोई द्वैतवादी है, कोई विशिष्टाद्वैतवादी है, कोई ईश्वरवादी है, कोई अनीश्वरवादी है, कोई मूर्तिपूजक है, कोई निराकार की उपासना करता है। पर सभी इसी परम्परा के है, सभी इसी रचना के अंगभूत हैं। ईश्वरवादी हैं, तो ईश्वर भी कितने हैं? जितने आदमी उतने देवता। यहाँ 33 करोड़ देवता है। मानो जिस समय 33 करोड़ की कल्पना की गयी, उस समय हमारी जनसंख्या 33 करोड़ की कल्पना की गयी, उस समय हमारी जनसंख्या 33 करोड़ रही होगी। प्रत्येक के लिए उसकी अपनी–अपनी प्रकृति के अनुसार मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, आध्यात्मिक अवस्था के अनुसार अलग–अलग मार्ग होंगे। पश्चिम में वैचारिक आबद्धता है। हमारे मार्ग से ही भगवत् प्राप्ति हो सकती है, ऐसा जहाँ सोचने का अभ्यास है, वहाँ यह लगना अस्वाभाविक नहीं कि भारत में कितना परस्पर विरोध है। यह सब उनको विचित्र लगता है। इसी भाँति व्यक्ति की दृष्टि से परिवार, राष्ट्र, समाज आदि की जो भूमिकाएँ हमारे यहाँ हैं, उनमें भी उन्हें अन्तर्विरोध दिखाई देता है। अपने यहाँ यह माना गया है कि व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास होना चाहिए और उसे पूर्ण सुख प्राप्त होना चाहिए। अतः इस तरह की सामाजिक, आर्थिक रचना होनी चाहिए, जिससे सम्पूर्ण सुख और विकास प्राप्त हो सके। इसी नाते व्यक्ति को मान्यता देने के साथ–साथ परिवार को भी मान्यता दी गयी। "मातृदेवो भव" कहा गया है। यह भी कहा गया है, "त्यजेदेकं कुलस्यार्थे" कुल के लिए एक व्यक्ति का त्याग किया जाए, वह आत्मनाश करे। साथ ही यह भी कहा गया है, 'आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत'', आत्मा के लिए कुल को, सम्पूर्ण पृथ्वी को छोड़ दो। पश्चिम की विचारधारा से प्रभावित व्यक्तियों को इसमें बड़ा अन्तर्विरोध दिखता है। अन्तर्विरोध वह नहीं है, यह हम सभी जानते हैं।

व्यक्ति और समाज :

यह स्थिति राष्ट्र समाज और व्यक्ति की अपने यहाँ है। पश्चिम में इस क्षेत्र में बड़ा संघर्ष है। वहीं यह समस्या उग्र हो उठी कि व्यक्ति और समाज का दायरा, उसकी मर्यादा क्या हो? यदि व्यक्ति का दायरा बड़ा होगा तो समाज की मर्यादा उसकी मात्रा में छोटी होगी और यदि समाज का दायरा बड़ा होगा तो उसी मात्रा में व्यक्ति की मर्यादा, उसका दायरा छोटा हो जायेगा। इस तरह पश्चिमी देशों में दोनों के बीच रस्साकशी चल रही है। भारत में व्यक्ति को भी मान्यता है और समाज को भी। दोनों में परस्पर कोई विरोध नहीं। जहाँ यह सिद्धान्त माना गया कि प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण सुख और सम्पूर्ण विकास प्राप्त हो– इस तरह की पूरी सुविधा समाज का अनुशासन प्रत्येक व्यक्ति पर लागू हो। प्रत्येक व्यक्ति एक ओर अपने सुख और विकास की ओर बढ़े और दूसरी ओर स्वेच्छा से स्वयं को समाजाभिमुख, समाज–केन्द्रित एवं समाज–समर्पित करे। अपने परिपक्व सुख और परिपक्व विकास को समाज पुरुष के चरणों पर अर्पित करे। इस प्रकार अपने यहाँ व्यक्ति स्वातन्त्र्य एवं सामाजिक अनुशासन में पूर्ण तादात्म्य दिखाई देता है, यद्यपि पश्चिम को इस पर आश्चर्य होता है।

राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता :

यही बात राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता की भी है। पश्चिम में राष्ट्रीयता या राष्ट्रवाद का जन्म प्रतिक्रिया से हुआ। अतः दो देशों की राष्ट्रीयताओं में एक–दूसरे के साथ समन्वय नहीं हो पाता और अन्तर्राष्ट्रीयता का तालमेल राष्ट्रीयता के साथ सम्भव नहीं होता। हमारे यहाँ एक राष्ट्रवादी प्रार्थना है : "प्रादुर्भूतः सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु में – मुझे सुख और कीर्ति दो, क्योंकि मेरा राष्ट्र अच्छा है। आगे सम्पूर्ण विश्व के लिए भी शुभकामनायें हमारी प्रार्थना में मिलती हैं। मुझे स्मरण है जब विश्व हिन्दू परिषद् का अधिवेशन चल रहा था तो प्रश्न उठा कि हिन्दू की परिभाषा क्या होगी ? मैं उसकी गहराई में नहीं जाना चाहता। किन्तु उसमें एक पहलू यह था कि हिन्दी को राष्ट्रीय माना जाये या अन्तर्राष्ट्रीय या वह उससे भी ऊपर हैं? उसकी परिभाषा कैसे की जाए? इसका उत्तर यह दिया गया

कि जब सम्पूर्ण संसार असंस्कृत था, हम ही केवल संस्कृत थे। उस समय हिन्दू राष्ट्रवाद जग की संस्कृति था। उस समय भी हमने अपने राष्ट्रीय हित के लिए दूसरे राष्ट्रों का शोषण करना नहीं सोचा। ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''– हम आर्य हैं तो सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनायेंगे– हम संस्कृत हैं तो सबको संस्कारित करेंगे, उनके स्तर को ऊँचा उठायेंगे। यह हमारा प्राथमिक भावात्मक राष्ट्रवाद है, जो एक ऐतिहासिक तथ्य है और जिसमें राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता का आधार बन जाता है। कोई व्यक्ति राष्ट्रीय है इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय न हो, और अन्तर्राष्ट्रीय है तो राष्ट्रीय न हो, ऐसा हमारे यहाँ नहीं दिखता। पश्चिम के लोगों को यह बड़ा विचित्र लगता होगा। वे कहते हैं कि परस्पर विरोधी बातें कैसे करते हो, एक ही व्यक्ति राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय, दोनों कैसे हो सकता है? किन्तु इस विचार में विरोधाभास नहीं है, यह हम देख चुके हैं।

मानवता से भी आगे का विचार :

अब इसके बाद जो धारणा आती है, पश्चिम के लोग तो उस पर विचार करते नहीं। ये अधिक से अधिक अन्तर्राष्ट्रीयतावादी या मानवतावादी है। अपने यहाँ मानवता से भी ऊपर विचार किया गया है। मानवेतर सृष्टि की मान्यता अपने ही देश में है। मछलियों, गायों, चींटियों आदि का भरण–पोषण और उनको अपने ही समान मानने वाले लोग यहीं हैं। इतना ही नही, जो देखने में निर्जीव सृष्टि है, उसको भी अपना एक अंग मानकर, उसमें भी भगवान का अस्तित्व है, ऐसी समझ अपने देश में है। आगे चलकर ऐसा भी साक्षात्कार अपने यहाँ के लोगों ने किया कि मनुष्य क्या है? मानवेतर प्राणी क्या है? बाकी सृष्टि क्या है, निर्जीव चराचर क्या है? यह जो अस्तित्व है– सारी सृष्टि है, वह एक ही है। पर एकता और एकरूपता इन दोनों में अन्तर है। सब एकरूप है, यह अपने यहाँ नहीं कहा गया। लेकिन यह अवश्य कहा गया कि सब मिलकर एक हैं और वह एकता कितनी दृढ़ है इसको यदि अच्छी तरह बताना हो, तो ''सर्व खल्विदं ब्रह्म'' कहा जा सकता है। सम्पूर्ण सृष्टि को धारण करने की क्षमता अपने देश में है। ऐसे कुछ नियम हैं जो सनातन और चिरन्तन हैं, अतः अपरिवर्तननीय हैं। उन्हीं के प्रकाश में उन्हीं के आधार पर, बदलती हुई परिस्थितियों में देश, काल, परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तनशील देश, काल, परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तनशील रचनाओं का उद्घोष करने वाला धर्म हमारे यहाँ है। कितनी ही परस्पर विरोधी बातें हो, उनमें सामंजस्य हुआ है। यदि एक–एक सूत्र का विचार करें तो परस्पर बहुत विरोध बातें दिखाई देती है। कहीं कहते हैं कि कर्म करो, कहीं कहते हैं, संन्यास लो। कभी कहते हैं कि ''धर्मस्यमूलं अर्थः। किन्तु इन सबमें सामंजस्य ही नहीं वरन् इससे बढ़कर समन्वयात्मक पद्धति का निर्माण और इससे भी ऊपर जिसे सहज बुद्धि से समझा नहीं जा सकता और जो अपनी अक्षमता है– इस प्रकार की चुनौती देने वाला धर्म अपने यहाँ विकसित हुआ है। स्वामी विवेकानन्द के कथन को प्रमाण मानकर इस धर्म के विषय में इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि इसमें समाज की धारणा करने की क्षमता है। हजारों साल तक समाज की धारणा इससे हुई है। यह बात ठीक है कि पिछले बारह–तेरह सौ वर्षों में बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार समाज की रचना में कौन–कौन से परिवर्तन होने चाहिए, इस पर विचार नहीं हुआ। इस परिवर्तन शब्द से चौंकने की जरूरत नहीं। क्योंकि ऐसे परिवर्तन समाज में समय–समय पर विशुद्ध दर्शन एवं धर्म के आधार पर होते ही रहे है। जैसे कि हमारे यहाँ कहा गया है कि ''वेदाः विभिन्नाः स्मृतयोर्विभिन्नाः नैको मुनिर्यस्य वचनः प्रमाणम्'' अर्थात् वेद विभिन्न हैं, स्मृतियाँ भी विभिन्न हैं, और एक भी मुनि ऐसा नहीं है, जिसके वचनों को प्रमाण माना जाये। इस तरह के परिवर्तन करने के लिए जो शान्ति का समय चाहिए था वह बारह–तेरह सौ वर्षों तक न मिलने के कारण कुछ विकृतियाँ, कुछ दोष अपने यहाँ अवश्य उत्पन्न हुए हैं। किन्तु इन विकृतियों का आपरेशन किया जा सकता है। जैसा कि महात्मा गाँधी ने कहा कि ''रोग का निदान करो किन्तु रोगी को समाप्त न करो।'' जो मूल रचना है, वह निर्दोष है। जो विकृति आ गयी है, उसका ऑपरेशन कर दीजिए किन्तु व्यवस्था को कायम रखिए। इसी भाँति समाज की धारणा सहस्त्रों वर्षों से बराबर चली आ रही है। अपरिवर्तनशील सनातन वर्षों से बराबर चली आ रही है। अपरिवर्तनशील सनातन नियम तथा

परिवर्तनशील रचना, इस प्रकार का मेल अपने यहाँ रहा। अब प्रश्न यह है कि पश्चिम की विभिन्न विचारधारायें नयी हैं तो क्या इसीलिए उन्हें प्रगतिशील, आधुनिक और श्रेष्ठ मान लिया जाये? उचित तो यह होगा कि दोनों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाये। जो अच्छा हो, वही लिया जाये। इस दृष्टि से अपनी जो पद्धति है, अपना जो सनातन धर्म है, वह अन्य पाश्चात्य विचारों की तुलना में आज भी महिमामय है। उसकी विशेषतायें तो बहुत हैं किन्तु आज के संदर्भ में उसको स्पष्ट करते हुए स्व0 पं0 दीनदयाल जी ने कहा था कि "हम एकात्म मानववाद के पुजारी है।"

उपाध्याय जी का स्पष्ट निर्देश :

दोनों में जो अन्तर है, वह सम्भवतः स्पष्ट हो गया है। आज की परिस्थितियों के संदर्भ में अपने धर्म की विशेषता का नामकरण पंडित जी ने "एकात्म मानवदर्शन" से किया। इसी आधार पर सनातन धर्म की रचना है। यही रचना सम्पूर्ण मानव समाज को सभी कालखण्डों में सुख व सम्पन्नता का आश्वासन दे सकती है। अब हम इस तथ्य को भी ध्यान में रखें कि यहाँ की वैचारिक प्रक्रिया अलग ढंग की है। इसका कारण यह है कि भारतीय दर्शन की धारणाओं और अभारतीय विचारकों के विचारों में कुछ मौलिक अन्तर विद्यमान है। उस अन्तर की ओर स्पष्ट निर्देश करते हुए पण्डित जी ने बताया कि पश्चिम में इकाइयों, संस्थाओं एवं कल्पनाओं का विचार पृथक–पृथक आधार पर किया गया। व्यक्ति का व्यक्ति के नाते, परिवार का परिवार के नाते, समाज का समाज के नाते और मानवता का मानवता के नाते वहाँ विचार किया गया। किन्तु इन समस्त इकाइयों में कुछ सम्बन्ध है, इसका विचार नहीं किया गया। व्यक्ति का विचार करते समय अन्य सामाजिक अवयवों को भुला दिया गया। यही बात परिवार, समाज और मानवता का विश्लेषण करते समय हुई। पाश्चात्य प्रकृति है कि एक ही अवयव को वे देखते है। एक रिलीजन का ही उदाहरण हम ले लें। पश्चिम में अनेक प्रकार के मत–मतान्तर या रिलीजन होंगे। किन्तु एक बात में वे समान है। प्रत्येक रिलीजन वाला कहता है कि 'मेरा रिलीजन सही है, बाकी सब गलत है।" अब हम अपने देश में देखें। यहाँ भी अनेकानेक सम्प्रदाय हैं किन्तु यहाँ प्रत्येक व्यक्ति कहता है कि "मेरा सम्प्रदाय सही है, तुम्हारा भी सही है।" "मेरे रिलीजन द्वारा ईश्वर प्राप्ति सम्भव है।"– यह पाश्चात्य पद्धति है। "तुम्हारे सम्प्रदाय द्वारा भी ईश्वर प्राप्ति सम्भव है"– यह भारतीय पद्धति है। उनके यहाँ सामाजिक–आर्थिक क्षेत्रों में भी इसका दर्शन होता है। उनके यहाँ एक–एक इकाई का विचार हुआ। समझने के लिए यह कहा जा सकता है कि बीच में एक बिन्दु है जो व्यक्ति है। उसको आवृत करने वाला उससे बड़ा घेरा पिछले घेरे से असम्बद्ध एक दूसरे बड़ा घेरा राष्ट्र का है और उससे ऊपर जो घेरा है वह मानवता का है। यहाँ रचना संकेन्द्री है। इसमें व्यक्ति या मानव केन्द्र बिन्दु है। उससे सम्बन्ध रखते हुए अन्य घेरे परिवार, समुदाय, राष्ट्र और मानवता के हैं। यह एक–दूसरे को आवृत्त अवश्य करते हैं, पर एक–दूसरे से निर्गमित नहीं होते। अपने यहाँ जो रचना दी गयी है, वह सनातन रचना है और नवीन नहीं है। इसे कुंडलित, सर्पित या उत्तरोत्तर वृद्धि करने वाली अखण्ड मण्डलाकार रचना कहा जाता है। इसका प्रारम्भ व्यक्ति से होता है और व्यक्ति को लेकर व्यक्ति रखते हुए अगला घेरा परिवार का है। उसे खण्डित न करते हुए उससे बड़ा घेरा समाज का है। उसे खण्डित न करते हुए उसी से सम्बद्ध दूसरा घेरा राष्ट्र है। शाश्वत रूप में उससे ऊपर का घेरा मानवता का है और चरम शिखर पर चराचर विश्व का घेरा है।

दोनों रचनाओं का अन्तर :

इन दोनों रचनाओं का अन्तर हम ध्यान में रखें तो अच्छा होगा। व्यक्ति, परिवार, समुदाय, राष्ट्रीय, समाज मानवता– यह विचार हमने किया और उन्होंने भी किया। उनकी रचना में असम्बद्धता दिखाई देती है। उनकी रचना अलग–अलग इकाइयों में है और एक–दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है, यद्यपि वे एक–दूसरे को आवृत्त करती हैं। उनका यह विचार एकांतिक होने के कारण रचना संकेन्द्री है। हमारी रचना में पहली इकाई से दूसरी इकाई

निकलती है, दूसरी से तीसरी और इस तरह यह क्रम चलता रहता है। उत्तरोत्तर वृद्धि करने वाली अखण्ड मण्डलाकार रचना के कारण इन इकाइयों के हितों में परस्पर विरोध नहीं दिखता। व्यक्ति और परिवार के हित में विरोध नहीं है। परिवार और समुदाय के हित में असंगति नहीं है। परिवार और राष्ट्र, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीयता से कहीं भी विरोध नहीं दिखता। अपनी मान्यता यह है कि विभिन्न इकाइयाँ एक–दूसरे की विरोधी न होकर एक–दूसरे की पूरक है। उदाहरणार्थ बच्चा जब छोटा होता है, वह कुछ भी नहीं जानता। उस अवस्था में उसके लिए एक ही इकाई है– ''अहम्'' मैं हूँ। वह थोड़ा बड़ा होता है। माता–पिता, भाई–बहन को पहचानता है। पर वह अहम् का निषेध नहीं करता। ''मैं'' भी सत्य हूँ, परिवार भी सत्य है। वह और बड़ा होता है। समान गुण कर्म रखने वालों के साथ समुदाय स्थापित करता है। उसके साथ एकात्म होता है। समुदाय के बारे में सोचता है कि केवल समुदाय ही नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्र मेरा है। फिर अन्तिम संन्यास मानवता का विचार आरम्भ कर वह चराचर जगत् से तादात्म्य स्थापित कर लेता है और विश्व नागरिक ही नहीं, चराचर सृष्टि का नागरिक बनने की महिमामय स्थिति को प्राप्त कर लेता है। बचपन के अहंकार से लेकर संन्यासी जीवन के चरमोत्कर्ष तक का यह जो सुदीर्घ वैचारिक प्रवास है, उसमें जैसे–जैसे आत्मचेतना बढ़ती जाती है, वैसे–वैसे उसके लिए पुरानी इकाई सब तरह से सत्य होते हुए भी नयी इकाई के सत्य का साक्षात्कार उसको होता जाता है। अंतिम साक्षात्कार ''सर्व खल्विदं ब्रह्म'' का साक्षात्कार संन्यास अवस्था में होता है।

अराजकता में विकास–क्रम :

दूसरे शब्दों में सभी इकाइयाँ सत्य हैं। हमारी आत्मचेतना का जैसे–जैसे विस्तार होगा वैसे–वैसे हमारे साक्षात्कार का विकास होगा। सभी सत्य हैं, इस कारण दूसरे का तिरस्कार नहीं, उसका परित्याग नहीं और निषेध नहीं होगा, जैसे बीज से अंकुर और अंकुर से पौधा निकलता है तथ वहीं से शाखायें एवं पल्लव निकलते है। उसमें से फूल और फल निकलते हैं। हर एक का आकार अलग है। अंकुर अलग है, फल अलग है। एक दूसरे का कोई सम्बन्ध नहीं दिखता। प्रतीत होता है कि यह अत्यन्त अराजक स्थिति है। लेकिन यह अराजक न होकर एक विकास क्रम है। बीज और अंकुर में कोई विरोध नहीं। इन सबमें कोई विरोध नहीं है। सबसे छोटी इकाई से लेकर सबसे बड़े तक कोई विरोध नहीं है। सबसे छोटी इकाई से लेकर सबसे बड़ी इकाई तक एकात्मकता है। सभी अपने–अपने दायरे में सत्य हैं, कोई एक–दूसरे का विरोध नहीं करता। यह भारतीय विचार पद्धति की विशेषता है।

एकात्म जीवन की महत्ता :

हमने सबसे छोटी इकाई–व्यक्ति पर बल दिया और उसका संगठन किया। हमारे यहाँ व्यक्ति के स्वरूप को जिस प्रकार संगठित और एकात्म किया गया, वैसा पश्चिम में नहीं है। वहाँ पर केवल भौतिक प्रगति को ही महत्व दिया गया है। सर्वाधिक प्रगतिशील राष्ट्र अमेरिका है। वहाँ भौतिक प्रगति काफी लोगों की हो गयी है किन्तु यह आश्चर्य प्रगति की बात है कि वहाँ के सर्वसाधारण व्यक्ति के अंदर सुख, संतोष और समाधान का पूर्णतया अभाव है। वहीं पर व्यक्ति के जीवन में परस्पर विरोध, असमानता, असंतोष, सर्वाधिक अपराध और आत्महत्याएँ दिखाई देती है। वहाँ प्रगति हुई है, उच्च रक्तचाप की, हृदय रोग की और अपराध प्रवृत्ति की। सम्पूर्ण संसार को खरीद सकने की क्षमता रखने वाला अमेरिका भौतिक समाधान से मानसिक समाधान नहीं प्राप्त कर सका। आखिर व्यक्ति का अन्तिम लक्ष्य क्या है? सुख– जो चिरन्तन हो, धनीभूत हो। सब कुछ करने के बाद भी यूरोपीय देशों में समाधान व सुख का अभाव है। ईसा ने कहा था कि ''सम्पूर्ण संसार का साम्राज्य भी प्राप्त कर लिया परन्तु आत्मा का सुख खो दिया तो उससे क्या लाभ।'' आज पश्चिम में चंद्रमा पर साम्राज्य के लिए होड़ मची है। किन्तु वह अपना सुख–समाधान खो बैठा है। अपने यहाँ, छोटी सी छोटी इकाई व्यक्ति संगठित और एकात्म है। यहाँ उसे

खण्डों में विभक्त समझने की बुद्धिमता प्रदर्शित नहीं की गयी। लेकिन अमेरिका के एक मनोवैज्ञानिक ने वर्णन किया है कि सड़कों पर एक ऐसी बड़ी भीड़ हमेशा लगी रहती है, जो आत्मविहीन, मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ, एक–दूसरे से अपरिचित और निःसंग स्थिति में है। उनका अपने ही साथ समन्वय नहीं तो दुनिया के साथ क्या होगा? व्यक्ति का समाज के साथ समन्वय नहीं। व्यक्ति भी संगठित और एकात्मक इकाई नहीं। केवल भौतिक स्तर पर विचार करने के कारण वहाँ व्यक्ति को भौतिक एवं आर्थिक प्राणी माना गया। यदि भौतिक–आर्थिक उत्कर्ष मानव को मिले तो उससे सुख की प्राप्ति होगी, यह माना गया। किन्तु भौतिक–आर्थिक उत्कर्ष की चरम सीमा होने पर भी वहाँ खण्ड–खण्ड में विचार करने की प्रणाली है, जिसमें व्यक्ति को केवल भौतिक–आर्थिक प्राणी मान लिया गया है और वहीं भारत में व्यक्ति के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर संगठित एवं एकात्म रूप में विचार किया गया है।

मर्यादित सुखोपभोग की व्यवस्था :

हमारे यहाँ भी कहा गया है कि व्यक्ति आर्थिक प्राणी तो है ही, इसमें कोई सन्देह नहीं। ''आहार, निद्रा, भय, मैथुनं च'' की तृप्ति की बात हमारे यहाँ भी कही गयी है। उनकी पूर्ति तो होनी ही चाहिए। किन्तु मनुष्य के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। मनुष्य आर्थिक–प्राणी से ऊपर भी कुछ है। वह शरीरधारी, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक प्राणी भी है। उसके व्यक्तित्व के अनेकानेक पहलू हैं। अतः यदि सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का संगठित और एकात्म रूप से विचार न हुआ तो उसको सुख–समाधान की अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। अपने यहाँ इस दृष्टि से संगठित एवं एकात्म स्वरूप का विचार हुआ है। व्यक्ति की आर्थिक, भौतिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर यह कहा गया है कि इन वासनाओं की तृप्ति होनी चाहिए लेकिन यह भी कहा गया है उन पर कुछ मर्यादा भी आवश्यक है। केवल फ्रायड ने ही काम का विचार अत्यन्त गंभीरता से किया, ऐसी बात नहीं है। हमारे यहाँ भी काम को मनुष्य के अपरिहार्य आवेग के रूप में स्वीकार कर उस पर गम्भीरता से विचार किया गया है। गीता के तृतीय अध्याय के 42 वें श्लोक में कहा गया है कि–

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ।।

अर्थात् इन्द्रियाँ (विषयों से) ऊपर स्थित हैं, इन्द्रियों से मन उत्कृष्ट है। बुद्धि मन से भी ऊपर अवस्थित है। जो बुद्धि की अपेक्षा भी उत्कृष्ट है– उससे भी गम्य है– वही आत्मा है। परन्तु इस श्लोक में 'सः' का अर्थ काम अनेक विद्वानों ने बताया है। लेकिन काम को स्वीकार करने पर भी उसे अनियंत्रित नहीं रहने दिया। भगवान् कृष्ण ने स्वयं कहा कि मैं काम हूँ। पर यह भी कहा कि ''धर्माविरुद्धोभूतेषु कामोरिम्न् भरतर्षभ।' अर्थात् मैं काम हूँ, काम की पूर्ति भी होनी चाहिए, पर वह धर्म विरुद्ध न हो।

धर्माधीष्ठित जीवन–रचना :

अर्थ को भी अपने यहाँ स्वीकार किया गया है। अर्थशास्त्र की भी रचना हुई है। सबकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति इतनी अवश्य होनी चाहिए कि उसके कारण अपना पेट पालने के लिए व्यक्ति को 24 घंटे चिन्ता करने की आवश्यकता न हो। उसे पर्याप्त अवकाश मिल सके, जिससे वह संस्कृति, कला, साहित्य और भगवान आदि के बारे में चिन्तनशील हो सके। इस प्रकार अर्थ और काम को मान्यता देकर भी यह कहा गया कि एक–एक व्यक्ति का अर्थ और काम उसके विनाश का कारण न बने या समाज के विघटन का कारण न हो। इस दृष्टि से हमारे यहाँ से प्राचीन द्रष्टाओं ने विशिष्ट दर्शन दिया था। उसमें विश्व की धारणा के लिए शाश्वत नियम ओर सार्वजनीन नियम देखे थे, उनका दर्शन किया था। उन्हें उन्होंने खोजा, लिखा अथवा संग्रहीत नहीं किया था अपितु उनका मानस

दर्शन किया था। व्यक्ति को विनाश से बचाने के लिए, समाज को विघटन से बचाने के लिए, व्यक्ति के परम उत्कर्ष को प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक एवं सार्वदेशिक नियमों के प्रकाश में जो व्यवस्था उन्होंने बनायी, उसके समुच्चय को धर्म कहा गया। इस धर्म के अन्तर्गत अर्थ और काम की पूर्ति का भी विचार हुआ, हर एक व्यक्ति परमसुख यानी मोक्ष प्राप्त कर सके, इसका चिन्तन हुआ। इस प्रकार धर्म और मोक्ष के मध्य, अर्थ और काम को रखते हुए चतुर्विध पुरुषार्थ की कल्पना अपने यहाँ रखी गयी। इस समन्वयात्मक, संगठित और एकात्मवादी कल्पना में व्यक्ति का व्यक्तित्व विभक्त नहीं हुआ। वह आत्मविहीन एवं मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ प्राणी न बन सका। इस चतुर्विध पुरुषार्थ ने प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक क्षमताओं के अनुसार अपना जीवनादर्श चुनने का अवसर दिया और साथ ही व्यक्तित्व को अखण्ड बनाये रखा।

एकात्म मानव दर्शन क्या है ?

यह स्मरण रखना चाहिए कि जहाँ व्यक्ति के व्यक्तित्वरूपी विभिन्न पहलू संगठित नहीं हैं या व्यक्ति संगठित नहीं है, वहाँ समाज संगठित कैसे हो सकता है? इस संगठित आधार पर ही अपने यहाँ व्यक्ति से परिवार, समाज, राष्ट्र, मानवता और चराचर सृष्टि का विचार किया गया। एकात्म मानव दर्शन इसी का नाम है। इसके तार्किक अनुक्रम के रूप का भी हम विचार करें तो इस सम्बन्ध में हमें यही दिखा कि इसके कारण अलग–अलग इकाइयों से संघर्ष की तो बात है ही नहीं। वे तो एक–दूसरे से निकलने वाले विकास क्रम का ही आविष्कार हैं। ऐसी स्थिति में अपने से ऊपर की इकाइयों के साथ एकात्म होते हुए चल रही हैं। जहाँ तक मानव समाज–रचना का प्रश्न है, इसका अन्तिम अनुक्रम यही हो सकता है– व्यक्ति, परिवार, समुदाय, इसी में आगे बढ़ते–बढ़ते राष्ट्र का राष्ट्रीय शासन और फिर इसी एकात्म मानव दर्शन के आधार पर विश्वराज्य का आविष्कार होगा। वैचारिक जगत् में उसका दूसरा तार्किक अनुक्रम अद्वैत सिद्धान्त का साक्षात्कार है।

एकात्म मानव दर्शन की फलश्रुति :

अपने इस एकात्म मानव दर्शन के अन्तर्गत अस्तित्व में आने वाला विश्वराज्य कम्युनिस्टों के विश्वराज्य से बिल्कुल भिन्न है। कम्युनिस्टों का विश्वराज्य एक केन्द्र पर आश्रित है। हमारा विश्वराज्य अनेक केन्द्रों पर निर्भर होगा। कम्युनिस्ट व्यवस्था में वैचारिक आबद्धता के अन्तर्गत एकरूपता दिखाई देगी। किन्तु अपने विश्वराज्य में ऐसी थोपी गयी एकरूपता नहीं होगी। एकात्म मानव दर्शन प्रत्येक राष्ट्र को अपनी–अपनी प्रकृति और प्रवृत्ति के अनुसार विकास करने की स्वतंत्रता देगा। जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने गुण–कर्म के अनुसार विकास कर, विकास का सम्पूर्ण फल समाज–पुरुष को अर्पित करता है, उसी तरह प्रत्येक राष्ट्र अपने को मानवता का एक अंग समझेगा। हम सभी मानवता के साथ अपने को एकात्म समझ लें और सम्पूर्ण मानवता की प्रगति के लिए अपने राष्ट्र की जो विशेषतायें होंगी, प्रगति की जो विशेषतायें होंगी, उसका परिपक्व फल मानवता के चरणों पर अर्पित करें। इस तरह हर एक राष्ट्र स्वायत्त रहते हुए अपना विकास भी करेगा, किन्तु विश्वात्मा का भाव मन में रहने के कारण एक–दूसरे का पोषक, सम्पूर्ण मानवता का पोषक विश्व राज्य, यह पं0 दीनदयाल जी के एकात्म मानव दर्शन की रचना की दृष्टि से चरम परिणति होगी। इसी भाँति वैचारिक क्षेत्र में अद्वैत का साक्षात्कार तर्क सिद्ध परिणति है। इतना हम आज ध्यान रखें तो आज की परिस्थिति में जो वैचारिक संभ्रम चारों ओर दिखाई दे रहा है, उस कुहासे को दूर करना कठिन न होगा।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

दीनदयाल जी एक समर्पित कार्यकर्ता थे ....

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

भाउराव देवरस

मैंने लखनऊ नगरी में एक जुलाई, 1937 को पदार्पण किया था। तिरपन वर्ष से अधिक समय हो गया है। इस कालखण्ड में सहयोगी के नाते जिनका सबसे बड़ा सहयोग है, वह पंडित दीनदयाल जी हैं। मैं नहीं जानता कि महत् कार्य के लिए किस प्रकार से व्यक्ति जुड़ जाते है। उ0प्र0 में हम दोनों का प्रवेश एक ही समय हुआ। पंडित दीनदयाल जी राजस्थान से आये। मैंने विद्यार्थी के नाते लखनऊ में प्रवेश किया और उन्होंने कानपुर में। मैंने कानपुर में आना–जाना प्रारम्भ किया, संघकार्य प्रारम्भ करने के उद्देश्य से, और पहले ही प्रयास में मेरा सम्बन्ध पंडित दीनदयाल जी से हो गया। यानी वे कानपुर शाखा के मानो पहले स्वयंसेवक थे। कानपुर की शाखा प्रसिद्ध विद्वान पं0 सातवलेकर जी की उपस्थिति में प्रारम्भ हुई। संघ की जो प्रतिज्ञा हुई, उसमें पहले स्वयंसेवक दीनदयाल जी थे। इस प्रकार उनका सम्बन्ध जुड़ गया। परन्तु मेरे कारण सम्बन्ध नहीं जुड़ा, यह तो निमित्त मात्र है। मुझे ऐसा लगता है कि दुनिया में कुछ व्यक्ति बड़ा कार्य करने के लिए ही जन्म लेते हैं। पं0 दीनदयाल जी ने भी किसी बड़े कार्य के लिए ही जन्म लिया था, ऐसी मेरी धारणा है। कभी–कभी मैं उनकी तुलना संघ–संस्थापक डॉ0 केशवराम बलिराम हेडवेवार से करता हूँ। डॉक्टर जी के माता–पिता का स्वर्गवास बाल्य–काल में हुआ, उसी प्रकार दीनदयाल जी के माता–पिता का देहान्त भी बाल्यकाल में ही हो गया था। समाज जिसे 'अनाथ' कहता है। वे ऐसे बालक रहे। परन्तु अनाथ बालक ने अपनी बुद्धिमत्ता से, अपनी योग्यता से जितनी अधिक से अधिक पढ़ाई उस समय हो सकती थी, की। केवल पढ़ाई नहीं की, एक बुद्धिमान व श्रेष्ठ विद्यार्थी का उनका जीवन रहा। वे सदैव प्रथम श्रेणी में प्रथम आते रहे और अपनी सारी पढ़ाई, शिक्षा–दीक्षा, उन्होंने 'स्कॉलरशिप' द्वारा पूर्ण की। कानपुर से वे आगरा पढ़ने गये। मैं भी उनके पीछे–पीछे आगरा गया, क्योंकि मेरा विद्यार्थी जीवन समाप्त हो गया था। आगरा का विद्यार्थी जीवन समाप्त कर जब वे प्रयाग आये, तो मैं भी उनसे मिलने प्रयाग जाता रहा। 1937 में जो सम्बन्ध प्रारम्भ हुआ, वह बराबर चलता ही रहा। मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि संघकार्य के लिए सम्पूर्ण समय देकर प्रचारक के नाते काम करना चाहिए' उनसे ऐसा कभी कहने का मुझे स्मरण नहीं आता। परन्तु एक दिन विद्यार्थी जीवन समाप्त होने के बाद वह मेरे पास पहुँचे और कहा कि मैं संघकार्य के निमित्त जाने के लिए प्रस्तुत हूँ। इस प्रकार उत्तर प्रदेश से पहला प्रचारक जीवन प्रारम्भ करने का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है। विद्यार्थी जीवन समाप्त करने के बाद किसी न किसी प्रकार से सामाजिक ध्येय में अपना जीवन लगाना चाहिए, इस प्रकार की कुछ न कुछ भावना उनके मन में थी। इसी भावना के कारण संघ के माध्यम से समाज–सेवा करने का अवसर उनको प्राप्त हुआ। मैं तो एक निमित्त मात्र बना। आगे चलकर जो देश के नेता के रूप में विख्यात हुए, ऐसे श्री अटल बिहारी वाजपेयी–जैसे व्यक्ति भी हमारे कार्य के साथ जुट गये। उन्होंने कानपुर में अपना विधाध्ययन समाप्त किया और वे भी एक दिन इसी तरह मेरे सम्मुख खड़े होकर बोले, "मेरे लिए जो योजना हो, उसके लिए मैं तैयार हूँ।"मैं उनको बाल्यकाल से जानता था। वे ग्वालियर के रहने वाले थे। जब वे शायद नौवीं कक्षा के विद्यार्थी थे, तभी उनका कवित्व प्रभावित करने वाला था। अतः ग्वालियर व कानपुर से सारी पढ़ाई पूरी करने के बाद, जब वे यहाँ (लखनऊ) आये, तो पंडित दीनदयाल जी व हम सबने मिलकर विचार किया कि अटल जी का अधिक से अधिक उपयोग किस प्रकार हो सकता है। सचमुच अटल बिहारी जी जैसे व्यक्ति का उपयोग करने तथा अपना कुछ प्रकाशन विभाग स्थापित करने और साहित्य–निर्माण करने की आवश्यकता अनुभव करने के कारण ही राष्ट्रधर्म प्रकाशन प्रारम्भ करने का विचार हुआ था।

हमने 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' व्यवसाय के रूप में प्रारम्भ नहीं किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा जितने भी कार्य चलते हैं, उनमें से एक भी कार्य हमने व्यवसाय के नाते नहीं चलाया है। समाज चेतना के अंग के नाते, जनजागृति की दृष्टि से जो–जो काम हमने देश में खड़े किए, "राष्ट्रधर्म प्रकाशन' उसी प्रकार की एक परम्परा है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय, अटल जी व नाना जी सरीखे व्यक्तियों ने यह सारा कार्य खड़ा किया है। इस 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' के ऊपर अनेक प्रकार की विपत्तियाँ आयीं, इतनी कि सचमुच इन आपत्तियों से बीच–बीच में लगा कि

सारा काम छोड़ दिया जाए। उनमें सबसे बड़ी आपत्ति थी गाँधी जी की हत्या का संघ के ऊपर आरोप। संघ के अनेक कार्यकर्ता जेल में बन्द हुए। हमारे सब कार्य बंद हो गये, प्रेस में भी ताला पड़ गया। उस काल में सब कुछ चलाने के लिए, अनेक प्रकार के कामों के लिए आर्थिक व्यवस्था करना बड़ा कठिन काम था। गाँधी जी की हत्या का आरोप होने के कारण कोई परिवार हमको स्थान देने के लिए तैयार नहीं था। ऐसे काल–खण्ड में, मैं तो जेल में था। पंडित दीनदयाल जी ही जेल से बाहर रहकर सारा काम करते रहे।

स्थितप्रज्ञ दीनदयाल जी

बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह

दीनदयाल जी ने कभी ये इच्छा नहीं की कि वो बड़े ग्रन्थ लिखें, ग्रन्थ लिखकर ख्याति प्राप्त करें। उनके जो लेख निकलते रहे हैं, जगह–जगह भाषण हुए हैं, उनसे उनके विचारों का, उनके व्यवहार का, उनकी रीति का, नीति का जो संकलन दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से हुआ है, वह समाज के लिए 'अत्यन्त प्रेरणाप्रद और मार्गदर्शक होगा। दीनदयाल जी का चित्र जब कभी भी मेरे सामने आता है तो मुझे वे दिन याद आते हैं जब उनका और मेरा सहयोग महीना–महीना भर होता था। संघ के वर्ग होते थे, उनमें वो और हम साथ मिलकर उत्तर दायित्व का निर्वाह करते थे। मुझे वर्ग का सर्वाधिकारी बना दिया जाता था और वो रहते थे वर्ग के कार्यवाह। काम सारा वो करते थे किन्तु आदर और नाम मेरा होता था। सबेरे 5 बजे से लेकर रात 11 बजे तक वो सारी व्यवस्थायें बड़ी गहराई से, सूक्ष्मता से देखते थे और हर तरफ उनका ध्यान रहता था। एक–एक अस्वस्थ स्वयंसेवक के पास जाकर वो देखते थे कि उसका उपचार ठीक से हो रहा है कि नहीं। बौद्धिक शिक्षण ठीक प्रकार चल रहा है कि नहीं। चर्चाओं के जो बिन्दु लिये जा रहे हैं वो ठीक हैं कि नहीं। एक बार हम लोग सोये हुए थे। रात को करीब डेढ़ बजे मेरी आँख खुली। बिजली शायद चली गयी थी, पंखा तो था ही नहीं। मैंने देखा कि दीनदयाल जी लालटेन की रोशनी में कुछ लिख रहे हैं। मैंने दीनदयाल जी से कहा कि आप रात में डेढ़ बजे क्या लिख रहे हैं। कहने लगे कि पत्र (शायद स्वदेश) के लिए अग्रलेख मुझे सुबह पहुँचवाना है ताकि कल या परसों छप सके, जल्दी से जल्दी, तो उसको लिख रहा हूँ। दिन भर उनको समय नहीं मिला था जरा भी क्योंकि वर्ग के कार्य में लगे रहते थे। इसलिए आधी रात को लालटेन की रोशनी में वो अग्रलेख लिख रहे थे। जैसा अभी डॉ0 देवेन्द्र स्वरूप ने बताया, उनका इतना सरल स्वभाव था जिसको हमारे यहाँ कहा जाता है कि स्थितप्रज्ञ। वे ऐसे व्यक्ति थे जिनको कहते हैं कि 'विद्याय कामाय न सर्वाणि निस्वयेः, निर्मोह निरहंकार सः शान्ति गच्छति'। जिनको किसी प्रकार की व्यक्तिगत इच्छा नहीं, आकांक्षा नहीं, मान–अपमान की कोई चिंता नहीं और अपना जो कुछ भी कार्य है, सो करते रहना। हमारे ऋषि–मुनियों की परम्परा ही यही रही है। हमारे समाज में आदर उसी का हुआ, जिसने सांसारिक सुखों की इच्छा नहीं की। अपने चिंतन में, राष्ट्र के प्रति समर्पण में संतोष व आनन्द प्राप्त करना, इस प्रकार का, ऋषि–मुनियों वाला जीवन दीनदयाल जी का था। भारतीय संस्कृति, भारती राष्ट्र के बारे में जो विचार उन्होंने दिए आज वो अत्यन्त महत्व के हैं। उन्हीं के आधार पर भारत खड़ा हो सकता है, एक राष्ट्र के रूप में शक्ति सम्पन्न हो सकता है। भारतीय आदर्शों के अनुरूप जीवन बना कर ही राष्ट्र को सही दिशा दी जा सकती है। इस दृष्टि से दीनदयाल जी का जो भी चिंतन है वो मनन करने योग्य है, अनुकरणीय है, व्यवहार में लाने योग्य है समाज को उसके अनुरूप बनाने की आवश्यकता है।

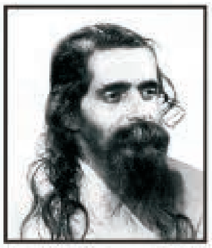

हमारे दीनदयाल जी

'नीराजन' के रजत जयन्ती अंक से

परमपूज्य माधवराव सदाशिवराव
गोलवरकर ''गुरु जी''

'पोलिटिकल डायरी' नाम से पं0 दीनदयाल उपाध्याय के लेखों के संग्रह का प्रकाशन 17 मई, 1968 को बम्बई में श्री गुरु जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था। उस अवसर पर श्री गुरुजी द्वारा दिया गया भाषण यहाँ प्रस्तुत है।

पं0 दीनदयाल जी ने 'पोलिटिकल डायरी' नाम से अंग्रेजी साप्ताहिक 'आर्गनाइजर' में जो लेख लिखे हैं, उसी नाम से पुस्तक के रूप में वे प्रकाशित हो रहे हैं। उस पुस्तक को सबके सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए मेरी जो योजना हुई है, वह बहुत योग्य है, ऐसा अपने मित्रवर श्री राम बत्रा जी ने बताया। उन्होंने पर्टिनेंट (प्रसंगोचित) शब्द का प्रयोग किया । उसी शब्द का प्रयोग कर मैं कहता हूँ कि मेरे लिए यह काम इंपर्टिनेंट (अनधिकार) होगा । कारण भी बताता हूँ। अपने देश के एक अति श्रेष्ठ पुरुष के बारे में ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक वृद्ध सज्जन उनसे मिलने गये। वे श्रेष्ठ पुरुष देश के मान्यता प्राप्त, बहुत प्रसिद्ध, जनसाधारण के नेता थे। भेंट होते ही उन्होंने उक्त वृद्ध सज्जन को अतीव नम्रतापर्वक प्रणाम किया। जब लोगों ने पूछा तो उन्होंने बताया कि ये वृद्ध सज्जन प्राथमिक शाला में उनके गुरु थे। उन्होंने ही पढ़ाया और आशीर्वाद दिया कि बुद्धिमान बनो। उन्हीं के आशीर्वाद से वे बड़े बने हैं। वे अध्यापक जानते थे कि उनकी योग्यता केवल प्राथमिक शाला में पढ़ाने की थी और ये श्रेष्ठ पुरुष जितने विद्वान हुए, जितनी श्रेष्ठता उन्होंने प्राप्त की, उतनी विद्वत्ता, श्रेष्ठता प्रदान करने की क्षमता उनके अन्दर नहीं थी। मेरा भी पण्डित दीनदयाल उपाध्याय से जो कुछ सम्बन्ध आया, वह उस प्राथमिक शाला के शिक्षक के रूप में ही समझना चाहिए, उससे अधिक नहीं। अब यह लेख–संग्रह! डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी जैसे ख्यातिमान विद्वान और देश की राजनीति के अग्रगण्य पुरुष ने प्रस्तावना लिखकर इस लेख संग्रह की महत्ता को बहुत बढ़ाया है। मुझे इसका संतोष भी है कि डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने एक बहुत ही अच्छी परम्परा का अनुसरण किया है । जनतंत्र का उदय इंग्लैण्ड में हुआ। वहाँ के जनतंत्र के एक बहुत बड़े समर्थक ने कहा है, ''मेरे विचारों से विपरीत विचार करने का तुम्हें अधिकार है, यह मैं मानता हूँ और केवल इतना ही नहीं, तुम्हारे इस अधिकार का मैं समर्थन और रक्षण करूँगा।'' ''आई विल डिफेंड योर राईट''। यह जो भाव है, वह जनतंत्र की सफलता के लिए अनिवार्य है। मैं समझता हूँ कि डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने इसी शुद्ध भावना से प्रेरित होकर प्रस्तावना का यह उपक्रम किया है। इस संग्रह में जितने लेख है, वे मैंने शायद ही पढ़े होंगे। मैं वृत्तपत्र पढ़ने में बहुत कच्चा हूँ। कभी–कभार दिखाई दे गया तो पढ़ लेता हूँ। जो भी हाथ लग जाये। एक बार एक वृत्तपत्र पढ़ रहा था। लोगों ने कहा– ये क्या पढ़ रहे हो! मैंने कहा, क्या हुआ? तो उन्होंने बताया कि यह तो तीन माह पुराना है! फिर, मेरा दुर्भाग्य यह है कि देश के हित की दृष्टि से जो आवश्यक हो, देश के लिए कोई अहितकर बात हो, सावधान करने वाली घटना हो, उसी पर पहले मेरी दृष्टि पड़ जाती है। लोग कहते है– तुम दोष देखते हो। बात सच भी हैं अब इस संग्रह में जो छपा है, वह मैंने देखा। बिलकुल प्रारम्भ में डॉ0 सम्पूर्णानन्द के प्राक्कथन में संस्कृत का जो उद्धरण है, उसे देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गये। कारण यह कि वह ठीक नहीं छपा। ऐसा दिखाई देता है कि अंग्रेजी छापे–खाने का यह गुण ही है कि संस्कृत वचनों को वे अवश्यमेव गलत छापेंगे। ऐसा क्या विधिलिखित हैं ?

मूलगामी विचारों के अभ्यासी– आज के इस कार्यक्रम का प्रबंध करने वाले एक महानुभाव ने इस लेख–संग्रह की कच्ची प्रतिलिपि मुझे दी थी। यह सोचकर कि बुद्धि में अन्धकार रखकर खड़े होना योग्य नहीं, मैंने यहाँ से राजकोट जाते समय और वहाँ से विमान से लौटते समय पूरी पुस्तक पढ़ ली। पुस्तक में अनेक विषय तो तात्कालिक ही हैं, परन्तु हमारे दीनदयाल जी की एक विशेषता यह थी कि तात्कालिक विषय को भी एक स्थायी सैद्धान्तिक अधिष्ठान देकर वे लिखा करते थे, बोला करते थे। केवल तात्कालिक बात कहकर उसे छोड़ देना उनका स्वभाव नहीं था। कई वर्षों तक निकट सहकारी के नाते मैं उन्हें जानता हूँ। मुझे पता है कि वे मूलगामी विचारों के अभ्यासक थे। तात्कालिक समस्या पर बोलते या लिखते समय भी, उसके पीछे कोई न कोई चिरंतन सिद्धान्त है, इसका विचार कर उसके अधिष्ठान पर ही ये शब्द प्रयोग किया करते थे। यह ठीक है कि राजनीतिक विरोधी दल के कार्यकर्ता–नेता के नाते शासनारूढ़ दल के अनेक कार्यों पर, उनकी नीतियों पर उन्होंने टीका–टिप्पणी की है। कभी–कभार कुछ व्यक्तियों के सम्बन्ध में भी कोई बात न आई हो, ऐसा भी नहीं। परन्तु उनके लेखों को हम सहृदयता से देखेंगे, तो दिखाई देगा कि टीका–टिप्पणी करते समय भी उनके समूचे हृदय में किसी दल और किसी व्यक्ति के प्रति किसी प्रकार के अनादर की, दूरता की भावना नहीं थी। जो कुछ उन्होंने लिखा है, वह आत्मीयता से लिखा है, तो दल का जो भला बुरा होने वाला हो, वह तो होगा ही, परन्तु अन्ततोगत्वा देश का ही नुकसान होता है। विभिन्न दलों में– कांग्रेस कहें, सोशलिस्ट, प्रजा सोशलिस्ट कहें, जनसंघ, हिन्दू सभा या रामराज्य परिषद् कहें, सभी दलों में लोग अपने ही हैं। अपने लोग यदि कोई त्रुटि, कोई भूल करते हैं, अनिष्टकारी नीतियाँ अपनाते हैं, कोई कृत्य करते हैं जो देश के लिए लाभकारी न हो, तो उसके सम्बन्ध में बोलना, सचेत करना देश की भलाई के लिए आवश्यक ही रहता है।

शासन कोई भी चलाये–शासन कांग्रेस चलाती है या और कोई चलाता है, इससे मुझे कोई सुख–दुःख नहीं। शासन अच्छा चलता है, देश की रक्षा होती है, जनसाधारण सुरक्षा अनुभव करता है, सुख की वृद्धि होती है, आत्मविश्वास, राष्ट्रभक्ति आदि पवित्र गुणों का विकास होकर सर्वसाधारण मनुष्य चरित्रवान, शीलसम्पन्न, आत्मसमर्पण की भावना से युक्त बनता है, इसमें मेरी रुचि है। मुझे कोई रुचि नहीं कि कुर्सी पर कौन बैठता है। शिखर पर बैठने की सबकी इच्छा होती है, परन्तु मैंने कहा कि भाई शिखर पर बैठने की इच्छा क्यों? बड़े–बड़े मंदिरों के शिखर पर तो कौवे भी बैठते हैं। हमें तो, उस नींव का पत्थर बनने की आकांक्षा करनी चाहिए जो अपने कंधों पर मंदिर को भव्य स्वरूप देता है। वहीं मुझे संतोष होता है। अपने स्वदेशी लोगों द्वारा चलाया हुआ राज्य जब तक रहेगा तब तक हम तो तुलसीदास जी के वचन में यह कहेंगे–'कोउ नृप होउ हमहिं का हानी' अर्थात् विदेशी नहीं चलेंगे। परकीय, आक्रमणकारी, राष्ट्रविरोधी नहीं चलेंगे स्वकीय कोई भी हो, अपना ही है। आनन्द से बैठे। हमें उसमें क्या चिन्ता है। परन्तु मन को खटकने वाली, राष्ट्र की दृष्टि से अपमानकारक कोई बात दीखती है, तो उसका उल्लेख करना मेरा धर्म है। इसमें राजनीति वगैरह का कोई झंझट नहीं, और जब कोई ऐसा कहता हो, तो मानना चाहिए कि उसे राजनीति की समझ नहीं नहीं। बेकार ही राजनीतिक दल में काम करता है।

युधिष्ठिर की परम्परा के अनुगामी– पं0 दीनदयाल जी एक विरोधी दल के प्रमुख व्यक्ति थे। उनका तो यह कर्तव्य ही था कि जो अनिष्ट दिखे, जो कुछ त्रुटिपूर्ण दिखाई दे, उसके विषय में अपने मत वे असंदिग्ध शब्दों में प्रकट करें। यह उन्होंने किया भी। परन्तु उनके सब लेखों को देखें, तो हमें दिखाई देगा कि उनके हृदय के अन्दर कोई कटुता नहीं थी। शब्दों में भी कटुता नहीं थी। बड़े प्रेम से बोला करते थे। मेरा तो बहुत सम्बन्ध रहा उनसे। कभी

किसी पर जरा भी नाराज नहीं हुए। बहुत खराबी होने पर भी खराबी करने वाले के प्रति अपशब्द का प्रयोग नहीं किया। ये युधिष्ठिर के समान थे। दुर्योधन में दुराक्षर था इसलिए वे 'दुर्योधन' नहीं 'सुयोधन' कहा करते थे। दीनदयाल जी भी इसी परम्परा के थे। इसीलिए उनमें कटुता दिखाई नहीं देती थी। शब्दों में नहीं, हृदय के अन्दर नहीं और वाणी में भी नहीं।

प्रजातंत्रः कम दोषों वाली राज्य-पद्धति– अपना यह जो जनतांत्रिक ढांचा है, वह एक विशेष प्रकार का है। अंग्रेजों के सम्पर्क में आने के कारण उन्होंने जैसी प्रजातंत्र की पद्धति अपनाई, विकसित की, उसी को हमने ग्रहण किया, उसी का अनुसरण किया। स्वयं हमने तो यह पद्धति बनाई नहीं। लोग कहते हैं कि आजकल की यही सर्वश्रेष्ठ पद्धति है और राज्य चलाने की जो भिन्न–भिन्न पद्धतियाँ हैं, उनमें से यह पद्धति अन्तिम सत्य के रूप में प्रकट हुई है। राज्य चलाने की और भी भिन्न–भिन्न पद्धतियाँ हैं। सामान्य व्यवहार के क्षेत्र में जहाँ कोई चीज कभी भी स्थायी नहीं रहती, नित्य बदलती रहती है, वहाँ यही एक पद्धति अन्तिम है, सत्य है– यह बात जँचती नहीं। इसके बारे में कोई यह कह नहीं सकता कि यही एक श्रेष्ठ है। फिर भी आज हम लोगों ने यह मान लिया है कि यह अच्छी है। अपने सामने चलने वाली अन्य विभिन्न पद्धतियों की तुलना में इसमें दोष कम है। कुछ दोष हो भी, तो उनको दुरुस्त करने की कुछ सम्भावना भी रहती है। इसीलिए यह अच्छी है। परन्तु अच्छी कब है? वह अच्छी तभी है, जब उसके जो पथ्य हैं, उन्हें समझकर तदनुसार हम सब लोग मिलकर व्यवहार करने के लिए कटिबद्ध हों। यदि किसी ने कहा कि अन्य लोग पथ्यों का पालन करें, मैं नहीं करूँगा, कोई कहे कि वह इस पद्धति को भी नहीं मानता, देश को भी नहीं मानता, तब तो यह बड़े खतरे की बात है। इसी बात का विचार कर पं0 दीनदयाल जी ने जनतंत्र के विषय में अपना मत प्रकट किया है कुछ गुण बताये हैं यह बताया कि मताधिकार का प्रयोग कैसे करना चाहिए। उसमें कुछ अंश तो अपने दल के प्रचार का है। इसमें कोई दोष भी नहीं, क्योंकि कोई भी आदमी अपने दल का प्रचार तो करेगा ही। परन्तु इसके साथ ही उन्होंने स्थायी सिद्धान्त भी दिये हैं जो सदा के लिए, सभी दलों और सभी दलों के सभी व्यक्तियों के लिए हैं। सम्पूर्ण समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इन पर विचार करना चाहिए। सफल प्रजातंत्र के लिए यह आवश्यक है, लाभदायक है।

विचारों का खाद्य– आर्थिक समस्या, पंचवर्षीय योजना आदि की दृष्टि से भी इसमें अनेक प्रकार के विचार दिए गये हैं। मैंने पढ़ने का प्रयत्न किया। इसमें राजनीति हैं, अर्थनीति भी है। इनके विषय में मैं कुछ बोल नहीं सकता, परन्तु इतना कह सकता हूँ कि अत्यन्त मनन से, देश का ही भला हो, इस प्रकार हृदय से गम्भीरतापूर्वक विचार करने के बाद जो मत बने, वे ही इन लेखों में उन्होंने अभिव्यक्त किये है। सब लोग यदि थोड़ा–सा पठन करेंगे तो विचार के लिए कुछ खाद्य मिलेगा, स्वतंत्र रूप से विचार की अनुकूलता प्राप्त होगी, देश के सम्पूर्ण जनतांत्रिक ढाँचे में अपनी ओर से भी कुछ योगदान करने की अपनी क्षमता बढ़ेगी।

असामान्य कर्तृत्व– उनके व्यक्तिशः सम्बन्ध से मैं कुछ बोलूंगा नहीं। अभी तक मैंने कुछ कहा नहीं। मुझे बहुत ही दुःख होता है। वे संघ के एक प्रचारक थे। मैं संघ का एक स्वयंसेवक हूँ। संघ यानी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। उसका कुछ उत्तरदायित्व लोगों ने मुझ पर रखा है। इस कारण उनसे अपना एक प्रचारक के नाते सम्बन्ध था। अब तो मैं 'पण्डित जी' वगैरह कहता हूँ, क्योंकि सर्वसामान्य समाज में उन्होंने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की, उस नाते मुझे वैसा ही कहना चाहिए। परन्तु वह एक बालक, एक विद्यार्थी इस नाते बढ़ा। केवल बढ़ा ही नहीं, तो बड़ा हुआ। इस प्रकार का हमारा सम्बन्ध मेरे देखते–देखते वह चला गया। मैं उससे 10–12 साल बड़ा हूँ। वह गया बिल्कुल तारुण्य उम्र में। इसका दुःख है। कभी–कभी मुझे ऐसा लगता है कि वह संघ का प्रचारक ही रहता तो अच्छा था।

हमारे स्व0 डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी एक बार मेरे पास आये और उन्होंने कहा, 'मैं राजनीति का एक दल चलाना चाहता हूँ। मुझे कुछ कार्यकर्ता दो।' इस पर हमारे सब मित्रों ने कहा कि 'दीनदयाल अच्छा आदमी है। उनको एक अच्छा आदमी चाहिए। डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी से अपना निकट सम्बन्ध है, तो उनको एक सहयोगी देना कठिन नहीं है। इसलिए उनसे कहा कि अच्छा, दीनदयाल आपको देते हैं। उन्हें वह प्राप्त हो गया। जनसंघ की वृद्धि से हम समझ सकते हैं कि उन्हें कितना बड़ा कार्यकर्ता प्राप्त हुआ। थोड़े ही समय में उसने जो प्रतिष्ठा कमाई, एक नाम कमाया, उससे हम समझ सकते हैं कि उनमें कितना कर्तृत्व था।

समय से पूर्व ही चला गया–मैं जानता था कि वह कर्तृव्यवान है। मैं जानता था कि वह गुणवान है, बुद्धिमान है। मुझे इस बात का भी प्रत्यक्ष अनुभव था कि संघ के प्रचारक के नाते वह संगठन के शास्त्र में कुशल है। मैं यह भी जानता था कि अपनी मधुर वाणी, स्निग्ध व्यवहार और सब प्रकार के मानसिक, बौद्धिक सन्तुलन से उस क्षेत्र में वह असामान्य स्थान प्राप्त करेगा। देश में तो उसे बहुत स्थान मिल सकता था, मिलने वाला था। मुझे दुःख यही होता है कि जगत में सामने आने पर, असामान्य स्थान प्राप्त करने के पहले ही वह चला गया। जगत में भी उसका नाम हमेशा के लिए स्थायी रह सके, ऐसा बनने के पहले ही वह चला गया।

जो ईश्वर को प्रिय होते हैं– अपने घर का लड़का बुद्धिमान हो, होशियार हो, खूब उत्तम रीति से परीक्षा उत्तीर्ण कर रहा है, इधर–उधर नाम कमा रहा हो, ऐसा लड़का चट से चला जाये तो माँ–बाप को कैसा दुःख होता है? आपमें से बहुत परिवार चलाने वाले लोग हैं। आप उसकी कल्पना कर सकते हैं। मैं परिवार नहीं चलाता, इसलिए मेरी जो दुःख की भावना है, वह शतगुणित है। इसीलिए उसके वैयक्तिक सम्बन्ध में कुछ नहीं कहूँगा। इतना ही कहूँगा कि ईश्वर ने ले लिया है। अँग्रेजी की एक पुरानी कहावत मैंने पढ़ी है, ''दोज़ हूम गॉड लब्ज, डाई यंग''। भगवान् को शायद उस पर अतीव प्रेम था, इसी कारण हम लोगों के प्रेम की अवहेलना करके, वह उसे उठाकर ले गया।

रोने के लिए समय कहाँ– परन्तु 'गतं न शोच्यं', आगे की सोचो। मैं रोने नहीं बैठा, कभी बैठूंगा भी नहीं। परन्तु अन्य कार्यकर्ता उसके शरीर को देखते ही कटे पेड़ की तरह हो गये। गिरते हुए इन कार्यकर्ताओं को पकड़कर मैंने कहा–

''क्या कर रहे हो, भाई? आप तो एक कार्य के पीछे लगे हुए हो । रोने के लिए समय किसके पास है? अपने पास समय नहीं। शरीर जब कार्यक्षम नहीं रहेगा, कार्य की वृद्धि नहीं कर पायेंगे, तब बुढ़ापे में और मृत्युशय्या पर जितने भी दुःख हैं, उनके लिए रो लेंगे। अभी रोने के लिए समय नहीं है। यह तो काम का समय है।'

दीनदयाल कोई अन्तिम नहीं– इसलिए हमें सोचना चाहिए कि गया तो जाने दो। एक गया, तो क्या होता है? यह तो बहुरत्ना वसुन्धरा है हमारी परम्परा, हमारे समाज ने एक के बाद एक कितने ही असामान्य पुरुष पैदा किए हैं। दीनदयाल कोई अन्तिम नहीं है। वैसे पुनः उत्पन्न हो सकते हैं, ऐसा विश्वास दिलाने वाली एक विभूति इस नाते से वह अपने सामने है। इसी आश्वासन के साथ, हम अपने अन्तःकरण में यह आशा और विश्वास लेकर चलें कि अपनी लगन से, अपनी ध्येयनिष्ठा से, अपने प्रत्यनों से, अपने समाज में एक से बढ़कर एक कार्यकर्ता फिर से खड़े होंगे। विचार करने वाले खड़े होंगे। व्यक्तिगत परिवार–संसार की सब चिन्ताओं को छोड़कर केवल राष्ट्र का ही परिवार चलाने की दृढ़ता हृदय के अन्दर लेकर चलने वाले और जिन्हें त्यागमूर्ति नहीं अपितु त्याग का परिपूर्णरूप कहा जा सके, इस प्रकार के लोग खड़े होंगे, इसके लिए प्रयत्न करना अपना प्रथम कर्तव्य है। हृदय के अन्दर ऐसा दृढ़ विश्वास लेकर हम लोग चलें, तो ऐसा समझा जाएगा कि उनके स्मारक इत्यादि की दृष्टि से हम लोगों ने अच्छा कार्य किया।

विद्यालय का इतिवृत्त

राकेश राम त्रिपाठी
प्रधानाचार्य

बाधाएँ आती हैं आएँ, घिरें प्रलय की घोर घटाएँ
अंतिम जय का वज्र बनाने, नव दधीचि अस्थियाँ गलाएँ
आओ फिर से दिया जलाएँ।

हमारे विद्यालय की मूल भावना पंडित दीनदयाल उपाध्याय के मर्मघाती बलिदान से प्रेरित है तथा भारत में उनकी स्मृति में बना पहला विशिष्ट विद्यालय है। वर्ष 1970 की गुरु पूर्णिमा को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सर संघचालक परम पूज्य माधव राव सदाशिव राव गोलवकर जी के पवित्र कर कमलों से इस विद्यालय का शिलायन्स हुआ था। माँ सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह उपाख्य 'बूजी' ने दीनदयाल जी के आकस्मिक अवसान से व्यथित होकर संकल्प किया था कि मैं एक ऐसे विद्यालय की स्थापना करुँगी जहाँ ऐसे छात्रों का निर्माण होगा जो पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिकृति होंगे। श्रद्धेय बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह की अहैतुकी कृपा विद्यालय पर हमेशा ही बनी रही, मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरंतर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज 12वीं कक्षा तक पूर्ण विकसित, आवासीय, सहशिक्षा युक्त अंग्रेजी माध्यम का आधुनिक विद्यालय है। विद्यालय से पढ़े हुए होनहार विद्यार्थी दुनिया के लगभग 153 देशों में उच्च पदों पर कार्यरत हैं तथा अपने देश में भी बहुत बड़ी संख्या में डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, वकील न्यायाधीश, शिक्षक तथा व्यापारी के रूप में समाज को अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

शिक्षा के आधुनिकीकरण एवं शिक्षा प्रणाली में होने वाले निरंतर सुधारों को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय ने सत्र–2013 में सीबीएसई की मान्यता प्राप्त कर ली थी। विद्यालय में कक्षा 1 से 12 तक के छात्र–छात्राएँ सीबीएसई पाठ्यक्रम के अनुरूप अंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरत हैं। वर्तमान समय में विद्यालय में लगभग ढाई हजार छात्र–छात्राएँ अध्ययन कर रहे हैं।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जिस समाज में स्त्रियों का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति इस प्रकार का श्रेष्ठ विचार करती है। बालिकाएँ सुशिक्षित हों, स्वावलंबी हों, तभी एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण होगा इसी भावना से अनुप्राणित होकर विद्यालय में न केवल सहशिक्षा का प्रावधान किया गया है बल्कि हम बालिकाओं के ऊपर विशेष रूप से ध्यान देते हैं। बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नयन हो, यह हमारी प्राथमिकता रहती है।

विद्यालय में आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित कम्प्यूटर, भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान प्रयोगशालाएँ, संगीत कक्षा एवं डिजिटल कक्षा भी है। लगभग दो लाख पाँच हजार से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय एवं वाचनालय भी है। हमारे विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की ओर भी समुचित ध्यान दिया जाता है। इसी के साथ छात्र–छात्राओं के लिए एन.सी.सी. की वरिष्ठ एवं कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलाई जा रही हैं। खेलकूद प्रतियोगिताओं में भी हमारे विद्यार्थी होनहार साबित हुए हैं। अभी हाल ही मैं कोरोना वायरस के दौर में विद्यालय में योग कक्षाओं का विधिवत संचालन हुआ तथा लोगों को मानसिक शक्ति प्राप्त हो इसलिए गीता पाठ की कक्षाएँ सुरुचिपूर्ण ढंग से संचालित की गयीं।

बालिकाओं में अंतर्निहित कलाओं का संपूर्ण विकास हो सके इसलिए हमने अपने **विद्यालय में सेंटर फॉर परफॉमिंग आर्ट्स के तहत अभिव्यंजना नाम से नृत्य अकादमी का शुभारंभ किया है।** भविष्य में dyslexic children के लिए भी सेवा कार्य करने का उदात्त विचार हमारे मन में है।

विद्यालय अपनी गौरवपूर्ण यात्रा के पचास वर्ष पूरे कर चुका है, **विद्यालय के पूर्व छात्र ही हमारी शक्ति हैं और आप लोगों से ही इस विद्यालय की पहचान हैं।** हम इसी प्रकार सफलता के कीर्तिमान स्थापित करते रहें, इसमें आप सभी महानुभावों का संस्था के प्रति स्नेह बना रहे, यही हमारी विनम्र आकांक्षा है।

नया दौर

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

वर्षावलोकन
(2021-2022)

यह कल-कल छल- छल बहती, क्या कहती गंगा- धारा।
युग- युग से बहता आता, यह पुण्य- प्रवाह हमारा।

सन् 1970 की गुरु पूर्णिमा के पावन दिन से अपनी अनथक साधना– यात्रा पर चला हुआ पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय अपने जीवन के पचास वसन्त देख चुका है। इस बार विद्यालय का स्वर्ण जयंती वर्ष था। विद्यालय में अनेक प्रकार के भव्य कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें विद्यार्थियों ने बहुत ही उत्साह के साथ भाग लिया तथा अनेक प्रतिष्ठित और गण्यमान्य अतिथि इसमें सम्मिलित हुए।

1. **टेक- ओ-इनोवा-** इस अंतर विद्यालयीय विज्ञान प्रदर्शनी में कानपुर नगर के **पच्चीस प्रतिष्ठित विद्यालयों** ने भाग लिया। इसमें लेट्स इनोवेट्स, साइ– आर्टिस्टा, साई स्पीचीफाई, लेट्स कोड, टेक आन क्विज, वेब ओ मेंटा, इत्यादि स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के पूर्व छात्र और **आई. आई.टी. कानपुर के प्रोफेसर अनुराग त्रिपाठी** पधारे। श्री त्रिपाठी ने अपने उद्‍बोधन में कहा कि हमको कोई भी कार्य पूरी तन्मयता और समर्पण के साथ करना चाहिए परिपूर्णता ही किसी कार्य को विशिष्ट बना देती है। विज्ञान प्रदर्शनी के समापन समारोह में **(संयुक्त पुलिस आयुक्त, कानपुर) श्री आनंद प्रकाश तिवारी** जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे तथा उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। श्री तिवारी ने विद्यार्थियों से कहा कि आप रोजमर्रा की जिंदगी में ध्यानपूर्वक देखें। बहुत सी ऐसी चीजें मिल जाएंगी जिसमें आपको कुछ नया सोचने और नया निर्माण करने की आवश्यकता होगी।

2. **विस्मृत क्रांतिवीरों को नमन -** स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर **विनायक दामोदर सावरकर** जैसे विस्मृत क्रांतिवीरों को एक नृत्य नाटिका के माध्यम से याद किया गया। 12वीं कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली छात्रा **नीति गुप्ता के पिता श्री अमित गुप्ता जी मुख्य अतिथि के रूप** में तथा दसवीं कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले **भैया तन्मय के पिता श्री सौरभ वर्मा विशिष्ट अतिथि** के रूप में उपस्थित थे इन दोनों लोगों का सम्मान किया गया। इसके साथ ही अस्थि रोग विशेषज्ञ **डॉक्टर अमरनाथ सारस्वत** को उनके उत्कृष्ट सेवाओं तथा विद्यालय के प्रति अहैतुक सहयोग के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य **श्री राकेश त्रिपाठी जी** ने अपने उद्‍बोधन में कहा कि जब ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में आई थी तो हमारे देश का क्षेत्रफल 83,000,00 वर्ग किलोमीटर था और इसके बाद हमको विभाजन की त्रासदी झेलनी पड़ी। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के द्वारा बनाए गए क्रांतिकारियों और महापुरुषों के चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। कार्यक्रम का संचालन छात्रा **वाणी वाजपेयी** और **अंशुमान** ने किया।

3. **अधिष्ठापन समारोह (Investiture ceremony)** – विद्यार्थियों में नेतृत्व की भावना का विकास हो इसलिए छात्र संसद का गठन किया गया। 10 अगस्त 2022 को संपन्न हुए इस कार्यक्रम में कानपुर के **संयुक्त पुलिस आयुक्त श्री आनंद प्रकाश तिवारी** मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री तिवारी ने छात्र पदाधिकारियों को शपथ दिलवाई. इस अवसर पर विद्यालय प्रबंध समिति के पदाधिकारी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ प्रमुख पदाधिकारी तथा नगर के अनेक गण्यमान्य नागरिक उपस्थित थे।

4. **सम्मान दिवस (Honours Day) -** सम्मान दिवस में विद्यालय के यशस्वी प्रधानाचार्य जी ने दशम और द्वादश कक्षा में उत्कृष्ट अंक लाने वाले मेधावी विद्यार्थियों के माता–पिता को सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्यालय

के पूर्व छात्र **श्री हिमांशु शुक्ल (चीफ क्लेम ऑफिसर नॉर्थ सेंट्रल रेलवे)** तथा विद्यालय के ही एक दूसरे पूर्व छात्र **श्री शांतनु गुप्त (आई.आर.एस.इंडियन रेलवे)** मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे. इसके अलावा अनेक पूर्व छात्र, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी तथा विद्यालय प्रबंध समिति के माननीय सदस्य उपस्थित थे।

5. भूगर्भ जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम – भूगर्भ जल के संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से संकल्प लेकर 18 जुलाई 2022 को भूगर्भ जल विभाग, खंड कानपुर उत्तर प्रदेश का दल हमारे विद्यालय पहुँचा। उन्होंने हमारे छात्रों को जल संरक्षित करने के तरीकों से अवगत कराया और यह भी बताया कि जल हमारे वर्तमान व भविष्य के लिए कितना महत्त्वपूर्ण है। इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता और चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री अरुण कुमार त्रिपाठी (अध्यक्ष भूजल सेना, भूगर्भ जल विभाग) श्री विनोद पाण्डेय, अनूप अवस्थी जी तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राकेश त्रिपाठी जी उपस्थित थे।

6. तप का वन्दन – 13 जुलाई 2022 को गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर विद्यालय के भूतपूर्व प्रधानाचार्य **श्री ओम शंकर त्रिपाठी जी** को सम्मानित किया गया। विद्यालय प्रबंध समिति की सचिव श्रीमती नीतू जी तथा प्रधानाचार्य श्री राकेश त्रिपाठी जी ने सभी भूतपूर्व शिक्षकों को उपहार देकर सम्मानित किया। श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी ने अपने उद्बोधन में युग– दधीचि पंडित दीनदयाल उपाध्याय को याद करते हुए कहा कि हमारे विद्यालय के पढ़े हुए विद्यार्थी समाज में कितने प्रतिष्ठित हैं, समाज के लिए कितने उपयोगी हैं, और कितने राष्ट्रभक्त हैंय यह बात महत्त्वपूर्ण है। किसी भी विद्यालय या संस्थान का एक लक्ष्य होता है कि उसके द्वारा शिक्षित एवं संस्कारित छात्र समाज का, देश का हित करें, कल्याण करें और निरंतर अपनी सेवाओं से समाज में शांति बनाए रखें। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों ने गुरु महिमा से सम्बन्धित कबीर और तुलसी के दोहे तथा कुछ गीत प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में विद्यालय के अनेक यशस्वी पूर्व छात्र, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी, विद्यालय प्रबंध समिति के पदाधिकारी तथा **माननीय वीरेन्द्र जीत सिंह जी** उपस्थित थे।

7. योग दिवस – 21 जून 2022 को विद्यालय में योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के छात्र तथा बड़ी संख्या में पूर्व छात्रों ने भाग लिया। योग शिक्षिका श्रीमती सोनाली धनवानी तथा योग आचार्य श्री अजय मिश्र ने सभी को योग और प्राणायाम करवाए। प्रधानाचार्य श्री राकेश त्रिपाठी जी ने कहा कि हमको अपने जीवन को स्वस्थ और सार्थक बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि गीता में भगवान श्री कृष्ण ने जो दैवीय संपदा के लक्षण बताए हैं, उनको हमें धारण करना चाहिए।

8. विद्यालय रत्न सम्मान – 21 मई 2022 को दीनदयाल विद्यालय के स्वर्ण जयंती के अवसर पर वृहद् पूर्व छात्र सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के पूर्व छात्र **क्रोएशिया में भारत के राजदूत श्री राजकुमार श्रीवास्तव जी** उपस्थित थे। श्री राजकुमार श्रीवास्तव जी ने विद्यालय में बिताए हुए दिनों को याद किया तथा विद्यालय प्रबंध समिति तथा शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति में निरंतर सुधार और हो रहा है और यह हम सभी के लिए बहुत अच्छा और सुनहरा अवसर है कि हम इसका लाभ उठाएं। विद्यालय के भूतपूर्व प्रधानाचार्य **श्री ओम शंकर त्रिपाठी** जी ने 6 पूर्व छात्रों को **विद्यालय रत्न** से सम्मानित किया जिनमें सर्वप्रथम **श्री शशि शर्मा जी** (सन् 1975 बैच, हाई स्कूल में प्रदेश में स्थान प्राप्त तथा विद्यालय से आईआईटी में चुने गए सर्वप्रथम छात्र, संप्रति व्यवसायी), **श्री सुरेश गुप्त जी** (1975 बैच, **न्यायमूर्ति उच्च न्यायालय इलाहाबादऋ, श्री विनय अजमानी** (1975 बैच व्यवसायी), **श्री राजेश गर्ग** (1975 बैच, इंजीनियर, व्यवसायी), **सुश्री अनुकृति शुक्ला** (2016 बैच, दंत चिकित्सक) सम्मिलित थे।

अभिव्यंजना :- एक डोर संस्कृति की ओर

(सांस्कृतिक कार्यक्रम)

"खोल दें पंख मेरे, कहता है परिंदा, अभी और उड़ान बाकी है, जमीन नहीं है मंजिल मेरी, अभी पूरा आसमान बाकी है।" पंडित दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम अभिव्यंजना विगत चार मार्च को आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ उपस्थित गण्यमान्य अतिथि विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री योगेंद्र नाथ भार्गव, प्रबंधक श्रीमती नीतू सिंह तथा प्रधानचार्य श्री राकेश राम त्रिपाठी द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया।

इस वार्षिकोत्सव की उमंग देखते ही बन रही थी। विद्यालय को हर तरफ रंगीन झालरों से सजाया गया था तथा कार्यक्रम का हर्ष एवं उल्लास देखते ही बन रहा था। कार्यक्रम में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई।

नन्हें–मुन्ने बच्चों ने स्तुति प्रस्तुत कर ईश्वर का स्मरण किया। रंग बिरंगी पोशाकों में सजे बच्चों ने मणिपुरी, भाँगड़ा, कठपुतली एवं बिहू नृत्य प्रदर्शित कर उपस्थित हर व्यक्ति का मन मोह लिया।

गीता उपदेश द्वारा नन्हें बाल कलाकारों ने अपने ही अनूठे अंदाज में गीता के अनमोल वचनों का सार समझाने का उत्तम प्रयास किया।

कृष्ण सुदामा की लघु नाटिका में छोटे–छोटे बच्चों ने अपने जीवंत अभिनय के परिचय द्वारा इस कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए तथा मित्रता की निश्छल परिभाषा को पुनः जीवित कर सबको भावविभोर कर दिया।

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यालय के माननीय अध्यक्ष श्री योगेंद्र नाथ भार्गव जी ने अपने उद्‌बोधन द्वारा बच्चों का मार्गदर्शन किया तथा विद्यालय की **प्रबंधक श्रीमती नीतू सिंह जी ने बच्चों** के अथक प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि विद्यालय का मूल उद्देश्य भारतीय संस्कृति और विचारों का अनुसरण करना है, और यही बात इस विद्यालय को अन्य विद्यालयों से विशिष्ट बनाती है।

कार्यक्रम का आकर्षण रहीं मुख्य अतिथि आईएएस **सीडीओ कानपुर देहात श्रीमती सौम्या पाण्डेय जी** ने बच्चों को आज के दौर में सफलता कैसे प्राप्त की जाए, इसका मूल मंत्र देते हुए तथा बेटियों को समान अवसर मिलने पर जोर डालते हुए उपस्थित हर अभिभावक को शिक्षा के समान अधिकार के मूल्य से भी अवगत कराया साथ ही छोटे छोटे कलाकारों की जमकर प्रशंसा की।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राकेश राम त्रिपाठी जी ने पं दीनदयाल उपध्याय सनातन धर्म विद्यालय की स्थापना वर्ष 1970 से अभी तक विद्यालय की विभिन्न उपलब्धियों से सभी को अवगत कराते हुए पं दीनदयाल जी की विशेताओं को सभी को एक बार फिर याद दिलाया तथा विद्यालय की सदाचार वेला का छात्र जीवन पर प्रभाव का भी उल्लेख किया। उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी नन्हें बच्चों का भरपूर उत्साहवर्धन किया।

वार्षिकोत्सव का समापन नन्हें शिवभक्तों ने शिवधारा की प्रस्तुति कर किया तथा पूरे वातावरण को शिवमय कर झूमने पर विवश कर दिया।

कार्यक्रम के अंत में प्री–प्राइमरी समन्वयक श्रीमती पारुल मासोन ने सभी उपस्थित अथितियों को धन्यवाद देकर सभी का अभिवादन किया। राष्ट्रीय गीत द्वारा इस वार्षिकोत्सव का सुन्दर समापन किया गया। छोटे छोटे बच्चों के सुन्दर प्रयासों से विद्यालय प्रांगण का वातावरण मनमोहक बना।

जागरण

डॉ. यतीन्द्र कुमार
एसिस्टेण्ट प्रोफेसर
डी.ए.वी. कॉलेज
पूर्व छात्र 1997

अभी अभी तो जागा हूँ,
भ्रमों को तोड़ पाया हूँ।
मृग मरीचिका को समझा हूँ,
परजीविता से बच निकला हूँ।
अभी अभी तो रहस्य जान पाया हूँ
जीवन की पहेली सुलझा पाया हूँ
कि
अपना युद्ध अकेले ही लड़ा जाता है
राह के पत्थरों को आकार दिया जाता है
लगानी होती है अपने सपनों के लिए दौड़
और तोड़ देनी होती है हर बैसाखी
क्योंकि
अपने सामर्थ्य को बढ़ाया जाता है
अपने पैरों से ही मंजिल पर चढ़ा जाता है।

"उषा सुनहरे तीर बरसाती,
जयलक्ष्मी सी उदित हुई।
उधर पराजित काल रात्रि भी
जल में अन्तर्निहित हुई ।"

.... जय शंकर प्रसाद

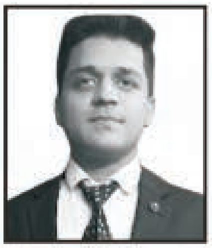

कॉमिक्स पढ़ने से, पढ़ने की आदत विकसित हो गई

अनुग्रह द्विवेदी
पूर्व छात्र, बैच–2017

विद्यालय में बिताए पाँच वर्षों की यादें जीवन की बेहतरीन यादों में से हैं। कक्षा छःह में जब विद्यालय में प्रवेश लिया और छात्रावास में रहना शुरू किया तो बालमन पर घर से दूर होने की व्यथा, दर्द और खीझ थी और ये सवाल कि क्यों घर से बाहर भेज दिया गया? मगर यह दर्द धीरे–धीरे खेल के मैदान की तरफ मुड़कर सकारात्मक शक्ति बन गया। खेलों से मेरा परिचय पहली बार छात्रावास में आने पर ही हुआ। विशेष कर एथलेटिक्स, बॉलीबॉल और फुटबॉल से, जो आज तक मुझे मानसिक दबाव को कम करने में सहयोग करते हैं। मुझे याद है कि कैसे विद्यालय में मैंने पहली बार पुस्तकालय का प्रयोग किया और फिर कैसे पुस्तकों से मेरा लगाव बढ़ता ही गया। विद्यालय के आचार्यों की प्रेरणा ही थी कि जिन्होंने 'स्वाध्याय' के लिए उस उम्र में हमको प्रेरित किया जब हमें इसका ठीक से अर्थ भी मालूम न था। छात्रावास में रहने के दौरान शाम को संध्या आरती के बाद हमारा स्वाध्याय होता था, यद्यपि शाम को मैदान पर खेलने के बाद अकसर हम स्वाध्याय में या तो खेलों से संबंधित बातें करते थे या थकान से ऊँघते रहते थे। लेकिन बाद के जीवन में स्वाध्याय का वास्तविक महत्त्व पता चला। एक और खास संस्मरण यह है कि छात्रावास में हम लोग समय काटने के लिए कई बार कॉमिक बुक ले आते थे और फिर यह कॉमिक बुक पूरे छात्रावास में घूमती रहती थी। इन कॉमिक्सों का पढ़ाई में रुचि बढ़ाने में बड़ा योगदान है।

छात्रावास और विद्यालय में अनुशासन पर बहुत जोर दिया जाता था विशेष कर विद्यालय के एनसीसी इंचार्ज आचार्य सतीश जी के द्वारा। चूँकि मैं विद्यालय की एनसीसी की जूनियर विंग का हिस्सा था। तब अकसर मन में यह सवाल आता था कि ये अनुशासन क्या है और क्यों जरूरी है ? लेकिन आज जबकि मैं कानून की पढ़ाई कर रहा हूँ और कानून के बारे मैं पढ़ता लिखता और चर्चा करता हूँ तो समझ में आता है कि कानून का सारा ढाँचा ही नागरिकों के अनुशासन पर टिका है और इसके जरा से संकट में आने से पूरी सामाजिक व्यवस्था ही अराजकतावाद बदल सकती है। इस प्रकार मेरे अंदर अनुशासन की धारणा भी विद्यालय में आने के बाद ही प्रबल हुई। कुछ अप्रिय अनुभव भी हुए और उनसे भी जीवन की कुछ शिक्षा ही मिली।

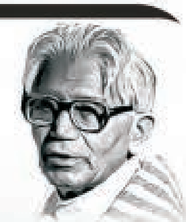

"लघुता न मेरी अब छुओ
तुम हो महान बने रहो।
अपने हृदय की वेदना अब व्यर्थ त्यागूँगा नहीं
वरदान माँगूगा नहीं।

.... शिव मंगल सिंह सुमन"

उत्कृष्ट शिक्षण के सूत्र

डॉ. दुर्गेश वाजपेयी
हिन्दी प्रवक्ता

शिक्षण एक विशिष्ट और जिम्मेदारियों से भरा हुआ कार्य है। एक अच्छा शिक्षक कैसा हो? कक्षा का वातावरण कैसा हो ? प्रभावी शिक्षण किस प्रकार किया जा सकता है ? इस पर कुछ संक्षिप्त विमर्श यहाँ पर मैं करूँगा।

1. **शिक्षक की भाषा–** भाषा व्यक्ति का निर्माण करती है। एक शिक्षक के लिए भाषा का महत्त्व बहुत अधिक होता है। यहाँ भाषा से हमारा आशय हिंदी अंग्रेजी अथवा किसी क्षेत्रीय भाषा से नहीं है बल्कि इस बात से है कि शिक्षक जो बोलता है वह भाषा बहुत ही परिष्कृत, प्रांजल, मधुर और स्नेह पूर्ण होनी चाहिए। इस प्रकार की भाषा शिक्षक को तब प्राप्त होगी जब वह इन गुणों को अपने में धारण कर लेगा। विद्यार्थी सबसे ज्यादा अपने शिक्षकों से सीखते हैं। जैसी भाषा में शिक्षक बातचीत करते हैं वह विद्यार्थियों के अंतर्मन पर असर करती है।

2. **शिक्षक का व्यवहार –** शिक्षक का विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार आत्मीयतापूर्ण होना चाहिए। अलग–अलग वर्गों से आने वाले भिन्न–भिन्न विद्यार्थियों के अंतर्मन में अनेक प्रकार की ग्रंथियाँ हो सकती हैं। एक अच्छे शिक्षक को इस प्रकार का होना चाहिए कि वह इन कोमल मन की ग्रंथियों को खोल सके। एक शिक्षक को अपने भीतर इस तरह के सद्गुण प्रकट करने चाहिए, ताकि विद्यार्थी सहज रूप से उसकी ओर आकर्षित हों तथा उस पर पूरा विश्वास कर सकें।

3. **आत्मीयता और अनुशासन–** शिक्षक की विद्यार्थियों के प्रति आत्मीयता भी होनी चाहिए और अनुशासन भी होना चाहिए। किशोरावस्था में जबकि यह विद्यार्थी लगातार विकास को प्राप्त हो रहे हैं और जब उनका शरीर, मन और बुद्धि लगातार विकसित हो रहे हैं, ऐसी स्थिति में उनके साथ बहुत सूझबूझ का व्यवहार करना चाहिए।

4. **कक्षा का वातावरण –** शिक्षक को सबसे पहले कक्षा के वातावरण पर ध्यान देना चाहिए। कक्षा का वातावरण ऐसा हो कि वह अधिगम के अनुकूल हो। विद्यार्थी सीखने की ओर आकर्षित हों। जो शिक्षक कक्षा के वातावरण पर ध्यान दिए बिना अपना अध्यापन शुरू कर देते हैं, उनका संप्रेषण सफल नहीं हो पाता है।

5. **ध्यानाकर्षण –** कक्षा में शिक्षक का प्रवेश करना एक विशेष घटना की तरह होना चाहिए। कक्षा में शिक्षक पहुँचते ही विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर ले, यह उसके भीतर कला होनी चाहिए।

6. **मौन और अशाब्दिक अन्तःक्रिया –** कक्षा में कई बार मौन और अशाब्दिक अंतः क्रियाओं का बहुत अधिक महत्त्व हो जाता है। शिक्षक कई बार मौन होकर बहुत महत्वपूर्ण संदेश देता है, कुछ बड़ी चीज सिखा देता है।

7. **विषय का ज्ञान –** शिक्षक को अपने विषय का बहुत अच्छा ज्ञान होना चाहिए। उसे लगातार पढ़ते रहना चाहिए तथा अभ्यास करते रहना चाहिए। अगर शिक्षक पढ़ना बंद कर देगा तो उसके अध्यापन में कोई प्रभाव नहीं रह जाएगा। रवीन्द्र नाथ टैगोर इस बात को बहुत महत्त्व देते थे।

8. **अच्छा व्याख्यान –** शिक्षक को संबंधित शीर्षक का बहुत ही आकर्षक और प्रभावपूर्ण व्याख्यान देना चाहिए यह आकर्षण और प्रभाव उसके गंभीर अध्ययन से ही पैदा होगा।

9. **अध्यापन शैली –** शिक्षक के अध्यापन की शैली ऐसी होनी चाहिए कि उसके विषय का संप्रेषण सभी विद्यार्थियों तक भली प्रकार से हो सके। कक्षा में शिक्षक की आवाज, उसका उच्चारण इतना स्पष्ट होना चाहिए कि किसी भी विद्यार्थी को समझने में समस्या न हो। शिक्षक न तो बहुत जल्दी–जल्दी बोलें और न ही बहुत धीमी आवाज में बोलें। आवाज इतनी तीव्र भी न हो कि वह कर्कश होने की सीमा तक चली जाए।

10. **दृष्टान्त देना –** पाठ्यवस्तु के सफल शिक्षण का एक महत्वपूर्ण कारक दृष्टांत देना होता है। चाहे शिक्षक साहित्य का हो अथवा विज्ञान का किसी भी विषय की व्याख्या करते हुए उसको समझाने के लिए दृष्टांतों का बहुत महत्त्व होता है। दृष्टांत से आशय हमारा यहाँ उदाहरण से है। लेकिन यह उदाहरण ऐसे होने चाहिए जो पढ़ाई गई विषयवस्तु से मेल खाते हों।

11. प्रश्नों की प्रवाहशीलता – कक्षा में शिक्षक को प्रश्नों की प्रवाहशीलता लगातार बनाए रखनी चाहिए। आशय यह है कि जब शिक्षक कोई शीर्षक पढ़ाते हैं तो उसमें विद्यार्थियों की लगातार जिज्ञासाएँ होनी चाहिए तथा उनके प्रश्न आने चाहिए। यह प्रश्न–उत्तर की शैली काफी लाभप्रद होती है।

12. खोजपूर्ण प्रश्न – कक्षा में कुछ खोजपूर्ण प्रश्न पूछे जाने चाहिए, इससे विद्यार्थियों की शोध अभिरुचि का विकास होता है। उदाहरण के तौर पर जब मैं कक्षा में पढ़ाने जाता हूँ तो विद्यार्थियों के नाम पूछता हूँ, फिर उनके नाम का अर्थ पूछता हूँ। कई बार कुछ नाम ऐसे होते हैं जिनके अर्थ नहीं पता होते हैं, तो उनके लिए विद्यार्थियों को मैं पुस्तकालय भेजता हूँ कि वे वहाँ पर जाएँ और शब्दकोश देखें, शब्दकोश देखकर उस शब्द का अर्थ लिखकर लाएँ। कई बार ऐसे नाम भी होते हैं जो निरर्थक होते हैं, यानी उनका कोई अर्थ नहीं होता है। यह बात भी बतानी होती है कि अमुक शब्द का कोई अर्थ ही नहीं है या फिर तुम्हारे नाम का यह अर्थ है। फिर उस अर्थ के संदर्भ और इतिहास पर चर्चा हो सकती है। यह बात तो भाषा और साहित्य के शिक्षकों के लिए है। विज्ञान के शिक्षक आसपास होने वाली भौतिक घटनाओं की खोज पर चर्चा कर सकते हैं। विज्ञान और साहित्य का सभी जगह व्याप है।

13. प्रोत्साहन और प्रशंसा – एक सफल शिक्षक वह है जो विद्यार्थियों को लगातार प्रोत्साहन देता रहे और उनके छोटे से छोटे कार्य पर, उनकी उपलब्धि पर उनकी भरपूर प्रशंसा करता रहे। किसी भी विद्यार्थी की कक्षा के सामने की गई प्रशंसा न सिर्फ उसके हौसले को बढ़ाती है बल्कि अन्य विद्यार्थियों में भी एक सकारात्मक प्रतिस्पर्धात्मक संदेश देती है।

दीनदयाल विद्यालय और बैरिस्टर साहब

डॉ0 दुर्गेश वाजपेयी
हिन्दी प्रवक्ता

''बैरिउ राम बड़ाई करहीं, बोलनि मिलनि विनय मन हरहीं''

बैरिस्टर साहब का बोलना, लोगों से मिलना ऐसा मधुर था कि किसी विरोधी का भी वैर– भाव तिरोहित हो जाता था। उन्होंने कभी भी संयम के बाँध को नहीं तोड़ा। सच्चे अर्थों में उन्हें वाणी सम्बन्धी तप सिद्ध था। उनकी विनोद– प्रियता और वाग्विदग्धता भी विलक्षण थी। त्याग, तपस्या, सत्य, अहिंसा, आत्मीयता, प्राणि मात्र के प्रति दया, सादा शुद्ध जीवन और उच्च चिंतन, आत्म– संयम, समबुद्धि, दृढ़ निश्चय, मन, वाणी तथा कर्म में एकरूपता आदि अनेक विशेषताएँ उनके भीतर समाविष्ट थीं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में बूजी और बैरिस्टर साहब ने इस विद्यालय की स्थापना बड़ी भावना और पवित्र उद्देश्यों के साथ की थी। दीनदयाल विद्यालय के सम्बन्ध में बैरिस्टर साहब ने कहा था– ''हम लोगों ने विचार किया कि एक ऐसा विद्यालय खड़ा करना चाहिए जो समाज के सामने आदर्श रख सके और वह एक ऐसे आदर्श व्यक्ति के स्मारक के रूप में चलाया जाए जिसका महत्त्व न केवल उसके ज्ञान के कारण बल्कि उसकी तपस्या, त्याग, उसके मृदु व्यवहार, उसकी अहंकार शून्यता के कारण हो। केवल अच्छा परीक्षाफल ही पर्याप्त नहीं है। हमारे छात्रों में चारित्रिक विकास हो, उनके अंदर भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा हो, ईश्वर में विश्वास हो, कर्मण्यता की भावना हो और वह अपनी सारी शक्ति को राष्ट्र की सेवा में लगाने के लिए तत्पर हों ऐसी भावनाओं को जागृत करने का भी प्रयास हमको करना है।''

दीनदयाल विद्यालय स्वर्ण जयंती वर्ष में आप सभी को यह विश्वास दिलाता है कि हमने अतीत में भी उच्च आदर्श स्थापित किए हैं और वर्तमान में भी हम उसी पवित्र मार्ग के पथिक हैं।

हमारे जीवन में पुस्तकों का योगदान

पं. हरि नारायण शर्मा ''हरि''
शिक्षक
पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

विधाता की इस सृष्टि में यह मानव सर्वोत्तम प्राणी है क्योंकि उसके पास ज्ञान, बुद्धि व विवेक है जिसके द्वारा वह सोच–विचार कर निर्णय ले सकता है। मनुष्य को क्या करना उचित है, क्या अनुचित है इस अज्ञानता से बाहर आने तथा ज्ञान के आलोक से आलोकित करने और सुखी व सदाचारी बनने की सद्प्रेरणा पुस्तकों के अध्ययन करने से उसे मिलती है। मनुष्य को अच्छी पुस्तकों, धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये। यह पुस्तकें हमें सभ्य, शिष्ट व विनम्र बनाती हैं।

हमारे जीवन में पुस्तकों का अतीव महत्त्व है। वे ज्ञान का विपुल भंडार हैं इनके अध्ययन से हम अपनी प्रतिभा में निखार ला सकते हैं और अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। अच्छी पुस्तकों का अध्ययन हमें नित्य करना चाहिये उससे जीवन संस्कारित होता है। ज्ञान रहित मनुष्य का जीवन नीरस हो जाता है। जीवन जीने का आनन्द हमें पुस्तकें ही प्रदान करती हैं। जितने भी महापुरुष, ज्ञानी, विद्वान, कवि व लेखक हुए हैं उन सबने श्रेष्ठ ग्रंथों का अध्ययन किया है।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कहा था। ''हम उत्तम पुस्तकों का सम्मान नरक में भी करेंगे क्योंकि जहाँ वे होंगी वहाँ स्वयं ही स्वर्ग बन जायेगा।'' अतः अपने जीवन को सफल बनाने के लिये हमें अच्छी पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिये–

वेद, पुराण, कुरान, बाइबिल, रामायण की बातें।
नानक, सूर, कबीरदास की लिखी हुई सौगातें।
जन–जन ने पढ़कर अपना जीवन सफल बनाया।
हर अच्छी पुस्तक पढ़ लो भैया इनमें ज्ञान समाया।।

सद्ज्ञान सद्ग्रन्थों के अध्ययन से मिलता है और सच्चे ज्ञान से ही जीवन रूपी उपवन पुष्पित एवं पल्लवित होता है। ये धार्मिक पुस्तकें धर्म–कर्म का ज्ञान कराती हैं–

सदियों पहले लिखी पुस्तकें, हम सब आज भी पढ़ते।
धर्म–कर्म का मर्म समझते, उन्नति का पथ गढ़ते।।
ज्ञानी वही बना, जिसने पढ़ने में ध्यान लगाया।
हर अच्छी पुस्तक पढ़ लो भैया ,इनमें ज्ञान समाया।।

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, अट्ठारह पुराण, उपनिषद, कुरान, बाइबिल आदि अनेक धार्मिक ग्रन्थ हैं। रामचरितमानस,कामायनी,साकेत, प्रियप्रवास, पद्मावत,पृथ्वीराज रासो लोकायतन आदि हिंदी के अनेक महाकव्य हैं। नाटक, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, आत्मकथा, डायरी, रिपोर्ताज इत्यादि गद्य विधाओं में लिखी अगणित पुस्तकें हमारा बहुमुखी विकास करने और ज्ञानवर्धन में सहायक होती हैं ।अतः सभी उत्तम पुस्तकों का अध्ययन हम सभी के लिये अत्यंत आवश्यक है। अक्षरों के समूह से शब्द और शब्दों के समूह से वाक्य तथा वाक्यों का समूह एक लेख का रूप लेता है इस प्रकार अनेक लेखों का संकलन पुस्तकें होती हैं–

अक्षर मिलकर शब्द बने, शब्दों ने किया उजाला।
शब्द गढ़े पुस्तक में तो हो गया स्वरूप निराला।।

पुस्तक जिसने पढ़ी,उसी ने अपना ज्ञान बढ़ाया।

अक्षर–अक्षर पढ़ लो भैया,इनमें ज्ञान समाया।।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था –''जिसे पुस्तक पढ़ने का शौक है,वह सब जगह सुखी रह सकता है।'' पुस्तकों का हमारे जीवन में विशेष योगदान है। वह हमारे जीवन को सँवारती हैं, ज्ञान को बढ़ाती हैं, कर्म करने की प्रेरणा देती हैं, कार्य–व्यवहार का तरीका बताती हैं और हमें ज्ञानवान तथा बुद्धिमान बनाती हैं। पुस्तकें जीवन जीने की कला सिखाती हैं।

श्रेष्ठ विद्वान गिबन के मतानुसार – ''पुस्तकें वे विश्वस्त दर्पण हैं,जो सन्तों,शूरों एवं मनीषियों के मस्तिष्क का परावर्तन हमारे मस्तिष्क पर करती हैं।'' अतः पुस्तकों से हमें ज्ञान और ज्ञान से हमें सम्मान प्राप्त होता है–

पढ़–लिखकर ही मान और सम्मान मिला करता है।

ऊँचे ओहदे मिलते, जीवन पुष्प खिला करता है।

हर धन से विद्या धन उत्तम है, वेदों ने बतलाया।

हर अच्छी पुस्तक पढ़ लो भैया, इनमें ज्ञान समाया।।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रत्येक नर–नारी, बालक–बालिका की रुचि यदि पुस्तकों के पढ़ने में जागृत हो जाय तो वह दिन दूर नहीं जब जन–जन के अन्तःकरण में ज्ञान–दीप जगमगाने लगेगा और उस दिन यह भूलोक स्वर्ग लोक बन जायेगा यह हमें पूर्ण विश्वास है।

चौरासी लाख आसन ऋषियों ने दिए

योगाचार्य
रवीन्द्र पोरवाल

विद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस सोत्साह मनाया गया। विगत 21 जून 2023 को अपने विद्यालय में योग दिवस सोत्साह मनाया गया, जिसमें विद्यालय के सभी शिक्षकों तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। सुप्रसिद्ध आसन और योग शिक्षक तथा आयुर्वेदाचार्य डॉ रवीन्द्र पोरवाल ने आसनों के विषय में विस्तार से बताया तथा कुछ बहुत आसान और महत्त्वपूर्ण आसन करवाए। उन्होंने चरण आसन के विषय में बताया कि यह आसन इतना महत्त्वपूर्ण है कि जिन्हें बहुत अधिक गुस्सा आता हो वे अगर एक सप्ताह इसको करें तो उनकी प्रवृत्ति बदल जाएगी। आज के समय में लोगों के पास योगासन के लिए समय नहीं रहता है। वह बाहर दौड़ लगाने के लिए नहीं जा सकते हैं। ऐसी स्थिति में यदि वे दो–तीन मिनट अश्वासन करेंगे तो उन्हें एक किलोमीटर दौड़ने का फायदा मिलेगा।
श्री पोरवाल ने बताया कि हमारे ऋषियों ने हमको चौरासी लाख आसन दिए हैं जिनमें से हर एक के अलग–अलग फायदे हैं।

विद्यालय के खेल शिक्षक अजय मिश्र ने भी विविध प्रकार के योगासन तथा प्राणायाम शिक्षकों को करवाए। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राकेश राम त्रिपाठी जी ने डॉ रवीन्द्र पोरवाल का अभिनंदन किया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया। योगासन के इस कार्यक्रम में विद्यालय के पूर्व छात्र तथा शहर के सुप्रसिद्ध पैथोलॉजिस्ट डॉ प्रवीण सारस्वत, विद्यालय के ही पूर्व छात्र प्रोफेसर मनोज अवस्थी तथा अन्य भी कई पूर्व छात्र उपस्थित थे।

तपोवृद्ध महामानव थे " बैरिस्टर साहब "

विगत 18 मई 2023 को विद्यालय में श्रद्धेय बैरिस्टर साहब का जन्मदिवस मनाते हुए उनके विचारों और आदर्शों को स्मरण किया गया।

बैरिस्टर नरेंद्र जीत सिंह एक प्रख्यात समाजसेवी, शिक्षाविद् तथा धर्मात्मा महामानव थे, जिन्होंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय की स्थापना की। वे नगर की तमाम शैक्षिक संस्थाओं के अध्यक्ष, सचिव और संरक्षक थे। दीनदयाल विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राकेश राम त्रिपाठी ने बैरिस्टर साहब को नमन करते हुए उनके जीवन – आदर्शों पर चलते हुए अपनी संस्था को शिखर तक पहुँचाने का शुभ संकल्प व्यक्त किया।

विद्यालय में शिक्षक डॉ दुर्गेश वाजपेयी ने बैरिस्टर साहब के संस्मरण और शिक्षा से संबंधित उनके महत्त्वपूर्ण विचारों को साझा किया। बैरिस्टर साहब कहते थे कि शिक्षक और विद्यार्थी के सम्बन्ध आत्मीयता पूर्ण होने चाहिए। विद्यार्थी श्रद्धावान तथा विनम्र होने चाहिए। श्रद्धा से ही आचार्य के ज्ञानकोष के कपाट खुलते हैं। शिक्षक और विद्यार्थियों का परस्पर का सम्बन्ध हमारे उपनिषदों में तथा वेदों में बताया गया है।

''सहनाववतु सहनौभुनक्तु सहवीर्य करवावहै।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।''

अर्थात् हम दोनों गुरु और शिष्य साथ साथ भोग करें ,साथ–साथ पराक्रम करें और परस्पर द्वेष न करें। शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन का निर्माता होता है। वह केवल कक्षा में विषय पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं होना चाहिए । शिक्षक का धर्म अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । समाज में उसका वही माननीय स्थान होना चाहिए जो प्राचीन काल में होता था। ऋषियों और आचार्यों के सामने बड़े–बड़े सम्राट अपना सिंहासन छोड़ कर खड़े हो जाते थे।

शिक्षक डॉ मनोज शुक्ल ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा बैरिस्टर साहब के जीवन के कुछ प्रेरणादायक संस्मरणों को भी सुनाया।

संगीत के शिक्षक श्री अंकुर दुबे ने इस अवसर पर एक भावना पूर्ण गीत प्रस्तुत किया। यह बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी का 112वां जन्मदिवस था।

> **सुख भोग खोजने आते सब, आए तुम करने सत्य-खोज।**
> **जग की मिट्टी के पुतले जन, तुम आत्मा के, मन के मनोज।।**

मेधावी छात्रों का सम्मान समारोह

विद्यालय के **आई.ए.एस.** पूर्व छात्रों ने कहा कि सिर्फ अच्छे अंकों से ही संतुष्ट न हों बल्कि चरित्रवान और आध्यात्मिक बनें। विगत 10 अगस्त 2022 को विद्यालय में मेधावी छात्रों को पुरस्कृत और सम्मानित किया गया। कक्षा दसवीं एवं बारहवीं के मेधावी छात्रों को सम्मानित करने हेतु पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय 'सम्मान दिवस' के रूप मनाता है। अथक परिश्रम एवं लगन के फलस्वरूप प्राप्त होने वाली सफलता हमारे व्यक्तित्व एवं जीवन में निरन्तर निखार लाती है।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री हिमांशु शुक्ल जी (पूर्व छात्र बैच 2001) (चीफ क्लेम अधिकारी, उत्तर मध्य रेलवे) एवं श्री शांतनु गुप्त जी (पूर्व छात्र बैच 2005) आईआरएस, भारतीय रेलवे, द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया।

छात्र एवं छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया जिसने सभी अतिथियों का मन मोह लिया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए मेधावी छात्रों का सम्मान प्रारंभ हुआ जिनमें दसवीं कक्षा के छात्र – तन्मय शर्मा (98.4%), आदित्य कुमार त्रिपाठी (97.4%), अमन शुक्ल (97.4%), सुयश तिवारी (97.2%), अभिनव कटियार (97%), अनुष्का पाल (96.4%), मोनिका (96.4%), राज पटेल (96.2%), वृषा पांडेय (96.2%), जतिन पांडेय (96.2%) ,आयुषी गुप्ता (95.8%), शिखर पोरवाल (95.8%), देवांश दीक्षित (95.8%) श्रेष्ठ द्विवेदी (95.6%), अंशुमन चतुर्वेदी (95.6%), आदित्य पांडे (95.2%), श्रेयश मिश्रा (95%) इत्यादि पुरस्कृत किये गए। सुयश तिवारी और राज पटेल ने विज्ञान विषय में 100 अंक प्राप्त किए ।आदित्य कुमार त्रिपाठी ने विज्ञान एवं सामाजिक विषय दोनों विषयों में समान 100 अंक, तन्मय शर्मा ने संस्कृत एवं गणित दोनों विषयों में समान 100 अंक, शिवम चौबे ने अंग्रेजी में 100 अंक प्राप्त किए एवं 57 छात्रों ने 90% से ऊपर अंक प्राप्त किए।

कार्यक्रम की इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए कक्षा बारहवीं के छात्रों को सम्मानित किया गया जिनमें नीति गुप्ता ने 97% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया , हर्षिता पाण्डेय ने 96.6% के साथ भूगोल विषय में 100 अंक प्राप्त किए, ईशान चन्द्र गुप्ता 96.4% के साथ कम्प्यूटर साइन्स में 100 अंक प्राप्त किए तरुण गुप्ता 95% के साथ कम्प्यूटर साइन्स में 100 अंक प्राप्त किए एवं 36 छात्रों ने 90% से ऊपर अंक प्राप्त किए।

आई.आई.टी. में चयनित हुए कक्षा 12वीं के छात्र **धीरज कुमार, अभिषेक वर्मा** और **ऋषभ पाण्डेय** को एवं **CLAT** में चयनित मयंक पटेल को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सम्मानित किया गया । सभी छात्रों को अतिथिगण श्री हिमांशु शुक्ल जी एवं श्री शान्तनु गुप्ता जी, विद्यालय प्रबंध समिति की सचिव श्रीमती नीतू सिंह जी तथा प्रधानाचार्य जी द्वारा सम्मानित किया गया । विद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रस्तुत शिव तांडव स्त्रोत पर प्रस्तुत समूह नृत्य ने सभी का मनमोह लिया । जोरदार करतल ध्वनि द्वारा सभी छात्रों का उत्साहवर्द्धन किया गया।

श्री हिमांशु शुक्ल जी ने विद्यालय के छात्रों के निरंतर प्रगति करने एवं विद्यालय द्वारा छात्रों में नैतिक मूल्यों एवं संस्कार को बनाए रखने के निरन्तर प्रयास की सराहना की । उन्होंने माता–पिता से भी अनुरोध किया कि वे छात्रों में नैतिक मूल्यों को आगे भी बनाए रखें। श्रीमती नीतू सिंह जी ने भी विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान की एवं प्रधानाचार्य जी द्वारा छात्रों के मंगल भविष्य की कामना करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष

हमारी धरोहर

डॉ. दुर्गेश वाजपेयी
हिन्दी प्रवक्ता

हमारा देश भारत ऋषियों और तपस्वियों का देश है। हमारी धरोहर बहुत विशाल और संपन्न है और विविध क्षेत्रों से मंडित है। हमारा बहुत विशाल वाङ्मय है। वेद, उपनिषद, पुराण, गीता, महाभारत, रामायण, और बाद में श्री रामचरितमानस– यह ऐसे दिव्य ग्रंथ हैं जो मनुष्य जीवन का चरम उत्कर्ष करने में सहायक हैं। पश्चिम का ज्ञान सांसारिक है, भौतिक है, और हमारे धर्मग्रंथ यह सिखाते हैं कि हम केवल शरीर नहीं हैं। हम उस परमपिता परमात्मा की संतान हैं जो सत् चित् आनंद का स्वरूप है। हमारी संस्कृति यज्ञमयी संस्कृति है, त्यागमयी संस्कृति है, इसलिए उपनिषदकार ने कहा–

''ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्,

तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधःकस्यस्विद् धनम्''

यह सारा संसार ईश्वर से ही व्याप्त है, इसलिए यहाँ पर त्याग पूर्वक भोग करना चाहिए। यह धन किसका है? अर्थात् किसी का नहीं है, इसलिए लालच नहीं करना चाहिए।

हमारा देश भारत संसार का सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृति वाला देश है। हम बहुत उदार और करुणावान रहे हैं। हमने बहुत से धर्मों और जातियों को अपने यहाँ पर आश्रय दिया है। महान कवि जयशंकर प्रसाद एक बहुत सुंदर गीत में लिखते हैं–

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

बरसाती आँखों के बादल, बनते जहाँ भरे करुणा जल

लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा।

बच्चों को कक्षाओं में नैतिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जानी चाहिए। अपने गुरुजनों का, माता पिता का, बड़े लोगों का सम्मान करना, चरण स्पर्श करना, यह जरूर सिखाया जाना चाहिए।

विद्या ददाति विनयं, विनयात् याति पात्रताम्,

पात्रत्वात् धनम् आप्नोति, धनात् धर्मः ततः सुखम्

आज भारतवर्ष ने दुनिया में अपनी फिर से एक मजबूत पहचान बनाई है। सारा संसार भारतवर्ष की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा है। हमको फिर से विश्व गुरु के पद पर आसीन होना है और यह काम अपनी संस्कृति, अपनी धरोहर के सहारे ही हो सकता है। हम अपनी धरोहर न छोड़ें, मैं इस प्रकार के श्रेष्ठ भावों का आह्वान करता हूँ।

प्राची में अरुणिमा

Tanya Khanna
X-B

Kartik Dwivedi
XI-A

Rajse Tiwari
XI-A

Nimisha Srivastava
XII-B

बाल-कल्पना

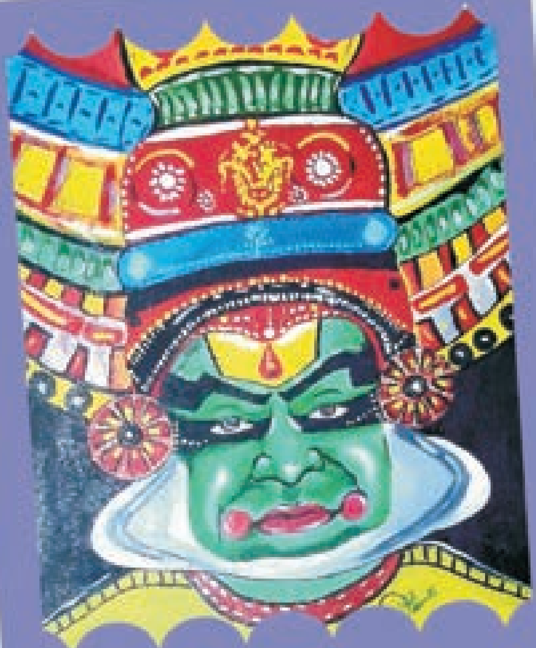

Dhawal Tiwari
VIII-D

Kartik Dwivedi
XI-A

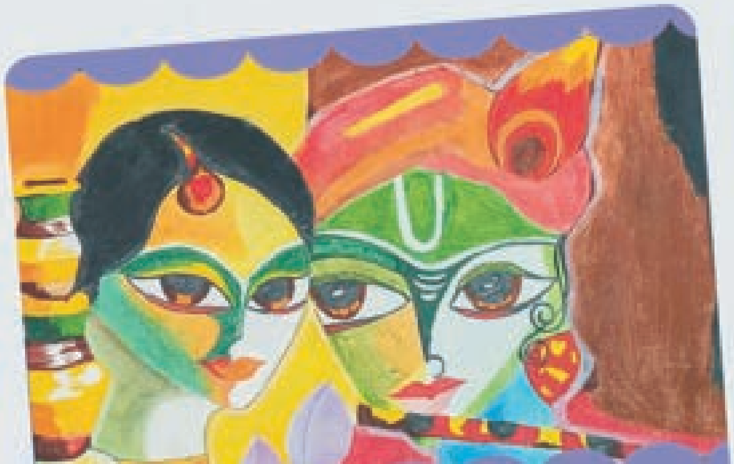

Rajse Tiwari
XI-D

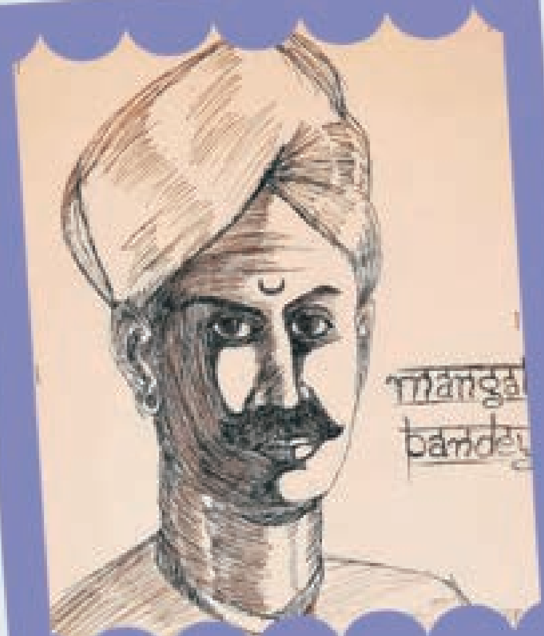

Kartik Dwivedi
XI-A

रूप और रंग

Rajse Tiwari
XI-D

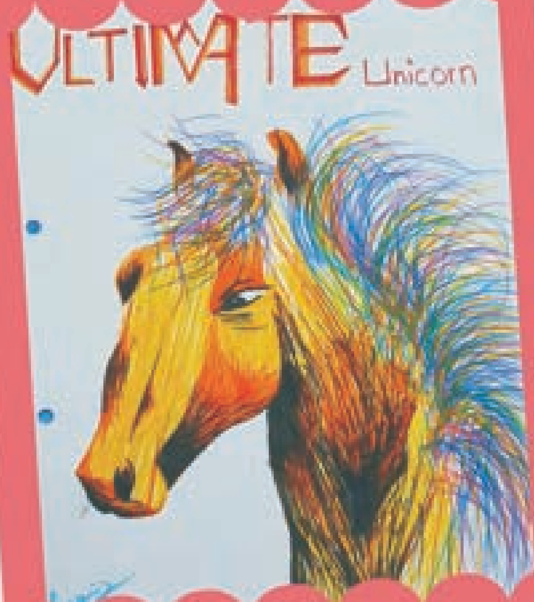

Priyanshi
VIII-E

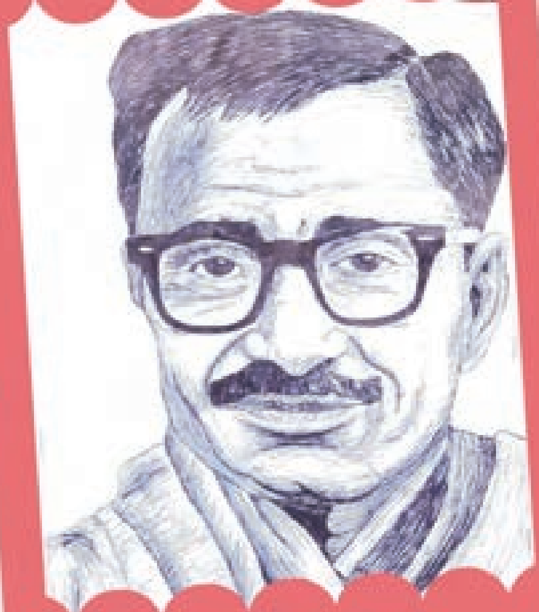

Kartik Dwivedi
XI-A

Hanshika Tripathi
VII-C

Effort of Talents

Rajse Tiwari
XI-A

Nimisha Srivastava
XII-D

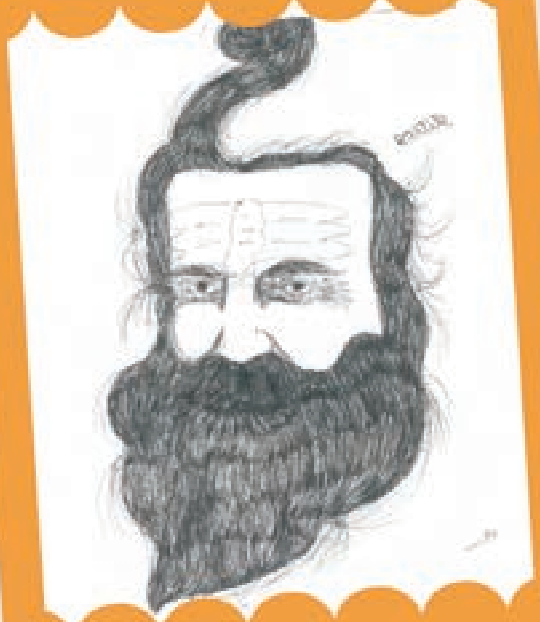

Kartik Dwivedi
XI-A

Kartik Dwivedi
XI-A

Colors of Imagination

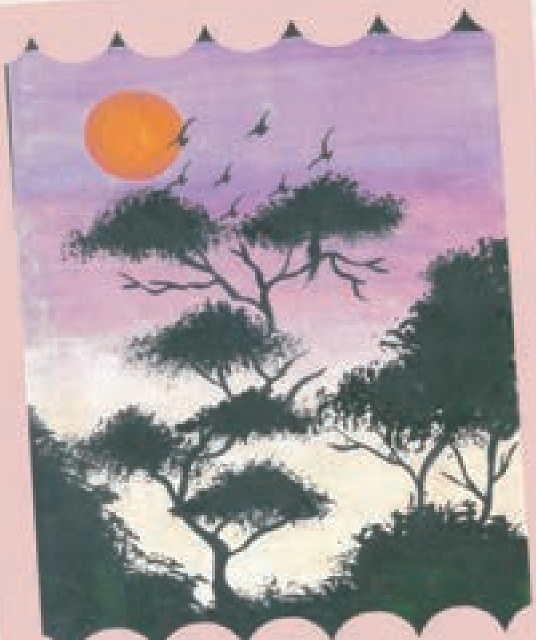

Priyanshi
VIII-E

Suryansh Tiwari
IX-D

Sakshi Upadhayaya
XII-C

Kartik Dwivedi
XI-A

The Art of Memories

Abhyudaya Singh
VIII-C

Kartik Dwivedi
XI-A

Kartik Dwivedi
XI-A

Kartik Dwivedi
XI-A

Anika Mishra
VII-C
Roll No. 04

Ayansh Singh
VII-A

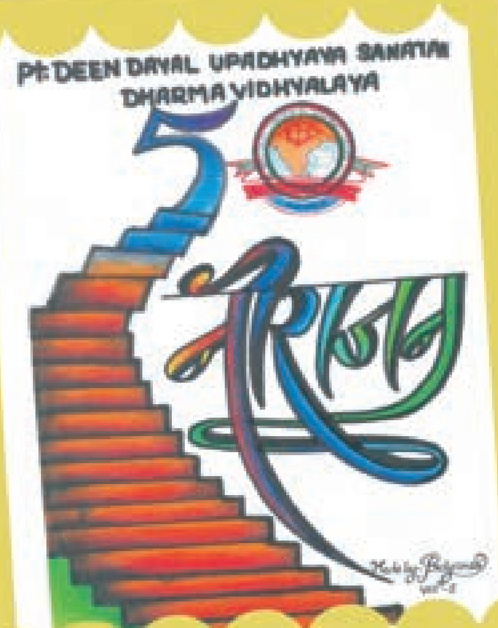

Priyanshi
VIII-E

Suryansh Shukla
VIII-E

सींचता दृग जल से सानंद

Krati Tripathi
VII-B

Krati Tripathi
VII-B

Suryan Tiwari
IX-D

Nimisha Srivastava
XII-D

जल संरक्षण

भूगर्भ जल विभाग (उ.प्र.) द्वारा आयोजित प्रतियोगिता

प्रशान्त कुमार
11–'बी'

**''जन-जन तक जल पहुँचाना है
जल संरक्षण अपनाना है।''**

वर्तमान समय में धीरे–धीरे जल की हानि होती चली जा रही है, इसका प्रमुख कारण है जल को बरबाद करना। हम लोग जल का अनावश्यक रूप से प्रयोग करते हैं जैसे हम लोग कपड़े धोने में अत्यधिक जल बहा देते हैं तथा नल को बहुत ज्यादा समय के लिए खुला छोड़ देते हैं जिससे जल की बड़ी हानि होती है। हमारे आने वाले जीवन काल में जल की बहुत बड़ी उपयोगिता है। गर्मियों के दिनों में हम लोग अत्यधिक जल उपयोग करते हैं तथा धरती गर्म होने पर धीरे–धीरे जल की हानि होने लगती है। हम सभी लोग जल का उतना ही उपयोग करें जितना कि हमें जरूरत है। जल की उपयोगिता हमारे जीवन में बहुत है क्योंकि जब हमारी अगली पीढ़ी आएगी तो उसे जल हानि का बड़ा सामना करना पड़ेगा। अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ भूमि बंजर होती है, इसका बहुत बड़ा उदाहरण है 'राजस्थान' क्योंकि यहाँ लोगों को जल के लिए बड़ी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। हम लोग खेतों में पाईप ड़ालकर पानी चला देते हैं जिससे पानी अत्यधिक मात्रा में नष्ट हो जाता है इसका एक महत्त्वपूर्ण उपाय है खेतों में क्यारी बनाकर जल पहुँचाना, इससे पानी अत्यधिक नष्ट नहीं होता है।

हम लोगों को अपने दैनिक जीवन में दाढ़ी बनाते समय तथा नहाते समय और शौच करते समय अत्यधिक जल नहीं नष्ट करना चाहिए। जब वर्षा होती है तब हमें वर्षा का जल एकत्र कर उसका संरक्षण करना चाहिए जिससे आने वाले समय में हमें कठिनाईयाँ नहीं होंगी । जल की धारा हमेशा धीमी रखें तथा ब्रुश करते समय जल नष्ट नहीं करना चाहिए तथा गाड़ी की धुलाई करते समय हमें ज्यादा पानी खर्च नहीं करना चाहिए । औद्योगिक प्रयोग में लाए जाने वाले जल को पुनः फिल्टर करके हमें उसका इस्तेमाल करना चाहिए तथा पानी की टंकी में वाल्व अवश्य लगाएँ जिससे पानी ओवरफ्लो न हो। इसलिए यह शिक्षा हमें अपने घर के सदस्यों तथा पड़ोसियों को देनी चाहिए जिससे आने वाले भविष्य में कठिनाईयों का सामना न करना पड़े। खेतों में उचित मात्रा में जल का संवहन करें जिससे जल नष्ट भी न हो तथा फसल भी अच्छी हो। इसलिये हम सभी को जल का दुरुपयोग नही करना चाहिए। हमारा सभी का एक ही नारा है कि

''जल ही जीवन है।''

**'जन–जन तक जल पहुँचाना है
जल संरक्षण अपनाना है।''**

'जल संरक्षण – आज के समय में एक महत्त्वपूर्ण विषय है। जल के विषय में कई आन्दोलन हुए हैं। कई लाभदायक भी रहें हैं। अब यह एक चर्चित विषय हो गया और होगा भी क्यों नहीं, जब जल की कमी होगी तो चर्चाएँ तो होगीं ही।

लोग अकारण ही जल बर्बाद करते हैं। बिना यह सोचे कि कितनों की इस जल से प्यास बुझ सकती है। आज गंगा हो या यमुना सबका जल स्तर कम होता जा रहा है। ऐसा नहीं है कि इसके लिए किसी ने कदम नहीं उठाया, बस उस कदम के साथ लोग अपना हाथ नहीं बढ़ाना चाहते । अगर एक इंसान भी जल– संरक्षण की ओर बढ़े तो कई लोगों का पीने का जल सुरक्षित हो सकता है।

हम सिर्फ जल को बर्बाद करते हैं या प्रदूषित करते हैं। जैसे – गंगा नदी में पूजा की मालाएँ और फूल बहा देना, नल खुला छोड़ देना आदि। अगर हम छोटी–छोटी बातों पर ध्यान दें तो कही न कहीं हम मानवता की रक्षा करेंगे। हमारी पृथ्वी में केवल 1% पेय जल है। अगर हम उसकी भी सुरक्षा नहीं कर सकें तो हम जीवन और पृथ्वी को नष्ट कर देंगे।

जल–जीवन का पहलू। कुछ लोगों का एक मात्र सहारा होता है– जल। हमें हर प्रकार से कोशिश करनी चाहिए कि कैसे हम सब जल सुरक्ष में अपना योगदान दे सकें। कुछ निम्नलिखित उपाय इस प्रकार हैं –

- **बर्तनों को माँजते समय नल बंद रखें।**
- **टपकते नलों को तुरन्त ठीक करायें।**
- **घर के सदस्यों को पानी बचाने को कहें।**
- **फसलों की सिंचाई क्यारी बना कर करें।**

ऐसे ही कई उपाय हैं जो जल– संरक्षण में सहयोग देंगे। हमें बस अपनी कोशिश करनी है

अतः जल ही जीवन है। और जीवन को बचााना हमारा परम कर्तव्य है।

''जय हिन्द! जय भारत ।।''

सहिष्णुता

उत्कर्ष तिवारी
11–'बी'

माँ मैं तुझे प्यार तो बहुत करता हूँ
बस तेरे लिए वक्त नहीं निकाल पाता हूँ
बड़ा आदमी बनना है न मुझे
तो बहुत कुछ सहना पड़ता है
बहुत कुछ बर्दाश्त करना पड़ता है
तू समझ रही है न

वो बेचारी क्या समझेगी और क्या बताएगी
इतने सारे शब्द कहाँ से लाएगी
मैं बताता हूँ
कभी पेड़ों से मत पूछना
कि फल देने में वो क्या–क्या सहते हैं
जिसने अपनी कोख से औलाद जन्मी हो

उसे मत बताना
कि बर्दाश्त करना किसे कहते हैं
सोचो वो कष्ट जो भीष्मपितामह को
शर–शैया पर मरने में हुआ था
बदन की सारी हड्डियाँ एक साथ चटक जाए
तब कितना दर्द होगा बस वही दर्द
तुम्हें पैदा करने में हुआ।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताएँ

इन्हीं बच्चों में से कोई नीरज, तो कोई मिल्खा बनेगा ... एडीजे

13 फरवरी 2022 को हमारे विद्यालय में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं का समापन हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित **एडीजे श्री आलोक सिंह** ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आप विद्यार्थियों में से ही आगे चलकर कोई नीरज चोपड़ा बनेगा तो कोई मिल्खा सिंह बनेगा। अपनी क्षमताओं का विकास कीजिए और धैर्य के साथ लक्ष्य की तरफ बढ़ते रहिए। जीवन में शक्ति शौर्य के साथ–साथ सत्य और धैर्य की भी आवश्यकता होती है, जैसा कि आपके विद्यालय के चारों कुंजों के नाम हैं।

ध्यातव्य है कि दीनदयाल विद्यालय के सभी विद्यार्थी चार कुंजो में विभाजित हैं जिन कुंजों के नाम हैं– शक्तिकुंज, शौर्य कुंज, सत्यकुंज और धैर्य कुंज. आज वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के समापन अवसर पर विद्यालय के सभी विद्यार्थी विशाल खेल मैदान में अपने कुंजों के अनुसार खड़े थे. सबसे आगे कुंज का ध्वज लिए हुए उस कुंज का प्रमुख विद्यार्थी था तथा उस कुंज के विद्यार्थी अपने कुंज के अनुरूप उसी रंग के वस्त्र पहने हुए थे। मुख्य अतिथि के आने के बाद एनसीसी के विद्यार्थियों ने पथ संचलन करते हुए सलामी दी। स्वागत तथा दीप प्रज्वलन के बाद नवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने गणेश वंदना प्रस्तुत की। इसके पश्चात् स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। सभी विद्यार्थी गोल प्रांगण में अपने कुंज के अनुसार खड़े हुए थे। फिर पथ संचलन का कार्यक्रम शुरू हुआ जिसमें सबसे आगे विद्यालय के छात्र प्रमुख चिरंजीव अंशुमान चल रहे थे। इसके पीछे एनसीसी के विद्यार्थी कदम से कदम बढ़ाते हुए आगे बढ़ा रहे थे। इसके पीछे शक्तिकुंज के विद्यार्थी थे। शक्ति कुंज शक्ति का प्रतीक है। शक्ति से शिव की ओर शिव से शक्ति की परिपूर्णता होती है, इसीलिए भगवान शंकर के साथ पार्वती जी विराजमान हैं। धर्म परायण पुरुष की शक्ति सज्जनों की रक्षा करने के लिए होती है और दुष्टों को अगर शक्ति प्राप्त हो जाती है तो वह सज्जनों को प्रताड़ित करने के लिए होती है। शक्तिकुंज के पीछे सत्यकुंज के विद्यार्थी कदम से कदम मिलाते हुए आगे बढ़ा रहे थे। धर्मराज युधिष्ठिर सत्य के प्रतीक हैं। मन वचन और कर्म से हमेशा सत्य व्रत का पालन करने के कारण ही युधिष्ठिर को धर्मराज कहा जाता है। सत्य कुंज के पीछे घोष के विद्यार्थी अपने वाद्य बजाते हुए चल रहे थे और उसके बाद धैर्य कुंज के विद्यार्थी थे।

पथ संचलन के बाद मशाल लेकर दौड़ने का कार्यक्रम हुआ जो विद्यालय के खेल प्रमुख छात्र और छात्राओं ने संपादित किया। इसके बाद खेल प्रमुख ने सभी को शपथ दिलाई। 100 मीटर, 200 मीटर तथा रिले रेस का फाइनल हुआ और कुल मिलाकर **20 स्वर्ण पदकों के साथ सत्यकुंज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, 17 स्वर्ण पदकों के साथ शक्तिकुंज ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया 15 स्वर्ण पदकों के साथ शौर्य कुंज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।** 14 स्वर्ण पदक के साथ धैर्य कुंज चौथे स्थान पर रहा।

कुल मिलाकर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में 100 मीटर तथा 400 मीटर की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा सृष्टि सिंह, नवीं कक्षा की छात्रा नंदिनी शुक्ला तथा नवीं कक्षा के ही छात्र विकास कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार से 11वीं कक्षा के छात्र विष्णु गुप्त और छात्रा संस्कृति श्रीवास्तव ने गोला फेंक में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भी बहुत अच्छे ड्रिल के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में श्री योगेंद्र नाथ भार्गव जी (अध्यक्ष विद्यालय प्रबंध समिति), श्रीमती नीतू सिंह जी (प्रबंधक दीनदयाल विद्यालय), श्रीमती उस्मीना केहर जी (सह प्रबंधक, विद्यालय प्रबंध समिति) तथा प्रधानाचार्य श्री राकेश त्रिपाठी जी विशेष रूप से उपस्थित थे। विद्यालय की प्रबंधक **श्रीमती नीतू सिंह** ने अपने उद्‌बोधन में सभी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए विजेता छात्रों को बधाई दी तथा उन्होंने कहा कि हमारा विद्यालय पढ़ाई के साथ–साथ अन्य गतिविधियों में भी बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है तथा बड़ी संख्या में लोग विद्यालय से जुड़ रहे हैं। प्रधानाचार्य **श्री राकेश त्रिपाठी** ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि प्रतिस्पर्धा के अंतिम क्षणों में जो पीड़ा को सहन कर लेता है वह विजयी हो जाता है।

जल संरक्षण

भूगर्भ जल विभाग (उ.प्र.) द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

क्षितिज कुमार
12–'अ'

''जल ही जीवन है, जल है तो कल है।''

जैसा कि हम सभी यह बात जानते हैं कि जल हमारे जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जल के बिना हमारा जीवन संभव नहीं है। चूँकि शरीर 70% पानी से बना है इसलिए हमें अपने शरीर में पानी की मात्रा को बराबर रखने के लिए पानी की आवश्यकता पड़ती है। पानी में कई सारे तत्त्व शामिल होते हैं जैसे मिनरल्स आदि। ये सभी तत्त्व हमारे शरीर में बहुत सारे कार्यों को संभव करते हैं। जल केवल मनुष्यों के लिए ही लाभकारी नहीं होता अपितु यह पूरे संसार में बसने वाले जीवों के लिए भी लाभकारी है। मनुष्यों की ही तरह पेड़–पौधे भी बिना पानी के जीवित नहीं रह सकते हैं अगर हम संक्षेप में कहें तो बिना जल के प्रकृति नियंत्रित नहीं रह सकती, बल्कि पूरा संसार तहस–नहस हो सकता है।

जैसा कि कबीर दास जी ने कहा है कि '' अति का भला ना बोलना, अति की भलि न चूप। अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ।। '' अर्थात् कोई भी चीज जरूरत से ज्यादा हो तो भी नुकसान दायक है तथा कोई भी चीज जरूरत से कम होने पर भी नुकसान दायक होती है। जैसे कि अगर कहीं सूखा पड़ जाए तो भी लोगों को परेशानियाँ झेलनी पड़ेंगी और अगर कही बाढ़ आ जाए तो वहाँ भी लोगों को परेशानियाँ झेलनी पड़ेंगी।

चूँकि पृथ्वी पर 74 % पानी है या लगभग एक तिहाई पानी है परंन्तु पीने योग्य पानी एक प्रतिशत उपलब्ध है जिसमें कुछ प्रतिशत पहाड़ों पर बर्फ के रूप में विद्यमान है। अगर ऐसी स्थिति में कहीं सूखा पड़ जाए तो वहाँ पानी की बहुत समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। अगर यह सब जानते हुए भी हम पानी को बरबाद करेंगे तो हम प्रकृति को नुकसान पहुँचायेंगे और ''जैसी करनी वैसी भरनी ''अर्थात् इसके बदले में हम भी प्रताड़ित होंगे। मनुष्यों और जानवरों में एक अंतर होता है। बुद्धि दोनों के पास होती है मगर विवेक मनुष्यों के पास होता है। मनुष्य अपने इस विवेक की मदद से सही और गलत में फैसला कर लेता है इतना सब कुछ जानने के बाद हमें पानी का संरक्षण करना चाहिए तथा दूसरों को जल संरक्षण के प्रेरित करना चाहिए।

हमारी अपनी दिनचर्या में अनेक ऐसे प्रयोग हैं जल के, जिनमें हम जल को बेवजह व्यर्थ कर देते हैं। जैसे हम पाँच मिनट मंजन करते समय लगभग 20 लीटर पानी बरबाद करते हैं। दो मिनट शेव करते समय 10 लीटर पानी, नहाते / कपड़ा धोते समय आधे घण्टे में 90 लीटर पानी, टॉयलेट में 10 मिनट में 30–40 लीटर पानी, सफाई करते समय 10 मिनट में 90 लीटर पानी, दोपहिया वाहन धोने में 90 लीटर पानी तथा कार धोने में 300 लीटर पानी बरबाद कर देते हैं।

अगर हम अपने विवेक का प्रयोग करें, तो हम पानी की बहुत बचत कर सकते हैं। जैसे गिलास या मग का प्रयोग कर हम ब्रुश करते समय 19.5 लीटर पानी, शेव करते समय 9.75 लीटर पानी बचा सकते हैं। हमें बेवजह नल खुला नहीं छोड़ना चाहिए, नए फ्लश का इस्तेमाल करना चाहिए तथा बाल्टी और मग का प्रयोग करना चाहिए। इसके कारण हम लगभग 90% जल संरक्षण कर सकते हैं, जिसे हम जन–जन तक पहुँचा सकते हैं।

जैसा कि भारत सरकर ने भी कई सारे कार्य जल संरक्षण के लिए किए, कई सारे कदम उठाये जैसे गंगा एक्शन प्लान (गंगा के संरक्षण के लिए) उसी प्रकार ''भूगर्भ जल विभाग (उ0 प्र0)'' ने भी इस निबन्ध प्रतियोगिता को आयोजित कर युवा जन के मन में जल संरक्षण की प्रेरणा को जागृत कर दिया है। इसी प्रकार हम सभी लोगों का ''भूगर्भ जल विभाग (उ0 प्र0) के सहयोग से लक्ष्य यही होना चाहिए कि–

''जन–जन तक जल पहुँचाना है

जल संरक्षण अपनाना है।''

स्वच्छ भारत, हरा भारत

कनिष्क तिवारी
10–'बी'

जीवन की बुनियादी ज़रूरतों में से एक है अपने आप को और अपने आसपास को साफ रखना। यदि कोई देश स्वच्छ है तो नागरिक स्वस्थ्य हैं और इससे एक स्वस्थ राष्ट्र बनता है। स्वच्छता सीधे किसी देश के विकास और सफलता को प्रभावित करती है।

अपने पर्यावरण को स्वच्छ और प्रदूषण से मुक्त बनाने के लिए हमें पर्यावरण को प्रदूषित करने वाली गतिविधियों को न करके अपने आसपास स्वच्छता रखने का प्रयास करना चाहिए।

साफ–सफाई बहुत ही आवश्यक है चाहे वह हमारा घर हो, कार्यस्थल हो या फिर कोई सार्वजनिक स्थल। यह एक सभ्य जीवन शैली की बहुत बुनियादी ज़रूरतों में से एक है। हमारे राष्ट्रपिता 'महात्मा गाँधी' ने 'स्वच्छता ईश्वर भक्ति है' मंत्र दिया और हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर स्वच्छता मिशन की शुरुआत की।

स्वच्छ भारत मिशन– स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छता केवल हमारे निजी सामान या अपने घरों के लिए नहीं है, हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि हम जहाँ भी जाएँ, अपने आसपास को साफ रखें। स्वच्छ भारत मिशन पूरे देश में खुले में शौच के उन्मूलन पर केन्द्रित है और 2 अक्टूबर 2014 में शुरू होने के बाद से इसके लिए प्रयास किए गए हैं। स्वच्छ भारत मिशन पर भारत सरकार द्वारा प्रकाशित आँकड़ों के अनुसार देशभर में मिशन के दौरान 10 करोड़ से अधिक शौचालय बनाए गए हैं। 26 भारतीय राज्यों को शौच मुक्त घोषित किया गया है और इसलिए इस मिशन ने एक आम भारतीय व्यक्ति की जीवनशैली में काफी हद तक सुधार किया है।

आर्थिक वृद्धि

देश की आर्थिक वृद्धि उसके स्वच्छता स्तर से सीधे जुड़ी है। पर्यटक उन देशों की यात्रा करना पसंद करते हैं, जो सौन्दर्य की दृष्टि से आकर्षक हैं और जिनमें खराब और बदसूरत परिवेश नहीं है।

इसलिए यदि हम अपने भारत को स्वच्छ रखते हैं, तो हमारा पर्यटन क्षेत्र बढ़ेगा, जिसके परिणाम स्वरूप देश की अर्थव्यवस्था बढ़ेगी।

इस योजना में लोगों का योगदान

हमारी सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए हर कोशिश कर रही है कि हमारा देश हर गुज़रते दिन से स्वच्छ और अधिक स्वच्छ हो जाए और जिम्मेदार नागरिकों के रूप में, यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है कि हम इस महान मिशन में मदद करने के लिए अपनी ओर से हर संभव कोशिश अवश्य करें। हमारे आसपास की सफाई हमारी जिम्मेदारी है, न केवल तब जब यह हमारे घरों की बात आती है, बल्कि जब यह पार्कों, पर्यटकों के आकर्षण और सार्वजनिक शौचालयों जैसे सार्वजनिक स्थानों की बात आती है। सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता न केवल हमारे देशवासियों के जीवन स्तर को बेहतर बनाता है बल्कि यह विदेशों से हमें मिलने वाले पर्यटक को भारत के बारे में एक बहुत ही सकारात्मक छवि भी देता है।

स्वच्छ भारत, हरा भारत का लोगों को संदेश

हमारे बुजुर्गों ने हमेशा स्वच्छता को आदत बनाने पर ज़ोर दिया है क्योंकि वे जानते हैं कि यह लंबे समय में स्वस्थ और रोग मुक्त जीवनशैली के लिए महत्त्वपूर्ण है। पूरे देश में आसपास की पूरी सफाई के बाद सभी धार्मिक समारोह किए जाते हैं क्योंकि हमारा धर्म भी स्वच्छता का महत्त्व सिखाता है।

स्वच्छ भारत, हरा भारत का प्रभाव

भारतीय लोगों में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला है। स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत के बाद ज्यादा से ज्यादा लोग स्वच्छता अभियानों में आगे आ रहे हैं और लोगों के छोटे–छोटे कार्य "स्वच्छ भारत, ड्रीम भारत" विजन की उपलब्धि में मदद कर रहे हैं। लोगों को सार्वजनिक स्थानों में और सामान्य रूप से अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में अधिक जानकारी है। समुद्र तटों और अन्य स्थानों पर स्वच्छता अभियान आयोजित किए जा रहे हैं। सरकार की ओर से बिना काम या बिना किसी सहारे के भी आम लोगों द्वारा ज़्यादा से ज़्यादा स्थानों की सफाई की जा रही है। मानसिकता में इस क्रांतिकारी बदलाव और देश की बेहतरी के लिए अपनी सरकार को धन्यवाद देता हूँ।

एक नया सवेरा लायेंगे,
पूरे भारत को स्वच्छ और सुंदर बनायेंगे।।

"

यदि रक्त बूँद भर भी कहीं होगी बदन में
नस एक भी फड़कती होगी समस्त तन में
यदि एक भी बाकी रहेगी तरंग मन में
हर एक साँस पर हम
आगे बढ़े चलेंगे।
वह लक्ष्य सामने हैं
पीछे नहीं टलेंगे।।

.... राम नरेश त्रिपाठी "

मुझे कुछ कर दिखाना है

आमिर हमज़ा
10–'ई'

मुझे कुछ कर दिखाना है,
मिटाकर सबका अंधेरा
सबको उजाले में लाना है
मुझे कुछ कर दिखाना है।।
मेरा पसीना रेत में फूल खिलायेगा।
समुद्र की गहराई को नापेगा।
प्रतिपक्षियों को अपना काफिला दिखाना है
मुझे कुछ कर दिखाना है।।
हमको इंसानियत का पाठ पढ़ाना है,
बेशक है मुश्किलें परन्तु अपने आप को स्वर्ग बनाना है।
रावण को जीतकर
राम में दिल लगाना है।
उनके विचारों का सबको आचरण करवाना है
मुझे कुछ कर दिखाना है
मुझे कुछ कर दिखाना है।।

ममता का आँचल

श्रेया चतुर्वेदी
9,'डी'

ममता के आँचल से सींचा है किनारा,
मृदुल जल के दर्पण में मिला है सहारा।
उन्नति पर अग्रसर वो राह डगमगाती थी,
डाँट से जब डरकर हर रूह काँप जाती थी,
संध्या में दिया जलाकर किया जीवन जगमग सारा।
पक्षियों के पर लगाकर दिया व्योम को स्वर्णित तारा।।
कहता है सूरज से सागर का सवेरा,
तुम हर क्षण ऊर्जा से साथ देना मेरा।
सपने टूटे, हिम्मत, टूटी साथ सभी का छूटा
आशा की भाषा ने तब दिखाया रास्ता,
आक्रोश की बंजर सतह पर जब नहीं था प्रेम का अंकुर
तब ममता के आँचल से सींचा सूखे मन का खेत
जीवन का गूढ़ सत्य है
माँ! तुम्हारा आँचल एक अदभुत सितारा है।

बेलौस

योगेश्वर सिंह चौहान
12–'डी'

खाली पड़ी जिदंगी में अब कौन वजह ढूँढ़े,
जब सूरज ही है सामने तो कौन दिया ढूँढ़े।
अब कौन रोज–रोज खुदा ढूँढ़े,
जिसको है तलाश वही ढूँढ़े।
रात आयी ही है तो चाँदनी का मजा लो,
अब आधी रात में क्यों सुबह ढूँढ़ें।
एक ही है ज़िंदगी बेवजह खुल के जिओ,
रोज क्यों जीने की वजह ढूँढ़ें।
चलते फिरते इन पत्थरों के शहर में,
एक पत्थर दूसरे पत्थर में भगवान् ढूँढ़ें।
धरती को जन्नत बनाना है अगर,
तो पहले हर इंसान खुद में इंसान ढूँढ़े।

बेटी

श्रेया चतुर्वेदी
10–'डी'

जब– जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नये नये रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार–बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।

जिन्दगी

अंकिता अग्निहोत्री
11–'बी'

पाने को कुछ नहीं,
ले जाने को कुछ नहीं,
उड़ जाएँगे एक दिन
तस्वीर से रंगों की तरह
हम वक्त की टहनी पर
बैठे हैं परिंदों की तरह
खटखटाते रहिए दरवाजा....
एक दूसरे के मन का,
मुलाकातें न सही
आहटें आती रहनी चाहिए
ना राज है....." जिन्दगी"
ना नाराज है....." जिन्दगी"
बस जो है वो आज है....."जिन्दगी"

मेरी प्रिय पुस्तक

क्षितिज कुमार
12–'अ'

विद्यार्थी जीवन में पुस्तकें बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बिना पुस्तकों के विद्यार्थी अधूरा है। माता, पिता और गुरु के अलावा अगर हमें कोई कुछ सिखाता है, तो वह है श्रेष्ठ पुस्तकें। कुछ पुस्तकें हम मनोरंजन के लिए भी पढ़ते हैं। मेरी प्रिय पुस्तक है आई.ए.एस. निशांत जैन द्वारा लिखी गई पुस्तक "मुझे बनना है यूपीएससी टॉपर"। मेरा सपना एक आईएएस ऑफिसर बनना है इसलिए मैंने यह किताब चुनी। मेरे मन में इस किताब को पढ़ने की तीव्र अभिलाषा जगी और मैंने इसे पढ़ डाला। यह पुस्तक हमें भय पर विजय पाने के लिए प्रेरित करती है। इसमें अनेक वीर रस की कविताएँ भी दी गई हैं। निशांत जी ने इस पुस्तक के माध्यम से अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलू के बारे में बताया जो खुद में प्रेरणा स्रोत हैं। इन्होंने कई अन्य आईएएस अफसरों की सफलताओं के रहस्यों का वर्णन भी किया है। इस किताब का सबसे रोचक तथ्य तब शुरू होता है जब वे अपनी ट्रेनिंग का वर्णन करते हैं। वे ट्रेनिंग की एक झलक दिखाते हुए फाउंडेशन कोर्स के बारे में बताते हैं भारत दर्शन कराते हैं, अपनी धरती अपने लोगों के बारे में बताते हैं तथा राजस्थान दर्शन कराते हैं। वह हमको बताते हैं कि हमको यूपीएससी की तैयारी क्यों करनी चाहिए और किस प्रकार से करनी चाहिए। हमको तैयारी के लिए क्या पढ़ना चाहिए और क्या नहीं पढ़ना चाहिए। इस तरह से उन्होंने सभी आयामों पर प्रकाश डाला है। वह हमें प्रारंभिक तथा मुख्य परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा निबंध में सर्वश्रेष्ठ अंक पाने की विधियां बताते हैं। वे वैकल्पिक विषय को गेम चेंजर बताकर इसकी तैयारी के विविध आयामों के बारे में समझाते हैं । वह हमें समाचार पत्र में क्या और कैसे पढ़ना चाहिए इस बारे में विस्तार से बताते हैं । निशांत जी हमें भाषा पर अधिकार बनाने के लिए कहते हैं और वह कहते हैं कि भाषा पर जो अधिकार बना लेता है वही अधिकारी बनता है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात है उत्कृष्ट लेखन कौशल। इस किताब से मैंने एक और महत्त्वपूर्ण बात सीखी और वह है– सुंदर चरित्र और मधुर व्यवहार, हमें खुद को कैसे अभिव्यक्त करना है इस बारे में विस्तार से निशांत जी ने इस पुस्तक में बताया है तथा अन्य कैरियर विकल्पों के बारे में भी प्रकाश डाला है। यह किताब मुझे बहुत प्रिय है क्योंकि इसने मुझे जीवन जीने की कला सिखाने के साथ–साथ सफलता के तीन मूल मंत्र भी दिए हैं। किसी कार्य को करने की दृढ़ता, धैर्य और मन में दृढ़ संकल्प का होना।

आँच तन में

कौस्तुभ श्री त्रिवेदी
10–'सी'

आँच तन में
लाल लपटे हैं लपेटे
लाल अंगारों में लिपटा,
वो जो लेटा जल रहा है
तन जो उसका मर चुका है।

एक वो जो सो रहा है,
और वो जो रो रहा है,
अब तो बस कोयला बचा है,
अब धू–धू सुलग रहा है।

आँच लगती तन में उसके,
आँच लगती मन में उसके,
एक वो जो सो रहा है,
और वो जो जग रहा है,
मन भी उसका कँप रहा है।

लीन तन अब हो चुका है,
उसका जो अब मर चुका है,
बाकी तो बस राख ही है,
याद सही पर खाक ही है।

The Editorial Board

Dear Reader

Greetings to you!

Now a days in the rapidly changing cultural environment, education system is confronting a deluge of problems, challenges and opportunities. Very few have fully realised the wealth of sympathy, kindness and generosity hidden in the soul of child. The effort of every educator should be to unlock that treasure and Pt. Deen Dayal Upadhyaya Sanatan Dharma Vidyalaya Kanpur is an excellent example where everyone strives indefatigably for this. Our institution has been nurturing young minds of the country for the past fifty years with the belief that "The heart of education is the education of the heart." We are pleased to present to you the Golden Jubilee Issue of 'Neerajan', the school magazine. Enjoy every moment you have because in life there are not rewinds, only flashbacks. For you we have worked hard to bring up an exhilarating flashbacks, inception of the school, its history and the events and achievements during the 50 years journey. We have for you from the students a wide range of poetry, riddles, and some inspirational articles.

Wishing our readers all the best.

The Editorial Board ....

"The essence of Ekatma Manavvad lies in the recognition of the intrinsic dignity and worth of every human being, irrespective of caste, creed or status."

...... Pt. Deendayal Upadhyaya Ji

Tribute to Booji

Mrs. Rekha Nigam
English Department

A life so beautiful deserves a special celebration Maa Sushila Narendrajeet Singh, the founder of this school, was a tresured soul who can never be forgotten. We honour and pay tribute to the noble soul, lovingly called 'BOOJI'.

Smt. Susheela Narendrajeet Singh ji (Booji)

Background : Should attendance be made compulsory for students?

Mamta Srivastava
Department of Economics

Many schools of India made 75% attendance per subject in every semester compulsory for students as a criteria for eligibility to appear for exams.

The decision was also backed by Bombay High Court in 2002 in a case, where 46 students were not allowed to appear for exams due to poor attendance.

In Favour :-

- Good attendance is needed to develop a strong sense of community in a classroom and to encourage a healthy sense of class participation.
- Students learn self-discipline due to mandatory attendance, which will help them in their professional as well as personal life.
- Compulsory attendance will improve overall performance of the students, and will guarantee their satisfactory results and will also encourage socialization.
- Getting education is not a cheap endeavor, so it's a waste of money to skip classes and not learning the things that they can.
- Enforcing mandatory attendance could actually be treating students as adults. Once students get a job, they would be allowed only a certain amount of vacation and absence. So, this is the way to prepare students for 'real world' and reinforce the sense of responsibility.
- To make sure they get to class while meeting all their other obligations, students will have to develope perfect time management skills.
- In the process of learning how to balance all their responsibilities, students could become better at multi-tasking as well.
- Many colleges excuse absence when students attend and participate in academic events, go on educational tours or similar. This way students will be able to do extra-curricular activities.

Colonial laws that are still prevalent in India

Komal Jain
H.O.D. (History)

Introduction:

The British Government designed several legislations during their rule in India in order to run the country at their own whims. These legislations were anything but beneficial to the people of the country, they aimed at exploiting the resources of India and suppressing any rebellion by the masses against the British rulers.

Unfortunately, some of these legislations are still retained by the Indian Lawmakers and are very much relevant to date, so much so that these laws are a part of our everyday routine. This article aims to deal with such legislations and how some of them are unethical and need doing away with.

Impact of Colonial rule on independent India's legal system:

The emergence of independent India was quickly followed by the necessity for an adequate governance system that was both indigenous in origin and acceptable and attentive to the requirements and customs of the vast number of castes, classes, religious, and linguistic communities it was attempting to unite. Unsurprisingly, the continuation of the British-created court system was a compromise formula that worked well at the time for the new government. A number of these legal codes, which were based on European culture and traditions, were embraced by Indian society and continued to exist long after the Colonial powers had left.

Ten years post independence, the Law Commission of India in its fifth report on the British Statutes applicable in the country suggested that India could now have a new legal code and in case a British statute proves to be useful, a corresponding India statute, having necessary provisions from the British Law, could be formulated in order to replace it.

Despite the fact that 1200 archaic regulations were repealed in bulk, Indians continue to follow several outdated laws that date back to the British Colonial period. The Indian judiciary relies on a large number of legislations that date back to Colonial times.

Colonial laws that are still in practice in India:

Colonial rule left its legacy in the form of various acts and rules that are still in continuance in India and are being rigorously implemented. Following are some of the laws which have Colonial footprints:

The Dramatic Performance Act, 1876

India used theatre as a weapon to express resistance to Colonial rule in the 18th century. Threatened by social revolution, the British government enacted the Dramatic Performance Act in 1876, prohibiting "scandalous" and "defamatory" dramatic performances. Performances that were likely to elicit anti-government sentiment or that were ikely to corrupt audience members were prohibited.

The statute still survives seventy-six years after independence, and many states, with the exception of Delhi and West Bengal, introduced and amended it after 1947.

The Khakee dressing:

The Colonial officer Sir Harry Bernet is known to be behind the idea of the Khakee dressing worn by Police officials in the country. The uniform has been prevalent since 1847. The word 'Khaak' means 'dust, soil, and ash,' implying that the person wearing Khakee puts his life on the line and is brave enough to turn to ashes while fulfilling his duty.

Left-handed traffic arrangement:

In 1800, the British introduced this system in India. We still drive and walk on the left side of the road under this system of transportation. Contrary to this, numerous countries around the world follow the right-hand-side-of-the-road regulation. Only a few countries in the world, including India, use the left-handed transportation system.

Salt Cess Act, 1954

The Salt Satyagraha was a notable landmark in the history of India. Though his Satyagraha was against the salt tax, you might be shocked to learn that the 'Salt Cess Tax Act of 1953' is still in effect today. This tax is levied as a sub-tax to cover an exclusive administrative expense. It is levied at a rate of 14 paisa per kilogram of body weight. This tax is levied on salt factories that are either privately held or owned by the government.

In the fiscal year 2013-2014, the government was able to collect around $ 538,000 which was only half of the total cost of collecting this tax, thanks to this statute. Due to the high cost of collection, a committee was formed to look into the practicality of continuing the tax, but they were unable to reach a decision. The salt industry in India is responsible for providing employment to about 1 .4 lakh individuals per day. Besides this, 92% of the salt production is carried out by private entities.

The Indian Police Act, 1861

Following the rebellion of 1857, the British drafted this statute. Before implementing this law, the British government's major goal was to create a police force capable of dealing with any government uprising. All powers were centralised in the hands of the state, which acted as a dictatorial administration under this Act. However, despite the fact that India has declared itself a sovereign republic, this act is surprisingly still in force.

Even though Maharashtra, Gujarat, Kerala and Delhi have passed their own legislation in this regard, these laws very much appear to be derived from the original Act of 1861. According to the Police Act, 1861, police are understate control, i.e. Inspector General/Director General will act according to the order of the Chief Minister, and can be removed from their post by the order of the Chief Minister.

The Indian Evidence Act, 1872

The British Government passed this Act making it applicable to all court proceedings including the Court Martial. However, the provisions of this Act are not applicable to arbitration proceedings. This Act specifies which objects can be used as evidence and which must be reported to the court of law in advance. Hence, even after 149 years, this Act continues to play a significant part in various legislations, even if it is in modified forms.

The Income Tax Act, 1961

The laws related to Income Tax in India are provided for undei this Act. This statute specifies how taxes are levied, collected, and the basic structure of the tax. Though the government intended to repeal this Act together with the Wealth Tax Act of 1 957 by enacting the Direct Tax Code, it was not repealed when the Wealth Tax Act was abolished.

The most contentious section of the Income Tax Act of 1961 is Section 13-A. The purpose of this Act is to charge income tax on the revenue of political parties. Also, any organisation that receives a donation of $10,000 or more from an individual or a group must disclose the source of its funds. Surprisingly, all political parties claim to have received donations of less than Rs. 10,000 per person.

The Foreigners Act, 1946

This Act was passed prior to the country's independence. Any person who is not an Indian citizen is

classified as a foreigner under this Act. The individual will have to prove whether or not he or she is a foreigner. If someone suspects a foreigner is staying in India Illegally for longer than permissible, they must report it to the local police station within 24 hours of receiving the information. Otherwise, that person will be subjected to legal action.

The Transfer of Property Act, 1882

The Transfer of Property Act governs all the legal provisions relating to the transfer of movable and immovable property in India. This Act was also legislated by the British Government. Transfer of Property, according to this Act, entails giving property to one or more individuals or oneself. Property can be transferred at present or in the future.

Indian Penal Code, 1860

The Indian Penal Code is the official criminal code of India intended to cover all the aspects surrounding criminal law. The suggestions of the first Law Commission in 1860 were used to draft the Indian Penal Code. Under the chairmanship of Sir Thomas Mckaley, the first law commission was constituted in India. Under the British administration, the Indian Penal Code was enacted in 1862. The code defines crimes and the penalties stipulated for those crimes under Indian Law.

Laws repealed in the UK but still in practice in India:

The Lok Sabha enacted the Repealing and Amending Bill and the Repealing and Amending (Second) Bill in December 2017, repealing 245 obsolete and archaic laws and identifying almost 1,800 more.

For example, the Dramatic Performance Act of 1876, which restricted theatrical representation in India and was originally, enacted by the Raj to regulate theatre, was overturned.

However, there are still several outdated and seldom used laws in India. Hereis a list of five problematic, archaic laws that are still in effect in Independent india but have been repealed in the United Kingdom.

Sedition:

Sedition is defined under Section 124A of the Indian Penal Code as "hatred or contempt excited against the government" by means of words, written or spoken, or through visible representation.

The law of sedition has received mass criticism on the ground that it stifles the freedom of speech and expression of the citizens of a country. For the same reasons, this law was abolished in the UK in 2009. However, it continues to be in force in India.

The law's objective in the 1870s was to arrest and convict revolutionary nationalists who spoke out against the Colonial government's legitimacy. Surprisingly, the Colonial authorities amended the legislation in India to charge VD Savarkar with sedition, thereby banning his book and "seditious" pamphlet.

The sedition law is still rigorously put to force in India, with 326 sedition cases being filed in the period of five years from 2014-1 9. Out of these 326 sedition cases, only six were convicted, hence, it is evident there has been exploitative use of this law.

In a society where freedom of opinion and expression was protected under the Human Rights Act of 1998, the law surrounding seditious libel was considered arcane in the United Kingdom. It was regarded as a vestige of a time when freedom of expression was not regarded as a right, and so sedition was no longer considered a crime.

Blasphemy:

Blasphemy is punishable under Section 295A of the IPC which describes the penalty for deliberate and malicious acts which are intended to outrage the religious feelings of any class by means of

insulting its religion or religious beliefs. Its roots can be traced back to communal hostilities between Hindus and Muslims in the 1 920s, when the Rangeela Rasool magazine (supposedly) insulted Prophet Mohammed, causing chaos and conflict. To preserve other religions and foster harmony, Section 295A was seen as a "need of the hour."

Until 2008, blasphemy or blasphemy was a potential offence in the United Kingdom, if any published piece of text attacked the Bible or Christianity and harmed public order. It could even lead to the death penalty. In the 1980s, a movement to repeal the law began, coinciding with attempts by Muslims in the United Kingdom to use blasphemy laws against Salman Rushdie's Satanic Verses.

The UK Law Commission proposed that the law be repealed in 1985, citing the right to freedom of expression as well as the law's insignificance in modern society, which is no longer founded on religion. The law was abolished in 2008, with the UK government claiming that rarely used laws like blasphemy served no beneficial purpose and instead encouraged religious organisations to attempt to restrict artists.

Unlawful Assembly:

new legal draft. If there is an assembly of five or more persons who have the common intent to show criminal force or to resist the execution of any law, then that assembly of persons becomes unlawful under Section 141 of the IPC. This provision of the law is often considered vague and has on several occasions led to the prohibition of peaceful gathering, issued under Section 144 of the Criminal Procedure Code.

The Colonial authority utilised Section 144, which was enacted in 1860, to suppress nationalist revolutionaries' protests and prevent riots. Section 144 allows the local magistrate extensive authority to call for an end to any demonstration, peaceful or otherwise. This Section can be seen too frequently imposed in recent times, some examples include the Delhi Riots of 2020 Ayodhya verdict. Several State Governments have also imposed Section 144 in their states in order to curb the spread of COVID-19.

In the United Kingdom, the Public Order Act of 1986 repealed illegal assembly, rout, and riot in an attempt to make the law more comprehensive and easy to understand. Nonetheless, the ambiguous language of Section 141 has led to widespread use of the prohibitive order in India.

Death Penalty:

The death penalty is another law that has made its way into the legal system of India by way of the British-drafted Indian Penal Code (IPC). Provisions of the PC have made numerous crimes punishable by death.

The death penalty was abolished in the United Kingdom in 1998, except in times of war. It signed the 13th Protocol of the European Convention on Human Rights in 2003, abolishing the death sentence in its entirety.

However, the death penalty jurisprudence in India has grown significantly over time as a result of judicial interpretation. Following Supreme Court precedent, the death sentence is only used for the most heinous of criminal offences in the rarest of rare cases.

The term "rarest of rare" has yet to be defined objectively. Instead, the Supreme Court has established factors that a judge must consider when assessing whether an offender deserves to be executed on a case-by-case basis. As a result, the presiding judge's decision on whether or not to impose the death penalty is ultimately up to him.

As per a 2019 report, India is one of the 56 countries that have retained the death penalty as against 142 countries that decided to abolish it.

Besides these, the criminalisation of homosexuality under Section 377 of IPC and adultery under Section 497 of the IPC was also adopted from the Colonial era. However, in September 2018, the Supreme Court struck down these sections of the IPC.

A hint of Colonial legacy in Indian judiciary :

It is a well-established fact that the British Colonial rule has majorly influenced the present legal environment in India, ranging from dress codes to the provisions of statutes. The Indian judicial system is somehow unable to let go of the Colonial legacy. Over years, there have been numerous debates as to whether it is time to move on from the Colonial conventions pushed on the people of the country decades ago. Due to its unsuitability in Indian weather, the necessary coat-and-gown dress rule for lawyers has been criticised. In some Courts, the practise of having mace-bearers march ahead of judges has sparked lively debate.

SeniorAdvocate NL Rajah, a member of the Madras High Court's Heritage Committee, points out that a Colonial psyche persists throughout the Indian Judicial System.

The Colonial mindset of the British was to protect its subjects only on the condition that they surrender their rights to the State. In other words, Justice coLild not be demanded, rather the State had the authority to allow it as a matter of concession. The way pleadings are written in Court, the way the Court is addressed, and, most crucially, the Court's accessibility is all evidence of this Colonial mindset left behind by the British rulers. Justice is prayed for in the most humble terms, not demanded. Judges are still referred to as Lordships and Ladyships. The average petitioner, as was the case with the Privy Council during British Colonial authority, is often unable to afford the costs of pursuing suit in remote Higher Courts. Furthermore, judges are rendered helpless by the growing bacKlog of cases, even if they wish to assist the ordinary litigant.

Because of the large number of cases pending, courts are deciding whether or not to give relief based on the severity of the violation rather than the violation itself. The fact that the law ignores trivial cases is another indication of the Colonial mindset.

Is India ready to move on from Colonial laws

The abolition of Section 377 and Section 497 of the IPC were landmark moves on the part of the, Supreme Court in order to push the legal system forward towards a more inclusive society. However, there are still laws and statutes that were given to the country by its Colonial rulers and continue to be used and applied everyday in a law-abiding citizen's life. While some of these laws do not impose any threat, laws like Sedition and Blasphemy still carry the potential to be misused by the leaders of the country in order to suppress the fundamental right of Freedom of speech and expression. Besides these, the fact that dress codes prescribed by the British rulers are still being devotedly followed by the Guardians of the law is classic evidence of the fact that India might not just yet be ready to move on from the Colonial legacy bestowed upon it.

Conclusion

The Britishers stayed in the country long enough to control and shape the legal system that is followed today. While some of the laws have only assisted the lawmakers of the country to justifiably draft the law of the land, some of the archaic laws which are only aimed at exploiting the accused need doing away with. Overall, these British laws have done more bad than good, and seventy-six years after the independence of the country, there is no point in following the laws that the UK itself has abolished.

Hard Work VS Smart Work

Mamta Srivastava
Department of Economics

SMART WORK :

Advantages of Smart work :

Smart work is intellectual. Hence it improves our innovative and creative thinking skills. Smart work improves productivity. It teaches time management skills.

Because of smart work, we now have more free time. For example, modern transport systems reduced effort and time in moving to another place. Smart work forces us to concentrate on work fully because it demands mental presence too.

Disadvantages of Smart work :

Smart work may make us lazy, as we get used to doing less work and get more output. Mere smart work may not yield results. "Hard work beats talent when talent doesn't work hard". Hence we cannot completely rely on smart work. To work smartly, at first we need knowledge about the work, which comes only with hard work and experience. We cannot teach hard work to smart working persons if they are not willing to work hard.

HARD WORK :

Advantages of Hard work :

Through hard work, we gain knowledge and experience. This will help us to do smart work, that means we can analyse shortcuts to do the same amount of work. Hard work teaches us patience and discipline. The result of hard work will be more appealing to us because we put a lot of effort into achieving it. Everyone will choose hardworking persons to work under them. We can teach smart work to hard-working people and we can be sure about the improved productivity because they work hard.

Disadvantages of Hard work:

Hard work may become boring and monotonous. It consumes a lot of time and effort. If we fail after doing so much hard work, it'll be very difficult to cope up with it.

Conclusion :

We need hard as well as smart to achieve success in our lives. Only one of both will not be sufficent in this modern world and hence both hard work and smart work are essential to succeed in life.

Winners before Creation

Yashraj Dubey
12th-B

"Career is made by warriors

and warriors are prenatally valiant"

How fast you have forgotten that, you are the winner among 250 million competitors and you won the race at that instant when you really don't exist. So why are you doubting yourself that you can't do anything after being that much energetic from that phase of your life.

Competition doesn't show our potential and capability. It shows that we are not prepared but it also gives us a message as well be prepared next time, come back and bang with all your enthusiasm, hard work and passion.

The wall between success and failure is "I can't". If you remove a single lettter 't' from these two words in your life, all the things your life become attainable and double. So from this thought we can achieve anything in our life.

Positive Thinking.....

Aditi Pandey
10th-D

Positive thinking refers to a belief or mental attitude which makes us think that good things will happen eventually and our efforts will pay off sooner or later. It is the opposite of negative thinking which makes our mind full of stress and fear. Thus, an article on positive thinking will show how it reinforces thought like optimism, hope and wonders. Let it be clear that positive thinking does not mean you do not notice the bad things in life. As a result, it helps you live longer. It is because you'll be free from disease that is formed due to stress, anxiety and more.... More ever, it is also the key to success. It means, success becomes easier when you don't bash yourself up. Moreover, we also need to implement positive thinking techniques which will help us learn from our failures and stay focused. As positive thinking plays an essential role in our lives, we must make sure to adopt in our lives.

" I am not what happened to me

I am what I Choose to become"

Mistakes : Blessing in Disguise

Vaishali Tiwari
10th-D

How often do we exclaim : "That was mistake". That bewildered expression of regret and panic gets replayed through life. Some mistakes we forget, other we don't. The mistake can be as mundane as forgetting to the geyser off or to pick up your passport from the air counter. Absent mindedness, preoccupation, distraction, carelessness, nervousness..... there are many excuses to justify mistakes. Some mistakes are irreversible then, is there room for hope?

Infact, there are no mistakes, only experiences. There are no problems only challenges. Every experience teaches us something in life. Every mistake inspires re-examination of the past and instrospection. The experience is humbling and it makes us wiser. That is, if every mistake is regarded as an experience and not as a source of self-pity or self-accusal. Many times people are unable to reconcile with change moulded in the blame culture and rooted in the past, they failed to realise the life time benifits they receive from changes.

"To the weak, problems are stumbling blocks or obstacles. To the Brave, they are stepping stones". A young man felt disappointed when he failed in an interview for a corporate job. At that point of time he felt rejected. Today, looking back he says, "It was a blessing in disguise. I would have never reached this far" Some mistakes bring a very important message. Believe and achieve ! And in order to do so, faith is essential. It is the triple faith that men need today-faith in oneself, faith in the world around us, and above all faith in God!

The Importance of Education

Aishwarya Srivastava
6th-D

Education plays a vital role in our life . It differentiates us from the rest of the creatures on earth and helps us to improve ourselves from within. It nourishes our character and broadens our perspective towards life.

Education helps to transform an individual to be better and responsible citizen. All the power and progress achieved by human beings is due to education It teaches us morals, justice, ethics and tolerance. It is because of education that a person can lead a successful and self - dependent life.

Overcoming fears - An Essential Skill

Vrisha Pandey
11th-D

Fear is simply you are livinig with life, you are having in your mind. As a student we fear a lot. We are afraid to fail in exams, we are afraid of different subjects, we fear that how would we manage things. Thus our lives are significantly formed by fears. We can not escape from experince of fear and pain instead we have to learn to overcome it,

Scientifically fear is defined as an emotion induced by a perceived threat which causes an individual to experience anxiety and physiological changes such as increased heart rate, fear of examination, fear of failure is most common fear in our generation.

Students prepare for exams days and months in advance. The day of exam is always awaited with mixed feeling of fear among students. The fear of examination is unawoidable thus we must develop a skill to overcome fear not only in exams but throughout our life. The person must have the ability to identify dancer and make choice to either confront that fear or flee from the situation. That choice is completly up to the victim and depends on the person.

Thus it is very very important for us to learn this skill to overcome fear. Some of the tips to develop this skill are :-

1. **Acknowledge the fear :** First step in overcoming fear is to admit that it exists. We all have fears, it's human nature. So denying or ignoring them doesn't make them go away.
2. **Analyze it :** The second step involve analyzing your fear. Once you've determined what that might be, ask yourself you can deal with or overcome it. More often than not, once you go through the process of analyzing it, the fear isn't as scary as you originally imagined.
3. **Facing your fears :** This involves confronting the things that we are afraid of. This can help us to understand our fears and learn how to deal with them.
4. **Be pursistent :** Do the things you fear over and over again. By doing it repeatedly it loses its power over you and you become less vulnerable to it.
5. **Practicing relaxation tecniques :** This involves learning how to relax your body and mind. This helps us to cope better with fear and anxiety. Meditation & Yoga can be very helpful.

Thus be courageous and do not let your fear to rule you
"Life is a balance of fear and overcoming it."

Mission

We build students of high academic achievement, intellectual curiosity and strong moral character who are responsible and respectful not only towards their family but also for their society and above all for their motherland. We nurture them to grow as human beings who extend their hands to help others and take a stand for the rights of the entire mankind.

Vision

We envision our students as people of dignity, integrity and compassion who are intelligent and confident to deal with the challenges of the world, equipped with extra ordinary life skills, be it planning, organising, decision making, reasoning and analyzing.

Educational Degradation Due to Covid-19

Stuti Verma
11th-B

With the resurgence in covid cases once again, world seems to return back to square one. Once again, various sectors are coming back to methods that were established back in 2020. Not only financially, but education has also got affected enormously. With shifting of school learning to online studies, this has undoubtedly caused a major change in creative thinking and learning in children, adolescents to be more specific. If academic consideration is kept aside, the lockdown has implemented in various countries led to a notable emotional impact on the population worldwide, with people experiencing important symptoms of anxiety, depression and stress. Various studies have revealed a notable fact that this has been observed more clearly in adolescent. Considering the usual high prevalence of mental disorders in university and school students before the pandemic, before 2020 started, it was reasonable to expect that the COVID-19 lockdown would cause a notable impact on this community because of the challenges commonly associated with the transition to adulthood and the frequent economic and material difficulties in this vulnerable population. As a result of lockdown and closure of schools and colleges, students faced stress, depression and anxiety due to changes in teaching conditions and effects on their social network lives, such as friendships, group study habits and emotional support. Although knowledge on the overall impact on the mental health of students facing this contagious disease is scarce, some fidings on stress levels have revealed that still it can be fatal for some of them . As a matter of fact, this major change is affecting their approach towards exams, which has become very impertinent for them. Students fall for faulty methods, and don't understand the long term impact it can have on further when they apply for jobs and interviews in future. This knowledge offers the opportunity to implement suggestions or recommendations at local and regional levels to combat the effects of the pandemic on students' mental health. But even after knowing all the above facts that I have mentioned, the biggest is to cope up with this problem. As a NEET Aspirant, I truly and very well understand the teenage psychology, which says that it is difficult to face these problems, though this is very common and almost teenager has to go through this phase, and with growing age it automatically gets inculcated in us. With growing number of competitors, you may feel pressure to get good grades and impress your contenders, teachers and family. And this even leads to the fear of scoring low or below our expectations. All of this can be managed by forming a perfect schedule or daily tasks list, regular revision and on top of that, keeping a constant faith in yourself. Consulting your teachers for doubts you're facing in various subjects as in a one-on-one interaction helps us to understand a particular topic in depth. Plan your future, introspect and try to understand the field

that grabs your interest. And best way to inquire is to talk to your parents, and if you feel they don't have much knowledge about the field you wish for, then in today's time we have an ease to access so many academic counsellors. Stress is inevitable, but it shouldn't dominate your life. Your approach towards managing should be positive. And when this comes into action, most of the students go on into thinking for unhealthier and fatal methodology like consumption of drugs and alcohol. This might give us a sense of pleasure for short duration, but then on the other terminal it will begin to cut short our lifetime, and their after effects start to wear off, you may find yourself feeling more stressed than before. For instance, researchers have found that drinking alcohol can actually exacerbate stress. In short words, it is a recipe for disaster. One of the problems that surface up is over or under eat. Either way, you should try to maintain your regular eating habits when you feel stressed, as eating too much or too little can have a lasting negative effect on your physical health. Proper time management is one of the most effective stress-relieving techniques. Students must be able to design and stick to a timetable. Choose a relaxing break between work and study, even if it's just taking out time to breathe. Developing a' schedule and managing time properly indicates goals and priorities. Always students should try to plan ahead and avoid procrastination, and then they can manage stress effectively. Surround yourself with people who you like to spend time with and enjoy their company. Stress can also get worse if a person feels lonely. By letting out all your thoughts to someone you trust, you immediately feel much better. In addition to the health benefits of stress management and relaxation, Students can also enjoy the benefits of improved relationships with friends ,family, parents and teachers. Health is a major concern of students, and therefore the promotion of healthy dietary and lifestyle habits should be encouraged. Additionally, teachers, parents and even students themselves should be aware that undue expectations about academic achievement can lead to stress. Finally, regular study habits and adequate preparation can help students to avoid stress and make their learning effective.

Role of commerce in economics development of country

Shilpi Pal
12th-C

The role of commerce in economic development is very important and our goal is to define career opportunities in commerce. If we define commerce. Commerce is the organisation that deal with exchanging goods between industries and the industrial world. But in a broader sense commerce is the subject related to the exchange of goods and services and activities directly and indirectly associated with the exchange.

Benefits of Commerce in economic development.

1. Commerce tries to satisfy human requirements :

As the world is changing human needs and wants are also increasing. They are some needs that are called essentials and some are called secondary. Commerce is one of the field that brings enhancement to exchange one product into another, But now because of the advancement we can get opportunity to grab anything from anywhere in the world.

2. Commerce is best option to increase the standard of living :

Commerce increase the standard of living people in simple words, if we define the standard of living, it means the quality of living enjoyed by society member. When people more products to their living it will enhance their standard of living. To use a variety of products, it is first essential to secure them.

3. Commerce builds a connection with producer & consumers :

Commerce bridges the gap between producers and consumers because production is meant for ultimate consumption. Consumers build a connection between producers and consumers and among retailers and wholesalers. Consumers get information about any product through advertisement, commercial and salesmanship etc.

The producer of product get information about goods through marketing research.

4. Commerce building employment opportunity :

The agencies need people to look after their functioning increase in production, result in boosting employment opportunities. Therefore the development of commerce generators thousand of evening resources of people.

5. Commerce generates income & wealth for the nation :

When the production of any economy increases it untill automatically increase the wealth of any country. In developing companies, manufacturing industries and commerce go together nearby 80% of total national income. It is the best source to generate foreign exchange by way of exports & duties leived by imports.

6. Commerce is also quite helpful un expending aid of trade :

With the increase in the growth of trade and commerce there is also a need to expand and modernize aid to business such as banking, transport and advertising.

7. Commerce also encourages industrial development :

Commerce looks after the smooth transaction of goods and services available by industry without the involvement of commerce, the industry finds it difficult to maintain the flows of industry production. It helps in the Industry by Increasing Production of goods on the one hand. On Other hand, Commerce also helps in exposure to the necessary raw material & other services.

8. Commerce role under development countries :

The financial ratio of under developed countries is relatively low under developed countries can import more technical know how from any develop country and in return advanced countries can import raw material.

Article - 370

Shilpi Pal
12th-C

Kashmir is a himaliyan region that both India & Pakistan say is fully their. The area was a princely state called Jammu & Kashmir, but it joined India in 1947 soon after the sub-contigent was divided a the end of british rule. India and Pakistan subsequently went to war to control different parts of the territoly with a ceasefire line agreed.

As many Kashmir Pandits and Hindus were killed in Kashmir Valley after Article 370 was read down by Parliament in August 2019. Since 2017, the number of minorities killed in the valley in terrorist related incidents stood at 34. The killing were reported from Anantnag, Srinagar, Pulwama and Kulgan districts in the valley. Most of the cases in the Supreme Court that challenge the constitutional validity of the government decision to seek & maintain the exclusivity of J&K and deny tis phychological, emotional & economic integration with the rest of India. Article 370 was brought in as a temporary provisions to work as procedural machanism to extend the provision of the Indian Constitution to troubled state of J&K in the wake of Partition, military aggression by Pakistan of accession. More than 130 Laws including the Right to Information (RTI) Right to Edu. (RTE Prevention of curruption and laws related to SC/ST/ OBC were kept out of the confines of the people of J&K, denying then their legitimate rights. All this had grown to build against Article 370, which was line a wall between J&K and the rest of India a near unaninious support for its abrogation with that wall now gone, it is possible now for any Indian Citizen to settle in J&K and Contribute towards its development and so their is no going back to how things were a year ago.

The World Around US

Stuti Verma
12th-B

Humankind represents a very small fraction of the universe, which encompasses innumerable species of plants and animals around us. We might not even see most of them in our lifetime. The life, as we see around us, is said to be a phenomena of around 3.8 billion years with signs of biological activity even before that. Where we live today took shape when the Indian subconinent drifted apart from the bigger landmass of Gondwana and almost settled itself to the lower part of the existing landmass. It also brought along with it the species from its parent land and waters that adapted and evolved according to the newer environment. Humans emerged much later when all these changes had mostly settled down.

The delicate balance between these lives and us is what forms the ecosystem. It is our basic life support system - abiotic system that includes the air we breathe, the land we live on, the water we drink as well as the biotic system, i.e., the vegetation that provides us the food, and the living beings that surround us. The realisation that this balance determines the socio-economic development and economic growth led the policies and practices towards sustainable development in India. The critical relationship between water, environment and ecosystems was acknowledged, built upon, shaped and transformed in a sustainable way to meet the challenges without compromsing on the health of the natural world.

The unique topography of Indian subcontinent has blessed the land with various landforms, forests, water bodies, wetlands, and climate that let varied forms of lives flourish arround us. Different organisms are found in different ocean depths, providing a colourful spectrum to marine life and its ecosystem. According to scientific studies , so far, about 2.5 lakh marine life species have been identified all over the world. Scientists estimate that two million more species existing in the ocean are yet to be discovered. The Andaman and Nicobar Islands for example, support a luxuriant and rich vegetation due to tropical hot and humid climate with abundant rains. The coral reefs of these islands is the second richest found in the world. They provide different varieties of animal life of which, the coral reefs ecosystems constitute the most fragile and interesting faunal element as elsewhere in the Indo-Pacific Reefs. Gujarat is one of the rich biodiversity State, which is indicated by the presence of 7,500 speices of flora and fauna, of which 2,550 are angiosperms, 1336 are vertebrate species, 574 are bird species and rest are mammals, reptiles, amphibians, fish etc.

Biodiversity plays a pivotal role in maintaning the ecological balance in nature and is found in abundance in Northeastern region (NER). The region sharing Himalayas and Indo-Burma biodiversity hotspots, serves as the native habitat for valuable natural flora and fauna. Nowdays, indigenous bioresources of NER have expeienced a number of challenges, such as habitat destruction due to rise in human population, illegal mining, landslide, and overutilisation and illegal trading of medicinal plants. The governement is undertaking several initiatives to overcome these as well.

With the intent to have holistic view for maintaing and conserving ecological balance, India is taking several measures. It has banned the manufacture, import, stocking, distribution, sale and use identified single use plastic items, which have low utility and high littering potential, all across the country from 1 July 2022. another intiative taken by the Government is National Mission for a Green India. It is one of the eight Missions under the National Action Plan on Climate Change and

was launched in order to safeguard the country's biological resources and associated livelihoods against the perils of Climate Change. It aims at protecting, restoring, and enhancing India's forest cover and responding to Climate Change. It also aims at recognising the vital impacts of forestry on ecological sustainbility, biodiveristy conservation, food, water, and livelihood security for the nation.

School Days are best Days of Life

Devanshi Arora
12th-B

Memories have been the part and parcel of one's life. We remember the good days which have gone by and the bad one's as well. One of the best memories in life is our school life. Infact it is the best phase. It is of the first truly impactful thing in one's life and its importance can never be mitigated from our hearts.

School life is certainly a learning experience. It gives the confidence and motivation that one cherishes all one's life. It is the golden period where I recognised my uniqueness and individuality. Our teachers have always been so supportive and have given us opportunities, pushing us out of the comfort zone has helped a lot to learn. It is no less than a treasure which gives invaluable joy in life.

It is the place where we start from the alphabet and now we can solve equations. One's school life defines future and where will one lead to, we had the best starting point without a doubt. The warm welcome we got when we entered the school and also the goodbye which we'll get at the age of eighteen will hold back many years of memories, friendship and knowledge.

We are always taught to question, find answers to judge our skills. It helps to gain knowledge , it is the place where we get answers to questions that were always at the back mind, for instance, 'Why is sun orange, why do birds fly, why polar bears live in the Arctic region? So there is series of never ending questions.

One learns value of time. It is the period where we find ourselves and learn about our surroundings. It helps us to learn dedication and self-introspection. Our teachers motivate us to push out of our limits, they teach us to find our own limitis, and then break it and make new. They are the ones who teach us discipline, they groom us from learning table manners to reading books.

Most importanlty, we earn friends here. Friends who will remain with us for our entire lifetime. One of the greatest blessings of my school life has indeed been my friends. They helped me when I was at my lowest and elevated me when I was up. Moreover, they give strength and courage to try out new things. We've always learnt from each other.

We enter the school weeping, forced by our parents but by the end we gain priceless memories, friends, experiences, manners, learn discipline and much more which we even cannot explain. The difference being the former was forced to go and the latter is not ready to leave. The amount of opportunities we got in our school has made me learn so much and explore new things, guiding towards my interest and knowing what I can do best. The joys school life has given are surely countless and will remain the best days of life. Being an individual and standing out from the crowd, we have an incredible school life.

Depression : Not A Joke

Stuti Verma
12th-B

"He's depressed." A matter of joke, isn't it?! Let me begin itself by saying, 'DEPRESSION IS NOT A JOKE!'. Since years unfolded, our society has never taken it seriously. In fact, we are the ones who make life hell for a person suffering from it. The suicidal tendency is highest among students. You know why? In the grab of moving ahead in life, we have seprated ourselves from the ones we need. By drifting apart, you may definitely get personal space, but that can lead to experience mental agony too, all alone. There will be no one to discuss stuff with, but the one to blame will neither be you, nor your company. It will be life itself. It's high time to realize that life is undoubtedly tough. Keeping high ambition is not erroneous; but I strongly believe that you need to keep up to your capabilies first, if you you wish to overcome that capability of yours of being capable.

The question of the hour is - 'Why does depression take over in the first place?" It's because we don't share. In the process of turning ourselves into the best version of us, we have turned ourselves into machines. However, the reality is that we have feelings. The most smiling faces hold back the unhappiest beings. Whenever the paltriest thought of solitude takes over you, just project your family right in front of you. They will always be there for you, in the ups and downs, happiness and grief and be assured that they are the ones you can always fall back upon.

'Success is a lousy teacher, failure teaches you better'

Every problem has way out. This one stroke of counsel is the key to life itself. Just ask yourself why you lose hope after failure. Why do you let yourself creep into depression in the first place ? Failure is not the end, it never is. Muster the valour, rise and move on. Put an end to the 'ego' withing you! Learn to forgive and be on good terms with your support system. Your ignorance might be the reason for other soul's downheartedness. The advice which I am now going to give may not seem apt to most of you. Often, you will have to tackle situations when the finest individual to discuss your worries with, will be a random, stranger, believe me, it works. Open up!

Not only as future victims, but we, as society need to change too. Let us be ripe enough to take depression seriously. Before any new pals, be there for your close ones. Make them sense that you are always there for them. Put a halt to making fun of the flaws of others. If you feel your treasured one is depressed, take him for therapy. Let us not treat therapy as something abnormal.

No studies have revealed yet, as to what exactly is in a person's mind before he/she succumbs to the circumstances. I feel that all that is in his mind is a feeling of abandonment. I would like to say that when the thought of giving up life crosses your mind, tell yourself there's no one who loves you more than you yourself. Life is no doubt too much to accept at once, but giving up your life should never be a soloution. Every time someone does that, a wrong example is set. Sharing is always a better decision and dont't be hesitant for it.

About Mahamrityunjay Mantra

Shrishti Sharma
9th-A

The Maharityunjaya, Mantra is a 'Great Death defeating Mantra' also known as the Rudra Mantra of Trymbakam Mantra. It is a verse of Rigveda. The mantra is addressed to lord Shiva.

The Maharityunjaya Mantra Reads-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्।।

In English it means -

"We sacrifice to Trymbaka the fragrant, increaser of prosperity.
Like a cucumber from its stem, might I be freed from death,
Not from death, not from deathlessness."

Hindus believe the mantra is beneficial for mental, emotional and physical health and consider it Moksha Mantra.

It bestows longevity and immorality.

Why God made Teachers

Sanskriti Srivastava
10th-B

When God created teachers,
He gave us special friends,
to help us understand this world,
and truly comprehend,
the beauty and the wonder,
of everything we see,
and become a better person
with each discovery.

When God created teachers,
He gave us special guides
to show us ways in which to grow
So we can all decide,
how to live and how to do,
what's right instead of wrong
to lead us so that we may lead
And learn how to be strong.

Why God created teachers,
in this wisdom and his grace,
was to help us learn to make our world
a better, wiser place.

Space Theories

Vaani Negi
12th-B

The Fermi Paradox:

The Fermi Paradox contests that if the Drake equation is correct and there are actually millions of intelligent life to be found in our very own Milky way galaxy, then it makes sense that we should have picked up some sort of signal from at least one of them by now. This argument has been referred to as the Great Silence.

A number of interesting theories have risen over the years that provide an explanation for this great silence.

The Simulation Theory:

This theory supposes that we all might be living in a computer simulation created by an alien race in some distant galaxy. It sounds fake and made up but there are actually prominent scientists and physicists who not only think the simulation Theory is possible, they're working on experiments to prove it. In particular, a team of German physicists are trying to create their own programmed simulation of our universe Surprisingly, a recent string theory discovery made by theoretical physicist S. James Gate lends further credibility to this theory. Basically, Gate found what is essentially computer code buried deep within the equations we use to describe our universe.

The Panspermia Theory:

Panspermia is a Greek word that translates literally as "seeds everywhere" The panspermia theory states that the "seeds" of life are present throughout the universe and can be propagated through interstellar space or even intergalactic space through natural means. A gerowing number of people are even subscribing to the hypothesis that life on Earth may have begun from the "seeds" carried to our planet by meteorites and comets originating from the Vast reaches of the cosmos.

The Universe is a Halogram:

Father than an elaborate competition simulation, this theory suggest, that the universe we see is nothing more than a hologram generated by the universe itself. This holographic principle could provide the explanation as to why the universe appears flimly when broken down to the most basic of energy scales. It's thought that if variations in gravitational waves is caused by different patterns of light, it would simulate this holographic image creation process.

Great Glaciation:

Great glaciation is the theory of the final state that our universe is heading towards. The universe has a limited supply of energy. According to this theory when that energy finally runs out, the universe will devolve into a frozen state. Heat energy produced by the motion of the particles, heat loss, a natural law of the universe, means that eventually this particle motion will slow down and presumably, one day everything will stop.

Veganism

Shilpi Pal
12th-C

Veganism is the practising of abstaining from the use of animal product particularly in diet and associated philosophy that reject the commodity status of animals. An industrial who follows the diet of philosophy is known as a vegan. Distinction may be made among several categories. Dietary Vegan also known as strict vegetarian refrain from consuming meat, eggs, dairy products and any other animal derived substances. An ethical veganism is someone who not only follows a plant based diet but extends the philosophy into other areas of their lives opposes the use of animals for any purpose & tried to avoid any cruelty and exploitation of all animals including humans. Another term is environmental veganism which refers to avoidance of animal product on the premises that the industrial forming of animal is environmentally damaging and unsustainable.

Veganism reduces Animal Cruelty :

Going Vegan is one of the best thing you can help stop animal cruelty. By refusing to pay for animals products, you reduce the demand for them which ensures fewer animals are bred to suffer and die on farms and in Slaughterhouse.

A research has shown that a vegan diet can help do the following :

- It promotes weight loss.
- Reduces the risk of heart disease by lower cholesterol level.
- Lower your chance of getting certain types of cancer such as colon cancer.
- Manage diabetes by lowering AIC levels.

Difference between Vegans and Vegetarian.

Both Vegan and Vegetarian choose not to eat meat. However veganism is stricter and also prohibits dairy, eggs, honey and any other items that are derived from animal product such as leather and silk.

Depth

Mridul Trivedi
12th-C

Ocean that signifies depth,
our mind is like on ocean
Depth of thought
Depth of pain
Depth of emotions.

Depth of all the human strength
So don't sit and be depended
You were the anvil to bear
You are the hammer how to strike,
So Strike, Strike and Strike.

Till weakness turns into might
Till what is dark be light
Till what is wrong be right.

Unpleasant External Circumstances

Mansi Bhatt
10th-C

No life is perfect. We all must face all kinds of challenges in life, e.g. this very moment somewhere in the world, there could be parents who are crying because of the death of their children. There could be people who have met with some accident and lying on the operation table for treatment and recovery. There could be people who are suffering from depression due to big loss in their business. So in a way there are problems and problems of all sorts in life. No one gets experiencing the bitter taste of such unwelcome happenings at some point of time in life.

But you and I have the power to rise above in pleasant circumstances. We can always feel strong and positive when we face with different type of problems. We can use our stones to our greatest success in life, provided we always remember that nothing in the world is permanent. Just as our happiness is not going to be with us all the time nothing in the world is permanent. Just as our happiness is not going to be with us all the time in our life. It has to come to an end one day or the other similarly our frustrations, failures and all kinds of physical and emotional pains are also not going to be with us all the time.

Life is cycle in which joys and sorrows, success and failures form the spokes needed to support and run the wheel. Don't you know, that the day is always followed by the night and vice- versa ? So believing in this law of impermanence in life strongly will alone provide us with the necessary courage to fight these impleasent enemies of our life successfully and remain calm and quiet even in the hour of trial.

What is happiness

Ayushi Mishra
12th-D

WHAT IS HAPPINESS ? Ah!! You might say its pretty easy to answer. But have you ever questioned yourself that you are really happy ? Or your smile is just a forgery . All of your questions are summed up here with one common answer. Once there was traveller who travelled a long way in search of peace and happiness but he was unable to clam down his internal turbulence. In quest of his answers he went to a saint and sat beside him. As he was exhausted and tired he decided to stay there for a day. He asked to that saint "Do you know what kind of weather we are going to have today ?" Saint replied "the kind of weather I love. "The traveller was astonished at his answer and asked him again "how do you know we are going to have the weather you love ? "Saint replied with contentment" you know **I've learned to love the things I get at it is not always possible to get the things what we love** and that's how I know the answer of your question." Because about ten percent of things depend on what life brings to you, but about eighty percent of things depend and how you react to it!!! Here it is crystal clear that happiness dwells from inner peace and contentment. No matter you posses the abundant of wealth and fortune or you own the highest position. If you're not satisfied you can never be happy. you'll always find the contentment and happiness deep down in your being, so it's useless wandering around for the things which are hidden within you.

Classism : A New Social Dilemma

Rishi Singh Sengar
12th-C

"Gavar Hai Kya ?

"Are Gaav se Aye ho Kya."

These words seem to be very familiar ? If you are not from a city and have moved to one, you must have heard these words.

"Technically Speaking

This is a new generation views for people belonging to rural or semi-urban area that they are stupid, rude, poor, uncivilized or even uneducated.

We accept it or not. This thing is very prevalent in modern cities which are centres of economy but do we even realise that we are tagging almost 2nd or 3rd of our population to be stupid just because they come from villages. According to MK Gandhi, "The future of India lies in its Village ." Actually, The very basis of this discrimination lies in the Urban- Rural Divide and prevent Income Ineuqality and Elitism, where we consider a whole race or class to be inferior to us.

As an Indian, we all must form an inclusive, diverse and liberal society and only this can fulfill our dream of "Ek Bharat, Shresth Bharat'. On a concluding note, I request you all to kindly give up all the assumed superstitions and help India come out of this social Dilemma before it gets even worse.

"In a Racist society, Its not enough to be non-racist" We must be anti racist"

Why Women Are Paid Less Than Men?

Kumkum Baghel
12th-C

The gender pays gap or gender wages gap is the average difference between the remuneration for men and women who are working Women are generally considered to be paid less than men. There are two distinct numbers regarding the pay gap. Non adjusted versus adjusted pay gap. The latter typically takes into account differences in hours worked, occupations chosen, education and job experience. In the United states, for example, the non adjusted average female's annual salary is 79% of the average male salary, compared to 95% for the adjusted average salary.

The reasons link to legal, social and economic factors, and extend beyond **"equal pay for equal work"** Differences in pay are caused by occupational segregation (with more men in higher paid industries and women in lower paid industries) Women's over all paid working hours and barriers to entry into the labour market (Such as education level and single parenting rate) So when we pay women less than men, we are telling women this work isn't as valuable. We're all equally valuable and we should be paid equally.

"Equality will be achieved when men and women are granted equal pay and equal respect."

Why God made Teachers

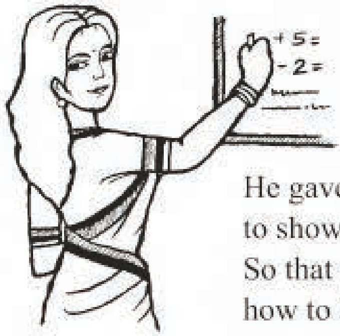

Aarushi Gupta
12th-D

When God made Teachers,
He gave us Special friends,
to help us understand this world
and truly comprehend.

He gave us special guides,
to show us ways in which to grow
So that we may all decide,
how to live and how to do
to lead us so that we can lead.

The beauty and the wonder
of everything we see,
and become better person
with each discovery
When God created teachers.

And learn how to be strong
Why God created teachers,
in his wisdom and his grace
Was to help us learn to make our world,
A better, wiser place.

A Song From Suns

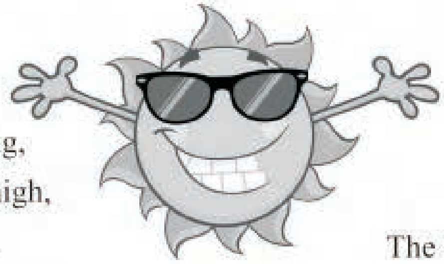

Diksha Bhatt
7th-A

Queen of my tub I merrily sing,
While the white foam raises high,
And sterslily wash and rinse,
And wearing and fasten clothes to dry,
Then out in the free fresh air they swing,
Swing Under the sunny sky.

Along the path of a useful life
will hearts - ease ever bloom;
The busy mind has no time to think,
Of sorrow or care or gloom,
And anxious thoughts may be swept as away
As we busily wield a broom.

I wish we would wash from
our hearts and our souls.
The stains of the week away
And let air and water by magic make,
Ourselves as pure as they;
Then on the earth there would be indeed
A glorious washing day !

I am glad, a task to me is given
To labour at day by day;
For it brings me health and strength and hope,
And I cheerfully learn to say-
Head, you may think, heart you may feel.
Above all its a wonderful deal.

Indian Society: A Different Perspective

Darshita Kashyap
11th-D

We live in India. We know so many facts about our country to be proved of it's culture, science and technology but there are still so many unsaid facts with which we are unfamiliar.

Divorce rate in India is 1% where as it is 50% in America. But at the same time the rate of domestic violence in India is 33.5% and 8.5% for sexual violence. It is because people don't take divorce easily in India because they are bounded by the thinking of society that a women can't be self dependents. This is just a data based example of how society's thinking is more important than a person's happiness. Many of the students have given up their dreams because society's thinking matters more to some parents than their child's happiness. We live in a society where even today commerce and humanities stream are nothing infront of science stream. In so many villages girls are not sent to schools and even in cities, girls are not sent abroad for higher studies. We live in a society where boys need to be responsible and emotionally strong, where if a boy don't get a job at the age of 25 years and if a girl don't get married at the age of 25 years, they start getting some taunts by our society. Why a man should always be responsible for its family's economy .... why a woman is always bounded to household works ? Why there are laws only for women's security but not for men ? Why women are always supposed as victims and men are always supposed to be a criminal ? We still live in a society where psychological disorders are treated as mental illness. Indian society is very supportive but it is also being supportive in increasing suicidal rates and depression patients. We have developed a lot in the field of science and technology but we also need to change and develop our mentality.

We need a supportive Society, Not a Judgemental Society !!!

A Triumphant Tree of Wisdom

Smriti Asthana
11th-B

A tiny young tree was planted on this land
was nurtured with diligent hand.
Little leaves of determination, buds of honesty, morality and love.
with showers of blessings received from above.
It grew day by day in the sunshine so bright.
It bore fruits of values, wisdom, faith and light.
Slowly it blossomed into a huge big tree as P.D.D.U.S.D.V.,

Slowly it blossomed into a huge big tree as P.D.D.U.S.D.V.,
A temple of learning surely rising so high.
Every year is a golden year for our school.
Where learning sacrements are brimful.
Joys, laughters, triumph and cheers,
The Chromatic brilliance of 50 years !

The Lesson I Learned from My Life

Yashi Mishra
12th-B

Many a times in life we face circumstances when our heart says one thing, while our mind suggests something else, it becomes extremely difficult to decide one to follow. At that time one should discover a positive attitude with the belief that every event has a purpose and set back its lesson. Failure whether of personal or educational, it offers us lessons and guides us along the path of enlightment. Someone once said that every arrow that hits the bulls eye is the result of one hundred misses. It is a fundamental law of nature to gain profit through loss. Never fear failure because fear is nothing more than a negative stream of thoughts.

Therefore always take failure as your best teacher.

I want to share a personal funda, which says that by looking at what you are doing how you are spending your days and the thoughts you are thinking, you give yourself a benchmark for measuring improvement the only way to improve tomorrow is to know what you are doing wrong today. So there is nothing wrong in making mistakes. Mistakes are part of life & essential for growth.

"Happiness comes through good judgement, good judgment comes through experience and experience comes through bad judgment ".

Rome was not built in a day

Yashi Mishra
12th-B

Nothing great or valuable is possible in this world within a short span of time. All such things must be accomplished gradually. No one can reach the summit of a mountain by a single leap The climbing and considerable effort is required to reach the top. A building cannot rise from its foundation to roof. It must be constructed step by step first the foundation, then walls finally the roof.

The city of Rome is not the world of single day. It was at first only a small village having only a few huts, long years of patient toil on the part of people, their perseverance and strong determination made Rome the greatest power in the world &helped it to attain the height of glory & prosperity.

One cannot expect to be successful in any great undertaking in the course of few days. In order to accomplish a difficult task, certain qualities are essential One should have a firm determination and should sincerely work hard One cannot achieve success unless one puts in the required amount of work in a specified period. The period of time is also as important as the amount of labour. Therefore the key to accomplishment of any big task is labour, patience & perseverance.

My Gratitude To My Teacher

Shraddha Singh
12th-C

She is versatile
talks with gravity
She met me recently but,
knows my history!

She cares for me,
like my mother.
If I have only problem
She is the first one to bother.

She carries a glow
which is surely heavenly.
Report card do not affect her,
She treats everyone evenly

She is the one who
sets an aim for everyone to strive.
No more words I have now,
Just thank you for being in my life!

Being A Girl

Nabila Suhail
12th-B

Being a girl feels blessed
just as it feels suppressed.
For every single time that you are judged.
Just because the way you are dressed.

You absorb violence
By being tolerant
You often guilt, for
What's not even your own built.

Your hands do not show your strength
nor your heart supports you
It's just the reflection of the fact
where your mind grew.
you are oblivious of your strength.

you can be a form of Durga,
Laxmi or Saraswati as the situation compels.
You are just unmindful of your esteem.
The power that you possess is supreme.

This world will try to limit your flight to a height
For they are unaware, that you could even touch skies.
Before this world, you never have to fright
For you are the guiding star that radiates its light.

Even if you are forced to stay it
Does not hinder your ability to win
So, next time anyone calls you weak,
Remember, it is just another freak.

"The Philosophy of Life Mortality and Magic"

Nimisha Srivastava
11th-D

"Life" the best gift ever given to the human race, isn't it ? We as human beings are developing from almost 21st century for now or even more. Who knows exactly ! The human race. So technically evolved and scientifically developed. But still unaware of what true existence is, they unknowingly locked in knowing about themselves. From here a question arises that the medical science and technology already knows about humans, their mind, behaviour their body and basically everything that one needs to know by this date, then can be the above statement true ? Well if we honestly ask ourselves that do we really know who are we ? What we are and why we are ? Then the answer might come as a big "No". Why on the Earth are humans and every living being a mortal. who have a fixed ideology of Birth and Death between which somewhere lies "life". "Life" the initial and instant word; can be termed as the period of a human being after birth and before death, but who created life how and why because all the theories or hypothesis that we're learning today are man made only. What if it's not the way in which we look at it; what if all the theories aren't even focousing on the true goal. Like are we actually mortals. What if there is a hint of magic in everything that the humans are totally unbothered or unaware about. Beside Science and technology, there exists- "Philosophy". A field known for believing most of the things a human brain can imagine. But why am I discussing it here, well I do have reasons and those too associated with philosophy Although not the typical Philosophical thoughts but yet interesting and exceptional.

Why do you think we are born as humans and why we only interact to a specific number of people out of billion people on this vast planet also out of them there is a specific person known as the soulmate or why is it even called so. I heard somewhere that soulmate basically means two or more souls that came or came to exist by a single soul. The only question that trigger almost all of our lives is that during the creation of our life planet Earth, only a number of human beings were there or created by an unnatural source of energy, then how come the population is increasing day by day if the spiritualitists believe that souls do not divide. Universe is the way it was as billion or trillion years ago, no energy is being formed and none is being destroyed. As there is saying that Adam at the hour of human creation parted away a part of his soul to form Eve and start life which depicts that Souls can be divided further and a person her/ his soulmate were possibly once the same soul that's why they are connected by a special tie beyond any blood relation. The second exception can be about the journey of our Soul because we never know what happens to Soul before it comes or enters a body and what happens after it leaves one. Can there be any specific aura or place where these souls rests or a world where they enjoy or travel like the "World of Immortals".

Silly but believable if we remove the factor of science and beliefs that are being followed by a time, since when human came into existence, So can all this be termed as- MAGIC But before coming to any conclusion one must know what magic is, does it really exists and if yes then how can one find or get a command over it. Magic is actually an interface or a path or bridge that connects the mortal world; with a different and new dimension to the human race. The tradition of the Sun, the moon and the stars the Secret and the real mystery behind all existing things today can they be solved by the help of magic ? I do think so but partially because according to me magic is

that everything that happens. Humans can never see or experience it untill they don't believe in their minds that some kind of Magic exists. Magic is all the things that one can imagine without their physical eyes, those voices that one listens without using physical phonics and the place where they can go without physically travelling Magic the essence and exceptions that are beyond the expertise of science or Magic the only truth that exists but remains unnoticed by the influences of human Science of hypothesis. Magic the true self of one's soul.

The Story of Young Man

Mansi Bhatt
10th-C

Once there was a king who ruled over a large and prosperous kingdom. The King was a very contented man and had no wordly desires. However, he was troubled that he had no heir to the throne. He had decided to renounce the world and go to seek the blessings of his 'Guru' but he could not leave till he had found someone to succeed him.

One day the king sent word throughout his Kingdom that he would meet his subjects personally and listen to their grievances, if any. On the appointed day, he held an open court in the royal garden. He seated himself upon a chair in a corner in a shady tree. By the King's orders, the garden had been transformed into a fun- fair with stalls laid all over. There was a variety of delicious stuff to eat, games to play, clothes, jewellery , utensils and other house hold items, fruits, vegetables and other provisions. At the entrance there was notice which read Everything on display is free. "You may take anything and everything that you can carry".

Soon people started coming in large numbers, they were amazed to read the strange notice. Tempted by the display of wordly goods, they quite forgot the purpose of their visit. They spent the whole day gathering everything that they fancied till they could carry no more. Then they went back home happily without even bothering to meet the king.

However, one young man looked at each stall but did not take anything. His eyes were looking out for king. Finally, he spotted the King sitting in a corner. He bowed politely and greeted the King. The king asked him. "Why haven't you picked up any of the free goods on offer ?"

My lord, "said the young man solemnly, my purpose was to seek you out. Nothing would distract me from my purpose."

The King beamed with joy and embraced the young man.

"Then indeed", said the King, "You will be the chosen one. All I have is yours from today. Since nothing can distract you from your purpose, there can be none better than you to serve the subjects as a King."

Let there Be Light

Mridul Trivedi
12th-C

After immense contemplations and reflecting upon dozens of opinions of achievers, I have come up with a conclusion.

Is the process of achieving your goal really painful and leaves you with Nothing? No! not at all. Those who really want to live in their dreams, the process is a pleasure. The pain you endure on the way is really sweet and pays off rich dividends in life. If one feels that he has missed something while preparing to face the fierce competitive world, definitely he is not worth excelling. Love your work as much as you can and then you will discover the underlying paradox i.e. Pain transforms into ultimate pleasure.

Bill Gate said "I never took a day off, in my duties, not even one" We should learn to face the pressure, how to tackle it and should change our approach and realize that this is the moment when we have to prove that we are worthy enough to tackle pressure. We must learn to face challenges and never despise ourselves and feel unworthy because "having a low opinion of oneself is not modesty, it is just self-destruction.

Our lives will change suddenly; we will be left open to face the competition, we will be broken when we come across the people for better than us! But remember "we are all broken and that's how the light gets in". An honest advice, trust yourself and let the light get in, let not your fear make you feel the pressure, work more than anybody else and let your soul realize that there are thousands of kids who are waiting for you. After all "hard work wins when talent doesn't work hard".

Hence, if you are in pain and are going on the wrong way, pick a vocation which you love if you love what you are doing you are on the right track. I am not trying to convey that the path we are treading on is a bed of roses; of course, it has its challenges, emptiness, struggles and sacrifices but these problems can never pull you down, if your goal is greater and important than your problems.

IT Inventions By Indians That Shaped The Morden World

Krishnam Alok Gupta
12th-B

1 . Pentium Chip :- It was invented by Vinod Dham in 1993, These chips nowdays Play major role in speed and performance of Computer.

2 . Hot mail :- Sabeer Bhatia launched hot mail.com . On July 1996, It is one of the very first free web based e-mail services in world.

3. Universal Serial Bus (USB):- Ajay Bhat developed USB technology in 1994, now days, USB is used in every part of World and its credit goes to an Indian.

4. Fiber optics :- Dr. Narinder Singh Kapany created first actual fiber optic cable. Fiber optics are commonly used telecommunication services such as internet, television and telephones.

Curbing Corruption

Jahnavi Patel
10th-D

Corruption is a significant problem in India and many of the developing world. The inefficiencies engendered by corruption can be significant drain on local development. While policymakers and the man on the street recognize the importance of the problem, the solution to the problem is quite tricky and as a result, evades the consensus on how best to reduce the menace. A recent economic research concludes that the right combination of external audit and grassroots monitoring by community member, and careful implementation of the same may be effective in reducing corruption.

One approach to reduce corruption suggests that the right combination of monitoring and punishment can control corruption. In practice, however every individuals tasked with monitoring and enforcing punishments may themselves be corruptible. It increases the chances that a low-level official would result only in bribes and other such farmes of transfers b/w the officials, which will not be a reduction in corruption.

An alternative approach to reduce corruption, which has gained prominence in recent year is to increase grassroots participation by community members in local level monitoring. Community participation is now regarded in much of the developed community as the key not only to reduce corruption but also to improve public service delivery more generally.

For example, the entire World Development Report 2004 is developed to idea of "Putting poor people at the centre of services provisions enabling them to monitor and discipline services providers, amplifying their voice in policy making and strengthening the incentives for service providers to serve the poor". The idea behind the grassroots approach is that community members are the people who benefit from a successful programme; therefore they would have stronger incentives to monitor corruption at the local level of the disinterested central government bureacrats.

The Ultimate Call

Kushi Dixit
12th-A

One ? Anyone ? Someone ?
Will come forward to help me ?
To retain and faster Nature's sanctity,
to conserve India's Angelic purity,
To sustain the natural resources
To replenish the ground water's deplete ?

To halt-
the deforestation languishing of the soil !

To Block-
The pollution dismantling of Mineral's turmoil !

Be not ignorant,
but a charmer of Pristine.
be not a personation of Greed,
Come on come and conserve !
O Let's adorn it with essence of beauty
And unite in delighted unity !!

"*The Day Dreamer*"

Priyanshi
8th-E

It was pouring, the sky looked dark as it was night even in the day. We were in the class while our history period was going on. I was sitting at the second last bench barely listening to what our teacher was explaining about the upcoming exams. I watched the slightly wet leaves of the trees swaying in delight outside the window. In mind, I was strongly desiring that I could go out in the rain and inspite the fact that our history teacher was so strict, I asked her if I could go to the washroom. It was great utter to hear 'yes' from my teacher, who never showed a sign to be lenient actually turned to be lenient, May be she also didn't want to teach in such a pleasing weather but was bound by the rules. I went through the corridor, deliberately going slow so that might the period get over. After walking two minutes though it was a 20 sec way, I reached my destination. Many others were also there like me waiting for the period to get over. Standing idle for 5 minutes straight, I finally moved my heavy feet towards the watercooler. I drank the water and thought to leave now, since 10 minutes have already passed and the period would get over as soon as I reached the class. Converting thoughts into actions, I started walking. In my way, I was thinking that the schools must have declared the day as rainy day. Suddenly, the bulb hanging to the ceiling seemed to flicker and at that moment and fell down. I thought it might be because the rain but my thoughts turned into my horror when walking by a class I saw the bench vibrating and kind of moving to side, immediately my nerves messaged my brain that it was an earthquake. I quickly ran towards the school assembly ground. But the corridor door was closed somehow and I had to run back to reach the back gate. I reached the back gate and at the end I saw the gatekeeper closing the gate, I screamed to keep it open but as I was coming down but he didn't listen. I jumped skipping stairs, may be the longest jump of my life and immediately crossed. I ran towards the ground and when I reached, I saw everyone on the ground.

The situation turned more wierd when I looked up, I can see the sun from between the clouds, the rain grew heavier. The raindrops felt like bullets on the back. And in this whole tragedy. The sun was the wierdest, it looked dark red and even bigger than usual. Horror filled me when suddenly my history teacher, standing at a corner yelled at me, "Hay, Eleen, why aren't you paying attention to what I am saying! Stand up right now if your daydream is over."

Daydream ? What is she saying ? Said I and suddenly stood up. To my amazement, I found myself in the class, being scolded by my history teacher. She went to her chair when she was fed up of exploding on me. I sat down at your dreaming about ? "Don't make me recall that, it was such a narrow escape. "Answered I.

"Oh you know daydreams come true often." She said.

Her words, made me go in depression, I just prayed to the almighty that my dream shouldn't come true and I will moved not be distracted in the class. Later I realised, that must have recognized that it was a daydream because miss Mary, our history teacher can never let any child go out in her period. Rain had stopped now and the weather again turned calm and sunny. Yet I recognised her, in rage, in frustration, but it's actually good for all of us. I would never like miss Mary to be lenient.

MORAL - We should always notice the unusual things in our daily life since they affect too much and have much importance in our lives.

What Could I do ?

Yogeshwar Singh
12th-D

Feel like a winner
What could I do?
Could I bring the change?
Could I be the change
Do I have cpabilities?
What are my abilities
I'm defusional right now!
I'm feeling tired and defeated
I couldn't fight now!

I want to get up, go again
But, I don't know how ?
One thing is for sure that I won't crib
before this world.
There are many white collars
in it with their soul sold.
We'll perform best to my potentiality
So that I may not feel like a loser
So that I don't feel guilty.

River Ganga

Harsh Kashyap
12th-B

O! river Ganga , Mother Ganga ,
Flows quiet and slow,
Originating from the Himalayan Slopes,
Passing through the Varanasi shores.....

Ganga weeps and Ganga sobs,
cleaning all the sins of the mobs,
blessing millions of people,
for centuries; after centuries,
Ganga flows calm and slow.....

But, selfish men made divine influence,
most polluted for his limitless greed and to fulfil his needs,
Mother Ganga was pure, We made her dirty,
Cost she bears is extremely high,
Yet Ganga flows without a sigh.

Till The End

Nimisha Srivastava
10th-D

I want my childhood bestfriend
to be with me till the end
I remember those tiny little fights;
That we had, when we were just nine.

To all those moments, that
we've spent together.
Now its' the time;
to get them all gather.

You never knew; neither did I
Only the memories of the moments
would be left with you and me.

Years have passed, seasons changed
But the Sun and the Moon are still the same
No matter what, we will always be the same;
This is what we promised,
when our places changed.

You never knew, neither did I
Only the memories of the moments
Are left with you and I.

We had a bond, which we always called
would never ever come to end.
Yeah! you said and I said that too
We will always be each other's best friends
Like then we used to do.

The promises changed; and the heart is tired;
Of all those expectations, that burn you like fire,
I never knew this could happen,
Collected my heart and kept them all wrap in,

With those memories which I still do have
Never let them go, but yeah!!! I can't control
I'm too tired of my life now
Just wanna go in past.

To live all those dreams that you and I saw
Just to live all those moment again;
I want my childhood best friend,
'to be with me till the end.'

The Fall of Life

Jahnavi Singh
11th-B

In the beginning we were pure and bright.
Newly formed with endless life.
But as we grew, we stumbled and fell,
Our innocence lost, a story to tell.
We learned to walk, and then to run,
Our life has just begun.
As the season passed, we grew and changed,
Our world expanding, ever so strange.

We insanse, our strength did changed
Our body slowed, our minds the same.
We fell into the twilight years,
And shed our final, bitter tears.
But in the end, our fall was sweet,
For in our journey, we did meet.
A life so full, so rich, so bright,
That we want for just one more night.

How to speak Fluent English

Ghanisth Umrao
11th-A

Hello, are you searching for a shortcut to learn English Fluency ? If Yes. To be very honest you should stop here and forget about learning English fluency. Because you cannot learn to speak English Fluently and confidently in a day or two. There are different process to learn English or earn English Fluency. But all of those methods are not practical. In this article on "How to speak Fluent English" I will show you the easiest method so that you may learn to speak English fluently in a very short time.

Step by Step guide on how to speak English fluently and confidently.

1- Earn confidence or start to believe in yourself-

Before you begin to learn how to speak English fluently and confidently, you need to gather some self confidence. You need to start believing in yourself that you can do it, "As I am believing that this article will help you if you follow these steps". No doubt we have set belief in our mind since our childhood that English is a tough language and it is almost impossible to speak English. But this is nothing but a blind belief. In this world, everything is tough untill we go through it. Spoken English is also not an exception. You can definitely speak English. If you believe in yourself.

2- Listen and learn English Speaking-

Yes you have read it right. It is said that "Listen and learn English speaking" Learning a language always begins with listening. You need to listen to carefully before you try to learn how to speak English fluently and confidently.

Confused ?

Let me make it clear.

Have you paid attention to the learning process of a baby ?

Since his birth a baby, listens carefully to every word that has been spoken in front of him. Gadually he starts to repeat the words that he listens then he learns to join words and starts to speak the short sentence. Though he commits some minor mistakes at the initial stage, later he himself makes it correct by listening to his elders.

This is the process.

3- Collect words and their meaning -

In the next step, you need to collect some simple English words and try to find out their meaning. As you know that word stock is very necessary to learn spoken English. When you start to collect words, in the initial stage don't go for difficult words.

Try to collect simple words. Don't forget to keep the meaning of those words in your memory. Let me give you some detail descriptions so that you can gain some confidence.

For how much time have you been trying to learn spoken English ?

One month ? A Year ? Probably more than that.

If you have collected or memorised ? words per day for the last 6 months, today you would have around 360 words. Do you believe that you can make hundreds and thousands of sentences with those 360 words?

That is why try to learn how to speak English fluently and confidently in a gradual process rather than going for how to speak English fluently and confidently in 30 days, 15 days, 7 days etc.

5- Practice makes a man perfect -

You have also heard the proverb that practice makes a man perfect. You need to make sentence regularly. Gradually you can go for long and difficult sentences. This article is not only how to speak English, I have also added to one word after the sentence 'fluently'. That is why I have suggested you to practice it regularly. Because regular practice will make you fluent and confident as well.

One more thing -

Everything is easy if you have to do it.

Covid-19

Devanshi Arora
11th-B

Covid-19 has been the most unexpected challenge for every one to face. Along with the physical Challenge during the era mental ones top rank people were going through much deeper transition at home. Losing some one you love causes fear and depression. Our daily escape school or work place were taken away from us leaving some of us alone. I remember how I gradually started to fade away from my friends, group. Online classes and technology emerged as the hero during these difficult times. Fortunately all schools adapted this form of learning and hence education was possible.

It was difficult to adapt such form of learning because there was no physical interaction between teacher and student which lead to poor performance. but there was no other option left other than using the online platforms. The traditional classroom education offers the benefit of social interaction and helps develop skills like communication, empathy and cooperation. Online learning brings distraction with it, we have to be self motivated every time because do not have the pressure of completing assignments, or doing home work on daily basis.

The class room ethics have been compromised to great lengths. The posture, regularity, lack of routine, attentiveness have all resulted in health hazards. No physical activities have made the students restless and frustrated. We have to concentrate on our health else we have the risk of diseases. Laziness leads to less interaction studies and it will push us down, hence daily activities like yoga, meditation is very important for our bodies It just improves our quality of life hence very beneficial.

The Sky

Prachi Singh
7th-C

The Sky is blue,
looking at you.
High and far,
saying good to see you.

Lets dance and sing,
spread your wings.

It's time to play,
so high, so high,
in your own sky.

The clouds when join together,
Make a pleasant weather.

The winds are blowing,
the Sun is shining,
there is nothing to cry,

It,s your day
spread your wings,
lets Fly, Fly and Fly.

Now it's the time to say,
the Sky bye bye.

Life

Ichcha Yadav
7th-A

Let me but live my life from year to year,
With forward face and unreluctant soul,
Not hurrying to, nor turning from goal,
Not moving for the things that disappear
in the dim past, nor holding back in fear
from what the future veils, but with a whole
And happy heart, that plays its role
To youth and age, and travels on with cheer.

So let the way wind up the hill or down,
O'er rough or smooth, the journey will be joy:
Still seeking what is sought when but a boy
New friendship, high adventure, and a crown,
My heart will keep the courage of the quest,
And hope the road's last turn will be the best.

"The Mystery of the Ancient Perky Woods"

Priyanshi
8th-E

A group of four mischievious, witless and naughty friends were looking into a newspaper's headlines which said, "A cozy spot in between the cold woods holds a deep secret. "The four absurd faces, Ron, Sam, Suraj and Ram were completely greedy for the cash price that the news holds. The paragraph says, "A deep secret held by the perky woods which stand in between the coldness of Antarctic woods. The government of India is completely astonished by the strange behaviour of the Antarctic woods. It seems like a big alarm to a vast tragedy going to happen. The famous scientist Someshwar Rao, is so keen in unfolding the secret that he had announced a cash price of Rs. 1,00,000 for the one who unfolds it. Now is it really something strange and wierd or a chance for the youth to grab money from sir Rao. "Since greediness is obvious in human nature, so was with the four idiots. They went into the village near the Perky woods to acquire the information they needed. They asked the villagers about the sudden appearance of the woods. One of the Villagers Ramu told them that they appeared in recent weeks and were so strange because they were warm and this was surely something too rare to find in Antartics. He also mentioned that it might be dangerous to go in such a strange place but the four friends insisted on their decision to explore the woods in greediness. Som asked Ramu," Just tell us where are they...... Those suddenly appeared trees .... ?"" Don't you know it can be dangerous to visit a place you don't know anything about! "Said Ramu, Som turned furious and yelled at Ramu with aggresion., "You just tell us the way, and nothing else, we aren't afraid of anything you understand." Ok, your choice. "Said Ramu, he guided them to the way which lead to the Perky woods. Next morning the four silly minds went into the Antarctic woods to reveal the secret of the Ancient woods. When they reached the forest they felt the warmth of the Perky woods which stood in between the frosty forest of Antarctica. After searching for half an hour without any trace, they decided to rest for a while under the coziness but suddenly they were captured by a group of tribals. They took them to their alter but shockingly treated them with gifts and fruits. One of the tribals who looked to be the jury head said to the boys, "Please help us, we are in great trouble. We are not someone to harm you all then why are you harming us ? "The boys looked at the person in great utter when Sam said, "we are not hurting you. Why are you saying this ? Why are you crying this hard ? "The tribal answered generously, "we are one who created the Perky woods. Actually we are shifting cultivators and after wandering through the whole Antarctic forest we found crops. These are not any special trees that they are not covered with snow but actually they are like this because we cleared the snow everyday. And the warmth was actually from the fires we set up to warm ourselves and cook food. And .... "" Oh, you guys are so interesting. We will receive a lot of money if we told about you guys to Mr. Someswar Rao. "Said the boys. "Please don't do this. We don't want anyone to tell about us to others or reveal our existence because it's our culture and tradition that we always used to be hidden or unknown. Please accept our request. "For the first time, the boys were happy for something they were going and service they provided to them and decided not to reveal the mystery of the Perky woods. The tribal head thanked the boys, he said, "Thank you very much for saving our ancient existence our Perky woods, and its mysterious trees. "The boys said goodbye to their new friends and left the state. When they reached the village and the villagers asked them about the woods, they denied and

said that it is a personal secret that they will not reveal to them. This way the mystery of the ancient Perky woods became the first mystery which was not solved till forever. They said that it is a personal secret that they will not reveal to them.

MORAL - Some secrets need not to be revealed for a good cause and something should be sacrificed for someone other's need or requirement because sacrifice done for someone's contentment turns to be a boon in return !

Generation of Insecurities

Dhriti Singh
12th-C

Generation Z, Colloquially known as Zoomers, is the term used for the people born between 1997 - 2012. Thirty percent of the world's total population, which is almost 2 billion People, fall under this category Gen-Zs are broadly known to be the woke, teach savvy generation, who have grow up wholly in the digital era. This fact in itself exhibits the probability of them being vulnerable towards innumerable insecurities.

Although Gen-Zs are known to be communaholics (people who are known to engage with others and brands), this goes just as for as the boundaries of internet because in real life, they sorely lack social skills.

Being considerably addicted to this hyper-connected world known as social media, has instigated the fear of Missing Out (FOMO) in a multitude of Gen-Zs which further leads them to be more active on social media, distancing them form the reality. This certain ideology of being caught up with "trends" and being "trendy" has instilled insecurities in them, related to their looks, fashion, body and cognitive skills, mental health issues coming free with them Studies show that nine in ten Gen-Z adults (91%) have experienced at least one physical or emotional symptom because of conditions like depression, lack of interest, motivation or energy and anxiety. As if these reasons weren't causing enough vulnerabilities to this already distressed generation , other factors like climate change, hyper-competitive academics and job market, emergence of new lucrative-but uncertain career option, a global pandemic and war-like conditions have also been giving them enough despondency.

Therefore, it won't be an exaggeration to tag this generation as the generation of insecurities.

PT. DEEN DAYAL UPADHYAYA SANATAN DHARMA VIDYALAYA

SCHOOL MANAGING COMMITTEE
2023-24

S.No.	Member Name	Designation
1.	Shri Virendrajeet Singh Ji	Patron
2.	Shri Yogendra Nath Bhargava	President
3.	Smt. Nandita Singh	Vice President
4.	Smt. Neetu Singh	Manager
5.	Smt. Ushmina Khehar	Asstt. Manager
6.	Smt. Renu Seth	Member
7.	Shri Surendra Kakkar	Member
8.	Shri Manoj Awasthi	Member
9.	Shri Aditya Shankar Bajpai	Member
10.	Dr. Kamal Kishore Gupta	Member
11.	Smt. Chaaru Vaid	Member
12.	Smt. Neeru Tandon	Member
13.	Shri Sudeep Goenka	Member
14.	Shri Bhawani Bheekh Tiwari	Member
15.	Mr. Rakesh Tripathi	Principal / Secretary
16.	Dr. Sunil Shivmangal Pandey	Parent Representative
17.	Smt. Saroj Tiwari	Teacher Representative
18.	Smt. Usha Agarwal	C.B.S.E. Panel
19.	Mr. Prathipati Sachan	C.B.S.E. Panel

Pragya # 9336275421